प्रस्तावना.

जेम कोइ एक पदार्थनी बनावट करवामां मात्र एकज बनावनारनी पण एवी खूबी होय छे के ते एकज वस्तुने जूदा जूदा शैकडा प्रकारना रूपमां लावी शके छे, तो ते तेहिज वस्तु जूदा जूदा पुरुषोनी बनावटथी जूदा जूदा आकार वाली थाय, तेमां तो वली केवुंज शुं ? तेम प्रत्येक ग्रंथनी रचना करनारा महान्पुरुषोमां पण एज रीत जाणी लेवी.

श्रीजैनशासनने विषे एक द्रव्यानुयोग,बीजो गणितानुयोग, त्रीजो चरण करणानुयोग,अने चोथो धर्मकथानुयोग.ए चार अनुयोग कह्या छे ते चारेमां द्रव्यानुयोग मुख्य गणाय छे.हवे ते द्रव्यानुयोगना विषय जेमां मुख्यत्वें आवेला होय एवा हजारो ग्रंथो छे परंतु तेमां जे ग्रंथ घणोज सरस हशे, ते पण कोइ न्याय निपुणविद्वाननो आश्रय लीधा विना साधारण जनथी समजाइ शकाय नही एवा कठिन विषय अवश्य द्रव्यानुयोग संबंधि ग्रंथोमां होय छे, ते एवा ग्रंथोने अवलोकन करनारा सज्जनो सारी पेठें जाणता हशे.

परंतु आ अध्यात्मसार प्रश्नोत्तर नामक ग्रंथनी रचना करनार पंडित कुंवरविजयजी छे तेमणे यद्यपि आ ग्रंथने विषे घणुं करीने द्रव्यानुयोग नीज वक्तव्यता करी जणाय छे तथापि ते एवी सरलताथी वार्त्तिक रूपें गुर्जर भाषामां लखी छे के मात्र एक नवतत्त्व प्रकरणनो जेणे बरोबर गुरुमुखें अभ्यास करेलो होय अने थोडी घणी नय प्रमुखनी वातो गुरुमुखें धारेली होय तेवा सामान्य जनने पण आ ग्रंथ मांहेली वातो सेहेज समजवामां आवी जाय, एवी युक्ति पूर्वक रचना करी छे तेथी द्रव्यानुयोगने जाणवानी रुची वाला विवेकी पुरुषोने प्रथम द्रव्यानुयोग रूप समुद्रमां प्रवेश करवाने आ पुस्तक खरे खरुं नौकासमान छे.

आ ग्रंथमां जीवादिक नवतत्त्व मांहेला कया कया पदार्थमां केटलां केटलां तत्त्व पामीयें? तथा ते शिवाय बीजी पण प्रसंगें ए नवतत्त्व संबंधि अनेक वातो आवेली छे, तथा निश्चय व्यवहार नयें करी, नैगमादि सात नयें करी, चार निक्षेपे करी, तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनी चोभंगीयें करी, प्रत्यक्षादि प्रमाणे करी, तेमज सप्तभंगी, पंचभंगी, त्रिभंगि आदिकें करी अनेक पदार्थोनां स्वरूप सविस्तर पणे देखाड्यां छे, तेनो सामान्य सारांश अनुक्रमणिकामां सूचव्यो छे, अने पूर्ण खुलासो ग्रंथ अवलोकन करवाथी थशे. किं बहुना.

आ ग्रथमांहेला विषयोनी अनुक्रणिका.

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री अध्यात्मसारप्रश्नोत्तरग्रंथः प्रारभ्यते ॥

॥ श्लोक ॥

॥ चेतःकैरवकौमुदीसहचरः स्याद्वादविद्याकरः, कैवल्यद्रुममंजरीमधुकरः संपल्लतांभोधरः॥ मुक्तिस्त्रीकमनीयभालतिलकःसद्धर्मदःशर्मकृत्,श्रीमद्वीर-जिनेश्वरस्त्रिभुवने क्षेमंकरः पातु वः॥१॥ खिमाविजय जिन उत्तम पद, तेहने सेवे सुरनर वृंद॥ निज रूप प्रगटे अमी वरसंत,कुंवर कहे प्रश्नोत्तर वृत्तंत॥२॥

॥ दोहा ॥

॥ हितोपदेश करवा भणी, ए प्रश्नोत्तर ग्रंथ ॥ भ
णशे गुणशे जे भविक, लेहेशे ते शिवपंथ ॥ ३ ॥

तिहां प्रथम श्री जिनस्तुति लखियें छैयें.

॥ जय भगवान्, त्रैलोक्य तारण, अशरण शरण, परमात्मा, परमेश्वर, जगत्त्रयाधार, कृपावतार, महिमानिधान, ज्ञापितसकलनिधान, समग्र जंतुना करुणाबंधु, भव्य जीवोने धर्म पमाडता, भवसिंधुमां अनाथनाथ, शिवपुर साथ, परमदयाल, वचन रसाल, जगदुपकारी, वंदे नर नारी, तथा जे सुधासंयमी, निर्ग्रंथपंथ पालता, चारित्र दूषण टालता, सर्व जीवने हित करता, भव्याने उद्धरता एवा चौद हजार मुनिवरें परवस्या अलंकस्या क्रोडो गमे देवतायें सेवित, अनंतज्ञानमय, अनंतदर्शनमय, अनंतचारित्रमय, अनंततपोमय, अनंतदानमय, अनंतवीर्यमय, अनंत लाभमय, अनंतभोगमय, अनंतउपभोगमय, क्रोधरहित, मानरहित, मायारहित, लोभरहित, हास्यरहित, रतिरहित, अरतिरहित, भयरहित, शोकरहित, दुगंछारहित, रागरहित, द्वेषरहित, मोहरहित, मिथ्यात्वरहित निद्रारहित, कामरहित, अज्ञानरहित, कंदर्परहित, रोगरहित, निरालंबी निराशी, निरुपाधि, निर्विकारी, अनंतचतुष्टयी, अक्षय, अचल, अकल, अमल, अगम, अनामी, अकर्मा, अबंधक, अनुदय, अभेदी, अवेदी, अ छेदी, अखेदी, असखायी, अलेशी, अनवगाही, अव्यापी, अनाश्रयी, अ

कंप, अस्खलित, अविरोध, अनाश्रव, अलख, अशोक, अलोक, लोका लोकज्ञायक, शुद्ध, बुद्ध, स्वन्नावरमणी, सहजानंदी, एक, असंख्य, अनंत गुणें करी विराजमान, एवा अनंत सुखना न्नोगी, त्रैलोक्यना राजा, त्रैलो क्यना पति, त्रैलोक्यस्वामी, त्रैलोक्यनाथ, त्रैलोक्यतिलक, त्रैलोक्यने विषे मुकुट मुद्रासमान, त्रैलोक्यने विषे छत्र समान, त्रैलोक्यने विषे सूर्यसमान उद्योतना करनार, मिथ्यात्वरूप अंधकारना टालनार, चंद्रमानी पेरें शीत लताना करनार. विषय कषायरूप बलतराना टालनार, न्नक्तवत्सल, जगत्र यना हितकारी, जगत्रयना प्रीतिकारी, जगत्रय उपकारी, करुणासागर, न्न वसमुद्रथी पार उतारनार, तथा उक्तं च॥ अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टि, र्दिव्य ध्वनिश्चामरमासनं च, न्नामंमलं डुंडुन्निरातपत्रं सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वरा णाम्॥ १॥ ए आठ प्रातिहार्यनी संपदायें करी बिराजमान तथा पूजाति शय, वचनातिशय, ज्ञानातिशय अने अपायापगमातिशय, ए चार अतिशय पूर्वोक्त आठ प्रातिहार्य साथें मेलवीयें तेवारें बार थाय, ते बार गुणें करी शोन्नित तेमज चार अतिशय सहजनां जन्मथकी होय, अने कर्मक्षय थया थकी अगीयार तथा देवताना करेला उंगणीश मलीने चोत्रीश अतिशयें करी बिराजमानथका एवा श्री वीर न्नगवान् चोवीशमा तीर्थंकर ते न्नव्य प्राणीयोने हितोपदेश करता मिथ्यात्वरूप अंधकारने चूरता थका श्री राजगृही नगरीना उद्यानने विषे समोसस्या, ते वखतें हर्ष न्नक्तियें न्नाविक थका न्नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक, ए चार निकायना देवतायें मलीने रूप, सुवर्ण तथा रत्नमय त्रण गढनी रचना करी, तेना मध्यमां रत्न जडित सिंहासनने विषे श्रीवीर न्नगवान् बेठा, मस्तकें त्रण छत्र शोन्ने छे, चार चामर वींजाय छे. सुर, असुर, मनुष्यमां स्त्री, पुरुष, विद्याधर, किन्नर, गंधर्व, इत्यादिक सर्व पर्षदा मली, ते वखतें श्री श्रेणिकराजा पण अंतःपुर सहित चतुरंगिणी सेना लइने अति प्रमोद सहित श्रीसमवसरणने विषे आवी प्रन्नुने वांदीने बेठो अने बीजां पण सहु यथोचित स्थानकें बेठा.

प्रन्नुयें पण वाणीना पांत्रीश गुणें करी दिव्यध्वनियें देशना आ पवा मांमी, ते देशना केवी होय? तो के सहशक्तिमंत अर्द्ध माग धी न्नाषामां होय, स्वर उदात्तपणे होय, मेघध्वनिनी परें होय, सर्व वाजित्रमां मेल उचित प्रमुख गुण सहित होय, अतिविस्तारपणे होय,

त्रणे काल मलती होय, पदसापेक्षपणें होय, प्रशस्ति विशेषें होय, अक्षर पदनी चातुरी होय, मालकोश रागमां होय, श्रोतानां मनने राजी करनारी होय, सूत्र थोडुं अने अर्थ घणो होय, विविधप्रकारें श्रोताने बोध दायक होय, नय जंग प्रमाण सहित होय, चित्तने तथा श्रोत्रेंद्रियने सुखकारी होय, यथार्थपणे सुबोधकारी होय, कारक प्रमुख सहित होय, षड्द्रव्यादिक विजेनो शुद्धपणे होय, श्रवणथी श्रोताना रोग नाश पामे, पडठंदा उठे, परस्पर विरोध नहिं, वचनमांहे संदेह नही, वादी दूषण आपी शके नहिं, श्रोताना संदेह टले, बाल गोपाल सर्वे समजे, कोइनां मर्म जांखे नहीं, जेमां पोताना स्तुति तथा पारकी निंदा नही, लोक प्रशंसा करे, श्रोताने आश्चर्य उपजे, अति वल्लज उब्रित नही, वचमां अंतराय पडे नहिं, श्रोतानां डुःख टाले, जेमां ग्रामिक वचन न होय, एक योजनमां सरखी संजलाय, जेनो फलविछेद नही, सहुको पोत पोतानी जाषामां समजी जाय, आषाढना मेघनी परें प्रणमे, संशय छेदनकारिणी, चतुर्विधसंघमनोहारिणी, चतुर्विधधर्मप्रकाशिनी, जविजनकर्णामृतस्रवणी, सकलकुमतिविद्राविणी, संसारसमुद्रतारिणी, सर्वसंशयनिवारिणी, सुखकारिणी, बहुल मिथ्यात्व तिमिरपटल दिनकरानुकारिणी, एवी वाणी ते नित्य, अनित्य, एक, अनेक, सत्य, असत्य, वक्तव्य, अवक्तव्य, नाम, द्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव, गुण, पर्याय, उत्पाद, व्यय, ध्रुव, नय, निक्षेपा, कारक, प्रमाण, समवाय, द्रव्यास्तिक नय, पर्यायास्तिक नय, कर्त्ता, कारण, कार्य, निश्चय, व्यवहार, उत्सर्ग, अपवाद, हेय, ज्ञेय, उपादेय, चौजंगी, त्रिजंगी, सप्तजंगी, अनेकजंगी, जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष, धर्म, अधर्म, आश्रव, परआश्रव, अतिचार, अनाचार, अतिक्रम, व्यतिक्रम, इत्यादिक सर्वे गुणोपदेशिनी, सर्व जाषावबोधिनी, जगवान् देशना देता हवा, ते कहीयें ढेयें.

॥ अत्र गाथा ॥ जीवाजीवा पुण्णं, पावासव संवरो य निज्जरणा ॥ बंधो मुक्खो य तहा, नव तत्ता हुंति नायव्वा ॥१॥ श्रीवीतराग देवें त्रिगडा गढने विषे बेसीने बार पर्षदामां ए रीतें उपदेश कह्यो केः– जीवादिक नव तत्त्वने जे निपुण बुद्धियें करी जाणे, तेने ज्ञानी कहीयें, अंतरंग सद्दहे, तेने समकिती कहीयें, "अणुवउंगो दव्वं" ए श्री अनुयोगद्वार सूत्रनुं वचन ढे, वली कह्युं ढे जे पद, अक्षर, मात्रा सहित शुद्ध सिद्धांत वांचता पूछतां

अर्थ करे छे, गुरुमुखें सद्दहे छे, तेपण शुद्ध निश्चयें आत्मसत्ता उंलख्या विना सर्व द्रव्य निक्षेपे छे अने जे भाव विना मात्र एकलुं द्रव्य छे ते पुण्यबंधनुं कारण छे परंतु मोक्षनुं कारण नथी. एटले जे करणीरूप कष्ट तपस्या करे छे परंतु जीव अजीवनी सत्ता उंलखी नथी तेने भगवतीसूत्रमां अव्रती अपच्चख्काणी कह्या छे, तथा जे एकली बाह्य करणी करे छे अने पोताने साधु कहेवरावे छे ते मृषावादी छे "ण मुणी रण्णवासेण" मिति श्रीउत्तराध्ययनसूत्रवचनात् ॥ तथा "नाणेण य मुणी होइ" ए वचनें जे ज्ञानी ते मुनि छे अने अज्ञानी ते मिथ्यात्वी छे.

तथा गणितानुयोग जे नारकी देवाता प्रमुखना बोल अथवा यति श्रावकनो आचार जाणीने कोइक कहे जे अमें ज्ञानी छैयें परंतु ते ज्ञानी कहेवाय नहिं जे द्रव्य गुण पर्यायनुं स्वरूप जाणे तेनेज ज्ञानी कहीयें. एम श्रीउत्तराध्ययनना मोक्षमार्गाध्ययनमां कह्युं छे, तथा च तत्पाठः ॥ एवं पंचविहं नाणं, दव्वाण य गुणाण य ॥ पज्जवाण य सव्वेसिं, जं नाणीहिय दंसियं॥१॥ ए वस्तु सत्ता जाण्या विना ज्ञानी नही, परंतु नव तत्त्व, षड्द्रव्यनुं स्वरूप उंलखे, ते समकिती कहेवाय. एवा ज्ञान, दर्शन,विना जे कहे, के अमें चारित्रीया छैयें, ते पण मृषावादी छे जे माटें श्री उत्तराध्ययनमां "णो दंसण णाणेण विणा ण हुंति चरण गुणा" ए वचन छे माटें आज केटला एक ज्ञानहीन थका मात्र क्रियानो आरंबर देखाडे ते ठग छे, तेहनो संग करवो नहिं केम के? ए बाह्यकरणी अभव्यने पण आवे छे माटे तेउपर राचवुं नहिं.

तथा आत्मस्वरूप उंलख्या विना सामायिक, पडिक्कमणुं, पच्चख्काण प्रमुख जे छे ते द्रव्य निक्षेपामां पुण्याश्रव छे, परंतु संवर नथी. श्रीभगवतीसूत्रमां "आया खलु सामाइयं" ए आलावाथी जाणवुं. तथा जीवनुं स्वरूप जाण्या विना तप, संयम, पुण्यप्रकृति देवभवनुं कारण छे. उक्तं च "पुव्वतवेणं पुव्वसंजमेणं देवलोए उववज्जंति णोचेव णं आया भावतवयाय" ए आलावो श्रीभगवतीसूत्रमां कह्यो छे, एवुं सांभलीने शिष्य स्तुति करी पूछे छे,

१ हे भगवंत! एटले ज्ञानवंत, अर्थात् सर्व प्रकारें करी लोकालोकना स्वरूपना जाण छे तेने भगवान् कहीयें. २ हे जिनराज! तिहां जिन एटले राग द्वेष रहित एवा जे सामान्य केवली तेने विषे राजा समान तेने जिनराज कहीयें. ३ हे अलख! एटले जेनुं स्वरूप कोइ प्रकारें लख्यामां

आवे नही, तेने अलख कहियें ४ हे चिद्घन ! एटले चिद् कहेतां ज्ञान तेनो घन केतां समूह एवुं जेनुं स्वरूप तेने चिद्घन कहियें. ५ हे चिदानंद ! तिहां चिद् एटले ज्ञान अने आनंद एटले चारित्र, एटले ज्ञान अने चारित्रमय जेनुं स्वरूप छे, तेने चिदानंद कहीयें. ६ हे निरंजन ! एटले जेना आत्मप्रदेशने विषे कर्मरूप अंजन नथी तेने निरंजन कहीयें. ७ हे वीतराग ! एटले वीत केतां वीत्या छे राग अने द्वेष जेना तेने वीतराग कहीयें. ८ हे सत्चिदानंद ! एटले (सत् के०) दर्शन अने (चिद् के०)ज्ञान तथा (आनंद के०) चारित्र एटले दर्शन, ज्ञान अने चारित्रमय जेहनुं स्वरूप छे तेने सच्चिदानंद कहियें. ए हे अरिहंत ! एटले (अरि के०) कर्मरूप वैरी तेने द्रव्यथकी अने भावथकी जेणें (हंत के०) हण्या छे तेने अरिहंत कहियें. १० हे तीर्थंकर ! एटले (तीर्थ के०) साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका रूप चतुर्विध संघ, तेनी स्थापनाना (कर के०) करनार तेने तीर्थंकर कहियें. ११ हे परमात्मा ! एटले (परम के०) उत्कृष्ट त्रण जगत्ने पूजवा योग्य छे आत्मा जेनो तेने परमात्मा कहीयें. १२ हे परमेश्वर ! एटले (परम के०) उत्कृष्टी (ईश्वर के०) ठकुराइ अर्थात् ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूप जे लक्ष्मी, ते जेणें प्रगट करी छे तेने परमेश्वर कहियें. ए रीतें स्तवन करीने शिष्य प्रश्न पूछे छे.

१३ शिष्यः—नव तत्त्वमां जीवने तत्त्व कही बोलाव्यो तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—ज्ञानादिक गुणें करी चेतना सहित छे, निश्चय नयें करी सत्तायें सिद्ध समान अने व्यवहार नयें करी शुभाशुभ कर्मनो भोक्ताछे, ए एनुं तत्त्व जाणवुं.

१४ शिष्यः—अजीवने तत्त्व कही बोलाव्यो तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—ज्ञानादिक चेतना रूप गुणें करी रहित जड स्वभाव वालो अने जेने सुख दुःखनुं ज्ञान नथी ए एनुं तत्त्व जाणवुं.

१५ शिष्यः—पुण्यने तत्त्व कही बोलाव्युं तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—जेम साकरनुं तत्त्व मीठाश छे, तेम एना मीठा विपाक जीव भोगवे छे ते पुण्य कहेवाय छे, ए एनुं तत्त्व जाणवुं.

१६ शिष्यः—पापने तत्त्व कही बोलाव्युं तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—जेम अफीणनुं तत्त्व कडवाश छे तेम एना कडवा विपाक जीव भोगवे छे ए एनुं त व जाणवुं.

१७ शिष्यः—आश्रवने तत्त्व कही बोलाव्यो, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—पुण्य तथा पाप ए बे तो कर्यां आवे छे अने आश्रव तो कर्यां पण आवे अने अणकर्यां पण आवे, जे कारणें पुण्य पापनां जे दलीयां छे, ते आश्रवरूप छे तेतो कर्यां आवे छे, अने अव्रतिपणानां जे आश्रव छे, तेतो अणकर्यां आवे छे, अहींयां फरी शिष्यें पूछ्युं के अणकर्यां आश्रव केम आवे ? तेवारें गुरुयें कह्युं जे एकेंद्रियने पण अव्रतिपणे अढारे पाप स्थानकनां अणकर्यां आश्रव आवे छे, एम भगवतीसूत्रमां कह्युं छे, माटे आश्रव कर्यां पण आवे अने अणकर्यां पण आवे, ए एनुं तत्त्व छे.

१८ शिष्यः—संवरने तत्त्व कही बोलाव्यो, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—आवता कर्मने रोके एटले शुभ कर्मनां दलीयांने पण रोके अने अशुभ कर्मनां दलीयांने पण रोके, तेथी आवता कर्मने रोके, ए एनुं तत्त्व.

१९ शिष्यः—निर्जराने तत्त्व कही बोलाव्यो, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—संवर तो मात्र आवता कर्मने रोके छे, पण निर्जरा तो अग्निरूप छे एटले अंतरमां पेशीने शुभ कर्मनां दलीयांने पण बाली नाखे, अने अशुभ कर्मनां दलीयांने पण बाली नाखे, अर्थात् सत्तायें शुभाशुभनां दलीयां रह्यां छे, तेने निर्जरावे, ए एनुं तत्त्व जाणवुं.

२० शिष्यः—बंधने तत्त्व कही बोलाव्यो, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—शुभनां दलीयां पण बांधे, अने अशुभनां दलीयां पण बांधे, एज एनुं तत्त्व जाणवुं जे ए शुभने पण बांधे अने अशुभने पण बांधे.

२१ शिष्यः—मोक्षने तत्त्व कही बोलाव्यो, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—बारमे गुणठाणे राग, द्वेष, अने मोहनो क्षय कर्यो अने तेरमे गुणठाणे केवल ज्ञान, केवल दर्शन अने यथाख्यातचारित्र रूप जे लक्ष्मी ते जेणें प्रगट करी,तेने द्रव्यमोक्ष कहीयें.अने जे सर्व कर्मथकी मूकाणा ते भावमोक्ष कहीयें. ए एनुं तत्त्व जाणवुं. ए रीतें श्री वीतराग देवें त्रिगडाने विषे बेसी बार पर्षदाने उपदेश कर्यो, ते उपदेशमां ए नवेने तत्त्व करी बोलाव्यां.

२२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां हेय एटले छांडवा योग्य केटला तत्त्व पामीयें?

गुरुः— निश्चय नयें करी पुण्य, पाप, आश्रव अने बंध, ए चार तत्त्व जीवने छांडवा योग्य छे, केम के ए चारमां पुण्य जे छे, ते शुभप्रकृतिरूप कर्मनो उदय छे अने पाप छे, ते अशुभ प्रकृतिरूप कर्मनो उदय छे. माटें ए बे

कर्म छे अने ते कर्म तो जीवने मोक्षमार्गने विषे विघ्नकर्त्ता छे, तेमाटें निश्चय नयने मतें करी शुभाशुभ विकाररूप जे वेदनीय कर्म ते जीवने छांरुवा योग्य छे अने व्यवहार नयने मतें तो एक पुण्य आदरवा योग्य छे, केम के मोक्षनगरें जातां जीवने विघ्नना करनारा एवा जे क्रोध, मान, माया, लोभ आधि, व्याधि, जन्म, जरा, मरण, शोक, पीडा, विषय, कषाय, निद्रा, ममता, मूर्छा, अज्ञान, मिथ्यात्व, अव्रत, आदिक अनेक मोहराजाना सुभटो फरे छे, ते सर्व जीवने मोक्षमार्गें जातां विघ्नकर्त्ता छे, माटें तिहां पुण्यरूप वलावो गावको भलो रूडो होय, तो निर्विघ्नपणे जीव, मोक्ष नगरें पहोंचे, तेथी व्यवहार नयने मतें पुण्य आदरवा योग्य छे केम के समकिती जीव एने वोलावारूप करी जाणे छे, एटले जिनराजनां वचनमां बे नय प्रमाण छे एमां जो कोइ एक नय उथापे, तो तेनुं वचन अप्रमाण जाणवुं.

२३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां ज्ञेय एटले जाणवा योग्य केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः— जीव अने अजीव ए बे तत्त्वनुं स्वरूप जाणवा योग्य छे, तेवारें फरी शिष्यें पूछ्युं जे जीवनुं स्वरूप शुं छे? तेवारें गुरु कहे छे. नैगम अने संग्रहनयें करी सर्व जीव सत्तायें एक रूप छे, केम के ज्ञानादिक चेतना गुणें करी सहित सर्वजीव एकरूप छे सत्तायें सरखा सिद्ध समान छे, माटे एक भेदें सर्व जीव कहीयें अने व्यवहार नयें करी तो जीवना चौद भेद बत्रीश भेद तथा पांचशोने त्रेशठ भेद थाय छे, तेनो विचार बाशठ मार्गणाथी धारवो, तेनी गाथा लखीयें छैयें "गइ इंदीए काए, जोए वेए कसाय नाणे य ॥ संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥ १ ॥ ए बाशठ मार्गणानो यंत्र नीचें लख्यो छे, तेथी पांचशो त्रेशठ भेदनो विवरो समजी लेवो.

तिहां पहेला कोठामां बाशठ मार्गणाना नाम लख्यां छे, बीजा कोठामां नारकी जीवना चौदभेद मांहेला जे मार्गणाने विषे जेटला भेद पामीयें ते देखाड्या छे, त्रीजा कोठामां तिर्यंचना अडतालीश भेद मांहेला जे मार्गणाने विषे जेटला भेद पामीयें ते देखाड्या छे. चोथा कोठामां मनुष्यना त्रणशो त्रण भेदमांथी जे मार्गणामां जेटला भेद पामीयें ते देखाड्या छे, पांचमा कोठामां देवताना एकशो अठाणुं भेदमांथी जे मार्गणाने विषे जेटला भेद पामीयें ते देखाड्या छे. छठा कोठामां शरवाले पांचशो त्रेशठ भेदमांथी जे मार्गणायें जेटला भेद पामीयें तेना शरवाला देखाड्या छे.

॥ अथ द्विषष्ठिमार्गणायां पंचशताधिकत्रिषष्ठिजीवभेदानां यंत्रमिदम् ॥

बाशठ मार्गणा स्थाननां नाम.	नारकी. १४	तिर्यंच. ४८	मनुष्य. ३०३	देवता. १९८	सर्व संख्या. ५६३
१ देवगति.	०	०	०	१९८	१९८
२ मनुष्यगति.	०	०	३०३	०	३०३
३ तिर्यंचगति.	०	४८	०	०	४८
४ नरकगति.	१४	०	०	०	१४
५ एकेंद्रियजाति	०	२२	०	०	२२
६ बेंद्रियजाति.	०	२	०	०	२
७ तेंद्रियजाति.	०	२	०	०	२
८ चौरिंद्रियजाति	०	२	०	०	२
९ पंचेंद्रियजाति	१४	२०	३०३	१९८	५३५
१० पृथ्वीकाय.	०	४	०	०	४
११ अप्काय.	०	४	०	०	४
१२ तेउकाय.	०	४	०	०	४
१३ वायुकाय.	०	४	०	०	४
१४ वनस्पतिकाय.	०	४।२	०	०	४।२
१५ त्रसकाय.	१४	२६	३०३	१९८	५४१
१६ मनोयोग.	७	५	१०१	९९	२१२
१७ वचनयोग.	७	१३	१०१	९९	२२०
१८ काययोग.	१४	४८	३०३	१९८	५६३
१९ स्त्रीवेद.	०	१०	२०२	१२८	३४०
२० पुरुषवेद.	०	१०	२०२	१९८	४१०
२१ नपुंसकवेद.	१४	४८	१३१	०	१९३
२२ क्रोध.	१४	४८	३०३	१९८	५६३
२३ मान.	१४	४८	३०३	१९८	५६३
२४ माया.	१४	४८	३०३	१९८	५६३
२५ लोभ.	१४	४८	३३०	१९८	५६३

बाशठ मार्गणा स्थाननां नाम.	नारकी. १४	तिर्यंच. ४८	मनुष्य. ३०३	देवता. १९८	सर्व संख्या. ५६३
२६ मतिज्ञान.	१३	१०	२०२	१९८	४२३
२७ श्रुतज्ञान.	१३	१०	२०२	१९८	४२३
२८ अवधिज्ञान.	१३	५।१०	३०	१९८	२४६।२५१
२९ मनःपर्यवज्ञान	०	०	१५	०	१५
३० केवलज्ञान.	०	०	१५	०	१५
३१ मतिअज्ञान.	१४	४८	३०३	१७०	५३५
३२ श्रुतअज्ञान.	१४	४८	३०३	१७०	५३५
३३ विभंगज्ञान.	१४	१०।१५	३०।१५	१७०	२२४।२०४
३४ सामायिक.	०	०	१५	०	१५
३५ छेदोपस्थाप०	०	०	१०	०	१०
३६ परिहारविशु०	०	०	१०	०	१०
३७ यथाख्यात.	०	०	१५	०	१५
३८ सूक्ष्मसंपराय.	०	०	१५	०	१५
३९ देशविरति.	०	५	१५	०	२०
४० अविरति.	१४	४८	३०३	१९८	५६३
४१ चक्षुदर्शन.	७	११	१०१	९९	२१८
४२ अचक्षुदर्शन.	१४	४८	३०३	१९८	५६३
४३ अवधिदर्शन.	१३	१०।१५	३०	१९८	२५१।२४६
४४ केवलदर्शन.	०	०	१५	०	१५
४५ कृष्णलेश्या.	६	४८	३०३	७२	४२९
४६ नीललेश्या.	६	४८	३०३	७२	४२९
४७ कापोतलेश्या.	६	४८	३०३	७२	४२९
४८ तेजोलेश्या.	०	१३	२०२	९८।१२८	३१३।३४३
४९ पद्मलेश्या.	०	१०	३०	२६	६६
५० शुक्ललेश्या.	०	१०	३०	४४	८४
५१ भव्यजीव.	१४	४८	३०३	१९८	५६३

बाशठ मार्गणा स्थाननां नाम.	नारकी. १४	तिर्यंच. ४८	मनुष्य. ३०३	देवता. १९८	सर्व संख्या. ५६३
५२ अभव्यजीव.	१४	४८	३०३।१३१	१७०।१४०	५३५।३३३
५३ उपशमसम०	७	५	१०१	९०	२०३
५४ क्षायिकसम०	६	२	९०	७०	१६८
५५ क्षायोपशमस	१३	१०	२०२	१९८	४२३
५६ मिश्रसमकित	७	५	१०१	८५	१९८
५७ सास्वादन.	७	२१	२०२	१७०	४००
५८ मिथ्यात्व.	१४	४८	३०३	१७०	५३५
५९ संज्ञी.	१४	१०	२०२	१९८	४२४
६० असंज्ञी.	०	३८	१०१	०	१३९
६१ आहारी.	१४	४८	३०३	१९८	५६३
६२ अणाहारी.	७	२४	२१७	९९	३४७

॥ इति द्विषष्टिमार्गणायां पंचशताधिक त्रिषष्टिजीव भेदानां यंत्रं समाप्तम् ॥

२४ शिष्यः—जीवने शाश्वतो कहीयें किं वा अशाश्वतो कहीयें ?

गुरुः—निश्चय नयने मतें जीव शाश्वतो छे अने व्यवहारनयने मतें जीव अशाश्वतो छे, केम के निश्चय नयने मतें जीव छेद्यो छेदाय नहीं अने भेद्यो भेदाय नहीं सत्तायें शाश्वतो सिद्ध समान छे, अने व्यवहारनयने मतें तो एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चौरिंद्री, देवता, नारकी, मनुष्य, तिर्यंच एम अनेक प्रकारें जीव, गति संबधीया भव करे छे. वली तिहांथी मरण पामे छे. वली तिहांज पाछो जइ उपजे छे. एम अनेक प्रकारें जन्म मरणनां दुःख भोगवे छे, माटें जीव अनेकविध छे तेथी व्यवहार नयने मतें जीव अशाश्वतो कहीयें.

२५ शिष्यः—जीवनां द्रव्यप्राण ते शुं ? अने भावप्राण ते शुं ?

गुरुः—संग्रहनयने मतें तो जे गतिनुं आयु इहां बांध्युं छे ते गतिनां द्रव्य प्राण कहीयें. जो देवतानुं आयु बांध्युं होय, तो तेने द्रव्यदेव कहीयें. तेवारें ते देवतानी गतिनां द्रव्यप्राण थयां, अने जो नारकीनुं आयु बांध्युं होय, तो तेने द्रव्य नारकी कहीयें, तेवारें नरकगतिनां द्रव्यप्राण थयां.

हवे नावप्राण कहे बेः—जे गतिनुं आयु इहां बांध्युं हतुं ते गतिमां जइ उपन्यो, एटले व्यवहारनयने मतें तिहां नावप्राण प्रगट थयां माटे तेने नावप्राण कहीयें. अर्थात् आपणे आगल मनुष्यगतिनुं आयु बांध्युं हतुं ते वारें तिहां मनुष्यगतिनां द्रव्यप्राण हतां अने इहां हमणां मनुष्यगति पणे मनुष्यमां नोगवीयें बैयें, ते नावप्राण कहीयें. ए रीतें द्रव्यप्राण तथा नावप्राणनुं स्वरूप संग्रहनय अने व्यवहारनयने मतें जाणवुं.

वली निश्चय अने व्यवहारनयने मतें द्रव्यप्राण तथा नावप्राणनुं स्वरूप कहे बेः—एटले हमणां इहांनी गति संबंधी जे प्राण नोगवीयें बैयें, ते द्रव्यप्राण कहीयें. अने जे अंतरंग ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य अने उपयोग जे सत्तागतें जीवने रह्यां बे, ते नावप्राण कहीयें.

२६ शिष्यः—वाटें वहेतां जीवनां केटलां प्राण पामीयें ?

गुरुः—द्रव्यथकी तो जे गतिनुं आयु बांध्युं बे, ते गतिनां जेटलां प्राण होय,तेटलां पामीयें. जो एकेंद्रियनुं आयु बांध्युं होय. तो चार प्राण पामीयें, जो बेंद्री, तेंद्रीनुं आयु बांध्युं होय, तो ब, सात प्राण पामीयें, जो चौरिंद्रीनुं आयु बांध्युं होय, तो आठ प्राण पामीयें अने जो पंचेंद्रीनुं आयु बांध्युं होय तो नव,दश प्राण पामीयें. ए रीतें द्रव्यथकी तो जे गतिनुं आयु बांध्युं होय, ते गतिनां तेटलां प्राण पामीयें अने नावथकी आगल्युं आयुष्य जे समयें पूर्ण थयुं, ते समयें आगली गतिनुं द्रव्यआयुखुं सत्तायें बांध्युं हतुं, ते नावपणे उदय थयुं एटले वाटें वहेतां एक समय तथा बे समय लागे, ते वेलायें नाव आउखुं नोगव्युं,तेमाटे वाटें वहेतां नावप्राण एकज पामीयें.

२७ शिष्यः—जीवने व्यवहारथकी नित्य कहीयें बैयें तेमज व्यवहारथकी अनित्य पण कहीयें बैयें, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—जे गतिमां जीव बेठो बे ते गतिमां व्यवहार थकी नित्य कहीयें अने समयें समयें आयु घटे बे तेणें करी व्यवहारथकी अनित्य पण कहीयें.

२८ शिष्यः—जीवने निश्चेंथकी नित्य कहीयें बैयें तेमज निश्चें थकी अनित्य पण कहीयें बैयें तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—द्रव्यथकी जीव असंख्यातप्रदेशी शाश्वतो नित्य बे,तेथी नित्य कहीयें अने पर्यायथकी तो समय समय अनंतो उत्पाद व्ययरूप अगुरु लघु

पर्याय हानि वृद्धि करे बे, माटे अनित्य कहीयें,ए रीतें निश्चयथकी नित्यानित्यनुं स्वरूप जाणवुं. एम जीवनुं स्वरूप सामान्य प्रकारें कह्युं.

शिष्यः—जीवनुं स्वरूप तो कह्युं पण अजीवनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

गुरुः—अजीवनो मूल नेद तो एक बे अने उत्तरनेद चौद बे तथा नेदांतर तो पांचशे ने शाठ बे तेमां पण पांचशेने त्रीश नेद तो रूपी बे अने त्रीश नेद अरूपी बे, एनुं विशेष स्वरूप गुरुमुखथकी नली रीतें जाणवुं.

२ए शिष्यः—पुज्ञल, पुज्ञलने नथी ग्रहण करतां ते कया नयें करीने? तथा पुज्ञल, पुज्ञलने ग्रहण करे बे ते कया नयें करीने ?

गुरुः—निश्चयनयें करी पुज्ञल परमाणुआ मली खंध थता नथी जो निश्चयनयें करी परमाणुआ मली खंध थता होय, तो ते खंध कोइ वारें विखरायज नहीं अने व्यवहार नयें पुज्ञल परमाणुआ मली खंध थाय बे ते पाबा विखरे पण बे, ते माटे व्यवहारनयें करी पुज्ञल पुज्ञलने ग्रहे बे अने निश्चयनयें करी पुज्ञल पुज्ञलने ग्रहण नथी करता ए परमार्थ जाणवो.

३० शिष्यः—जीव पुज्ञलने ग्रहण करे बे, ते कया नयें करीने ग्रहण करे बे ? अने जीव पुज्ञलने नथी ग्रहण करतो ते कया नयें करीने ?

गुरुः—व्यवहार नयने मतें जीव, राग द्वेषरूप अशुन्न परिणामें करी समय समय अनंता कर्मवर्गणाना पुज्ञल ग्रहे बे अने निश्चयनयने मतें तो जीव स्वसत्ताने ग्रहण करे बे परंतु जो निश्चय नयने मतें जीव, कर्मपुज्ञलने ग्रहण करतो होत तो कोइकालें सिद्धि पामत नही ते माटें निश्चयनयने मतें जीव पोतानी सत्ताने ग्रहण करे बे अने व्यवहार नयनें मतें जीव, कर्मपुज्ञलनुं ग्रहण करे बे ए रीतें जीव तथा अजीव, ए बे तत्त्व ज्ञेय एटले जाणवा योग्य बेः तेनो परमार्थ संक्षेपमात्र कह्यो.

३१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी उपादेय एटले आदरवा योग्य केटलां तत्त्व बे?

गुरुः—नव तत्त्वमां त्रण तत्त्व आदरवा योग्य बे, केम के जीव पोताना स्वरूपमां रमे, तेवारें संवर कहियें अने जेवारें जीव संवरमां रहे तेवारें समय समय अनंतां कर्मनी निर्जरा करे बे अने जेवारें निर्जरा थाय, तेवारें जीव मोक्षपद पामे माटे संवर, निर्जरा अने मोक्ष, ए त्रण तत्त्व उपादेय बे.

३२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यजीवमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—"अणुवउंगोदवं" ए अनुयोगद्वार सूत्रनुं वचन बे एटले शब्द

नयने मतें जेने स्वपरनी वेंचणरूप उपयोग वर्त्ततो नथी तेने अनुपयोगी द्रव्य जीव कहीयें, तेमां छ तत्त्वपामीयें. ते मध्ये एक तो जीवतत्त्व अने सत्तायें पुण्य पापनां दलीयां अजीवरूप अनंतां लागी रह्यां छे, ते आश्रवभूत जाणवां. एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप अने आश्रव, ए पांच तत्त्व थयां. अने ए दलीये जीव बंधाणो छे माटे छठुं बंधतत्त्व पण छे, ए रीतें द्रव्य जीवमां नव तत्त्व मांहेलां छ तत्त्व जाणवां.

३३ शिष्यः—नव तत्त्व मांहेला भावजीवमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः— भावजीवमां आठ तत्त्व पामीयें. तथा नव तत्त्व पण पामियें. अने त्रण तत्त्व पण पामीयें. तेमां प्रथम आठ तत्त्व आवी रीतें पामीयें:— के " उवउगोभावं " ए अनुयोगद्वार सूत्रनुं वचन छे. एटले जे जीवने शब्द नयने मतें स्व परनी वेंचणरूप स्वरूपभोग उपयोग वर्त्ते छे, तेने उपयोगी भावजीव कहीयें. तेमां आठ तत्त्व पामीयें. तेनां नाम कहे छे. एक तो जीव अने सत्तायें पुण्य पापनां दलीयां अजीवरूप अनंतां रह्यां छे, ते आश्रव भूत जाणवां, एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप अने आश्रव, ए पांच तत्त्व थयां, अने ए दलीये जीव बंधाणो छे, माटें छठुं बंधतत्त्व पण थयुं अने स्व परनी वेंचण करी जीव स्वरूपमां रहे, तेवारें तेने सातमुं संवरतत्त्व कहीयें. तथा जीव ज्यां सुधी संवरमां रहे, त्यां सुधी समयें समयें अनंतां कर्मनां दलीयां निर्जरावे, ते आठमुं निर्जरातत्त्व पामीयें. एम आठ तत्त्व पामीयें.

तथा समभिरूढ नयने मतें केवलीने भावजीव कहीयें. तेमां नवे तत्त्व पामीयें. ते आवी रीतें:— एक तो केवलीनो जीव, अने सत्तायें पुण्य पापनां दलीयां अजीव रूप अनंतां रह्यां छे ते आश्रवप्राय जाणवां एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप अने आश्रव, ए पांच तत्त्व थयां. ए दलीयायें केवलीने बांधी राख्या छे, तेथी मोक्षपुरीयें जतां रोकाणा वे, माटे ए छठुं बंधतत्त्व जाणवुं. अने स्वसत्ता तथा परसत्तानी वेंचण करी शुक्लध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या थका स्वरूपमां वर्त्ते छे ते सातमुं संवर तत्त्व छे, अने संवरमां रहेतां समयेंसमयें अनंतां कर्म निर्जरावे छे, ते आठमुं निर्जरा तत्त्व छे, अने निर्जरा थइ तेवारें बारमे गुणठाणे अज्ञान, राग, द्वेष अने मोहनीय कर्म खपावीने तेरमे गुणठाणे केवलज्ञान पाम्या छे एटले एमने द्रव्यथी मोक्ष पद कहीयें. ए नवमुं मोक्ष तत्त्व थयुं. ए रीतें नव तत्त्व पामीयें.

तथा एवंभूत नयने ममें सिद्धने भावजीव कहीयें तेमां त्रण तत्त्व पामीयें, ते आवी रीतें:—एक तो सिद्धनो जीव पोतें जीवतत्त्व छे, तथा यथाख्यात चारित्ररूप गुणें करी पोताना स्वरूपमां रमण करे छे ते बीजुं संवर तत्त्व कहीयें. अने भावमोक्ष पद पाम्या छे, ते त्रीजुं मोक्षतत्त्व कहीयें. एम एवंभूत नयने मतें सिद्धभावजीवमां त्रण तत्त्व पामीयें. ए परमार्थ.

३४ शिष्यः—नव तत्त्व मांहेला मिथ्यात्वी जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें? गुरुः—मिथ्यात्वीने द्रव्यजीव कहीयें.तेमांआगल कह्यांतेरीतें छ तत्त्व पामीयें.

३५ शिष्यः—नव तत्त्व मांहेलां समकेतीजीवमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—समकेती जीवमां आठ तत्त्व पामीयें, नव तत्त्व पण पामीयें, अने त्रण तत्त्व पण पामीयें, तेमां आठ तत्त्व आवी रीतें:—शब्द नयने मतें स्वपरनी वेंहचण करी सत्तागतना उपयोगमां जेनो भाव वर्त्ते छे, तेने समकेती जीव कहीयें. तेमां आगल भावजीवमां कह्यां तेज रीतें आठ तत्त्व पामीयें.

तथा समभिरूढ नयने मतें केवली भगवान् पण क्षायिक समकेतवंत छे तेमां आगल भावजीवमां कह्यां तेज रीतें नव तत्त्व पामीयें.

तथा—एवंभूत नयने मतें सिद्ध भगवान् पण क्षायिक समकेती छे तेमां आगल कह्यां ते रीतें अहिंआं पण त्रण तत्त्व जाणी लेवां, ए रीतें नव तत्त्वमांथी समकेती जीवमां आठ, नव अने त्रण तत्त्वनुं स्वरूप जाणवुं.

३६ शिष्यः— नव तत्त्व मांहेला अभव्य जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—अभव्यजीवमां आगल द्रव्य जीवमां कह्यां ते रीतें छ तत्त्व पामीयें.

३७ शिष्यः—ए नव तत्त्व मांहेला भव्य जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—भव्यजीवमां छ तत्त्व, आठ तत्त्व, नव तत्त्व अने त्रण तत्त्व पण पामीयें,ते आवी रीतें के, जे भव्यजीव मिथ्यात्वी होय, तेमां आगल द्रव्यजीवमां कह्यां ते रीतें छ तत्त्व पामीयें अने जे भव्यजीव समकेती होय तेमां आगल कह्या प्रमाणें आठ तत्त्व पामीयें तथा केवलीभव्यजीवमां आगल कह्या प्रमाणें नव तत्त्व पामीयें अने सिद्धने पण भव्यजीव कहीयें, तेमां आगल कह्या प्रमाणे त्रण तत्त्व पामीयें. ए रीतें द्रव्यजीव, भावजीव, मिथ्यात्वी जीव, समकेती जीव, अभव्य जीव अने भव्य जीव, ए छ प्रकारें जीवनुं स्वरूप सामान्यें करीजाणवुं. एवुं सांभली शिष्य प्रश्न करे छे. शिष्यः—तमें केवली भगवान्ने तथा सिद्ध भगवान्ने भव्य जीव कह्या, तो हजी शुं सं

सारमां जव करवा बाकी रह्या ढे ? गुरुः—ए वचन मूर्खापणानुं बोले ढे, जे कारणे जेने पलटण स्वजाव ढे तेने जव्य स्वजाव कहीयें. अने अपलटण स्वजावने अजव्यस्वजाव कहीयें माटे केवलीने तथा सिद्धने तो समय समय अनंता पर्यायनो उत्पाद व्ययरूप स्वजाव पलटाइ रह्यो ढे,तेणें करी अनंतुं सुख जोगवे ढे, तेमाटें एमां जव्य स्वजाव जाणवो.

३७ शिष्यः—ए नव तत्त्व मांहेला रूपी अजीवमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—कोइ जीवने सत्तायें पुण्य अने पापनां दलीयां आश्रवरूप अनंतां लागां ढे, ते सर्व दलीयां अजीव ढे माटे पुण्य, पाप,आश्रव अने अजीव, ए चार तत्त्व थयां अने ए दलीयां मली बंधाय ढे एटले पांचमुं बंधतत्त्व पण थयुं. एम रूपी अजीवमां पांच तत्त्व पामीयें.

३७ शिष्यः—ए नव तत्त्व मांहेला पुण्यमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—कोइ जीव पुण्य बांधे, तेवारें चार तत्त्व पामीयें, ते आवी रीतें जे पुण्यनां दलीयां पोतें अजीव ढे, ते आश्रवरूप जाणवां एटले पुण्य, अजीव अने आश्रव, ए त्रण तत्त्व थयां. तथा ए दलीयां मली बंधाय ढे ते चोथुं बंधतत्त्व थयुं. ए रीतें पुण्यमां चार तत्त्व पामीयें.

४० शिष्यः—ए नव तत्त्व मांहेला पापमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरु—कोइ जीव जेवारें पाप बांधे, तेवारें चार तत्त्व पामीयें, ते आवी रीतें:— पापनां दलीयां पोतें अजीवरूप ढे ते आश्रवरूप जाणवां एटले पाप, अजीव अने आश्रव, ए त्रण तत्त्व थयां अने ए पापनां दलीयां मली बंधाय ढे ते चोथुं बंधतत्त्व थयुं. ए रीतें पापमां चार तत्त्व जाणवां.

४१ शिष्यः— नव तत्त्वमांहेला आश्रवमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—जेवारें जीव, आश्रवनुं ग्रहण करे, तेवारें पांच तत्त्व पामीयें, ते आवी रीतें:—पुण्य अने पापनां दलीयां अजीवरूप ढे ते पण आश्रव प्राय जाणवां. एटले पुण्य, पाप,अजीव अने आश्रव, ए चार तत्त्व थयां अने ए दलीयां मली बंधाय ढे, ते पांचमुं बंधतत्त्व जाणवुं.

४२ शिष्यः— नव तत्त्व मांहेला संवरमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—जेवारें जीव स्वपरनी वेंचणरूप स्वजावमां आवे, तेवारें संवर कहेवाय, अने संवरमां जेटली वार जीव रहे, तेटली वार निर्जरा पण अवश्य करे एटले जीव, संवर अने निर्जरा, ए त्रण तत्त्व संवरमां पामीयें.

४३ शिष्यः— नव तत्त्व मांहेला निर्ज्जरामां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः— जेवारें जीव तत्त्वातत्त्व विचाररूप उपयोगमां वर्त्ते, तेवारें संवर कहीयें अने संवरमां जीव रहे, तिहां सुधी समय समय अनंता कर्मनी निर्ज्जरा करे एटले जीव, संवर अने निर्ज्जरा, ए त्रण तत्त्व निर्ज्जरामां पामीयें.

४४ शिष्यः— नव तत्त्वमांथी बंध तत्त्वमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—कोई जीव कर्म बांधे तेवारें पुण्य, पाप अने आश्रव तेनां दलीयां होय, तेने अजीव कहीयें. ते दलीयां कर्मरूप मली सर्व बंधाय छे. ए रीतें पुण्य, पाप, आश्रव, अजीव अने बंध, ए पांच तत्त्व बंधमां पामीयें.

४५ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी द्रव्यमोक्षपदमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—द्रव्यमोक्षपद तो अज्ञान, राग, द्वेष अने मोहनीय कर्मनो बारमे गुणठाणे क्षय कर्यो अने तेरमे गुणठाणे केवल ज्ञान पाम्या एवा केवली भगवान् तेने द्रव्यमोक्षपद कहीयें, तेमां तो ए नवे तत्त्व पामीयें. ते आवी रीतें:—एक तो केवली भगवाननो जीव ते पोतें जीवतत्त्व छे अने तेने सत्तायें पुण्य पापनां दलीयां अजीवरूप अनंतां रह्यां छे, ते आश्रवरूप जाणवां. एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप अने आश्रव, ए पांच तत्त्व थयां. अने ए दलीये केवलीने बांधी राख्या छे, तेणें करी मोक्षमां जतां रोकाणा छे माटे छठ्ठुं बंधतत्त्व थयुं अने स्वसत्ता परसत्तानी वेंचण करी शुक्लध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या थका स्वरूपमां वर्त्ते छे,ते सातमुं संवरतत्त्व थयुं अने संवरमां रहेतां समय समय अनंतां कर्म निर्ज्जरावे छे, ते आठमुं निर्ज्जरातत्त्व कहीयें तथा अज्ञान, राग, द्वेष अने मोहनीय कर्म बारमे गुणठाणे खपावीने द्रव्यमोक्षपद पाम्या छे, ते नवमुं मोक्ष तत्त्व कहीयें. ए रीतें द्रव्यमोक्षपदमां नवे तत्त्व पामीयें.

४६ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी भावमोक्षपदमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—भावमोक्षपदमां त्रण तत्त्व पामीयें, केम के जे समस्त कर्मक्षय करीने लोकनी अंतें बिराजमान वर्त्ते, तेने भावमोक्षपद कहीयें. तेमां एक तो जीवतत्त्व अने यथाख्यात चारित्ररूप गुणें करीने पोताना स्वरूपमां रमण करे छे ते बीजुं संवर तत्त्व कहीयें अने भाव मोक्षपद पाम्या छे ते त्रीजुं मोक्ष तत्त्व जाणवुं. ए भावमोक्षपदमां त्रण तत्त्व जाणवां. ए रीतें ए नव तत्त्वनुं स्वरूप जे जाणे, तेने ज्ञानी कहीयें अने जे अंतरंग प्रतीते सर्द

हे, तेने समकेती कहीयें. एवा समकेत सहित जे जीव बे,तेनी सर्वं करणी लेखे बे, एवुं सांजलीने फरी शिष्य पूबे बे.

४७ शिष्यः—ए नवतत्त्वमां मूल तत्त्व केटलां पामीयें ?

गुरुः—मूलतत्त्व तो एक जीव अने बीजो अजीव ए बे तत्त्व पामीयें. तिहां जीवमां चार तत्त्व थाय,ते आवी रीतेंः—जीव, जेवारें स्वसत्ता अने परसत्तानी वेंचण करी स्वरूपमां रमे, तेवारें संवर कहीयें, अने संवरमां जीव वर्त्ते, तेवारें समय समय अनंतां कर्म निर्ज्जरावे, तेथी निर्ज्जरा तत्त्व थाय. ते निर्ज्जरा थाय तेवारें मोक्ष पामे,ए रीतें जीव, संवर, निर्ज्जरा अने मोक्ष ए चार तत्त्व जीवमां जाणवां. अने अजीवमां पांच तत्त्व थाय ते कहे बे.

पुण्य अने पापरूप जे आश्रवनां दलीयां बे ते अजीव कहीयें. अने ए दलीयां मली बंधाय बे ते बंध कहीयें एटले पुण्य, पाप, आश्रव, अजीव अने बंध, ए रीतें अजीवमां पांच तत्त्व थाय, एटले जीवमां चार अने अजीवमां पांच मली नव तत्त्व बे, अने मूल तत्त्व बे जाणवां.

४८ शिष्यः—पूर्वें कहेलां मूल बे तत्त्वनां उत्तर तत्त्व केटलां पामीयें ?

गुरुः—गाथा ॥ जीवाजीवा पुंस्नं, पावासव संवरो य निज्जरणा ॥ बंधो मुस्को य तहा, नव तत्ता हुंति नायवा ॥१॥ अर्थः—एक(जीव के०)जीव तत्त्व बीजुं (अजीवा के०) अजीवतत्त्व, त्रीजुं (पुस्नं के०) पुण्यतत्त्व, चोथुं (पाव के०) पाप तत्त्व, पांचमुं (आसव के०) आश्रव तत्त्व, बठुं (संवरो के०) संवर तत्त्व, (य के०) वली सातमुं (निज्जरणा के०) निर्ज्जरा तत्त्व, आठमुं (बंधो के०) बंधतत्त्व, नवमुं (मुस्को के०) मोक्षतत्त्व, ए (नवतत्ता के०) नव तत्त्व (हुंति के०) होय ते (नायवा के०) निपुणबुद्धियें करी जाणवां. एटले ए नवतत्त्व निपुण बुद्धियें करीने जाणे, ते ज्ञानी जाणवा अने ए नव तत्त्व अंतरंग प्रतीतें करीने सद्दहे तेने समकेती जाणवा. माटें ए नवतत्त्वनुं स्वरूप अनेक रीतें जिन्न जिन्न प्रकारें गुरुमुखथी धारवुं, केम के जे प्राणीने ए जीवादिक नव पदार्थनुं जाणपणुं बे, तेने समकेती कहीयें अने समकेत विना अज्ञान दशायें करी सर्व करणी आंक विनानां मींडांसरखी व्यर्थ जाणवी एटले अज्ञानी जीव जीवस्वरूपना उपयोग विना द्रव्य जीव बे "अणुवउगोदवं" इति अनुयोग द्वार सूत्रवचनात् ॥

एटले पूजा, प्रजावना, दान, शील, तप, क्रिया, ध्यान, स्मरण, ज्ञा

न, ए सर्व ज्ञावनिक्षेपे समकित सहित लाजकारी छे. अहीयां कोइ कहे छे जे मनःपरिणाम दृढ करीने करीयें ते ज्ञाव कहीयें ए वचन मृषा छे. एतो सुखनी वांछायें ममत्वी पणे घणाय करे छे परंतु ते ज्ञावमां गणाय नहीं. इहां तो जे सूत्र साखें श्री वीतरागनी आज्ञायें हेय उपादेयनी परीक्षा करी शुज्ञाशुज्ञ अजीव रूप जे आश्रव बंध ते उपरें (हेय के०) त्यागबुद्धि तथा जीवना स्वगुण, संवर, निर्ज्जरा अने मोक्ष, तेने (उपादेय के०) आदरवा योग्य परिणाम ते ज्ञाव कहीयें. एटले शुज्ञाशुज्ञरूपी गुण ते द्रव्य छे, अने अरूपी गुण ते ज्ञाव छे. एटले जे कारण मन, वचन अने कायाथी लेश्यादिकें एक चित्तें करे छे पण ते सर्व, द्रव्यनिक्षेपामां छे माटे ज्ञाव विनानुं द्रव्य छे ते सर्व अंक विनानां मीडां सरखुं वृथा जाणवुं. ए श्री देवचंद्रजी कृत आगमसारोद्धार ग्रंथथी परमार्थ जाणवो. अत्र सूत्रपाठः ॥ ॥गाथा॥ मेरुस्स सरिसवस्सय, जित्तीय मित्तं तु अंतरं होइ ॥ दवछ य ज्ञावछय, अंतरमिह तत्तियं नेयं ॥ १ ॥ अर्थः—मेरुपर्वत अने सरशवना दाणाने जेटलुं अंतर होय, तेटलुं द्रव्य अने ज्ञावमां अंतर जाणवुं माटे समकेतज्ञावविना सिद्धपद न पामे.

श्लोक ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ध्यानं दुःखनिधानमेव तपसां संतापमात्रं फलं, स्वाध्यायोपि हि बंधएव कुधिया तेऽज्ञिग्रहाः कुग्रहाः ॥ अश्लाघ्या खलु दानशीलतुलना तीर्थादियात्रा वृथा,सम्यक्त्वेन विहीनमन्यदपि यत्तत्सर्वमंतर्गडुः ॥ १ ॥ अर्थः—सम्यक्त्व विना ध्यान ते दुःखनोजनिधान एटले जंमार छे, एम जे तप छे ते पण संतापरूप मात्र छे अर्थात् कष्टरूप छे, सद्याय ध्यान छे, ते पण हि इति निश्चयें एटले निश्चयनयें करीने बंदीखाना रूप छे, (कुधिया के०) माठी बुद्धियें करीने जे कोइ अज्ञिग्रह लेवा तेतो कुग्रह एटले माठा ग्रह बरोबर छे तथा निश्चें दान, शील आदि देइ परिणामनी तुलना ते सर्व (अश्लाघ्या के०) अप्रशंसनीय छे, वली तीर्थ प्रमुखनी यात्रा करवी ते पण वृथा छे, समकेतें करीने हीनथको जो एटलां काम करे, तो ते सर्व शरीरमां गडगूंबड तुल्य छे, एटले दुःखरूप छे एथी कांइ गरज सरे नही कदापि नवग्रैवेयकें जाय, तो पण गरज सरे नही. समकेत विना सिद्धपद न पामे, ए परमार्थ जाणवो.

४ए शिष्यः— नव तत्त्वनां ज्ञेदांतर तत्त्व केटलां पामीयें?

गुरुः– नेदांतर तत्त्व (२७६) पामीयें ॥ अत्र गाथा ॥ चउदस चउदस बाया, लीसा बासीय हुंति बायाला ॥ सत्तावन्नं बारस, चउ नव नेया कमे णेसिं ॥ १ ॥ अर्थः– जीव तत्त्वना चउद नेद, अजीवना चउद, पुण्यना बहेंतालीश, पापना ब्यासी, आश्रवना बहेंतालीश, संवरना सत्तावन, निर्जराना बार, बंधना चार अने मोक्षना नव, एवं सर्व मली (२७६) नेद छे, तेने नेदांतर कहीयें. तेनो विस्तारें परमार्थ, गुरुमुखथी जाणवो.

५० शिष्यः–नव तत्त्वमां अरूपी तत्त्व अने रूपी तत्त्व केटलां पामीयें ?

गुरुः–एक जीवतत्त्व, बीजुं संवरतत्त्व, त्रीजुं निर्जरातत्त्व, चोथुं मोक्ष तत्त्व, ए चार अरूपी जाणवां अने एक पुण्यतत्त्व, बीजुं पापतत्त्व, त्रीजुं आश्रव तत्त्व, चोथुं बंधतत्त्व, ए चार रूपी जाणवां अने एक अजीव तत्त्व मिश्र जाणवुं. उक्तं च ॥ गाथा ॥ जीवो संवर निज्जर, मुक्को चत्तारि हुंति अरूवी ॥ रूवे बंधासव पुण, पावा मिस्स हुंति अजीवा ॥ १ ॥ इति ॥

५१ शिष्यः–ए नव तत्त्वना बशेंने बहोंतेर नेद छे, तेमां अरूपी नेद केटला पामीयें अने रूपी नेद केटला पामीयें?

गुरुः–धर्मास्तिकायना खंध, देश अने प्रदेश, ए त्रण नेद तथा अधर्मास्तिकायना खंध, देश अने प्रदेश, ए त्रण नेद तथा आकाशास्तिकायना खंध, देश अने प्रदेश, ए त्रण नेद अने कालनो एक नेद, ए सर्व मली दश नेद, अजीव तत्त्वना अरूपी जाणवा, अने संवरना सत्तावन नेद, निर्जराना बार नेद, मोक्षना नव नेद, ए सर्व मली अठ्ठाशी नेद अरूपी जाणवा. हवे रूपी नेद कही देखाडे छे, पुजलना खंध, देश, प्रदेश अने परमाणु ए चार नेद, जीवना चौद नेद, पुण्यना बहेंतालीश नेद, पापना ब्याशी नेद, आश्रवना बहेंतालीश नेद, बंधना चार नेद, ए रीतें सर्व मली (१७७) नेद रूपी जाणवा. एनी साथें पूर्वोक्त (७७) नेद अरूपी मेलवीयें तेवारें सर्व मली नवे तत्त्वना (२७६) नेद थाय. एटले आगला प्रश्नमां जीवने अरूपी कही बोलाव्यो ते निश्चय नयने मतें जाणवो अने आ ठेकाणें नव तत्त्वना (२७६) नेदमां जीवना चौदनेद रूपीपणे गण्या ते व्यवहार नयने मतें जाणवुं ॥ गाथा ॥ धम्माधम्मागासा, तिय तिय अद्धा अजीव दसगा य ॥ सत्तावन्नं संवर, निज्जर डुदस मुत्ति नवगा य ॥ १ ॥ अठ्ठासीय अरूवी, संपइ नसामि जेय रूवीणं ॥ परमाणु देस पएसा, खंधा चउ अजीव रूवीणं ॥ २ ॥

जीवे दस चउ डु चउ, बासी बायाला हुंति चत्तारी ॥ सय अडासी रूवी, डुसय बसत्त नव तत्ते ॥ ३ ॥ ए रीतें ए सूत्रनी त्रण गाथा मध्यें (२७६) भेदमां रूपी अरूपीनो विचार जाणी लेवो.

५२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी निगोदना जीव आश्री केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—एक तो जीव तत्त्व अने सत्तायें पुण्य पापनां दलीयां ते अजीव रूप अनंतां लागां बे ते आश्रवभूत जाणवां एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप अने आश्रव, ए पांच तत्त्व थयां अने ए दलीये जीव बंधाणो बे, ते बहुं बंधतत्त्व जाणवुं. ए निगोदीया जीवमां ब तत्त्व जाणवां.

५३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी नरकगतिना जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—नरकगतिमां जे मिथ्यात्वी जीव ते आश्रयी तो ब तत्त्व पामीयें, एक जीव अने सत्तायें पुण्य पापरूप अजीवनां अनंतां दलीयां आश्रवभूत थइ लागां बे ए पांच तत्त्व थयां अने ए दलीये जीव बंधाणो बे ते बहुं बंधतत्त्व थयुं, ए रीतें मिथ्यात्वी जीव आश्रयी ब तत्त्व जाणवां अने नरकगति मध्ये जे समकेती जीव बे, ते आश्रयी आठ तत्त्व पामीयें, एमां ब तो पूर्वोक्त मिथ्यात्वी जीवनी परें जाणवां अने समकेती जीव तत्त्वातत्त्वविचाररूप स्वपरनी वेंचण करी स्वरूपमां रहे, एटले संवर कहीयें तथा संवरमां जीव रहे. तिहां सुधी समय समय अनंती निर्जरा करे,ते निर्जरा, ए रीतें समकेती जीव आश्रयी आठ तत्त्व पामीयें. ए परमार्थ जाणवो.

५४ शिष्यः—नवतत्त्वमांथी भरतक्षेत्रें मनुष्यगति आश्रयी केटलांतत्त्व पामीयें.

गुरुः—भरतक्षेत्रमां समकेतीजीव आश्रयी आठ तत्त्व आगल कह्यां ते रीतें जाणवां अने मिथ्यात्वीजीव आश्रयी ब तत्त्व आगलकह्यां ते रीतें जाणवां,

५५ शिष्यः- नवतत्त्वमांथीमाहाविदेहक्षेत्रेंमनुष्यआश्रयीकेटलांतत्त्वपामीयें.

गुरुः—माहाविदेहक्षेत्रें मिथ्यात्वी जीव बे, ते आश्रयी ब तत्त्व अने समकेति जीव आश्रयी आठ तत्त्व आगल कह्यां ते रीतें जाणवां अने तिहां केवली भगवान् बे ते आश्रयी नव तत्त्व आगल कह्यां ते रीतें जाणवां.

५६ शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथी तिर्यंचगतिआश्रयी केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—तिर्यंच जीव एक राजलोकमां बे माटे समकेती तिर्यंच जीव आश्रयी आठ तत्त्व आगल कह्यां ते रीतें पामीयें अने मिथ्यात्वी तिर्यंच जीव आश्रयी ब तत्त्व आगल कह्यां ते रीतें पामीयें.

५७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी व्यंतर, ज्ञवनपति, ज्योतिषी, वैमानिक अने नवग्रैवेयकना देवगति आश्रयी देवोमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—मिथ्यात्वी देवआश्रयी ७ तत्त्व अने समकेती देव आश्रयी आ ठ तत्त्व पामीयें. एनो परमार्थ आगल कह्यो, ते रीतें जाणवो.

५८ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी पंचानुत्तर देव आश्रयी केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः— पांच अनुत्तर विमानमां तो सर्व समकेतदृष्टि देव जाणवा माटे तेमां आगल कह्यां ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें.

५९ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी ईषत्प्राग्ज्ञार नामें पृथ्वीना जीवो आश्रयी केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—ईषत् प्राग्ज्ञार नामें पृथिवी ते सिद्धशिला जाणवी. तिहां निगोदी या मिथ्यात्वी जीब बे ते आश्रयी आगल कह्यां, ते रीतें ७ तत्त्व पामीयें अने तिहां सिद्ध परमात्मा रह्या बे ते आश्रयी त्रण तत्त्व पामीयें.

६० शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यसमकेती जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—द्रव्य समकेती जीव पहेले गुणठाणें कहीयें. माटे एमां मिथ्यात्वी जीवनी परें ७ तत्त्व पामीयें. कारण के देवदर्शन, पूजा, उत्सव, ज्ञक्ति, संघ यात्रा, साहम्मीवत्सल आदिक अनेक करणी समकेतीनी करे बे, तथा देव ते अरिहंत, गुरु ते सुसाधु अने धर्म केवलीनो ज्ञांख्यो आदरे बे, कुदेव, कुगुरु, अने कुधर्मने परिहर्या बे, तथापि तादृश जीव अजीवनी उलखाण करी नथी स्वसत्ता परसत्तानी प्रतीति करी नथी, नव तत्त्व अने षड्द्रव्यनुं जाण पणुं गुरु मुखें कर्युं नथी माटे द्रव्य समकेती जीव पहेले गुणठाणे जाणवा.

६१ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी ज्ञावसमकेतीमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—शब्दनयने मतें जेना परिणाम वर्त्तता होय, ते ज्ञावसमकेती जीव चोथा गुणठाणाथी मांमीने यावत् दशमा बारमा गुणठाणा पर्यंत जाणवा. एटले जेणें जीव, अजीव, नव तत्त्व अने षड्द्रव्यनुं जाणपणुं करी स्वसत्ता परसत्तानी प्रतीति करी बे अने साध्य एक, साधन अनेक, जे समकेतनी क रणीरूप यात्रा, दर्शन, प्रज्ञावना, पूजा, ज्ञक्ति, साहम्मीवत्सल, संघयात्रा, तीर्थयात्रा प्रमुख करे बे तथा निश्चयदेव, व्यवहारदेव, निश्चयगुरु, व्यवहार गुरु, निश्चयधर्म, व्यवहारधर्म, ए रीतें जेणें सत्तागतें प्रतीति करी बे एवा ज्ञाव समकेती जीवमां आठ तत्त्व पामीयें, एक तो जीव अने सत्तायें पुण्य पापनां

दलीयां अजीवरूप अनंतां लाग्यां छे ते आश्रवभूत जाणवां. एटले जीव, अजीव,पुण्य,पाप अने आश्रव,ए पांच तत्त्व जाणवां अने ए दलीये जीव बंधाणो छे, ते छठुं बंधतत्त्व तथा जीव अजीवरूप स्वपरनी वेंचण करी स्वरूपमां रहे ते सातमुं संवरतत्त्व अने संवरमां रहे त्यां सुधी समयसमय अनंती निर्जरा करे, ते आठमुं निर्जरा तत्त्व.ए रीतें जावसमकेतिजीवमां आठ तत्त्व पामीयें तथा केवलीने समजिरूढ नयने मतें जाव समकेती कहीयें. तेमां आगल कह्या प्रमाणे नवे तत्त्व पामीयें. तथा सिद्धपरमात्माने एवंजूतनयने मतें जाव समकेती कहीयें. तेमां आगल कह्या प्रमाणे त्रण तत्त्व पामीयें. ए रीतें जावसमकेती जीवमां आठ, नव अने त्रण तत्त्व पाम्यानुं स्वरूप जाणवुं.

६१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी ड्रव्यलिंग श्रावकमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—ड्रव्यलिंग श्रावक तो जे ऋजुसूत्र नयने मतें पहेले गुणठाणे होय ते जाणवा जो पण तेना संसारउदासी, विषयसुखथी विरक्तजाव परिणाम वर्त्ते छे. वैराग्यजावनायें चित्त वर्त्ते छे. अने श्रावकना बार व्रत रूप लिंग अंगीकार कर्युं छे, तोपण तादृश जीव अजीवनी उंलखाण करी नथी, तथा स्वसत्ता परसत्तानुं जासनरूप जाणपणुं कर्युं नथी माटे ते जीव यथाप्रवृत्तिकरणमां वर्त्तता पहेले गुणठाणे जाणवा. तेमां आगल कह्यां ते रीतें छ तत्त्व पामीयें.

६२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांहे ड्रव्य श्रावकमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ड्रव्य श्रावक तो समकेतीने कहियें एटले श्रावकनुं ड्रव्य ते समकेती चोथे गुणठाणें जाणवो, तेमध्ये आगल कह्या प्रमाणे आठ तत्त्व पामीयें

६४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांहे जावश्रावकमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—शब्द नयने मतें ए समकेत सहित छे अने श्रावकनां बार व्रत लेवानो जाव उत्कृष्टो वर्त्ते छे, एटले गुणठाणुं तो चोथुं छे पण पांचमा गुणठाणाना जाव वर्त्ते छे तेने जावश्रावक कहीयें. तेमां आठ तत्त्व पामीयें.

६५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जावलिंग श्रावकमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—जावलिंग श्रावक पांचमे गुणठाणे कहीयें एटले आगल समकेत सहित हता, अने श्रावकनां बार व्रत उच्चारी ते रूप लिंग जेणें पहेर्युं छे,तेने जावलिंग श्रावक पांचमे गुणठाणे वर्त्तता कहीयें तेमां आठ तत्त्व पामीयें.

६६ शिष्यः— नव तत्त्वमांथी ड्रव्यज्ञानमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः–द्रव्य ज्ञाननुं जाणपणुं पहेले गुणठाणे कहीयें कारण के अन्यमतनां सर्वशास्त्र प्रत्यें जाणे छे तथा अंतरंग उपयोग विना जैनमतनां सर्व सूत्र प्रत्यें वांचे छे, अर्थ करे छे, पद, अक्षर, मात्रा, शुद्धसिद्धांत, भाष्य, निर्युक्ति, टीका, वांचतां, पूछतां, अर्थ करतां, गुरुमुखें सर्द्दहे छे तो पण शुद्ध निश्चयनयें आत्मसत्ता ओलख्या विना तत्त्वातत्त्वरूप स्वरूपनी प्रतीति कस्या विना ए सर्व द्रव्यज्ञान, पहेले गुणठाणे कहीयें. तेमां छ तत्त्व पामीयें.

६७ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी भावज्ञानमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–शब्दनयने मतें समकेती जीवने भावज्ञान कहीयें तेमां आगल कह्यां ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें अने समभिरूढनयने मतें केवलीने भावज्ञान कहीयें तेमां आगल कह्यां ते रीतें नवे तत्त्व पामीयें तथा एवंभूत नयने मतें सिद्धना जीव भावज्ञानी कहीयें. तेमां त्रण तत्त्व पामीयें,

६८ शिष्यः–नव तत्त्वमांथी क्रोध, मान, माया अने लोभनी चोकडीमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–पहेले गुणठाणे क्रोधादिक चारनो जे जीवने उदय छे तेमां छ तत्त्व पामीयें अने चोथा गुणठाणाथी मांमी छठ्ठा गुणठाणा लगें क्रोधादिक चारनो जे जीवने उदय छे तेमां आठ तत्त्व पामीयें.

६९ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी भावलिंग आचार्यमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–भावलिंग आचार्य छठ्ठे अने सातमे गुणठाणे कहीयें जे कारणे छत्रीश गुणें बिराजमान, सर्व क्रियामां तत्पर, जिनमत परमतनां जाण, सर्व समय सावधान, निश्चयव्यवहार रूप तत्त्वातत्त्वना जाण, गछनायक, गछना धोरी, पंचप्रस्थाने सेवित, सर्व सिद्धांतना जाण, पारंगामी, श्रुत उपयोगी, चरणानंदी, परमतना जीतनार, सारणावारणादिकें करी शिक्षाना दातार, गछनी मर्यादाना राखनार, आठ प्रमादना तजनार, सात विकथाना निवारनार, स्वसत्ता रमणी, परसत्ताथी विरक्त परिणाम, युगप्रधान सरखा, भव्य प्राणीने हितोपदेश करता, अनेक जीवने तारता, परवादीना मद गालवा गंधहस्ती सरखा, भव्यप्राणीना हृदयरूप आरामथकी मिथ्यात्वरूप अंधकार टालवाने विषे दीपक सरखा उद्योतना करनार, आत्मसत्ताना रसीया, अनुभवरूप अमृतकुंममां झीलता, साध्य एक, साधन अनेक, एवा उपयोग सहित साधन करता, अने भव्य प्राणीने पण ए रीतें उपदेश देता, तीर्थं

सात रात्रि, नगरें पांच रात्रि, ग्रामें एक रात्रि ए रीतें उग्रविहारें विचरता, स्वदया परदयाने विषे तत्पर, छठे अने सातमे गुणठाणे जेना परिणामनी तुल्यता वर्त्ते छे एवा भावलिंग आचार्यमां आगल कह्यां ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें.

७० शिष्यः—नव तत्त्वमांथी द्रव्यलिंग आचार्यमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—ए द्रव्यलिंग आचार्य पहेले गुणठाणे जाणीयें कारण के जेणे गुण विना आचार्यनी पदवीनुं लिंग धारण कर्युं छे, आचार्य नाम धरावी अति आडंबरें करी शोभता, मंत्र, यंत्र, भामा औषधियें करी भोला लोकोनां मन रीझवता, पत्रीबंध खोटा रूपैया सरखा, लोक पासें आपणो महिमा करावता पूजाय छे पण यथार्थपणे जीव अजीवनुं जाणपणुं कर्युं नथी अने अंतरंग निश्चयनयें आत्मसत्ता जेणें उलखी नथी तेहने द्रव्यलिंग आचार्य कहीयें तेमां आगल मिथ्यात्व गुणठाणे कह्यां ते रीतें छ तत्त्व पामीयें.

७१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्य आचार्यमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः— साधु पणामांथी आचार्यपणुं नीपजे छे,ते करण माटे आचार्यनुं द्रव्य ते साधु कहीयें अने साधु तो छठे सातमे गुणठाणे वर्त्तता होय तेमां आगल समकेति जीवमां कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें.

७२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी भावआचार्यमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—आचार्यनुं द्रव्य ते साधु होय, परंतु ते गुणें करी आचार्यपदवीने योग्य, वैरागी, त्यागी होय, यद्यपि आचार्य तो नथी तथापि आचार्यना गुणें करी शोभे छे. अने आचार्य पदवी लेवानो भाव वर्त्ते छे तेने भाव आचार्य कहीयें. ते छठे सातमे गुणठाणे वर्त्तता होय तेमां आठ तत्त्व पामीयें.

७३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्य अरिहंतमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—जे अरिहंतनो जीव आगल त्रीजे भवें एकाग्रचित्तें करीने एक पद आराधे, अथवा वीश स्थानक पद आराधे तथा एवी भावना भावे जे सर्व जगतना जीवने शासनना रसीया करी धर्म पमाडी कर्मथकी मूकावुं? अने सर्व जीवने सुखीया करी मोक्ष नगरें पहोंचाडुं? एवा प्रकारनी उत्तम भावना भावी श्रेणिकादि प्रमुखें जिननाम कर्म पुण्य उपार्ज्युं त्यां थकी मांडीने ज्यां लगें केवलज्ञान न उपन्युं होय, त्यां लगें छद्मस्थ अवस्थायें द्रव्यअरिहंत कहीयें तेमां आगल कह्यां ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें.

७४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी भाव अरिहंतमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—नाव अरिहंतमां नव तत्त्व पामीयें, ते कहे छेः—जे देवलोकथी अथवा नरकथकी चवी त्रण ज्ञान सहित मातानी कुखने विषे उपजे, पछी जन्मावसरें छप्पन्न कुमारिका महोत्सव करे, तेवार पछी सौधर्मेंद्र माता पासेंथी मागी पांच रूपे करी अति आडंबरें मेरुउपर लइ जाय तिहां सिंहासन उपर खोले बेसाडी चोशठ इंद्र मली महोत्सव करी पोतानो आत्मा निर्मल करे. पछी पाछा लइ आवी माताजीने आपे. बालावस्थायें क्रीडा करता पछी यौवनावस्थायें माता पिता परणावे, तथापि उदासी नावें संसारनां सुख विलसे. पछी समय अवसरें लोकांतिक देवताने वचने वैराग्य नाव नायें संसार उदासी विषय कषायथकी विरक्तनावें दीक्षा लेवाने मनोरथें दिनप्रत्यें एक क्रोड अने आठ लाख सोनैयानुं दान एक वर्ष पर्यंत आपी अति आडंबरें दीक्षा अवसरें स्वयमेव पोताने हाथे लोच करे, ते वेलायें चोथुं मनःपर्यव ज्ञान उपजे, पछी एकलमल्लपडिमा आदरी जगतमां विहार करता, गाम, नगर, अटवीमां फरता, घोर उपसर्गने सहन करता, अघोर तपें करी कर्मने चूरता, शुक्लध्यानना पायाने ध्यावता, शुद्ध निश्चयनयें करी आत्मसत्ताने गवेषता, आत्मसत्ताना रसीया, अनुनवरूप अमृत कुंडमां फीलता, शुद्ध शुक्लध्यान रूपातीत परिणामें करी घातीकर्मने चूरी केवलज्ञानरूप अनंत चतुष्टय लक्ष्मी जेवारें प्रगट थाय, तेवारें त्रण नवनने विषे उद्योत थयो तेवखत नारकीना जीवने पण एक मुहूर्त्त शाता थाय. पछी त्रिगडाने विषे बेसीने चतुर्विध संघनी स्थापना करी बार पर्षदाने धर्मदेशना देता, अनेक जीवने तारता, पांत्रीश वाणीरूप मधुरध्वनियें करी नव्यप्राणीना मन हरता, कोडीगमे देवतायें सेवित, चोत्रीश अतिशयें करी बिराजमान, आठ महाप्रातिहार्यें करी शोनता, अनेक जीवने संसारसमुद्रथकी तारीने मोक्ष नगरें पहोंचाडता, सुखना दातार, दयाना नंमार, करुणाना समुद्र, नूमंमलने विषे अज्ञानरूप अंधकार चूरवाने सूर्यसमान जाणवा. एवा अरिहंतदेव शुक्लध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या तेरमे गुणठाणे वर्त्तता कहीयें. तेमां आगल कह्यां ते रीतें नव तत्त्व पामीयें.

३५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यसिद्धमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—सिद्धनुं द्रव्य ते केवली कहीयें केम के केवलीमांथी सिद्धपणुं नीपजे छे माटे केवलीमां आगल कह्यां ते रीतें नव तत्त्व पामीयें?

७६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जावसिद्धमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—जावसिद्धमां त्रण तत्त्व पामीयें. केम के शुद्ध शुक्लध्यान रूपातीत परिणाम रूप क्षपकश्रेणीयें करी आत्मप्रदेशथकी कर्मावरणने चूरी जेणें स्वसत्ता निरावरण करी लोकने अग्रजागें बिराजमान, अनंत ज्ञानमय, अनंतदर्शनमय, अनंतचारित्रमय, अनंतवीर्यमय, अनंतदानमय, अनंतलाजमय, अनंतजोगमय, अनंत उपजोगमय, सहजानंदी, पूर्णानंदी, अजर, अमर, अविनाशी, अचलित, अस्खलित, अयोगी, अवेदी, अमोही, अक्लेशी, अणाहारी, अशरीरी, अरक्षक, अव्यापक, एक, असंख्य अनंतगुणें करी विराजमान, परमानंद सुखना विलासी, एवा जावसिद्ध प्रजु तेहमां त्रण तत्त्व पामीयें. एक तो सिद्धनो जीव ते जीवतत्त्व अने यथाख्यात चारित्र रूप गुणें करी पोताना स्वरूपमां रमण करे छे ते बीजुं संवर तत्त्व कहीयें अने जावमोक्ष पदवी पाम्या छे ते त्रीजुं मोक्षतत्त्व जाणवुं.

७७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यचारित्रमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—द्रव्यचारित्री जीव पहेले गुणठाणे होय तेमां छ तत्त्व पामीयें, केम के संसारथकी उदासीजावें जेणें पांच महाव्रत रूप चारित्र अंगीकार कर्युं छे, छकायनी रक्षा करे छे, सूजतो आहार लीये छे, साधुनी क्रिया, पडिक्कमणुं, पडिलेहण आदिक करे छे, निरंतर वैराग्यजावनायें परिणाम वर्त्ते छे, पण यथार्थ पणे जीव अजीवनी उंलखाण करी नथी, अने शुद्धनिश्चयनयें अंतरंग सिद्धसमान आत्मसत्ता उंलखी नथी, अने नरकनिगोदनां दुःखथकी बीहीतो थको अंतरंग पुण्यादिकनी वांछायें निरतिचार पणे चारित्र पाले छे, पण यथार्थ साध्य साधन पणानी उंलखाण नथी; तेने द्रव्य चारित्र पहेले गुणठाणे जाणवुं. तेमां आगल कह्यां, ते रीतें छ तत्त्व पामीयें.

७८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जावचारित्रमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरु—शब्दनयने मतें जावचारित्रवंत जीवमां आठ तत्त्व पामीयें. जे कारणें कोइ जीवें घर, कुटुंब, परिवार, पुत्र, कलत्र, धन, माल, छती ऋद्धिने त्यागी, चारित्र अंगीकार कर्युं छे, पांच समितियें समितो, त्रण गुप्तियें गुप्तो, आठ प्रवचनमाताने पाले छे, सत्तर जेदें संयम आराधे छे, सूजतो आहार लीये छे. मांमलाना पांच दोष टाली आहार करे छे, सांज सवारें पडिक्कमणुं पडिलेहणादिक क्रिया करे छे, संग्रहनयने मतें सर्व जी

वने पोतानी आत्मसत्ता बरोबर करी जाणी तेहनी दया पाले छे, संसार उदासी, वैरागी, त्यागी भावनायें परिणाम वर्त्ते छे अने जीव, अजीव, नवतत्त्व, षड्द्रव्यना गुणपर्याय, नित्य अनित्यादिकनुं जाणपणुं कह्युं छे तथा नव निक्षेपा, प्रमाण, द्रव्य, भाव, निश्चय, व्यवहार, उत्सर्ग, अपवादनुं स्वरूप जाणी, जीवसत्ताने ध्यावे छे, अने अजीवसत्तानो त्याग करे छे, ए रीतें जेणें स्वसत्ता परसत्तानी प्रतीति करी छे. शुद्धनिश्चयनयें करी जेणें सिद्धसमान पोताना आत्मानी प्रतीति करी छे, साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें पोताना अत्माने साधतां छठे सातमे गुणठाणें जे जीव वर्त्ते छे, तेने शब्दनयने मतें भावचारित्रीयो कहीयें. तेमां आगल कह्यां ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें. अने समभिरूढनयने मतें केवलीने पण भावचारित्र कहीयें. तेमां आगल कह्यां ते रीतें नव तत्त्व पामीयें. तथा एवंभूतनयने मतें सिद्धना जीवने पण भावचारित्र कहीयें. तेवां आगल कह्यां ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें.

७ए शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यसाधुमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—साधुनुं द्रव्य ते श्रावक पांचमे गुणठाणे जाणवो, एटले श्रावकमांथी साधुपणुं नीपजे छे, माटे द्रव्यसाधु ते पांचमे गुणठाणे श्रावकने कहीयें, तेमां आगल कह्यां ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें.

७० शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी भावसाधुमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—भावसाधुमां, आठ तत्त्व पामीयें, कारण के जे जीवें समकेत सहित श्रावकनां बार व्रत उच्चर्यां छे अने संसारथकी उदासी वैराग्यरूप परिणामें वर्त्ते छे अने निरंतर साधुपणुं लेवानी भावनायें चित्त रमे छे. तथा एवुं चिंतवे छे जे संसाररूप बंदीखानाथी केवारें हूं छूटीश ? अने निर्विकारी पदनुं आपनार एवुं साधुपणुं केवारें हुं अंगीकार करीश ? अने एकाकी पणे विहार करी डांस मसादि तथा देव मनुष्योना करेला घोर उपसर्ग केवारें सहन करीश ? महातप तपी इंद्रियरूप शत्रुने दमन करी सर्वकर्मने चूरी महारो आत्मा केवारें निरावरण करीश ? ज्ञानरूप अनंत चतुष्टय लक्ष्मी केवारें प्रगट करीश ? एवुं साधुपणुं मने केवारें उदय आवशे ? आ संसाररूप हडमांहेथी नीकली वनमां एकाकी पणे निर्भयथको सिंहनी परें केवारें हुं विचरीश ? ते जीव गृहस्थपणे रह्यो थको पण ऋजुसूत्र नयने मतें भावसाधु जाणवो. अने शब्दनयने मतें अंतरंग स्वसत्ता परसत्तारूप प्रतीति करी

छे एटले गृहस्थपणे पांचमे गुणठाणे छे, पण मनोरथ छठा सातमा गुणठाणाना वर्त्ते छे, माटे एने भावसाधु कहीयें तेमां आठ तत्त्व पामीयें ?

८१ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यलिंग साधुमांहे केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–द्रव्यलिंग साधु पहेले गुणठाणे होय, तेमां आगल कह्यां ते रीतें छ तत्त्व पामीयें. कारण के कोइ जीवें नरक निगोदनां दुःखथकी भय पामीने अथवा देवेंद्र नरेंद्रनी ऋद्धि देखीने तेनी वांछायें मोहगृहीत वैराग्यें अथवा आ भवें इंद्रियसुखनी वांछायें चारित्ररूप लिंग अंगीकार कर्युं छे, पांच महाव्रत सूधां पाले छे, इंद्रिय दमे छे, परिसहना उपसर्गने सहन करे छे, पडिलेहणादि क्रिया शुद्ध करे छे, छता भोग तज्या छे, वैराग्यभावें चित्त वर्त्ते छे, पण तादृश जीव अजीवनुं जाणपणुं कर्युं नथी. अने अंतरंग पुण्यादिकनी वांछारूप परिणाम वर्त्ते छे तथा निश्चयनयें सत्तागतनी उंलखाण नथी. तेणें करी तेने द्रव्यलिंग साधु व्यवहारनयने मतें कहीयें. ने ते संसारी जाणवा.

८२ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी भावलिंग साधुमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–कोइ जीवें संसार थकी उदासिभावें राजऋद्धि, धन, माल, छांरू कुटुंब, परिवारनो मोह मूकी, संसाररूप चारगति थकी उदासी परिणामें चारित्ररूप लिंग अंगीकार कर्युं छे तेहने निवृत्तिचारित्र कहीयें. एटले ते जीव संसारथकी निवर्त्त्यो छे अने प्रवृत्ति चारित्र ते जे साधुनी क्रिया, पडिक्कमणुं, पडिलेहण आदि शुद्ध रीतें करे छे तेने प्रवृत्ति चारित्र कहीयें; पांच महाव्रत सूधां पाले छे, आ भवें तथा परभवें इंद्र नरेंद्रना सुखनी वांछा रहित एक पोतानो आत्मा निरावरण करवाने वास्ते तथा पोताने जन्म मरणनां दुःख थकी मूकाववा निमित्तें एक पोताना आत्मानुंज साधन करे छे ते प्रवृत्ति चारित्र कहीयें अने जीव, अजीव, नव तत्त्व, षड्द्रव्य, नय, निक्षेपा, द्रव्य, भाव, निश्चय, व्यवहार, उत्सर्ग, अपवादनुं स्वरूप जाणी स्वसत्ता परसत्तानी जेणें प्रतीति करी छे, शुद्धनिश्चय नयें करी पोताना आत्मानी सत्ता जेणें उंलखी छे, साध्य एक तेने कर्मथकी रहित निरावरण करवानां, साधन अनेक करणीरूप, ए रीतें पोताना आत्मस्वरूपने साधे, तेने शब्दनयने मतें छठे सातमे गुणठाणे वर्त्तता भावलिंग साधु कहीयें. तेमां आठ तत्त्व पामीयें. ते आवी रीतें:–एक तो तेनो जीव पोतें जीव तत्त्व छे अने सत्तायें पुण्य पापनां दलीयां अजीवरूप अनंतां लाग्यां छे ते आ

श्रवभूत जाणवां. एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप अने आश्रव, ए पांच तत्त्व थयां अने ए दलीये जीव बंधाणो बे, ते बहुं बंधतत्त्व थयुं अने तत्त्वातत्त्व स्वरूप स्वपरनी वेंचण करी स्वरूपमां रहे, एटली वार संवर कहीयें. ते सातमुं संवर तत्त्व तथा संवरमां जीव रहे तिहां सुधी समयसमय अनंती निर्जरा करे, ते आठमुं निर्जरा तत्त्व जाणवुं एणी रीतें भावलिंग साधुमां आठ तत्त्व जाणवां. ए रीतें नव तत्त्वनुं स्वरूप जाणे, तेने ज्ञानी कहियें, अने अंतरंग सद्दहे तेने समकेती कहीयें ॥ इतिश्री बालबुद्ध्यवबोधार्थं नवतत्त्वमयप्रश्नोत्तराणि समाप्तानि ॥ हवे नव तत्त्वना स्वरूपमां मांहोमांहे संबंधनो विचार जाणवा रूप प्रश्नोत्तर लखियें बैयें.

७३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने शत्रुरूप पांच तत्त्व जाणवां कारण के जीवने एकेक प्रदेशें पुण्य पापनां दलीयां अजीवरूप अनंतां लाग्यां बे ते आश्रवभूत जाणवां एटले पुण्य, पाप, अजीव अने आश्रव, ए चार तत्त्व थयां अने ए दलीये जीव बंधाणो थको चारगतिरूप संसारमां अनंता काल थया रखडे बे माटे पांचमुं बंधतत्त्व जाणवुं. ए रीते ए पांच तत्त्व जीवने शत्रुभूत थइने अनादि कालनां लागां बे तेणें करी जीव, चारगतिरूप संसारमां परिभ्रमण करे बे माटें ए नव तत्त्वमां जीवने पांच तत्त्व, शत्रुरूप जाणवां.

७४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने वोलावारूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—पुण्य प्रमुखरूप चार तत्त्व जीवने वोलावा समान जाणवां ते देखाडे बे. एक तो पुण्यतत्त्व बे ते व्यवहारनयने मतें आदरवा योग्य बे, केम के ए पुण्य बे ते जीवने मोक्ष नगरें जातां वोलावा रूप बे, कारण के भवरूप अटवीमां चोराशी लाख जीवायोनिरूप ग्रामने विषे जन्म, जरा, मरण, भय, शोक, पीडा, आधि, व्याधि, माया, मोह, मूर्बा, मिथ्यात्व, अव्रत, कषाय आदिक अनेक मोहराजाना मूकेला सुभट ते जीवने मोक्ष नगरें जातां विघ्न कर्त्ता बे, माटे तिहां पुण्यरूप वोलावो जीवने गवको सहायकारी होय तो जीव, निर्विघ्नपणे मोक्षनगरें पहोंचे तेथी पुण्यतत्त्व व्यवहारनयने मतें जीवने आदरवा योग्य बे, एटले समकेती जीव बे ते पुण्य तत्त्वने वोलावा रूप करी जाणे बे, पण अंतरंग निश्चयें आत्माना गुणरूप पुण्यने नथी जाणतो. जेम कोइ नगरें जावुं होय अने मार्गमां भय घणो होय, तेवारें वा

टमां वोलावो लीधो जोइयें, केमके वोलावो लीधा विना निर्विघ्न पणे प होंचाय नहिं अने जेवारें वांछितपुर नगरें पहोंचे तेवारें वोलावाने शी ख आपे. ते दृष्टांते अहींयां जीवने मोक्ष नगरें जावुं छे अने मार्गें मोह राजाना सुनटोनो नय घणो छे, जेथी पुण्यरूप वोलावो जो साचो ठावको होय, तो निर्विघ्नपणे जीव, मोक्ष नगरें पहोंचे, ए परमार्थ जाणवो. मा टे कोइ जीव पुण्य बांधे, तेवारें चार तत्त्व नेलां आवे, ते आवी रीतेंः—जे पुण्यनां दलीयां अजीव छे, ते आश्रवरूप छे, अने ए दलीयां बंधाय छे, एटले पुण्य, अजीव, आश्रव अने बंध, ए चार तत्त्व थयां. ए रीतें ए नव तत्त्वमां व्यवहारनयने मतें पुण्यतत्त्व जीवने वोलावा रूप आदरवा योग्य छे.

७५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने वाणोतर रूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी एक निर्जरा तत्त्व जीवने वाणोतर रूप जाणवुं. जेम के कोइ एक साहुकार घणेक करजें वींटाणो होय तेणें करी दुःखी थयो होय, पण तेने वाणोतर ठावको मल्यो होय तो शेठने करजथकी छोडावे अने नवी कमाणी करी आपे, तेम इहां जीव घणा कालनो कर्मरूप करजें वींटाणो महादुःख नोगवतो थको संसार मां फरे छे, एम फरतां फरतां नवस्थितिने योगें करी सकाम निर्जरा रूप वाणोतर जीवने मले, तेवारें सर्वकर्मरूप कारजथकी जीवने छोडावे, अ ने ज्ञानादिक गुणरूप अनंती लक्ष्मी जीवने प्रगट करी आपे.

७६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीमें?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी एक संवर तत्त्व जीवने मित्ररूप जाणवुं. कारण के घणा काल थया संसारमां जीव दुःख नोगवे छे, ते दुःख नोगवतां नोग वतां रखडतां रखडतां पुण्यरूप वोलावो जीवने सहायकारी थयो, तेवारें निर्विघ्नपणे जीवने संवररूप मित्रने घरे पहोंचाड्यो, ते संवररूप मित्रने घरे जीव पहोंच्यो, तेंवारें संवररूप मित्रें पुण्य पापरूप जे दलीयां नवा कर्मनां आश्रव आवतां हतां ते सर्व रोक्यां, ए रीतें एक अंतर मुहूर्त्त पर्यंत संवररूप मित्रना घरमां रहेतां घातिकर्म क्षय करी अनंत ज्ञान, अनंत द र्शन, अनंत चारित्र, अनंत वीर्यआदि देइ अनंत गुणरूप लक्ष्मी जीवने संव ररूप मित्रनी सहायें प्रगट थाय, माटे संवर तत्त्व जीवने मित्ररूप जाणवुं.

७७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने घररूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने एक मोक्षतत्त्व घररूप जाणवुं. कारण के पुण्य पापरूप अजीवनां दलीयां अनंतां सत्तायें आश्रवभूत थइ लागां छे, तेणें करी जीव बंधाणो छे, तेथी संसाररूप चार गतिमां फरे छे, एटले पुण्य, पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए पांच तत्त्व जीवने अनादि काल नां शत्रुरूप थइ लागां छे, तेणें करी जीव अनेक प्रकारें विटंबना भोगवे छे, एम संसारमां फरतां फरतां पुण्यरूप वोलावानी सहायें करी भव स्थितिने योगें जीव संवररूप मित्रने घरे पहोंच्यो, तेवारें संवर रूप मित्र बारणुं रोकी बेठो, एटले पुण्य पाप रूप नवा कर्मना आश्रव जीवने समयें समयें अनंतां दलियां आवतां हतां, ते दलीयां सर्वे रोकाणां अने तेथी आगल जीवने एकेक प्रदेशे अनंती कर्मनी वर्गणाना थोकडा लागा हता, तेने निर्जरारूप वाणोतरें अंतरमां पेशी बालवा मांड्या. ए रीतें एक अंतर मुहूर्त आत्मस्वरूपनां ध्यानमां रहेतां घाती कर्म क्षय करी ज्ञानादि अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, पछी अनेक जीवने धर्मदेशना दइ संसारथकी निस्तारी घाती कर्म खपावी, जीव अने संवर रूप मित्र ए बे तत्त्व मोक्षपुरी पहोंचे, माटे जीवने मोक्षतत्त्व घररूप जाणवुं.

८८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी रूपी अजीवने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः— अजीवने मित्र रूप पांच तत्त्व जाणवां, केमके पुण्य पापनां दलीयां आश्रव रूप ते अजीव छे, अने ए दलीयां मली बंधाय छे, माटे पुण्य, पाप, आश्रव, अजीव अने बंध ए पांच तत्त्व, रूपी अजीवने मित्र रूप छे.

८९ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी अजीवने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी अजीवने शत्रुरूप एक निर्जरा तत्त्व जाणवुं. कारण के सकाम निर्जरा गुण जेवारें जीवने आवे, तेवारें अजीवरूप पांच तत्त्वनां दलीयां सत्तायें अनंतां रह्यां छे, तेने बालीने क्षय करी नाखे, माटे.

९० शिष्यः— ए नव तत्त्वमांथी अजीवने रोकवा रूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी अजीवने रोकवारूप एक संवर तत्त्व जाणवुं, कारण के शब्द अने समभिरूढ नयने मतें संवरगुण जीवने आवे, तेवारें पुण्य, पाप, अजीवरूप आश्रवनां दलीयां आवतां रोकाय छे, माटें.

९१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी अजीव, केटलां तत्त्वने रोकी शके ?

गुरुः—अजीव एकज जीव तत्त्वने रोकी शके, कारण के जीवने एकेक

प्रदेशें अनंतां कर्मरूप दलीयां अजीवनां लागां छे, तेणें करी जीव, मोक्ष नगरें जातां रोकाणो छे, माटे अजीव एक जीवतत्त्वने रोकी शके छे.

९२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी अजीवें केटलां तत्त्वनुं घर दीठुं नथी?

गुरुः— ए नव तत्त्वमां अजीवें एक मोक्षतत्त्वनुं घर दीठुं नथी, कारण के जीव, जेवारें मोक्ष नगरें पधारे, तेवारें कर्मरूप अजीवनां दलीयां सत्तायें अनंतां लागां हतां, ते सर्व शुक्ल ध्यानरूप अग्नियें करी बाली क्षय करीने मोक्ष नगरें पधारे छे, माटे अजीवें एक मोक्षतत्त्वनुं घर दीठुं नथी.

९३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्यने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्यने मित्ररूप चार तत्त्व पामीयें ते कहे छे, पुण्यनां दलीयां अजीव छे, ते आश्रवरूप जाणवां अने ए दलीयां मली बंधाय छे, एटले बंध थयो माटे पुण्य, अजीव, आश्रव अने बंध, ए चार तत्त्व थयां, एटले कोइ जीव पुण्य बांधे, तेवारें ए चार तत्त्व मित्ररूप साथें आवे, माटे.

९४ शिष्यः—ए एव तत्त्वमांथी पुण्यने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्यने शत्रुरूप एक निर्ज्जरा तत्त्व जाणवुं, कारण के जेवारें सकाम निर्ज्जरा गुण जीवने आवे, तेवारे पुण्यनां दलीयां जे सत्तायें बांध्यां छे, ते खपावीने, जीव मोक्ष नगरे पहोंचे, माटे.

९५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्यनां प्रतिपक्षीरूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—पुण्यनुं प्रतिपक्षी एक पाप तत्त्व जाणवुं. कारण के जे समयें शुभ परिणामें जीव पुण्यनां दलीयानुं ग्रहण करे छे, ते समयें पापनां दलीयानुं ग्रहण नथी, कारण के एक समयें बे क्रिया न होय ए परमार्थ छे.

९६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्यने रोकवा रूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी पुण्यनां दलीयां रोकवारूप एक संवर तत्त्व जाणवुं कारण के शब्द नयने मतें जे समय जीव स्वरूप चिंतनरूप संवरमां आवे, ते समय नवा कर्मरूप दलीयानुं ग्रहण नथी, माटे पुण्यने संवर रोके छे.

९७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्य केटलां तत्त्वने रोकी शके छे?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी मोक्ष नगरे जतां एक जीव तत्त्वने पुण्य रोकी शके छे, केम के पुण्यनां दलीयां सत्तायें निकाचित बांध्यां होय, ते संपूर्ण भोगव्या विना केवली भगवान् पण मोक्ष नगरे जइ शके नहीं, माटे.

९८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्यें केटलां तत्त्वनुं घर दीठुं नथी?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी पुण्यें एक मोक्ष नगरनुं घर दीठुं नथी. केम कें मोक्ष नगरें जातां जीवने पुण्यनां दलीयां साथें जतां नथी, जेवारें पुण्यनां दलीयां सर्व खपावी रहे, तेवारेंज जीव, मोक्ष नगरें पहोंचे छे, तेमाटें.

ए ए शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पापने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी पापने मित्ररूप चार तत्त्व जाणवां. कारण के पाप नां दलीयां अजीव छे, ते आश्रवरूप जाणवां, अने ए दलीयां मली बंधाय छे, ऐटले बंध कहीयें माटे पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए चार तत्त्व थयां. एटले कोइ जीव पाप बांधे, तेवारें ए चार तत्त्व भेलां आवे.

१०० शिष्यः—नव तत्त्वमांथी पापने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी पापने शत्रुरूप एक निर्जरा तत्त्व जाणवुं. कारण के जेवारें सकाम निर्जरा गुण जीवने आवे तेवारें पापनां दलीयां जे सत्तायें अनंतां लागां छे, तेने बालीने क्षय करे, माटे पापनुं शत्रु निर्जरा छे.

१०१ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी पापनां प्रतिपक्षी रूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी पापनुं प्रतिपक्षी रूप एक पुण्य तत्त्व जाणवुं, कारण के जीव जे समये अशुन्न परिणामें पापनां दलीयानुं ग्रहण करे छे, ते समयें पुण्यनां दलीयानुं ग्रहण नथी, केम के एक समयें बे क्रिया न होय, ए परमार्थ छे, माटे नव तत्त्वमां पापनुं प्रतिपक्षी रूप एक पुण्य तत्त्व जाणवुं.

१०२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पापने रोकवारूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी पापनां दलीयां रोकवा रूप एक संवर तत्त्व जाणवुं. कारण के शब्द नयने मतें जे समयें जीव स्वरूपना चिंतनरूप संवरमां आवे, ते समय नवा कर्मरूप दलीयानुं ग्रहण नथी माटे.

१०३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने पाप रोकी शके छे ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी मोक्ष नगरें जातां एक जीव तत्त्वने पाप रोकी शके छे, कारण के पापनां दलीयां निकाचित पणे सत्तायें बांध्यां होय, ते खपाव्या विना कोइ जीव, मोक्षनगरें पहोंचे नहीं.

१०४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पापें केटलां तत्त्वनुं घर दीठुं नथी ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी पापें एक मोक्ष तत्त्वनुं घर दीठुं नथी कारण के मोक्ष नगरें जातां जीवने पापनां दलीयां साथें आवतां नथी, एटले शुन्न

शुभ विकाररूप पुण्य पापनां दलीयां सत्तायें रह्यां छे, ते खपाव्या विना कोइ जीव मोक्ष नगरें पहोंची शके नही.

१०५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी आश्रवने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी आश्रवने मित्ररूप पांच तत्त्व पामीयें. कारण के पुण्य पापनां दलीयां अजीव छे, ते आश्रवरूप जाणवां. अने ए दलीयां मली बंधाय छे, ते बंध कहीयें. एटले पुण्य, पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए पांच तत्त्व आश्रवने मित्ररूप जाणवां.

१०६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी आश्रवने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी आश्रवने शत्रुरूप एक निर्जरा तत्त्व पामीयें. कारण के जेवारें सकामनिर्जरा गुण जीवने आवे, तेवारें आश्रवनां दलीयां सत्तायें अनंतां रह्यां छे, तेने बालीने क्षय करे, माटे ते शत्रुरूप जाणवुं.

१०७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी आश्रवने रोकवारूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः— नव तत्त्वमांथी आश्रवने रोकवारूप एक संवर तत्त्व जाणवुं. केम के शब्दनयने मतें जे समय जीव सत्तागतना चिंतनरूप संवरमां आवे, ते समयें शुभाशुभ विकाररूप आश्रवनां दलीयांने आवतां रोके, माटे.

१०८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने आश्रव रोकी शके ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी एक जीव तत्त्वने आश्रव रोकी शके, कारण के आश्रवनां दलीयां शत्रुरूप थइने जीवने सत्तायें लागां छे, तेणें करी जीव, मोक्ष नगरें जातां रोकाणो छे, माटे एक जीव तत्त्वने आश्रव रोके छे.

१०९ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी आश्रवें केटलां तत्त्वनुं घर दीठुं नथी ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी आश्रवें एक मोक्ष तत्त्वनुं घर दीठुं नथी, कारण के मोक्षनगरें जातां जीवने शुभाशुभ विकाररूप आश्रवनां दलीयां साथें आवतां नथी, माटे नव तत्त्वमां एक मोक्ष तत्त्वनुं घर आश्रवें दीठुं नथी.

११० शिष्यः—नव तत्त्वमांथी संवरने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—संवरने मित्ररूप एक जीवतत्त्व जाणवुं. कारण के जीव, मोक्ष नगरें जाय, तेवारें संवरतत्त्व मित्ररूप छे, तेने साथें लेतुं जाय. एटले मोक्षमा जीवने यथाख्यात चारित्ररूप संवरतत्त्व सदा काल साथें वर्ते छे, माटे.

१११ शिष्यः— नव तत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने संवर रोकी शके छे ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी पांच तत्त्वने संवर रोकी शके छे, कारण के शब्द

अने समभिरूढ नयने मतें जेवारें जीवने शुक्लध्यानरूप संवर गुण आवे, तेवारें शुभाशुभ नवां कर्म रूप पांचे तत्त्वनां आश्रव रोकाय, एटले संवर तत्त्वनुं ए लक्षण छे, जे आवता कर्मने रोके, माटे ए नव तत्त्वमांथी पुण्य, पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए पांच तत्त्वने संवर रोके छे.

११२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी केटलां तत्त्वनी साथें संवरने प्रीति छे?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी एक निर्ज्जरा तत्त्वनी साथें संवरने प्रीति जाणवी, कारण के जीव घणां कर्मे करी विंटाणो थको अनेक प्रकारनी पीडा पामतो पामतो दुःख विटंबना सहेतो, रखडतो, रखडतो, पुण्यरूप वोलावानी सहायें भवस्थितिने योगें करी संवररूप मित्रने घरे पहोंच्यो, एटले संवर अने निर्ज्जरा, ए बे तत्त्वें साथें मली जीवने कर्मथकी छोडाव्यो, अने ज्ञानादि अनंत गुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी आपी. पछी जीव अने संवर, ए बे तत्त्व मित्ररूप छे, माटे मोक्षपुरीमां साथें गयां. अने संवरने निर्ज्जरातत्त्वनी साथें प्रीति हती तो पण निर्ज्जराने मूकी अने जीवतत्त्वने लई मोक्ष पुरीमां गयो, तेथी निर्ज्जरा तत्त्वनी साथें संवरने प्रीति छे,

११३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी संवरने घररूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी एक मोक्ष तत्त्व संवरने घररूप जाणवुं. कारण के मोक्षपुरीमां सिद्धना जीवने यथाख्यात चारित्ररूप संवर तत्त्व सदा कालें साथें वर्त्ते छे, माटे ए नव तत्त्वमां संवरने घररूप एक मोक्ष तत्त्व छे.

११४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने निर्ज्जरा बाले छे ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी आश्रवरूप पांच तत्त्वनां दलीयां जीवनी सत्तायें लागां छे, तेहने निर्ज्जरा बालीने क्षय करे छे, कारण के जेवारें सकाम निर्ज्जरारूप गुण जीवने आवे, तेवारें शुभाशुभकर्मरूप पांच तत्त्वनां दलीयां जीवने सत्तायें अनंतां रहेलां छे, तेने निर्ज्जरावेमाटे पांच तत्त्वने बाले छे.

११५ शिष्यः— नव तत्त्वमांथी केटलां तत्त्व निर्ज्जराने स्वामीरूप पामीयें?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी एक जीवतत्त्व निर्ज्जराने स्वामीरूप जाणवुं. एटले जे कारणे जीवने एक एक प्रदेशें अनंता कर्मरूप वर्गणानां थोकडा लागा हता, ए रीतें कर्मरूप करजें जीव, वींटाणो थको दुःखी हतो, पण सकाम निर्ज्जरारूप वाणोतर मले, तेवारें जीवने सर्व कर्मरूप करजथकी

छोडावे, अने ज्ञानादि अनंत गुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी आपी, जीवने सुखी यो करी मोक्ष नगरें पहोंचाडे, माटे निर्ज्जरानुं स्वामी एक जीव तत्त्व छे.

११६ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी केटला तत्त्वनी साथें निर्ज्जराने प्रीति छे?

गुरुः–ए नव तत्त्वमांथी एक संवर तत्त्वनी साथें निर्ज्जराने प्रीति छे. कारण के जीव कर्मरूप करजें वींटाणो थको दुःख पामतो पामतो पुण्यरूप वोलावानी सहायें करी संवररूप मित्रने घेर पहोंच्यो, तेवारे संवररूप मित्रें निर्ज्जराने तेडी पोतानो मित्र जाणी जीवने कर्मरूप करजथकी छोडाव्यो, पछी निर्ज्जराने इहां मूकी संवर तत्त्व जीवने लइ मोक्षपुरीमां गयुं.

११७ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी केटलां तत्त्वनुं घर निर्ज्जरायें दीठुं नथी?

गुरुः– नव तत्त्वमांथी एक मोक्षतत्त्वनुं घर निर्ज्जरायें दीठुं नथी, कारण के मोक्ष नगरमां जीवने आत्मप्रदेशें कर्मनी एक परमाणु मात्र रज रही नथी, ते कारण माटे मोक्षपुरीमां निर्ज्जरा तत्त्वनो खप नथी.

११८ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी बंधने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–ए नव तत्त्वमांथी पांच तत्त्व, बंधने मित्ररूप जाणवां. कारण के कोइ जीव कर्म बांधे, तेवारें पुण्य, पाप आश्रवरूप तेनां दलीयां अजीवरूप छे, ते सर्व बंधाय छे, माटे ए नवमांथी पुण्य, पाप, आश्रव, अजीव अने बंध, ए पांच तत्त्व बंधने मित्ररूप जाणवां,

११९ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी बंधने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–बंधने शत्रु रूप एक निर्ज्जरा तत्त्व जाणवुं कारण के जेवारें सकाम निर्ज्जरारूप गुण जीवने आवे, तेवारें ए पांच तत्त्व आश्रवभूत तेनां दलीयां बंधाणां छे, तेने बालीने क्षय करे, माटे बंधनी शत्रु निर्ज्जरा छे.

१२० शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने बंध रोकी शके छे?

गुरुः– एक जीव तत्त्वने बंध रोकी शके छे, जे कारणें शुभाशुभकर्मरूप दलीये करी जीव बंधाणोथको संसारमां अनेक प्रकारें करी पीडा पामे छे माटे कर्मरूपबंधें बंधाणो तेणें करी मोक्षनगरें जातां रोकाणो छे.

१२१ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी बंधतत्त्वने कयुं तत्त्व रोके छे?

गुरुः–ए बंधतत्त्वने रोकनार एक संवरतत्त्व जाणवुं, कारण के शब्द नयने मतें जेवारे जीवने संवर गुण आवे, तेवारें आवता कर्म रूप जे दलीयां ते सर्वे बंधातां रोकाय, माटे ए नवतत्त्वमां बंधने रोकवारूप एक संवर छे.

१२२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी बंधें केटलां तत्त्वनुं घर दीठुं नथी?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी बंधें एक मोक्ष तत्त्वनुं घर दीठुं नथी, केम के जे वारे मोक्ष नगरें जीव जाय, तेवारे सर्व कर्मनां बंध रूप जे दलीयां सत्तायें रह्यां छे ते सर्व तोडी बाली क्षय करी जाय छे. ते कारणें जीवने मोक्ष पुरीमां बंध नथी माटे ए नव तत्त्वमां बंधें एक मोक्ष तत्त्वनुं घर दीठुं नथी.

१२३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां द्रव्यसिद्धपरमात्माने शत्रुरूप केटलां तत्त्व छे?

गुरुः—द्रव्यसिद्ध परमात्माने शत्रुरूप पांच तत्त्व पामीयें. इहां सिद्धनुं द्रव्य ते केवली छे केम के केवलीमांथी सिद्धपणुं नीपजे छे माटे द्रव्यसिद्धपरमात्मा ते केवलीने जाणवा. ते केवलीभगवानने पुण्य पापनां दलीयां अजीवरूप अनंतां सत्तायें रह्यां छे, ते आश्रवरूप जाणवां एटले पुण्य, पाप, अजीव अने आश्रव, ए चार तत्त्व थयां अने ए दलीये केवलीने बांधी राख्या छे, ते पांचमो बंध थयो, तेणे करी केवली मोक्षपुरीमां जतां रोकाणा छे, ए रीतें द्रव्यसिद्ध परमात्माने पांच तत्त्व शत्रुरूप जाणवां.

१२४ शिष्यः—ए नवत्त्वमांथी द्रव्यसिद्ध परमात्माने मित्ररूप केटलां तत्त्वछे?

गुरुः—द्रयसिद्धपरमात्माने मित्ररूप एक संवर तत्त्व जाणवुं, जे कारणें द्रव्यसिद्धपरमात्मा शुक्लध्याननना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या, संवररूप मित्रने घरे वर्त्ते छे, एटले संवररूप मित्रें पांच तत्त्वनां दलीयां अजीवरूप नवा कर्मनां आश्रव आवतां रोक्यां, एटले समभिरूढ नयने मतें शुक्लध्यान रूप संवरने घरे वर्त्ते छे, तेणें करी नवा कर्मरूप आश्रवनां दलीयां आवतां रोकाणां छे, ए परमार्थ जाणवो. माटे द्रव्यसिद्धने एक संवर तत्त्व मित्ररूप कहीयें.

१२५ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी द्रव्यसिद्धपरमात्माने वाणोतररूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—द्रव्यसिद्ध परमात्माने वाणोतररूप एक निर्ज्जरा तत्त्व जाणीयें. केम के जीवने संसारमां भमतां भमतां अनंता पुद्गलपरावर्त्तन काल गयो, तेणें करी घणी आशातनायें कर्म बांध्यां, माटे कर्में विंटाणो थको दुःख पामतो पामतो सकाम निर्ज्जरा रूप वाणोतर मल्यो, तेवारें जीवने कर्मरूप करजथकी छोडाव्यो, अने अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी आपी, अने हजी शुक्लध्याननना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या, समय समय अनंता कर्मना थोकडा खपावे छे, एटले अंतें निर्ज्जरारूप वाणोतर, सर्व कर्मरूप क

रजथकी बोडावी अने द्रव्यसिद्ध परमात्माने जावमोक्षपदें पहोंचाडशे.

१२६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यसिद्ध परमात्माने घररूप केटलां तत्त्व?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी, द्रव्यसिद्ध परमात्माने घररूप, एक जाव मोक्ष तत्त्व जाणीयें, तेनुं दृष्टांत बतावीयें बैयें. जेम कोइ एक प्राणी करजें वींटाणो होय, घणो डुःखी थातो होय, तेवारें परदेश कमावा नीकले, पढी अनेक देशावर फरतो फरतो धन कमाई. उपार्जनकरी करज उतारी धन लइ सुखी थो थइ पोताने घरे जइ बेसे, तेम इहां जीव अनंता कर्मरूप करजें वींटाणो थको डुःख जोगवतो जोगवतो काल स्थितिने योगें करी निगोदथकी बाहेर निकल्यो. पढी चोराशी लाख जीवायोनिरूप ग्राम तथा जवपाटण रूप नगरमां जमतो जमतो कोइ एक अवसरें जवस्थितिने योगें करी पुण्यरूप वोलावो साचो सहायकारी थयो, तेवारे तेणे संवररूप मित्रने घरे जीवने पहोंचाड्यो एटले संवरें पोतानो मित्र जाणी हित आणीने निर्जरा रूप वाणोतर जीवने राखी आप्यो, तेणें सर्व कर्मरूप करजथकी जीवने बोडाववा मांड्यो अने पोतें बारणुं बांधी रोकी बेठो, तेवारें पांचे तत्त्वनां दलीयां अजीवरूप नवा कर्मनां आश्रव आवतां रुंध्या. एणी रीतें अनेक प्रकारें मेहेनत करी जीवने कर्मरूप करजथकी बोडाव्यो तेथी अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंत चारित्र, अनंतवीर्य, अव्याबाध, अमूर्त्ति, सहजानंदी, पूर्णानंदी, अजर, अमर, अविनाशी, ए आदि देइने अनंत गुणरूप लक्ष्मीने प्रगट करी, परमानंदसुखनो विलासी थइ, जाव मोक्षपद प्रत्यें जीव पामे, माटे ए नव तत्त्वमां द्रव्यसिद्ध परमात्माने घररूप एक जावमोक्ष तत्त्व जाणवुं.

१२७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां जावसिद्ध परमात्माने घर रूप केटलां तत्त्व बे ?

गुरुः—जावसिद्ध परमात्माने घररूप एक जावमोक्षपुरीरूप तत्त्व जाणवुं. कारण के जाव मोक्षपुरी लोकने अंतें कहीयें तिहां जन्म नही, जरा नही, मरण नही, जय नही, शोक नही, रोग नही, पीडा नही, निद्रा नही, आहार नही, निहार नही, शत्रु नही, मित्र नही, राजा नही, चाकर नही, शेठ नही, सेनापति नही, वाणोतर नही, खावुं नही, पीवुं नही, ओढवुं नही, पहेरवुं नही, लेवुं नही, देवुं नही, हसवुं नही, खेलवुं नही, रमवुं नही, जमवुं नही, बोलवुं नही, चालवुं नही, नाडी नही, न्याय नही, रात नही, दिवस नही, माया नही, ममता नही, राग नही, द्वेष नही, क्के

श नही, कजियो नही, वाद नही, विवाद नही, जणवुं नही, गणवुं नही, अर्थ नही, विचार नही, व्रत नही, पच्चक्काण नही, गुरु नही, चेलो नही, आधि नही, व्याधि नही, एवा अजरामरस्थानकें अनंत परमानंदसुखनो विलास ते प्रत्यें जोगवता अनंत जाव सिद्ध परमात्मा ज्योतिःस्वरूपें आप आपने स्वजावें सुख जोगवे छे.

एवुं सांजलीने शिष्य बोल्यो जे ते सुख ते शुं कहीयें ?

गुरुः– सुखनुं वर्णन करतां केवलीनां आउखां अनंतां पूरां थइ जाय, तो पण वर्णव्युं जाय नही, एटलुं छे तो पण दृष्टांतें करी लेशमात्र बतावुं छुं ॥गाथा ॥ सुरगण सुख त्रिहुं कालनां, अनंत गुणां ते कीध । अनंतवर्गें वर्गित कर्यां, तो पण सुख समीध ॥ १ ॥ अर्थः–(सुर के०) देवता ते जवनपति, ज्योतिषी, व्यंतर, वैमानिक, नवग्रैवेयक, अनुत्तरविमान, सर्वार्थसिद्ध,ए रीतें जे सर्व देवतानां सुख तेना (गण के०) समूह ते त्रिहुं कालनां एटले आगल आदिरहित अनंतो काल गयो ते कालमां थइ गयेलां सर्व चार निकायनां अनंतां देवतानां सुख तथा वर्त्तमान कालें असंख्याता देवता वर्त्ते छे, तेनां सुख तथा अनागत काल ते आवतो छेहेडा रहित काल तेमां थनारां अनंतां देवतानां सुख, ए रीतें त्रणे कालना देवतानां सुख लइने जेलां करीयें, तेने वली अनंत गुणां करीयें, तेना पाछा अनंतावर्ग करीयें, वली अनंत वर्गित कीजें, ए रीते अतीतादि काल छेडा रहित छे तेहनां सर्वे देवतानां सुख वर्गवर्गित करीनें जेलां करीनें तोपण सिद्धशिलायें अजरामर स्थानकें जावसिद्ध परमात्मा जे सुख जागवे छे, तेना एक समयमात्रना सुखनें तोले ते देवतानां सुख नावे, ए परमार्थ जाणवो,

१२७ शिष्यः–सिद्धना जीव चौदमे गुणठाणे कर्मथकी मूकाणा, तेवारें क्रिया रहित एटले अक्रिय थया, तेम छतां सातराज लोक उंचा लोकने अग्रजागें जइ रह्या ते क्रिया केम करी ?

गुरुः–जेम तुंबडाने कचराना पट लाग्या, एटले तुंबडुं कचरे करी लेपाणुं थकुं जारी थइने पाणीमांहे हेठुं जइ बेसे, अने ज्यारें पाणीयें करी कचरो धोवाइ जाय, तेवारें तरत उंचुं चडी आवे, एटले कचरो धोवाणो तेवारें आडुं अवलुं हेठुं जइ शके नहीं, एने उंचे आववानो स्वजाव छे, माटे उंचुं आवे, तेम जीवने पण आठ कर्मरूप कचराना पट लाग्या छे,

एटले कर्मरूप कचरे करी लेपाणो, तेवारें त्यारे थइने संसाररूप समुद्रमां हेठो बेठो, ते जेवारें कर्मरूप कचरो अनुभव ज्ञानरूप अमृत कुंममां धोवाय, तेवारें तुंबडानी परें तरत जीव, उंचो जइ लोकने अग्रभागें बेसे, पण आडो अवलो नीचो जइ न शके, तुंबडानी परें तरत उंचो आवे.

१२ए शिष्यः—सिद्धना जीवने कर्म केम लागतां नथी ?

गुरुः— "ये चलंति ते बध्नंति" एटले जे जीवनो चलित स्वभाव छे, तेज जीव कर्मे करी बंधाय छे, तेमां जे जीवनो शुभचिंतवनरूप चलित स्वभाव छे, ते जीव, पुण्यने दलीये करी बंधाय छे, अने जे जीवनो अशुभचिंतवनरूप चलित स्वभाव छे, ते जीव, पापने दलीये करी बंधाय छे, एटले शुभाशुभ परिणामनी चीकाशें जीवने कर्मनी धूड चहोटे पण सिद्धभगवाने शुक्लध्यानरूप अग्नियें करी शुभाशुभ परिणामनी चीकाश बाली नाखी, तेथी तेने चिकाशविना कर्मरूप धूल चोटी न शके.

१३० शिष्यः—सिद्धना सुखनो स्वाद केहवो हशे ?

गुरुः—जेम घृतनो स्वाद खाटो नही, खादो नही, मोलो नही, तीखो नही, तमतमो नही, कडवो नही, कषायेलो नही, गल्यो नही, मधुरो नही, ए रीतें घृतनो स्वाद तो जे खाय ते जाणे, पण महोढे कह्यो न जाय, अने ए घृत विना सर्वे वस्तु अटके एटले घृत विना सर्वे खोटुं जाणवुं. तेम सिद्धना सुखने पण जे भोगवे, तेज जाणे, परंतु केवली भगवानथी पण मुखें कहेवाय नहीं अने ए सुख विना सर्वे सुख खोटां, एटले व्यर्थ जाणवां.

१३१ शिष्यः— सिद्धि सिद्धि लोक करे छे, ते सिद्धि किहां छे ?

गुरुः—जेवारें आत्मानुं स्वरूप साधवा उठ्या, तेवारें साधु कहेवाणा, अने क्रियारूप साधनें करी जेवारें आत्मिक स्वरूप साधी रह्या एटले संपूर्ण कार्य नीपन्युं तेवारें सिद्ध कहेवाणा, माटे कार्यनी सिद्धि तो इहां थइ तेथी सिद्धि इहां कहीयें अने सिद्ध तो उंचा लोकने अग्रभागें छे.

१३२ शिष्यः—मुक्ति मुक्ति लोक करे छे, ते मुक्ति किहां छे ?

गुरुः—(मुक्ति के०) गतिथकी जे मूकाणो तेने मुक्ति कहीयें. एटले चार गतिरूप संसारथकी जीव मूकाणो, तेने मुक्ति कहीयें. ते चार गतिरूप कर्मथकी तो जीव इहां मूकाय छे, तेथी मुक्तिपद इहां जाणवुं अने उंचुं सिद्ध शिला उपर तो जीवने रहेवानुं ठेकाणुं छे, कारण के जेवारें जीव,

कर्मथकी हलवो थाय, तेवारें ऊंचो जाय, तेमज कर्मे करीने न्नारे थाय तेवारें नीचो जाय, ए जीवनो स्वन्नावज बे, पण मुक्तिपद तो इहां जाणवुं.

शिष्यः—इहांथी ऊंचो जतां जीव, सिद्धशिला उपरज रोकाइ रह्यो पण तेथी आगल ऊंचो केम गयो नहिं ?

गुरुः—आगल अलोकमां धर्मास्तिकायनुं सहाय नथी, तेथी सिद्ध शिलायेंज रोकाणो, पण ऊंचो गयो नही, ए परमार्थ जाणवो.

१३३ शिष्यः—मोक्ष मोक्ष लोक करे बे, ते मोक्षपद किहां बे ?

गुरुः—राग, द्वेष अने मोहनो क्षय कस्यो तेनुं नाम द्रव्यमोक्ष कहीयें, केम के राग, द्वेष अने मोहनो क्षय तो बारमे गुणठाणे कस्यो अने तेरमे गुणठाणे द्रव्यमोक्ष पद पामी चूक्यो माटे बारमे गुणठाणे मोहनीय कर्मरूप राग, द्वेष, अज्ञान खपावी, तेरमे गुणठाणे देशें ऊणी पूर्वकोटि सुधी विचरे ते द्रव्यमोक्ष जाणवो. अने सकलकर्मथकी मूकाणा ते न्नावमोक्ष जाणवो. अने ते सकलकर्मथकी जीव इहां मूकाय बे माटे न्नावमोक्षपद तो इहां बे अने मोक्षपुरी तो लोकने अंतें बे ए परमार्थ जाणवो.

१३४ शिष्यः—सिद्धने मोक्षपुरीमां धर्म बे के धर्म नथी ?

गुरुः—सिद्ध न्नगवान्, व्यवहार धर्मकरणीरूप जे बे तेतो इहां मूकी गया, एटले व्यवहार धर्मकरणीरूपथकी तो सिद्ध रहित बे, अने सत्तागतें ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, अव्याबाध, अमूर्त्ति, अगुरुलघु, ए आदें अनंतो धर्म सिद्धने प्रगट थयो बे, तेणें करी सिद्ध परमात्मा अनंतुं सुख न्नोगवे बे, माटे निश्चयथकी सिद्ध, धर्म सहित बे. अने व्यवहारकरणीथी रहित बे ए परमार्थ बे. ए रीतें नव तत्त्वना संबंधनुं स्वरूप, सामान्य प्रकारें जाणवुं.

१३५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी लिप्त स्वन्नावमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—लिप्त स्वन्नाव पहेले गुणठाणे मिथ्यात्वी जीवने जाणवो. तेमां ब तत्त्व पामीयें कारण के ऋजुसूत्र नयने मतें शुन्नाशुन्न विकाररूप चिंतनमां जेवारें कोइ जीवनुं मन प्रवर्त्ते, तेवारें शुन्नाशुन्न एटले पुण्य पाप उपार्जे, एटले पुण्य पापमां जीव लेपाणो, तेने पहेले गुणठाणे लिप्त स्वन्नाव जाणवो. तेमां ब तत्त्व पामीयें, एक तो स्वन्नाव ते जीवनो पोतानो जाणवो. माटे एक तो जीवतत्त्व अने (शुन्नाशुन्न के०) पुण्य, पाप, ए त्रण तत्त्व थयां, ते

पुण्य पापनां दलीयां ते चोथुं अजीवतत्त्व, ए आश्रवरूप जाणवां, ते पांचमुं आश्रव तत्त्व, तथा ए दलीये जीव बंधाय छे, ते छठ्ठुं बंध तत्त्व जाणवुं.

१३६ शिष्यः—एनवतत्त्वमांथीअशुभप्रकारेंलिप्तस्वभावमांकेटलांतत्त्वपामीयें?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मतें अशुभ प्रकारें लिप्त स्वभाव पहेले गुणठाणे मिथ्यात्वी जीवने जाणवो, तेमां पांच तत्त्व पामीयें. एक तो स्वभाव जीवनो ते जीवतत्त्व, बीजुं (अशुभ के०) पाप तत्त्व, ए पापनां दलीयां ते त्रीजुं अजीव तत्त्व, अने ए दलीयां आश्रवरूप जाणवां, ते चोथुं आश्रव तत्त्व, अने ए दलीये जीव बंधाणो, एटले पांचमुं बंधतत्त्व जाणवुं.

१३७ शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथीशुभप्रकारेंलिप्तस्वभावमांकेटलां तत्त्वपामीयें?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मतें शुभप्रकारें लिप्त स्वभाव पहेले गुणठाणे मिथ्यात्वी जीवने जाणवो, तेमां पांच तत्त्व पामीयें, एक तो जीवनो स्वभाव ते जीवतत्त्व, बीजुं शुभप्रकार ते पुण्य तत्त्व, त्रीजुं पुण्यनां दलीयां ते अजीवरूप छे माटे अजीवतत्त्व, ए आश्रवरूप जाणवां माटे चोथुं आश्रव तत्त्व अने ए दलीये जीव बंधाणो, ते पांचमुं बंधतत्त्व जाणवुं.

१३८ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी अलिप्तस्वभावमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—जे प्राणी अंतरंग पुण्य पापरूप कर्मनी वांछायकी रहित एक मोक्षपदनी वांछायें अनेक प्रकारें क्रिया करे छे, ते जीवनो अलिप्त स्वभाव जाणवो, ते शब्दनयने मतें तो चोथे गुणठाणे समकेतीथी मांमी पांचमे गुणठाणे देशविरति जीव तथा छठे, सातमे गुणठाणे साधु मुनिराज अथवा समभिरूढनयें यावत् छद्मस्थ अवस्था ज्यां सुधी केवलज्ञान नथी उपन्युं, तिहां सुधी अलिप्त स्वभाव जाणवो. तेमां आठ तत्त्व पामीयें, एक तो जीव तथा सत्तायें पुण्यपापनां दलीयां, अजीवरूप अनंतां रह्यां छे, ते आश्रवरूप जाणवां. एटले पांच तत्त्व थयां, अने ए दलीयें जीव बंधाणो छे, ते छठ्ठुं बंध तत्त्व, तथा जीव अजीवरूप स्वसत्ता परसत्तानी वेंचण करी जीव स्वभावमां रहे, एटली वार संवर कहीयें, अने संवरमां जीव रहे, एटली वार समयें समयें अनंतां कर्मोनी निर्जरा करे. ए रीतें शब्द अने समभिरूढ नयने मतें अलिप्त स्वभावमां आठ तत्त्व जाणवां. अने एकला समभिरूढ नयने मतें तो केवली भगवानने अलिप्त स्वभाव कहीयें. तेमां आगल कह्यां ते रीतें नवे तत्त्व पामीयें, तथा

एवंभूत नयने मतें सिद्धभगवान् लोकने अंतें बिराजमान छे, तेने अलिप्त स्वभाव कहीयें. तेमां आगल कह्यां, ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें.

१३९ शिष्यः—द्रव्यथकी षडावश्यकनुं स्वरूप ते शुं कहीयें ?

गुरुः— कुलाचारें अंतरंग सत्तागतना उपयोग विना पुण्यरूप फलनी वांछारूप परिणामें १ सामायिक, २ चउविसत्थो, ३ वंदनक, ४ पडिक्कमणुं, ५ काउस्सग्ग अने ६ पच्चख्खाण, ए षडावश्यक रूप जे करणी करवी, ते द्रव्यथकी षट् आवश्यकरूप करणी जाणवी.

१४० शिष्यः—नव तत्त्वमांथी द्रव्य सामायिकमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ऋजुसूत्रनयने मतें द्रव्य सामायिक पहेले गुणठाणे जीवने कहीयें. तेमां पांच तत्त्व पामीयें. जे कारण मन, वचन, कायायें करी एक चित्तें वैराग्य भावना सहित सामायिक करे छे, पण अंतरंग सत्तागतना उपयोगमां वर्त्ततो नथी अने पुण्यरूप फलनी वांछायें तेना परिणाम वर्त्ते छे माटे ए जीवने द्रव्य सामायिक, पुण्यरूप शुभ कर्मनुं हेतु जाणवुं. तेमां पांच तत्त्व पामीयें, एक तो तेनो जीव, ते जीवतत्त्व, बीजुं शुभ कर्म ते पुण्य तत्त्व, त्रीजुं पुण्यनां दलीयां ते अजीवतत्त्व, चोथुं ए आश्रवरूप छे ते आश्रवतत्त्व, पांचमुं ए दलीये जीव बंधाणो, ते बंधतत्त्व, ए रीतें नव तत्त्वमांथी द्रव्य सामायिकमां पांच तत्त्व पामीयें.

१४१ शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथी द्रव्य चउविसत्थामां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—द्रव्य चउविसत्थामां आठ तत्त्व पामीयें, जे कारणें आवते कालें चोवीश जिन थाशे, ते श्रीवीतराग देवें कह्या छे, तेने भव शरीर आश्रयी द्रव्य चउविसत्थो कहियें, एटले कोइ जीव समकित भावें वर्त्तता हशे, अथवा कोइ देशविरति अथवा सर्वविरति मुनिराज पणे वर्त्तता हशे, परंतु हमणां तेमनी सेवा, स्तुति, भक्ति, पूजा प्रमुख जे करीयें, ते नैगमनयने मतें वर्त्तमानें पोताना भावशुं आवता कालना द्रव्यनी गवेषणा जाणवी, माटे तेमां समकेति जीवनी पेरें आठ तत्त्व कहीयें.

१४२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यवंदनमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—व्यवहार नयनें मतें जो वीरा शालवीनी परें वंदना करे, तो एक तत्त्व पामीयें अने ऋजुसूत्र नयने मयें द्रव्यवंदन करे, तो पांच तत्त्व पामीयें, कारण के वंदन एटले कृति कर्मादि गुरुवंदन जाणवुं, तिहां जे वीरा

शालवीयें वंदना करी, तेने अंतरमां पुण्य पाप रूप फलनी वांछा न हती, एक निःकेवल कृष्ण वासुदेवनुं मन रीजववा सारु वंदना करी हती, माटे तेणें पुण्यरूप फल उपार्ज्युं नथी तेथी तेमां तो एक जीवतत्त्व पामीयें. तथा व्यवहारनयने मतें अंतरंग राग सहित भक्ति सहित विधिपूर्वक वंदना करे छे, पण अंतरंग सत्तागतना जाणपणा विना तथा साध्य साधन रूप वहेंचण विना कुलाचारें अंतरंग पुण्य रूप इंद्रिय सुखनी वांछायें वांदे छे, तेमां पांच तत्त्व पामीयें. एक तो तेनो जीव अने ऋजुसूत्र नयने मतें द्रव्य वंदन करतां शुभ फल उपार्ज्युं ते, बीजुं (शुभ के०) पुण्य, त्रीजुं पुण्यनां दलीयां ते अजीव, ए आश्रव रूप जाणवां. ते चोथुं आश्रव तथा ए दलीये जीव बंधाणो, ते पांचमो बंध. ए रीतें द्रव्यवंदनमां पांच तत्त्व छे.

१४३ शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथी द्रव्य पडिक्कमणामां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—ए द्रव्य पडिक्कमणनामें आवश्यक जे छे, ते ऋजुसूत्र नयने मतें पहेले गुणठाणे कहीयें, तेमां पांच तत्त्व पामीयें. एटले जे पापथकी निवर्त्तवुं तेनु नाम पडिक्कमणुं छे, तिहां मन, वचन अने कायायें एकाग्र चित्तें पडिक्कमणुं करे छे, पण अंतरंग निश्चयनय सत्तागतना उपयोग विना तथा साध्य साधन रूप कार्य कारणनी खबर विना, कोइ जीव, पापथकी निवर्त्ते नहीं, माटे द्रव्यपडिक्कमणुं ते शुभ फलादि पुण्यहेतु जाणवुं तेमां आगल कह्यां ते रीतें पांच तत्त्व जाणवां.

१४४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यथकी काउस्सग्गरूप आवश्यकमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मतें द्रव्यकाउस्सग्ग पहेले गुणठाणे मिथ्यात्व दशायें होय, कारण के जीव अजीव रूप अंतरंग सत्तानी प्रतीति कस्या विना कठिणपणुं आदरी अनेक डंश, मशक, वाघ, सिंह, रींछ, शीयाल, सर्प आदिक तिर्यंच जीवना तथा मनुष्यना अने देवताना करेला उपसर्ग सहन करे छे, आत्मज्ञान विना एक चित्तें धैर्यपणुं आदरीने काउस्सग्ग करे छे. तथापि ते कष्टरूप शुभफलनुं हेतु जाणवुं. पण अंतरंग भासनविना आत्मप्रदेशथकी कर्म आवरण टले नही, मात्र शुभ एटले पुण्यफल उपार्जे माटे तेमां जीव, पुण्य, अजीव, आश्रव अने बंध, ए पांच तत्त्व पामीयें.

१४५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्य पच्चख्काणरूप आवश्यकमां केट लां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—द्रव्यपच्चख्काण, पहेले गुणठाणे मिथ्यात्व दशायें जाणीयें. कारण के अंतरंग इच्छानो रोध कस्या विना जे जीव, व्रत पच्चख्काण करे छे, ते अ व्रती जाणवां. एटले ए सर्वे पूर्वेभवना अंतरायकर्मनो उदय जाणवो. माटे ए कष्टरूप, पुण्यफल हेतु जाणवुं. पण अंतरंग सत्तागतें निर्जरानुं हेतु नहीं माटे एमां पण आगल कह्यां ते रीतें पांच तत्त्व जाणवां.

हवे द्रव्यथकी ए छ आवश्यक रूप करणी करवी, तेनुं फल विशेष रीतें नयनी युक्तियें करी थोडामां समजावे छे.

तिहां व्यवहारनयने मतें उपरथकी षडावश्यकरूप करणी विधि सहित भली रीतें करे छे, अने रुजुसूत्र नयने मतें अंतरंग परिणाम लोक देखाडवारूप यशःकीर्त्तिनी वांछायें अथवा कोइनुं मन रीझववा रूप भलुं मनाववानी वांछायें करे, ते जीवनी महेनत वीरा शालवीनी परें वृथा जा णवी. एटले रुजुसूत्रनयने मतें जेना अंतरंग परिणाम वीरा शालवीनी परें कोइनुं मन मनाववादिक फलनी वांछारूप छे, तेज फल प्रत्यें ते ते वखतें पामे, परंतु एवो परिणाम, परभवें पुण्यरूप फल हेतु पण नहीं जाणवो.

वली कोइ जीव, व्यवहार नयने मतें उपरथकी षडावश्यकरूप करणी विधि सहित भली करे छे, अने रुजुसूत्र नयने मतें लोकने ठगवारूप धन हरवा रूप अथवा घात दगो करवारूप उदाइ राजाने मारनाराना परें अंतरंग परिणाम वर्त्ते छे. अथवा स्त्रयादिकने पोतानी चतुराइ देखाडी विष यसुखना परिणाम वर्त्ते छे, एटले व्यवहारनयने मतें क्रिया तो घणी रूडी करे छे, पण रुजुसूत्र नयने मतें अंतरंग परिणाम माठा वर्त्ते छे, ते माटे ते जीव, पापकर्मरूप फल प्रत्यें उपार्जे छे, ए परमार्थ जाणवो.

वली कोइ जीव, व्यवहार नयने मतें उपरथकी षडावश्यक रूप करणी विधिसहित भली रीतें करे छे, अने रुजुसूत्र नयने मतें अंतरंग वैराग्य सहित उदासीपरिणामें नरक निगोदना दुःखथकी बीहितो सुखनी लालचें परभवें पुण्यरूप फलनी वांछारूप परिणाम वर्त्ते छे, ते जीव, रुजुसूत्रनय ने मतें शुभ फल रूप पुण्यनां दलियां उपार्जे छे, अने कर्मरूप निर्जरा तो जेवारें शब्द नयने मतें करणी करे, तेवारें थाय, तेनुं स्वरूप आगल देखा

डशुं माटे विवेकी पुरुषें सर्व ठेकाणे नयनुं स्वरूप विचारी चित्तमां समज ण उतारी पछी काम करवुं.

१४६ शिष्यः– जावथकी षडावश्यकनुं स्वरूप शुं कहीयें ?

गुरुः–शब्द नयने मतें अंतरंग निश्चय नयें सत्तागतना उपयोगरूप प रिणामें साध्य साधनरूप उंलखाण सहित आ जवनी तथा परजवनी वांछा रहित तथा यशःकीर्त्ति, मान, शोजा अने पूजानी वांछा तजीने एक पोताना आत्माने निरावरण करवारूप परिणामें सामायिक, चउविसछो, वंदनक, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग अने पच्चरकाण रूप करणी करे, तेने जावथकी षडाश्यकरूप करणी जाणवी.

१४७ शिष्यः–जावथकी षडावश्यक रूप करणी करवी, तेनो हेतु शुं कहीयें ?

गुरुः–प्रथम सामायिक लेवुं, पछी षडावश्यकरूप करणी करवी, जेम म लीन लुगडा उपर रंग लगाडवाथी ते लुगडानी किमत घटे, माटे मेल टाली लुगडुं उजलुं करी पछी रंग चडावे, तो तेनी किम्मत घणी वधे, तेम इहां जीव पण संसारमां आर्त्त, रौद्ररूप परिणामें करी तथा गम नागमन करतां अनेक प्रकारें जीवनी विराधना रूप पापें करी मलीन थयो, माटे ते पाप आलोया विना मलीन पणे व्रतरूप रंग लगावे, तो ते न शोजे, ते कारणें प्रथम इरियावहि पडिक्कमवी, एटले एकेंद्री, बेंद्री, तें द्री, चौरिंद्री अने पंचेंद्री प्रमुख जीवना (५६३) जेद थाय. ते आवी रीतें:–एकेंद्रियना बावीश, बेंद्रियना बे, तेंद्रियना बे, चौरिंद्रियना बे,मली अछावीश थया, तथा पंचेंद्रियमां नारकीना सात पर्यांप्ता अने सात अप र्याप्ता मली चौद जेद, तथा देवतोना नवाणुं पर्याप्ता अने नवाणुं अपर्या प्ता, मली एकशोने अछाणुं जेद, तथा तिर्यंचना वीश जेद, तथा मनुष्य ना एक शो एक पर्याप्ता, एकशो एक अपर्याप्ता अने एकशो एक संमूर्छिम, मली त्रणशो ने त्रण जेद, ए सर्व एकठा करीयें तेवारें (५६३) थाय. तेने अजिहया वत्तिया प्रमुख दश बोलें करी दश गुणा करीयें, तेवारें (५६३०) थाय. तेमां केटला एक रागें करी हण्या, केटला एक द्वेषें करी हण्या एटले राग द्वेषें बमणा करतां (११२६०) थाय. ते वली मन, वचन, अने काया यें करी त्रिगुणा करतां (३३७८०) थाय. वली करतां, करावतां अने अ नुमोदतां पाप लाग्युं तेथी त्रण गुणा करतां (१०१३४०) जेद थाय. ते

पछी अतीत अनागत अने वर्त्तमान कालें जे पाप लाग्युं होय माटे त्रण गुणा करतां (३०४०२०) थाय, ते अरिहंतनी साखें, सिद्धनी साखें, साधुनी साखें, देवनी साखें, गुरुनी साखें, अने पोताना आत्मानी साखें,ए रीतें छनी साखें मिछामि डुक्कड देतां थकां छ गुणा करीयें तेवारें(१८२४१२०) थाय. ए रीतें मिछामिडुक्कड देतां थकां ऐमंता मुनिने केवल ज्ञान उपन्युं. ते माटे मन शुद्धं प्रथम इरियावहि पडिक्कमवी तेनो अर्थ विचारी(१८२४१२०) मिछामि डुक्कड देवा. पछी तेनी आलोयणानो एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो उपर एक लोगस्स प्रगट कहेवो. ए रीतें पापथकी रहित शुद्ध निर्मल थइ पछी "करेमि भंते" उच्चरवुं, ते व्रतरूप रंग लगाडवो, पण पापरूप मल टाल्या विना व्रतरूप रंग शोभे नहीं, ते कारणें प्रथम इरियावहि पडिक्कमवी, पछी चार थोइयें देव वांदवा, पछी गुरुनो आदेश मागी पडिक्कमणुं ठाववुं. तेवार पछी षडावश्यकरूप करणी करवी, ते आवी रीतेंः—

तिहां प्रथम सामायिक आवश्यक करवुं, तेनो अर्थ कहे छे. (सम के०) समता तेनो (आय के०) लाभ तेने सामायिक कहीयें. ते अवश्य करवुं. माटे ते आवश्यक कहीयें. ए पछी ते समता जे परमसुखना निधान तेनो लाभ श्रीऋषभादिक चोवीश तीर्थंकरने थयो, तेथी समताना विधान, परमोपकारी, जगत् गुरु, जगत्त्रयना जीवने उपकारना करनार, परम सुखना दातार, एवा चोवीश तीर्थंकरनुं ध्यान करीयें. जे थकी संसारनो पार पामीयें ए बीजुं चउविसछानामें आवश्यक. तेवार पछी ए चोवीश तीर्थंकरना उलखावनार गुर्वादिक श्रीआचार्य भगवान् छत्रीश गुणें करी बिराजमान,परमोपकारी तेनो उपकार संभारीने विधिपूर्वक हर्ष सहित तेने वंदना करवी,ते त्रीजुं वंदन आवश्यक जाणवुं. ए वंदण शा वास्ते करवुं? ते कहे छे. आगल पाप आलोचीने पापथकी निवर्त्तवुं छे माटे विनतिपणे नमाश गुण विना कोइ जीव पापथकी निवृत्ति शके नही, तेमाटे वंदना करवी. पछी गुर्वादिक पासेंथी प्रतिक्रमण नामक आवश्यक करवानो आदेश मागवो, एटले पाप थी निवृत्तवुं, तेनुं नाम पडिक्कमणुं छे. ते पापथकी निवर्त्तवाने अर्थें साधु तो आदेश मागी पगाम सज्जाय कही पाप आलोवे, अने श्रावक बार व्रतरूप अतिचार आलोवे. ए रीतें पाप आलोची पापथकी रहित शुद्ध निर्मल भाजननी परें थयो थको वली कांइ थोडुंएक पण पाप रह्युं होय, तेमाटे 'आय

रिय ठवद्याय' प्रमुख त्रणे गाथा कही सर्व जीवने खमावे,ए चोथुं आवश्यक.

ए रीतें पापथकी रहित ज्यारें आत्मरूप ज्ञाजन खाली थाय, त्यारें तेने ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप गुणें करी पूरवुं (ज्ञरवुं) जोइयें, तेने माटें पांचमुं आवश्यक करवुं. ते आवी रीतें:—प्रथम चारित्रनुं आराधन करवा सारु 'करेमि ज्ञंते' कही पढी बे लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. पढी उपर एक लोगस्स प्रगट कहेवो, एटले ए चारित्रनुं आराधन जाणवुं पढी दर्शननुं आराधन करवा निमित्तें "सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं" एटले सर्व लोकने विषे जेटलां श्रीअरिहंतनां चैत्य छे, तेने वांदवा पूजवा रूप कही, एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, एटले ए दर्शननुं आराधन जाणवुं. पढी ज्ञाननुं आराधन करवा निमित्तें "पुरकरवर दीवड्ढे" कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, एटले ए ज्ञाननुं आराधन जाणवुं. ए रीतें ज्ञान,दर्शन अने चारित्रना आराधनरूप काउस्सग्ग करी ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप गुणें करी आत्मरूप ज्ञाजनने पूरवुं. कारण के आगल पापनी आलोचना करी पापथकी रहित आत्मरूप ज्ञाजन खाली थयुं छे, माटे इहां पांचमा आवश्यकमां ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप गुणें करी पूरवुं, तथापि महोटा उत्तम वली यानुं सहाय होय तो निर्विघ्न पणे आराधन थाय, तेमाटे सहाय निमित्तें श्रुतदेवतानुं आराधन करवुं. पढी जे क्षेत्रें देवता आसस्या छे, ते क्षेत्र देवनुं आराधन करवुं, एटले महोटानी सहायथकी ज्ञान, दर्शन, चारित्रनुं साधन निर्विघ्नपणे थाय. ए रीतें ए पांचमुं काउस्सग्ग नामा आवश्यक जाणवुं.

ए रीतें आत्मरूप ज्ञाजन ते ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप गुणें करी संपूर्ण ज्ञराणुं एटले हवे फरी पाछुं पाप करवाना नियम करवा सारु छठ्ठा आवश्यकने विषे चार प्रकारना आहाररूप पाप करवाना पच्चरकाण करवां माटे नोकारसी, पोरिसी, एकासणुं, आयंबिल, उपवास, छठ, अठम, अठाइ, मासखमण, पासखमण, छम्मासी, वरसी अथवा जावजीव, इत्यादिक पोतानी शक्ति माफक चार आहाररूप पाप करवानां पच्चरकाण करवां, ए छठ्ठुं पच्चरकाण आवश्यक जाणवुं. ए रीतें ए छ आवश्यकनुं स्वरूप जाणी विवेकी पुरुष,हृदयमां धारी नित्य प्रत्यें उजय टंक करतां थकां जीव अल्पकालमां कर्म रहित थइ सिद्धिपद वरे, पामे. एम, शब्द नयने मतें ए सामान्य प्रकारें ज्ञावथकी षडावश्यकनुं स्वरूप जाणवुं.

१४८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी नावसामायिकमां केटलां तत्त्व पामीयें?
गुरुः—श्रीनगवतीसूत्रमां "आया खलु सामाइया" ए आलावे सामायिकनो अर्थ कस्यो बे, एटले जेटली वार स्वस्वरूपमां रहेवुं, तेटली वार सामायिकनो लान्न जाणवो, माटे शब्दनयने मतें चोथा गुणठाणावाला समकेती, अने पांचमा गुणठाणावाला देशविरतिश्रावक, तथा बठा सातमा गुणठाणावाला मुनिराजने सामायिक जाणवुं, तेमां आठ तत्त्व पामीयें, अने समन्निरूढनयने मतें केवली नगवान्ने सामायिक जाणवुं. तेमां नव तत्त्व पामीयें. तथा एवंनूतनयने मतें सिद्धनगवानने सामायिक जाणवुं. तेमां त्रण तत्त्व पामीयें. ए रीतें नाव सामायिकना स्वरूपनो परमार्थ जाणवो.
१४९ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी नाव चउविसबामां केटलां तत्त्व पामीयें?
गुरुः—एवंनूत नयने मतें हमणां रुषन्नादि चोवीश तीर्थंकर नावनिक्षेपे सिद्धक्षेत्रमां बिराजमान वर्त्ते बे, तेने नाव चउविसबो कहीयें. एटले हमणां एमनी सेवा, नक्ति, स्तुति, पूजादि करीयें बैयें. ते नैगम नयने मतें वर्त्तमाने पोताना नावथी गया कालना नावनी गवेषणा जाणवी, ए सिद्धमां वर्त्ते बे, माटे तेमां आगल कह्यां, ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें.
१५० शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथी नाववंदन आवश्यकमां केटलांतत्त्वपामीयें?
गुरुः—श्रीवीतरागनी आज्ञा पालनार, शुद्धमार्गना प्ररूपक, आत्म तत्त्वना रसीया, मोक्षान्निलाषीपणे पोताना आत्मानुं साधन करे बे, एवा गुरु आदिक आचार्य नगवान्ने कृति कर्मादिक एटले द्वादशावर्त्त वंदन, विधिपूर्वक करवुं, परंतु आ नव तथा परनवनी वांबा रहित, मान अहंकार गाली, यशःकीर्त्तिनी वांबा रहित, एक पोताना आत्माने कर्मथकी मूकाववा निमित्तें करे, तो महोटो लान्न उपार्जन करे ॥ उक्तं च॥ तिबयरत्तं सम्मत्तं, खाइयं सत्तमी तईयाए॥ वंदणएण विहीणा, बद्ध च दसारसीहेणं ॥ १ ॥ अस्यार्थः—श्रीकृष्ण वासुदेवें विधिपूर्वक एक साध्यें अंतरंग राग सहित वंदणा करतां तीर्थंकर गोत्र उपार्ज्यूं अने क्षायिक सम्यक्त्व पाम्या, तथा सातमी नरकनां दलियां एकठां मेलव्यां हतां, तेमांथी चार नरकनां काप्यां, माटे नाव वंदन आवश्यकमां आगल कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व जाणवां.
१५१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी नावपडिक्कमणामां केटलां तत्त्व पामीयें?
गुरुः—शब्दनयने मतें पापथकी निवर्त्तवुं तेने पडिक्कमणुं कहीयें तिहां

जे दिवसनुं पाप लाग्युं होय ते सांजने पडिक्कमणे निवर्त्तें, अने रात्रिनुं पाप लाग्युं होय, ते प्रजातने पडिक्कमणे निवर्त्तें. तथा पन्नर दिवसनुं पाप लाग्युं होय, ते पाखीने पडिक्कमणे निवर्त्तें, अने चार मासनुं पाप लाग्युं होय, तें चोमासीने पडिक्कमणे निवर्त्तें, तथा बार मासनुं पाप लाग्युं होय, ते संवत्सरीने पडिक्कमणे निवर्त्तें, ए रीतें पडिक्कमणुं करवाथकी पाप निवर्त्तें खरुं परंतु ते कोने निवर्त्तें? के जे अंतरंग सत्तागतें वस्तु धर्म रह्यो ठे, ते निरावरण पणे प्रगट करवाने अर्थें पडिक्कएणुं करे ठे, ते प्राणी पाप थकी निवर्त्तें ठे, परंतु सत्तागतना जाणपणा विना पाप टले नही, माटे एवी आलोयणा सहित जे पडिक्कमणुं करवुं, तेतो देशविरति पांचमा गुणठाणा वाला श्रावक तथा ठठे सातमे गुणठाणे वर्त्तनारा साधु मुनिराज तेने उदयें आव्युं ठे, माटे तेमां पूर्वे कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें.

१५२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी नावकाउस्सग्गमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—जे शब्द नयने मतें जाणपणा सहित बाह्यथकी तो मेरुनी परें निश्चल पणे थइने डुष्ट जीव जे वाघ सिंह, शीयाल, रीब अने सर्पादिक तिर्यंचना करेला उपसर्ग्ग तथा देवता अने मनुष्यना कस्या उपसर्ग्ग जेवा के ठेदन, नेदन, ताडन, तर्जनादिक तथा क्रूर वचन, कडवां वचन रूप अनेक प्रकारना उपसर्ग थाय, पण समता रसें नीनो एयो जे मुनिराज, ते निश्चलित पणे वर्त्तें, परंतु कोप करे नाहिं, अने अंतरंगथकी तो सत्तागतना उपयोगमां स्वपरनी वेंचण करतो थको अमोल पणे वर्त्तें, ते प्राणी महोटी निर्ज्जरा प्रत्यें करे, तेने नावकाउस्सग्ग कहीयें. तेमां आठ तत्त्व पामीयें.

१५३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी नावपच्चरकाण आवश्यकमां केटलां तत्त्व?

गुरुः—शब्द नयने मतें इछानिरोध पणे नाव पच्चरकाण जे जे वस्तुनां प्राणी करे ठे, ते प्राणी मोक्ष नगरने नजीक करे ठे, एटले आ नवने विषे यशःकीर्त्ति, मान, शोना, तथा इंद्रियसुखनी लालचथकी रहित निरिछ पणे तेमज परनवनी इछा जे देवता, चक्रवर्ती, वासुदेव, तथा इंद्रादिकनी क्रद्धिनी वांठा थकी रहित थको एक पोताना आत्माने निरावरण करवारूप जे जे, पच्चरकाण करे ठे, ते तो सर्व नावपच्चरकाण आवश्यक कहीयें. तेमां आगल कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें. ए रीतें नावथकी षडावश्यकनुं स्वरूप संक्षेपमात्रें करी कह्युं.

१५४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी रमणिक तत्त्व केटलां पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमां अनेक नयनी अपेक्षायें करी एक जीव तत्त्व रमणिक जाणवुं. केम के नैगम अने संग्रह ए बे नयने मतें पारिणामिक भावें करी सर्व जीव पोताना स्वरूपमां रमणिक जाणवा. अने व्यवहार नयें करी तो जीवने अजीवरूप पुद्गलमां रमणिक पणुं जाणवुं. तथा ऋजुसूत्र नयने मतें जीवने शुभाशुभ रूप परिणामें करी पुण्य अने पाप रूप आश्रवमां रमणिक पणुं जाणवुं. तथा शब्द अने समभिरूढ ए बे नयने मतें तो जीवने संवर अने निर्ज्जरा ए बे तत्त्वमां रमणिक पणुं जाणवुं. तथा एकला समभिरूढ नयने मतें जेवारें जीवें घातीकर्म खपावी, ज्ञानादि अनंत चतुष्टय रूप लक्ष्मी प्रगट करी, तेवारें एनें द्रव्य मोक्ष पदमां रमणिकपणुं जाणवुं, ए रीतें ए नव तत्त्वमां रमणिक पणुं एक जीव तत्त्वने जाणवुं, पण जे प्राणीने इष्टदेव तथा गुरुकृपाथकी नय निक्षेपानी कला प्राप्त थइ हशे, ते प्राणीने ए प्रश्नोनो अर्थ विचारतां घणी रीज उपजशे माटे नय, निक्षेपा, द्रव्य, भाव, निश्चय व्यवहारनुं जाणपणुं विशेष रीतें करवुं, एटले समकेत रूप रत्ननी प्रतीति थाय.

१५५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथीअशुभप्रकारें रमणिकस्वभावमांकेटलांतत्त्व?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मतें अशुभ प्रकारें रमणिक स्वभावमां पांच तत्त्व पामीयें, ते कहे छेः—एक तो रमणिक ते जीव अने अशुभ ते पाप तथा ए पापनां दलीयां अजीव ते आश्रवभूत जाणवां. अने ए दलीये जीव बंधाय छे माटे जीव, पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए पांच तत्त्व पामीयें.

१५६ शिष्यः—एनवतत्त्वमांथी शुभप्रकारें रमणिकस्वभावमां केटलांतत्त्वछे ?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मतें पहेले गुणठाणे शुभ प्रकारें रमणिक स्वभाव होय तेमां पांच तत्त्व पामीयें, एक तो (रमणिक के०) जीव पोतें, बीजुं (शुभ के०) पुण्य, ते पुण्यनां दलीयां अजीव छे, ते आश्रवरूप जाणवां, अने ए दलीये जीव बंधाय छे, ते बंध तत्त्व थयुं, एटले जीव, पुण्य, अजीव, आश्रव अने बंध, ए पांच तत्त्व थयां.

१५७ शिष्यः-एनवतत्त्वमांथीशुद्धप्रकारेंरमणिकस्वभावमांकेटलांतत्त्वपामीयें

गुरुः—शब्द अने समभिरूढ नयने मतें चोथा गुणठाणाथी यावत् तेरमा अने चौदमा गुणठाणा पर्यंत जीवने शुद्ध प्रकारें रमणिक दशा जा

णवी, तेमां आठ तत्त्व अने नव तत्त्व पामीयें. एटले (शुज्ञ के०) पुण्य नां दलीयां अने (अशुज्ञ के०) पापनां दलीयां आगल ए वे प्रश्न कह्या ठे, तेमांहे जीव लेपाणो ठे, अर्थात् ए शुज्ञाशुज्ञ कर्मरूप कचरामां जीव लेपाणो ठे, पण तिहां थकी शुद्धिना करनारा एक संवर अने बीजुं निर्ज्जरा ए बे तत्त्व जाणवां. एटले शब्द अने समज्ञिरूढ नयने मतें समकेत जावें चोथा गुणठाणाथकी मांमीने यावत् अगीयारमा बारमा गुणठाणा लगें जे जीव वर्त्ते ठे, तेमां पूर्वें कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें. एक तो जीव अने सत्तायें पुण्य पापनां दलीयां अजीव रूप अनंतां रह्यां ठे, ते आश्रव रूप जाणवां तथा ए दलीये जीव बंधाणो ठे, एटले जीव, पुण्य, पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए ठ तत्त्व थयां तथा जीव अजीव रूप स्वपरनी वेंचण करी जिहांसुधी जीव, स्वरूपमां रहे, तिहां सुधी संवर कहीयें. अने जिहां सुधी संवरमां जीव रहे, तिहां सुधी समय समय अनंती निर्ज्जरा करे, ए रीतें पूर्वोक्त ठ तत्त्वमां संवर तथा निर्ज्जरा जेलीयें, ते वारें आठ तत्त्व पामीयें:– अने समज्ञिरूढ नयने मतें तेरमे गुणठाणें शुद्ध प्रकारें रमणिकपणुं केवली ज्ञगवानने जाणवुं. तेमां पूर्वोक्त आठ तत्त्वनी साथें केवलज्ञान पाम्या, एटले द्रव्य मोक्ष पद पाम्या ते नवमुं कहेवुं.

१५७ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी निश्चयथकी रमणिक स्वज्ञावमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः–एवंज्ञूत नयने मतें निश्चयथकी रमणिक स्वज्ञावमां त्रण तत्त्व पामीयें. केम के निश्चयथकी रमणिकपणुं तो मोक्ष पुरीमां सिद्धना जीवने ठे, तेमां तो एक सिद्धनो जीव ते जीव तत्त्व अने यथाख्यात चारित्र रूप गुणें करी पोताना स्वरूपमां रमण करे ठे ते बीजुं संवर तत्त्व जाणवुं. तथा त्रीजुं ज्ञावमोक्ष पद पाम्या ठे, ते त्रीजुं मोक्षतत्त्व जाणवुं.

१५९ शिष्यः– ए नव तत्त्वमांथी ध्यातारूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः–ए नव तत्त्वमांथी ध्याता रूप एक जीव तत्त्व जाणवुं, कारण के कोइ जीव रुजुसूत्र नयने मतें क्रोध, मान, माया, लोज्ञ, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, हास्य, विनोद निंदा अने ईर्ष्या, ए आदें अनेकप्रकारें अशुज्ञ परिणामें करी नरक अने तिर्यंच गतिनां सुखने ध्यावे ठे, अने वली कोइएक जीव तो रुजुसूत्र नयने मतें दान, शील, तप, ज्ञावना, पूजा, प्र

जावना, संघजक्ति, गुरुजक्ति, उपकार बुद्धि, ए आदि देइने अनेक प्रकारें शुज परिणामें करी मनुष्यगति तथा देवगतिना सुखने ध्यावे ठे,तथा कोइए कजीव तो वली समजिरूढ नयने मतें शुद्ध परिणामें करी मोक्ष गतिने ध्यावे ठे. ए रीतें नव तत्त्वमांथी ध्यातारूप एक जीव तत्त्व जाणवुं.

१६० शिष्यः—एनवतत्त्वमांथीअशुजप्रकारेंध्यातारूपमांकेटलांतत्त्वपामीयें?

गुरुः—अशुज प्रकारें ध्याता रूपमां पांच तत्त्व जाणवां. तेमां एक तो (ध्याता के०) जीव, बीजुं (अशुज के०) पाप, त्रीजुं पापनां दलियां ते अजीव ठे, चोथुं ए आश्रव रूप जाणवुं, अने पांचमुं बंध तत्त्व जाणवुं.

१६१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी शुजप्रकारेंध्यातारूपमां केटलांतत्त्वपामीयें?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी शुज प्रकारें ध्यातारूपमां पांच तत्त्व पामीयें. एक तो ध्यातारूप जीवतत्त्व अने बीजुं (शुज के०) पुण्य ते पुण्यनां दलीयां अजीव ठे, ते आश्रवरूप जाणवां, अने ए दलीये जीव बंधाणो ठे, एटले जीव, पुण्य, अजीव आश्रव अने बंध, ए पांच तत्त्व पामीयें.

१६२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी शुद्धप्रकारें ध्यातारूपमां केटलां तत्त्व ठे ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी शुद्धप्रकारें ध्याता रूपमां आठ तत्त्व तथा नव तत्त्व पामीयें. कारण के शुजाशुज विकाररूप जे कर्म, तिहांथकी जीवने शुद्धनां करनार, एक संवर अने बीजुं निर्जरा, ए बे तत्त्व ठे, केम के शब्द अने समजिरूढ नयने मतें चोथा गुणठाणाथी मांमीने यावत् ठद्मस्थ अवस्था लगें जीवने शुद्ध प्रकारें ध्याता रूपमां पूर्वें कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें, अने समजिरूढ नयने मतें तेरमे गुणठाणे शुद्ध प्रकारें ध्याता केवली जगवान् कहीयें तेमां आगल कह्यां, ते रीतें नव तत्त्व पामीयें.

१६३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी बहिरात्मामां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—बहिरात्मा जीव, पहेले मिथ्यात्व गुणठाणे होय, जे माटे बाह्य संपदायें रत होय,तेने बहिरात्मा कहीयें ॥गाथा॥ पुज्ञलसें रातो रहे, जाणे एह निधान ॥ तस लाजें लोज्यो रहे, बहिरातम अजिधान ॥ १ ॥ अर्थः— एटले शुजाशुज कर्म विपाक फलने उदयें करी राज्य, रुद्धि, जंमार, हुकम, दास, दासी, सुजट, सीपाइ,आवरू, इज्जत, शोजा,पुत्र, कलत्र,कुटुंब, परिवार, राग, रंग, कला, विकला, माहापण, चतुराइ, हाव, जाव, नाटक, कौतुक, पोताना शरीरनी कांति,बल,जुवानी,मद,अहंकार,ए आदें देह अनेक

प्रकारें पोतानी शोभा देखी तेना उपर एकाग्रचित्तें रीज माने मनमां एम जाणे जे संसारमां सुख एक हुंज भोगवुं छुं, ए रीतें पोताना स्वरूपथकी जे वाह्य भाव छे, तेने आदरी तेनां सुख विलसे तेने बहिरात्मा कहीयें. तेमां आगल मिथ्यात्वगुणठाणे कह्यां, ते रीतें छ तत्त्व पामीयें.

१६४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी अंतरात्मामां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—दोहा ॥ पुद्गलभाव रुचे नहीं, ताथें रहे उदास ॥ सो अंतर आत्मा लहे, परमानंद प्रकाश ॥ १ ॥ पुद्गल खल संगीपरें, सेवे अवसर देख ॥ तनु शक्ति ज्यूं लक्कडी, ग्यान भेद पद लेख ॥ २ ॥ बहिरातम तज आतमा, अंतर आतम रूप ॥ परमातमने ध्यावतां, प्रगटे सिद्धस्वरूप ॥ ३ ॥ माटे वाह्या संपदा थकी जेनो विरक्त भाव वर्त्ते छे, अने पोताना आत्मस्वभावमां रक्तभाव वर्त्ते छे तथा पोताना सहज समाधिपदने विरहें दुःखें करी असमर्थ थको झुरे छे, एवो जीव, चोथा गुणठाणाथी मांमीने बारमा गुणठाणा लगें अंतरात्मा कहीयें. ए अंतरात्मा जीव, ते सम्यग्दृष्टि जाग्यो थको विवेकरूप लोचनें करी सहितथको परभावथकी उदासी होय, ते वारें साचो नय देखतां एनुं जगतमां शत्रुमित्र कोइ नथी, एने कोइ जीवथी वैर विरोध पण नथी, ए सर्व जीवने पोता सरखा जाणी तेनी दया पाले, रक्षा करे, उपकार करे, ते परदया जाणवी. अने पोतानो आत्मा कर्मने वशें करी दुःखी छे, अनेक प्रकारें पीडा पामे छे, जन्म, जरा, मरणनां दुःख भोगवे छे, तेने कर्मरूप दुःखथकी मूकाववाना जे परिणाम ते स्वदया जाणवी. एटले जे कारणें आत्माने ज्ञानभावें करी समजावे. के रे जीव! तुं अनादि कालनो भमतो थको जे तें भोग भोगवीने, छोड्या, ते महा विकाररूप अनंत दुःखना दातार, तेहनी फरीथी तुं वांछा करे छे, तेथी तुजने लाज केम नथी उपजती? अने जे आहार लइने छोड्या ते वली पाछा आहार पणे करे छे? एवुं आचरण उत्तम विवेकी आदरे नहीं, केमके वम्या आहारनी इच्छा तो श्वान होय, ते करे? ए रीतें मनःपश्चात्तापें करी पोताना वोधवीज सुख सहज रसने चाखे, एटले समकेत रूप ज्ञान दृष्टियें करी स्वस्वरूपप्रकाश, चिदानंद, विभु, विनाशरहित, एक तुं शाश्वतो, सर्व जगतना भाव प्रपंच जाणवाने शक्तिमंत, एवुं तारुं स्वरूप असंख्यात प्रदेशें करी सहित छे, पण एक एक प्रदेशें अनंता कर्म परमाणु रागद्वेषनी चि

काशें अति स्निग्ध पणे निविडजूत थइ लागा वे, तेणें करी ज्ञानस्वरूप द बाइ गयुं वे, ते प्रगट करवाने अर्थे संसार उदासी त्यागरूप वैराग्य जावना जावतो स्वपरनी वेंचण करी स्वस्वरूपनुं ग्रहण करे, अने परस्वरूपने विजा वरूप जाणी त्याग करे, ए रीतें अनुजवरसमां जीलतो ध्यानरूप अग्नियें करी कर्म आवरणने जस्म करतो थको, थोडा कालमां परमानंद पद प्रत्यें पामे, तेने अंतरात्मा कहीयें. तेमां आगल कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें.

१६५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी डव्यपरमात्मामां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—समजिरूढ नयने मतें तेरमे गुणठाणे केवलीने डव्यपरमात्मा कहीयें, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें नव तत्त्व पामीयें.

१६६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जावपरमात्मामां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—एवंजूत नयने मतें जे लोकने अंतें बिराजमान सादि अनंतमे जागें वर्त्ते वे. एवा सिद्ध जगवाननें जावपरमात्मा कहीयें, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें.

१६७ शिष्यः—सिद्ध परमात्माना स्वरूपमां ज्ञान, ज्ञाता अने ज्ञेय, ए त्रिजंगी उपजे वे, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—(ज्ञान के०) जाणपणुं ते जीवनो गुण वे, ते ज्ञान गुणें करीने त्रण कालनुं स्वरूप प्रत्यक्ष पणे एक समयमां सिद्धपरमात्मा जाणे वे, तेथी सिद्धनो जीव, ज्ञाता वे, अने जेने ज्ञान गुणें करी जाणे वे, एवां सर्व डव्य ते ज्ञेय वे, ए सिद्ध परमात्माने विषे त्रिजंगीनुं स्वरूप जाणवुं.

१६८ शिष्यः—सिद्ध जवान्ना स्वरूपमां कर्त्ता, कारण अने कार्य, ए त्रिजंगी उपजे वे, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—कर्त्ता सिद्धनो पोतानो जीव जाणवो, अने ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा वीर्य रूप अनंता गुण जे वे, ते कारण जाणवां, तथा (कार्य के०) पर्यायनुं उत्पाद व्यय रूप नव नवा ज्ञेयनी समय समय अनंती अनंती वर्त्तना रूप जे सुख, ते सुखनुं आस्वादन ते कार्य जावुं.

१६९ शिष्यः—सिद्ध जगवान्ना स्वरूपमां ध्यान, ध्याता अने ध्येय, ए त्रिजंगी उपजे वे, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—ध्यान ते सिद्धना जीवोने पोताना स्वरूपनुं वे. ते चार ध्यानथ की उत्तर जाणवुं, अने तेनो ध्याता ते सिद्धनो पोतानो जीव तथा ध्येय

ते आत्मिक स्वरूप जाणवुं. ए रीतें जे जीव, सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप जाणे, तेवारें तेने सिद्धनां सुख प्रगट करवानो नाव उपजे, अने सिद्धनां सुख प्रगट करवानी वांछायें जे कारण सेवे छे, तेने समकेतनी प्राप्ति जाणवी.

१७० शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी अशुन्न ध्यानमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–रुजुसूत्र नयने मतें पहेले गुणठाणे अशुन्न ध्यान होय, तेमां पांच तत्त्व जाणवां, कारण के एक तो अशुन्न ध्याननो कर्त्ता जीव तत्त्व अने (अशुन्न के०) क्रोध, मान, माया, लोन्न, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, निंदा, ईर्ष्या, क्लेश, कजीयो, वाद, विवाद, ए आदें अनेक प्रकारनुं अशुन्न ध्यान छे, ते सर्व बीजुं पाप तत्त्व जाणवुं अने ते पापनां दलीयां अजीव छे, ते आश्रव रूप जाणवां, माटे त्रीजुं अजीव अने चोथुं आश्रव तत्त्व तथा ते दलीये जीव बंधाणो ते पांचमुं बंधतत्त्व जाणवुं.

१७१ शिष्यः–नव तत्त्वमांथी शुन्न प्रकारें ध्यानमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–रुजुसूत्र नयने मतें पहेले गुणठाणे शुन्नध्यानरूपमां पांच तत्त्व जाणवां. तेमां एक तो ध्याननो कर्त्ता जीवतत्त्व पोतें जाणवुं अनेक (शुन्न के०) दान, शील, तप, नावना, परोपकार, करुणा, दया, चैत्यन्नक्ति, पूजा, प्रन्नावना, ए आदिक अनेक प्रकारनुं शुन्न ध्यान जाणवुं, एवा अनेक प्रकारना शुन्न ध्यानमां जीव वर्त्ते छे, तथापि अंतरमां इंद्रियरूप सुखनी लालचना परिणाम छे, तेणें करी (शुन्न के०) पुण्य उपार्जन करे छे, ते बीजुं पुण्यतत्त्व थयुं, अने ते पुण्यनां दलीयां अजीव छे, ते आश्रवरूप जाणवां, एटले त्रीजुं जीव तत्त्व अने चोथुं आश्रवतत्त्व थयुं. अने ए दलीये जीव बंधाय छे, ते पांचमुं बंधतत्त्व थयुं.

१७२ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी शुद्ध ध्यानरूपमां केटमां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–शब्द समन्निरूढ नयने मतें समकेत नावें चोथा गुणठाणाथी मांमीने यावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा लगें शुद्ध ध्यान जाणवुं. तेमध्यें शब्द नयने मतें समकेत नावें छठे, सातमे गुणठाणे जे जीव शुद्ध ध्यानमां वर्त्ते छे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें, अने समन्निरूढ नयने मतें तेरमे, चौदमे गुणठाणे केवली नगवान् शुक्लध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें शुद्ध ध्यानें वर्त्ते छे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें नवतत्त्व पामीयें?

१७३ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी कर्मफल चेतनामां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—जे जीव, कर्मनां फल जोगवे छे तेने कर्मफल चेतना कहीयें, ते पहेला गुणठाणाथी मांमीने चौदमा गुणठाणा लगें जाणवी, तिहां जे पहेले गुणठाणे मिथ्यात्वी जीव कर्मनां फल जोगवे छे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें ठ तत्त्व पामीयें. अने समकेत जावें चोथा गुणठाणाथी मांमीने यावत् अगीयारमा बारमा गुणठाणा पर्यंत जे जीव, कर्मनां फल जोगवे छे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें. तथा समजिरूढ नयने मतें तेरमे चौदमे गुणठाणे वर्त्तता केवली जगवान्, पण कर्मनां फल जोगवे छे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें नव तत्त्व पामीयें.

१७४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी ज्ञानचेतनामां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—शब्द नयने मतें चोथे गुणठाणे समकेती जीवने ज्ञानचेतना जाणवी, अने पांचमे गुणठाणे देशविरति श्रावकने पण ज्ञानचेतना जाणवी, तथा ठहे, सातमे, यावत् अग्यारमे, बारमे गुणठाणे वर्त्तता साधु मुनिराजने पण ज्ञानचेतना कहीयें, कारण के एक रूपैयानी पूंजीवालो पण रूपैयानो धणी कहेवाय,अने दश रूपैयावालो पण रूपैयानो धणी कहेवाय, अने सो रूपैयावालो पण रूपैयानो धणी कहेवाय, तथा हजार रूपैयावालो पण रूपैयानो धणी कहेवाय, एम यावत् लाख रूपैया अने क्रोड रूपैया वालो पण रूपैयानो धणी कहेवाय, तेम इहां चोथा गुणठाणाथी यावत् चौदमा गुणठाणा पर्यंत तथा मोक्ष पर्यंतना सर्व जीव ज्ञानी कहीयें तिहां शब्दसमजिरूढ नयने मतें समकेतजावथी मांमी यावत् अगीयारमा बारमा गुणठाणा लगें जे साधु, मुनिराजपणे विचरे छे, तेमां आठ तत्त्व पामीयें अने समजिरूढ नयने मतें तेरमे चौदमे गुणठाणे केवली जगवान् विचरे छे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें नव तत्त्व पामीयें, तथा एवंजूत नयने मतें सकल कर्म क्षय करी लोकने अंतें बिराजमान अनंत सुखने विलासें करी सादि अनंतमे जागें सिद्ध परमात्मा वर्त्ते छे, तेमां आगल कह्यां ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें.

१७५ शिष्यः—नवतत्त्वमांथी अशुज प्रकारें कर्मचेतनामां केटलांतत्त्वपामीयें?

गुरुः—रुजुसूत्र नयने मतें पहेले गुणठाणे अशुज प्रकारें कर्म चेतनामां पांच तत्त्व पामीयें, ते आवी रीतें:—कोइ जीवनी चेतना पापरूप परिणामें वर्त्ते छे, तेने अशुज प्रकारें कर्मचेतना कहियें. तेमां एक तो जी

वनी चेतना ते जीवतत्त्व, बीजुं अशुन्न एटले पाप तत्त्व, त्रीजुं पापनां द
लीयां ते अजीवतत्त्व, चोथुं ए आश्रव रूप बे माटे आश्रव तत्त्व अने
पांचमुं ए दलीये जीव बंधाय बे, माटे बंधतत्त्व जाणवुं.

१७६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां शुन्न प्रकारें कर्म चेतनामां केटला तत्त्वबे?

गुरुः—रुजुसूत्र नयने मतें पहेले गुणठाणे शुन्न प्रकारें कर्म चेतनामां पांच तत्त्व पामीयें, तिहां कोइ जीवनी चेतना पुण्यरूप परिणामें वर्त्ते बे, तेने शुन्न प्रकारें कर्मचेतना कहीयें, तेमां एक जीवनी चेतना अने बीजुं (शुन्न के०) पुण्य, त्रीजुं पुण्यनां दलीयां ते अजीव तत्त्व, चोथुं ए आश्रव रूप बे माटे आश्रव तत्त्व, पांचमुं ए दलीये जीव बंधाय बे माटे बंधतत्त्व बे.

१७७शिष्यः—एनवतत्त्वमांथीआर्त्तरौद्रध्याननीन्नावनामांकेटलांतत्त्वपामीयें.

गुरुः—आर्त्त रौद्रध्यान पहेले गुणठाणे मिथ्यात्वी जीवने होय, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें ब तत्त्व पामीयें, अने चोथे गुणठाणे समकेती जीव तथा पांचमे गुणठाणे देशविरति जीवने पण आर्त्त रौद्र ध्यान होय, ए परमार्थ देवचंद्रजीकृत आगमसार थकी जाणवो तेमां आठ तत्त्व पामीयें.

१७८ शिष्यः—एनवतत्त्वमांथीधर्मध्यानशुक्लध्याननीन्नावनामांकेटलांतत्त्वबे?

गुरुः—शब्दसमन्निरूढ नयने मतें धर्मध्यान तथा शुक्लध्याननी न्नावनामां आठ तथा नव तत्त्व पामीयें, तिहां शब्द नयने मतें धर्मध्याननी न्नावनायें चोथे गुणठाणे समकेती जीव अने पांचमे गुणठाणे देशविरति जीव, तथा बठे सातमे गुणठाणे साधुमुनिराज होय, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें. तथा शुक्लध्याननी न्नावना वाला जीव, नवमे गुणठाणेथी यावत् अगीयारमा बारमा गुणठाणा लगें ब्रद्मस्थ मुनिराज होय. तेमां पण आठ तत्त्व पामीयें. अने तेरमे चौदमे गुणठाणे केवली न्नगवान् शुक्लध्यान ध्यावे बे, तेमां नव तत्त्व पामीयें.

१७९शिष्यः—एनवतत्त्वमांथीअशुन्नप्रकारेंजीवनेबाधकरूपकेटलांतत्त्वबे?

गुरुः—रुजुसूत्र नयने मतें पहेले गुणठाणे अशुन्न प्रकारें जीवने बाधक रूप पांच तत्त्व पामीयें. तेमां एक तो जीव तत्त्व, बीजुं अशुन्न प्रकारें बाधक ते पाप, तथा ए पापनां दलीयां अजीव ते आश्रवरूप जाणवां, एटले त्रीजुं अजीव, चोथुं आश्रव अने पांचमुं ए दलीये जीव बंधाय बे, ते बंध.

१८० शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी शुन्नप्रकारें जीवने बाधकरूप केटलां तत्त्व?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मतें पहेले गुणठाणे जीवने शुभप्रकारें बाधकरूप पांच तत्त्व जाणवां. तेमां एक तो जीव, बीजुं शुभप्रकारें बाधक ते पुण्य, त्रीजुं ए दलीयां अजीव छे. चोथुं ए आश्रव रूप छे अने पांचमुं बंधतत्त्व.

१७१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने शुभप्रकारें साधकरूप केटलां तत्त्व?

गुरुः—चोथे गुणठाणे समकेती जीव, पांचमे गुणठाणे देशविरति, अने छठे सातमे गुणठाणे साधुमुनिराज अने यावत् अगीयारमा बारमा गुणठाणापर्यंत शब्द समभिरूढनयने मतें शुद्धप्रकारें साधक दशा जाणवी, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें. अने समभिरूढ नयने मतें तेरमे चौदमे गुणठाणे केवली भगवानने शुद्धप्रकारें साधक दशा जाणवी, तेमां आगल कह्यां, ते नव तत्त्व पामीयें.

१७२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी कर्त्तारूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमां अनेक नयनी अपेक्षायें करी कर्त्तारूप एक जीव तत्त्व जाणवुं.ते आवी रीतेंः—नैगम अने संग्रह नयने मतें सर्व जीव, पोताना स्वरूपमां पारिणामिक भावें वर्त्ते छे,अने व्यवहारनयें करीजीव शुभाशुभ रूप करणीनो कर्त्ता कहीयें,एटले कोइजीव व्यवहारथकी शुभाशुभरूप करणी करे छे, अने ऋजुसूत्र नयने मतें अंतरंगभावनी चिकाशरूप परिणाम वर्त्तता नथी. तेमाटे ते जीव, पुण्य पापरूप फल प्रत्यें न पामे, केम के ऋजुसूत्र नयने मतें अंतरंग भावनी चिकाशरूप परिणाम विना उपरथकी व्यवहार नयने मतें शुभकरणीरूप वीरा शालवीयें अढार हजार साधु प्रत्यें वांद्या, तथापि पुण्यरूप फलप्रत्यें न उपार्ज्युं, तेमाटे अंतरंग भावनी चिकाशविना पुण्यरूप दलीयां चोटे नहीं ॥ गाथा ॥ आतमसाखें धर्म जे, त्यां जननुं शुं काम ॥ जनमनरंजन धर्मनुं, मूल्य न एक बदाम ॥ १ ॥ अर्थः—अंतरंग आत्मानी साखें जे धर्म करवो, ते धर्म प्रमाण छे,एटले आत्मा निरावरण करवा सारु धर्म करवो ते प्रमाण छे अने (जन के०) लोक तेनां मन रीजववा रूप अथवा यशःकीर्त्ति शोभानी वांछारूप परिणामें जे धर्म करवो, ते धर्मनुं मूल्य एक बदाम मात्र पण नथी, एटले वीरा शालवीनी पेरें कृष्ण वासुदेवनुं मन रीजववारूप व्यवहारथकी तो शुभकरणी घणीए करी, पण बदाम मात्र फल प्रत्यें न पाम्यो. ए परमार्थ जाणवो. अने ऋजुसूत्र नयने मतें अंतरंगभावनी चिकाश विना उपरथकी व्यवहार नयने मतें

समकेती जीव, कर्मने वशें करी नोगादिक अशुन करणी अनेक प्रकारें करे ठे, परंतु अंतरंग नावनी चिकाश विना तेने पापरूप दलीयां चोटतां नथी. अत्र गाथा "ज्ञानीको नोग है, सो निर्जराको हेतु है ॥ अज्ञानीको नोग है, सो बंधफल देतु है" ॥ माटे समकेती जीव, कर्मने वशें करी अव्रतीने उदयें संसारमां व्यवहार नयें करी उपर थकी विषयादिक अशुन करणी करे ठे, पण रुजुसूत्र नयने मतें अंतरंग परिणामरूप नावनी चिकाश विना कर्मरूप दलीयां लागतां नथी, ए परमार्थ जाणवो, एम व्यवहार नयने मतें जीव अशुनप्रकारें करणीनो कर्त्ता ठे, तेहनुं स्वरूप सामान्य प्रकारें कह्युं

वली रुजुसूत्र नयने मतें नावना चिकाशरूप परिणामें करी जीव,पुण्यरूप फल प्रत्यें पामे, कारण के जीरणशेठें व्यवहार नयने मतें उपर थकी तो दान आप्युं नथी, परंतु रुजुसूत्र नयने मतें अंतरंग दान देवाना नावना चिकाशरूप परिणाम हता, तेणे करी नावचिकाशें बारमा देवलोकनां पुण्यरूप दलीयां लागां, तथा तेमज श्री तीर्थंकर नगवाने पण आगल त्रीजे नवें रुजुसूत्र नयने मतें अंतरंग नावनी चिकाशरूप परिणामें करी सर्व जीवने धर्म पमाडी दुःखथकी मूकावी सुखीयां करुं ? एवी नावना नावी, ते नावना चिकाशरूप परिणामें तीर्थंकर नामगोत्रनां दलीयां बांध्यां, पण व्यवहार नयने मतें तो एक जीवने पण धर्म पमाडी दुःखथकी मूकावीने सुखीयो कस्यो नथी, तथापि परदयारूप नावथकी जिननाम कर्म उपार्ज्युं ए परमार्थ ठे, एटले रुजुसूत्रनयने मतें जीव, शुन प्रकारें कर्मनो कर्त्ता तेनो ए परमार्थ कह्यो.

वली रुजुसूत्र नयने मतें अंतरंग अशुन नावना चिकाशरूप परिणाम ते थकी जीव जे ठे, ते पापरूप फल प्रत्यें उपार्जे, जेम कालक सूरियो खाटकी ते राजगृही नगरी मध्ये दिन प्रत्यें पांचशे पाडा मारतो हतो. ते सारु तेने श्रेणिक राजायें कूवामां टांग्यो अने पाडा मूकाव्या,एटले व्यवहार नयने मतें ते खाटकी हिंसा नथी करतो, पण रुजुसूत्र नयने मतें अंतरंग पाडा मारवाना नावरूप परिणामनी चिकाशें वर्त्ते ठे, तेथी श्रीवीर प्रनुयें कह्युं के हजी पाडा मारे ठे अने पापरूप दलीयां उपार्जे ठे एटले व्यवहारनयें तो पाडा नथी मारतो परंतु रुजुसूत्र नयने मतें अंतरंग हिंसारूप नावनी चिकाश वर्त्ते ठे, माटे हजी पाडा मारे ठे, एम कह्युं मत

लव के चिकाशें पापनां दलीयां लागे छे, एम ऋजुसूत्रनयने मतें जीव अशुज्ञ प्रकारें कर्त्ता तेनुं स्वरूप कह्युं. ए रीतें व्यवहार नयनो अने ऋजु सूत्र नयनो ए परमार्थ जाणवो, सम्यग्दृष्टि जीवने ए बे नय प्रमाण छे, एटले व्यवहारनयें करणी करवी अने ऋजुसूत्रनय हृदयमां धारवो, ते थकी जीवने कार्यनी सिद्धि नीपजे.

हवे शब्द समजिरूढ नयने मतें जीव ज्ञानदृष्टियें करी धर्मध्यान शुक्ल ध्यानरूप शुद्ध परिणामें करी स्वरूपना चिंतनरूप संवरमां रहेतां समय समय अनंता कर्मनी निर्ज्जरा करे, अत्र गाथा ॥ छठ अठम दसम, डुवाल सेहिं मासद्ध मास खमणेहिं ॥ एतोउ अणेग गुणो, सोहिं जिमीयस्स नाण स्स ॥१॥ जं अन्नाणी कम्मं, खवेइ बहुआइं वास कोडीहिं ॥ तं नाणी तिहिं गुत्तो, खवेइ उस्सासमित्तेणं ॥ २ ॥ अर्थः—सम्यक्ज्ञान रहित एवो अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव, ते छठ, अठम, दशम, डुवालस, पासखमण, मासखमण प्रमुख अनेक प्रकारें तपस्या करतो, तथा ए तपस्या आदें देइने अनेक गुणें करी शोजतो घणा वर्षनी कोडी गमे तपस्यायें करी जेटलां कर्म खपावे, तेट लां कर्म, सम्यक् ज्ञानी जीव, मन, वचन, कायायें करी एकचित्तें सत्तागतनां चिंतनमां रहेतां थकां एक श्वासोछ्वासमां खपावे, एटले मिथ्यादृष्टि अज्ञा नी जीव, घणा वर्षनी कोडी गमे तपस्या करी जे काम काढे, तेटलुं काम समकेतदृष्टि जीव, एक श्वासोछ्वासमां काढे, ए रीतें शब्दसमजिरूढ नयने मतें करी जीव, संवर निर्ज्जरा रूप कार्यनो कर्त्ता तेनो परमार्थ कह्यो.

हवे एवंजूत नयने मतें जीव सर्व कर्म खपावी, मोक्षपद पामी, लोकने अंतें बिराजमान सादि अनंतमे जागें परमानंद सुखने विलासे, वाधार हित अनंता सिद्ध परमात्मा वर्त्ते छे. ए रीतें ए नयनी अपेक्षायें करी नव तत्त्वमां जीवनुं कर्त्तापणुं देखाड्युं, तेमाटे ए पंक्ति जीव चित्तमां उतारी, नयनी अपेक्षा विचारी, सर्वनय प्रमाण करे, ते प्राणी सम्यग्दृष्टि जीव जा णवो. अने जे एमां एक नय पकडे ते जीव मिथ्यादृष्टि जाणवो.

१७३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी अशुज्ञ प्रकारें कर्त्ता रूप केटलां तत्त्व छे.

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मतें पहेले गुणठाणे अशुज्ञ प्रकारें कर्त्ता रूपमां पांच तत्त्व जाणवां. एक तो कर्त्ता जीव पोतें, बीजुं (अशुज्ञ के०) पाप,

त्रीजुं पापनां दलीयां ते अजीव, चोथुं ए आश्रव रूप जाणवां ते आश्रव, पांचमुं ए दलीये जीव बंधाय छे ते बंधतत्त्व जाणवुं.

१७४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी शुभ प्रकारें कर्त्तारूपमां केटलां तत्त्व छे?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयनें मतें पहेले गुणठाणें शुभ प्रकारें कर्त्तारूपमां पांच तत्त्व जाणवां, जेम कोइ एक जीव शुभ करणी करे छे, अने तेना अंतरंग पुण्यरूप इंद्रिय सुखनी वांछायें परिणाम वर्त्ते छे, तेने शुभ प्रकारें कर्त्ता कहीयें. तिहां कर्त्ता जीवतत्त्व, अने बीजुं (शुभ के०) पुण्य, त्रीजुं पुण्यनां दलीयां ते अजीव, चोथुं ए आश्रवरूप छे पांचमुं एणे करी जीव बंधाय छे.

१७५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी शुद्ध प्रकारें कर्त्तारूपमां केटलां तत्त्व छे?

गुरुः—शुद्धप्रकारें कर्त्तारूपमां आठ तथा नव तत्त्व पामीयें. जे कारणें शब्द समभिरूढ नयने मतें समकेत भावें चोथा गुणठाणाथी मांकीने यावत् अगीयारमा बारमा गुणठाणा लगें छद्मस्थ अवस्थायें शुद्ध प्रकारें कर्त्तारूप कहीयें, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें. तथा समभिरूढ नयने मतें तेरमे चौदमे गुणठाणे केवली भगवानने शुभप्रकारें कर्त्ता कहीयें, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें नव तत्त्व पामीयें.

१७६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने अशुभ कारणरूप केटलां तत्त्वछे?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी अशुभ कारणरूप एक पापतत्त्व जाणवुं, कारण के अशुभ एटले पाप ते पापनां काम तो हिंसादि परिणाम ते आश्रवरूप जाणवां, एटले कारण तो जीवने अशुभ मल्यां पण जीव तेमांहे भले, तो बंधाय अने जो जीव तेमां भलीने बंधाय तो जीव, पाप, आश्रव, अजीव अने बंध, ए पांच तत्त्व पामीयें. अने जो जीव नही भले, तो नव तत्त्वमांथी एक पाप तत्त्व पामीयें. तेथी अशुभ कारणरूप जीवने एक तत्त्व छे.

१७७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने शुभकारणरूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—जीवने शुभ कारण रूप एक पुण्य तत्त्व जाणवुं. एटले शुभ कारण ते दान, दया, परोपकार, करुणा, सेवा, भक्ति, उत्तम गुणवान् जीवना बहुमान करवां ए आदें अने प्रकारें शुभ कारण जाणवां, एटले (शुभ के०) पुण्यरूप फलनी वांछायें परिणाम वर्त्ते छे माटे ते आश्रवरूप जाणवां एटले जीवने कारण तो शुभ मल्यां, पण तेमांहे जीवनो उपयोग भले तो पुण्य

रूप दलीयां बांधे तेवारें जीव, पुण्य, अजीव, आश्रव अने बंध, ए पांच तत्त्व पामीयें नहीं तो शुभ कारणरूप जीवने एक पुण्य तत्त्व जाणवुं.

१७७ शिष्यः–एनवतत्त्वमांथी जीवने शुद्धकारणरूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–जीव, शुभाशुभ कर्मरूप कचरे लेपाणो, तेणें करी चार गतिरूप संसारमां अनेक प्रकारनी विटंबना भोगवे छे, परंतु जो संवर अने निर्ज्जरारूप बे शुद्ध कारण जीवने मले, तो कर्मथकी छोडावी मोक्ष नगरें पहोंचाडे. ए रीतें शुद्ध प्रकारें कारणरूप जीवने संवर अने निर्ज्जरा ए बे तत्त्व जाणवां.

१७९ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी निश्चयथकी कार्यरूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–एवुंभूतनयने मतें निश्चयथकी कार्यरूप एक मोक्षतत्त्व जाणवुं. ते मोक्षपुरीमां तो आगल कह्यां, ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें,

१९० शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी लौकिक मार्गमांहे केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–(लौकिकमार्ग के०) संसारहेतुमार्ग एटले शुभाशुभ विकाररूप संसारवृद्धिनां कारण सेववां तेने लौकिकमार्ग कहीयें, तेमां छ तत्त्व पामीयें, जे कारणें राग, द्वेष, अज्ञान, मिथ्यात्व, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, हांसी, कुतूहल, अहंकार ममकाररूप अनेक प्रकारनी चेष्टाउं करवी, ते सर्व संसार वृद्धिनां कारण जाणवां. तेने लौकिकमार्ग कहीयें. अथवा तप, संयम, पूजा, प्रभावना, भक्ति, इंद्रियदमन, वैराग्य, भावना, ए आदि अनेक प्रकारनी कष्टक्रिया करे छे, पण आ भवमां यशःकीर्त्ति, लक्ष्मी, पुत्र, कलत्र, परिवार, ऋद्धिनी वांछायें अथवा परभवें शेठ, सेनापति, साहुकार, देवता, इंद्र, वासुदेव, चक्रवर्त्तीनी पदवी पामवारूप वांछायें परिणाम वर्त्ते छे, एटले छे तो लोकोत्तर मार्ग, पण अज्ञान दशायें करी संसार वृद्धि हेतुमां गयो माटें लौकिकमां भव्यो, तेमां छ तत्त्व पामीयें. एक तो जीव, अने शुभाशुभ विकाररूप पुण्य पापनां दलीयां अजीवरूप अनंतां सत्तायें लागां ते आश्रवभूत छे, ए दलीये जीव बंधाणो ते छठुं बंधतत्त्व छे.

१९१ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी लोकोत्तर मार्गमां केटलांतत्त्वपामीयें?

गुरुः–ए लोकोत्तर एटले लोकथकी उत्तर चारगतिरूप संसारनी वांछाथकी रहित एक मोक्ष मार्गने साधे, तेने लोकोत्तर मार्ग कहीयें. एटले समकेती, देशविरति तथा छठे सातमे गुणठाणे वर्त्तता जे साधु मुनिराज, एम यावत् छद्मस्थ अवस्था लगें सर्वे जीव, लोकोत्तर मार्गमां जाण

वा, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें. तथा तेरमे चौदमे गुणठाणे शुक्ल ध्यानमां वर्त्तता केवली जगवान् पण लोकोत्तर मार्गमां जाणवा, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें नव तत्त्व पामीयें.

१०२ शिष्यः ए नवतत्त्वमांथी जीवने बाधक दशा केटला तत्त्वनी साथें ठे ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने बाधक दशा ठ तत्त्वनी साथें ठे केम के जीवने अनादि कालना सत्तायें जावकर्मरूप राग अने द्वेष, शत्रु थइ लागा ठे, तेनी चिकाशें शुजाशुज विकाररूप आठ कर्मनां दलीयां लागे ठे, ते दलीयांने द्रव्यकर्म कहीयें, ते आठ कर्मथकी उत्तर कर्मरूप एकशोने अठावन्न प्रकृति जाणवी, ते प्रकृतिरूप कर्में जीव बंधाणो, तेणें करी चार गतिरूप संसारमां फरे ठे, ए रीतें जीवने बाधक दशा कहीयें. तेमां आगल मिथ्यात्वगुणठाणे कह्यां, ते रीतें ठ तत्त्व पामीयें.

१०३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने साधक दशा केटला तत्त्वनी साथें ठे?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी जीवने साधकदशा बे तत्त्वनी साथें जाणवी, कारण के निगोदमां कर्में करी जीवनी चेतना दबाणी, पण अक्षरनो अनंतमो जाग उघाडो हतो, तेणें करी जीवित पणुं हतुं तिहांथकी अकाम निर्जरायें कालस्थितिने योगें करी जीव उंचो आव्यो, त्रसपणुं पाम्यो, अने पुण्यना उदयें श्रावक कुल, देवगुरुनी योगवाइ मली, परंतु शब्दसमजिरूढ नयने मतें समकित जावरूप संवर, निर्जरा, ए बे तत्त्व जो जीवने सहायकारी थाय, तो सकल कर्मथकी ठोडावी जीवने मोक्ष नगरें पहोंचाडे, माटे साधकदशारूप जीवने संवर अने निर्जरा, ए बे तत्त्व जाणवां.

१०४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने सिद्धदशा केटलातत्त्वनी साथें ठे ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने सिद्धदशा एक मोक्ष तत्त्वनी साथें जाणवी, कारण के एवंजूतनयने मतें सकल कर्म क्षय करी शुद्ध सत्ता निर्मल, परमज्योति, लोकालोकप्रकाशक, अनंत गुणसंपन्न होय, तेने सिद्ध दशा कहीयें, ते तो मोक्षमां होय, माटे मोक्षतत्त्वनी साथें सिद्ध दशा ठे.

१०५ शिष्यः— ए नव तत्त्वमांथी संसारव्यापि केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—व्यवहारनयने मतें 'संसरतीति संसारः' एटले चारगतिरूप संसारमां संसरवुं तेने संसार कहीयें, तिहां पहेले गुणठाणे मिथ्यादृष्टि जीव चारगतिरूप संसारमां संसरे ठे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें ठ तत्त्व प

मीयें, अने समकित भावें चोथा गुणठाणाथी मांमी यावत् अग्यारमे बारमे गुणठाणे छद्मस्थ अवस्थायें साधु मुनिराज पण वर्त्ते छे, ते पण चार गति रूप संसारमां व्यवहारनयने मतें संसरे छे, माटे तेने संसारी कहीयें. तेमां आगल कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें, तथा समभिरूढ नयने मतें तेरमे चौदमे गुणठाणे केवली भगवान् वर्त्ते छे, तेने व्यवहार नयने मतें संसारी कही बोलाव्या छे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें नव तत्त्व पामीयें.

१०६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां सिद्धव्यापि केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—शुक्ल ध्यानरूप अग्नियें करी अष्ट कर्म बाली, अष्ट गुण संपन्न, लोकने अंतें बिराजमान, अनंतसुख भोगी, सादि अनंतमे भांगे वर्त्ते छे, तेने सिद्ध भगवान् कहीयें. तेमां आगल कह्यां, ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें.

१०७ शिष्यः—ए नव तत्त्वने साते नयें करी जीवनुं गुणीपणुं केम जाणीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी एक जीवतत्त्वने गुणी कहीयें, कारण के नैगम अने संग्रह नयने मतें पारिणामिक भावें करी सर्व जीव, पोताना स्वभाव रूप गुणमां रह्या वर्त्ते छे, माटे ए बेहु नयने मतें सर्व जीव, सत्तायें एक समान छे, तेथी एक भेदें कहीयें, अने व्यवहार नयने मतें जीवना चौद भेद, बत्रीश भेद, तथा पांचशो त्रेशठ भेदपणे सर्व कर्मरूप जडनी साथें अनंतो काल भेला रह्या, माटे जडरूप पणें करी जड कहेवाणा, अने ऋजुसूत्र नयने मतें अतरंग परिणामनी चिकाशें शुभाशुभ कर्मने हेतुयें जीव, पुण्य पाप अजीवरूप आश्रवमां बंधाणो, तेणें करी चार गति रूप संसारमां पड्यो, माटे संसारी कहेवाणो अने शब्द तथा समभिरूढ नयने मते संवर निर्जरारूपपणे करी घाति कर्म क्षय कर्यां, तेवारें तेरमे गुणठाणे केवली कहेवाणो तथा एवंभूतनयने मतें सकल कर्म क्षय करी मोक्ष पण पामी लोकने अंतें बिराजमान वर्त्यो, तेवारें सिद्ध कहेवाणो, एम अनेक नयनी अपेक्षायें पंमितलोकने ए नवतत्त्वमां जीवनुं गुणीपणुं जाणवुं.

१०८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां जीवने अशुभ गुण रूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—अशुभ गुण ते पापने कहीयें, अने ते पापनां दलीयां अजीव, ते आश्रवरूप जाणवां, अने ए दलीये जीव बंधाणो छे, ए रीतें पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए चार तत्त्व जीवने अशुभ गुणरूप जाणवां.

१०९ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां जीवने शुभ गुणरूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः–शुभगुण ते पुण्यने कहीयें ते पुण्यनां दलीयां अजीव छे ते आश्रव रूप जाणवां, अने ए दलीये जीव बंधाणो छे. ए रीतें पुण्य, अजीव, आश्रव अने बंध, ए चार तत्त्व जीवने शुभगुणरूप जाणवां.

२०० शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी जीवने शुद्ध गुणरूप केटलां तत्त्व छे?

गुरुः–जीव, शुभाऽशुभ विकाररूप कर्मे करी लेपाणो, तेथी चारगति रूप संसारमां अनेक प्रकारें पीडा भोगवे छे, पण जो शब्द समभिरूढ नयने मतें संवर निर्ज्जरारूप बे गुण सहायकारी थाय, तो जीवने सर्व कर्मथकी छोडावी शुद्ध करे, अने अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी आपे, माटे संवर अने निर्ज्जरारूप बे तत्त्व जीवने शुद्ध गुणरूप जाणवां.

२०१ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी जीवने निश्चयगुणरूप केटलां तत्त्व छे?

गुरुः–एवंभूतनयने मतें निश्चय गुणरूप एक मोक्षतत्त्व जाणवुं, जे कारणें जिहां जन्म नही, जरा नही, मरण नही, रोग नही, शोक नही पीडा नही, आधि नही, व्याधि नही, हर्ष नही, हेत नही, प्रीति नही, संताप नही, कर्म नही, क्रोध नही, वाद नही, विवाद नही, शत्रु नही, मित्र नही, एवुं (शिव के०) निरुपद्रव अचलित अक्षय पदनी स्थिति, अनंत सुखनुं वासरूप, ते मोक्ष पद कहीयें. ते जीवने निश्चयगुणरूप जाणवुं.

२०२ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी प्रत्यक्ष ज्ञानमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–प्रत्यक्ष ज्ञानना बे भेद छे, एक सर्वप्रत्यक्ष, अने बीजुं देशप्रत्यक्ष, तेमां सर्वप्रत्यक्ष तो केवल ज्ञान छे, तिहां केवली भगवान् लोकालोकनुं स्वरूप केवलज्ञानें करी प्रत्यक्षपणे जाणे छे, तेमां नवे तत्त्व पामीयें, अने सिद्धना जीव पण केवलज्ञानें करी सर्वभाव, प्रत्यक्ष पणे जाणे छे, तेमां त्रण तत्त्व पामीयें, ए रीतें सर्वप्रत्यक्षनुं स्वरूप कह्युं, हवे देशप्रत्यक्ष ज्ञानना वली बे भेद छे. एक तो मनःपर्यवज्ञान, ते मनोवर्गणाने प्रत्यक्षपणे जाणे, अने बीजुं अवधिज्ञान, ते पुद्गलवर्गणाने प्रत्यक्ष पणे जाणे, ए देशप्रत्यक्षना बे भेद जाणवा, तेमां आठ तत्त्व पामीयें. ए रीते प्रत्यक्ष ज्ञानना स्वरूपमां आठ, नव तथा त्रण तत्त्व जाणवां.

२०३ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी परोक्षज्ञानमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः–परोक्षज्ञानना त्रण भेद छे, एक आगमप्रमाण, बीजुं अनुमान प्रमाण, त्रीजुं उपमा प्रमाण, तिहां जे देवतानां सुख, नरकनिगोदनां

दुःख, ऊर्ध्वलोकना भाव, अधोलोकना भाव, तिर्छा लोकना भाव, ए सर्वे श्री जिन आगमथकी प्रमाण करे, ते प्रथम आगमप्रमाण जाण वुं. तथा कोइ जीव, अजीवरूप वस्तुने अनेक प्रकारनी उपमा आपी बोला वीयें, जेम तीर्थंकरने गंधहस्तीनी उपमा, चिंतामणि रत्ननी उपमा, ए रीतें ते वस्तुना गुणप्रमाणें जीव अजीव वस्तुने उपमा देवी, ते बीजुं उप माप्रमाण जाणवुं. तथा कोइना घरमां धूमाडो देखी अग्निनुं प्रमाण थाय, तेमज कोइकनुं मुख देखी हर्ष, शोक अथवा रोग चिंतानुं प्रमाण थाय, एवुं अनेक प्रकारनुं जे जाणपणुं तेने अनुमानप्रमाण कहीयें. ए रीतें सम्यक् ज्ञानना धणीने ए त्रण प्रकारें परोक्ष ज्ञाननुं जाणपणुं होय, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें. अने जे मिथ्यात्वी जीवने ए त्रणे प्रकारें परोक्षज्ञाननुं जाणपणुं होय, तेमां छ तत्त्व पामीयें,

२०४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी स्वाभाविक तत्त्व केटलां पामीयें.

गुरुः—जीव, जेवारें पोताना स्वभावमां रहे, तेवारें संवर कहीयें अने ज्यां सुधी संवरमां जीव रहे, त्यां सुधी समय समय अनंतां कर्म निर्जरा वे, अने निर्जरा थाय, तेवारें जीव, मोक्षपद पामे, कारण के ॥ गाथा ॥ क्षण अर्द्ध जे अघ टले, ते न टले भवनी कोड ॥ तपस्या करतां अति घणी, पण नावे ज्ञान तणी कोइ जोड ॥ १ ॥ अर्थः—एक घडीमां छ क्षण थाय तेवुं अर्द्ध क्षण एटले एक घडीनो बारमो भाग थयो, एटली वार सद्भाग तना चिंतनरूप संवरमां जीव रहेतो थको जेटलां कर्म खपावे, तेटलां कर्म कोडिभव सुधी छठ, अठम, मास, खमण आदिक तपस्या करतां न खपे. ए परमार्थ जाणवो. ए रीतें एक अंतरमुहूर्त्त स्वरूपना चिंतनरूप संवरमां रहेतो थको जीव, घातीकर्म क्षय करी केवल ज्ञान पामे, अने पछी अघाति कर्म खपावी मोक्षपद पामे, एम ए नव तत्त्वमांथी जीव, संवर, निर्जरा अने मोक्ष, ए चार तत्त्व स्वाभाविक जाणवां.

२०५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी विभाविक तत्त्व केटलां पामीयें ?

गुरुः—कोइ जीव, शुभाशुभ विभाव दशारूप परिणामें करी, पुण्य पापनां दलीयां अजीवरूप बांधे, ते आश्रवभूत जाणवां. माटे जीव, पुण्य, पाप, अजीव, बंध अने आश्रव, ए छ तत्त्व विभाविक जाणवां.

२०६ शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथी समकेतीने साध्यसाधनरूप केटलां तत्त्व छे ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी समकेतीने साध्यरूप एक तत्त्व अने साधन रूप बे तत्त्व पामीयें, ते आवी रीतें:—शब्दनयने मतें समकेत भावें जे जीव वर्त्ते छे, ते एवुं चिंतवन करे छे, जे माहारे जीवें कर्मवशें करी संसारमां फरतां अनंता पुद्गल परावर्त्तन कर्यां, तेणेंकरी अज्ञानपणे घणी विराधनाउ करी, एटले केवली, छद्मस्थ मुनिराज, तीर्थयात्रा, केवली प्ररूपित धर्म, समकेती, देशविरति, ब्रह्मचारी, ए आदें देइने अनेक प्रकारना गुणी जीवो तेना अवर्णवाद बोलीने विराधनाउ करी, एम संसारमां फरतां अज्ञानने वशें करी में एवा उत्तम, गुणीजीवोनी निंदा करी, ईर्ष्या करी, ते कर्मे वींटाणो थको अनेक प्रकारें विटंबना भोगवी, तथा में दुष्ट पापी जीवें आज्ञानपणे एक इंद्रिय सुखनाज सावद्य माटे अनेक प्रकारें जीवने छेदना, भेदना, ताडना, तर्जना, प्रमुख दुःख पीडा उपजावी, एटले एक समकित गुण विना माहारे जीवें मिथ्यात्वभावें करी महा आकरा निविड कर्मना बंधप्रत्यें बांध्या, तेणें करी भारी थइने माहारे जीवें नरक निगोदमां अनंतां दुःख भोगव्यां, एम दुःख भोगवतां भोगवतां भवस्थितिने योगें करी जेवारें पुण्यरूप वोलावानी सहायें त्रसपणुं, पंचेंद्रिय परवडा,मनुष्यनो अवतार,देव गुरुनी योगवाइ मली,तेवारें महोटे पुण्ये करी तत्त्वमयी, तत्त्व प्रकाशिनी, तत्त्वस्वरूपभासिनी देशना, गुरुमुखें सांभली, तेथी महारी मिथ्यात्वनी बुद्धि विलय थइ, अने हुं बोधबीजना लाभप्रत्यें पाम्यो, एवा प्रकारनी भावनायें समकेतदृष्टि जीव, तत्त्वस्वरूपनी निर्मल प्रतीति करवा सारु जीवादिक नव पदार्थनुं जाणपणुं गुरुमुखें करे, ते आवी रीतें:—नैगमादि सात नय, द्रव्यास्तिक दश नय, पर्यायास्तिक छ नय, कारण पांच, कारक छ, हेय, ज्ञेय, उपादेय, निश्चय, व्यवहार, द्रव्य, भाव, उत्सर्ग, अपवाद, उत्पाद, व्यय, ध्रुव, निक्षेप, प्रमाण, तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, ए द्रव्यादि चार भांगे करी तथा नित्य, अनित्य, सत्, असत्, एक, अनेक, वक्तव्य, अवक्तव्य, ए नित्यादि आठ पक्षें करी, षड्द्रव्यनुं तथा नव तत्त्वनुं स्वरूप गुरुमुखें जाणे, अथवा त्रिभंगी, सप्तभंगी, अनेकभंगी, ए रीतें अनेक प्रकारें नव तत्त्व षड्द्रव्यनुं जाणपणुं करी स्वसत्ता परसत्तानी भासनरूप जेणें प्रतीति करी छे.

तिहां स्वसत्ता ते एक निश्चयनयें करी शुद्ध, निर्मल, परमज्योति, कर्म

कलंकथकी रहित, शुद्ध, चिदानंद, वस्तुगतें सत्तायें सिद्धसमान, अखंम, अलिप्त, शाश्वत, एवुं पोतानां आत्मानुं स्वरूप तेनी जेणें अंतरंग ज्ञानरूप जाणपणानी प्रतीति करी छे, ते जीव, स्वसत्तायें रक्त कहियें अने परसत्ता ते शुजाऽशुज विकाररूप कर्मनुं ग्रहण करवुं अने पछी तेथकी उपना जे फलरूप विकार, इंड्रियना सावद्य, तेनेविषे मग्नपणे, एकाग्र चित्तें वर्त्तवुं, एवा परिणाम जे जीवना वर्त्ते छे, ते जीव, परसत्तायें रक्त कहियें. ए स्वसत्ता अने परसत्तानो अर्थ जाणवो.

हवे समकेती जीव, अज्ञानदशाथी रहितथको उदासी परिणामरूप विरक्तजावें इंड्रियरूप विकारथकी रहित, एक पोताना आत्मानी सिद्ध समान जेणें प्रतीति करी छे ॥ श्लोक ॥ यः परात्मा परंज्योतिः, परमः परमेष्ठिनाम् ॥ आदित्यवर्णस्तमसः, परस्तादामनंति यं ॥ १ ॥ सर्वे येनोन्मूल्यंते, समूलाः क्लेशपादपाः ॥ मूर्ध्ना यस्मिन्नमस्यंति, सुरासुरनरेश्वराः ॥ २ ॥ इत्यादि ॥ अस्यार्थः—जीव छे ते परमात्मा छे, परमज्योति छे, पंचपरमेष्ठिथी पण अधिको पूज्य छे, केम के पंचपरमेष्ठी तो मोक्ष मार्गना देखाडनार छे, पण मोक्षनो जावावालो तो आपणो जीव छे, अज्ञाननो मटाडनार ज्ञानदृष्टियें करी पोताना स्वरूपनो जाणनार, सर्व कर्मक्लेशनो खपावनार, एवो पोतानो आत्मा ध्यावो. तेहीज परम श्रेयनुं कारण छे, शुद्ध छे, परम निर्मल छे, एवो आत्मा उपादेय जाणी सद्दहे. जेहवुं पोताथी निर्वहे, तेवो त्यागवैराग्यमां प्रवर्त्ते. एबे श्लोक श्रीहेमाचार्यकृत वीतरागस्तोत्रना छे.

एटले धनने परवस्तु जाणी, सुपात्रने दान आपे, इंड्रियना विकारने कर्म बंधनां कारण जाणी, तेने परिहरी शील पाले, आहार पुजल परवस्तुनो छे, ते शरीरपुष्टिनुं कारण छे, अने शरीरपुष्ट कीधे इंड्रियना विषयनी पुष्टि थाय, ते सर्व परस्वजाव जाणवो. माटे तिहांथकी समकेती जीव, विरक्त जावें, संसार उदासी, त्यागरूप वैराग्य जावनायें वर्त्ततां एक पोतानी सत्तायें वस्तुधर्मनी जेणें प्रतीति करी छे, अने पोतानी आत्मसत्ता साधवाने विषे जेनुं चित्त उजमालपणे उद्यममां प्रवर्त्ते छे, एवी रीतें साध्य जेनुं एक चोखुं छे, अने (साधन के०) जे संवर निर्ज्जरारूप व्रत, पच्चरकाण, पोसा, सामायिक, पडिक्कमणुं, तीर्थयात्रा, पूजा, प्रजावना, महोत्सव, ध्यान, स्मरण, इत्यादि अनेक प्रकारें साधना छे, पण साध्य तो

पोताना आत्माने कर्मथकी रहित निरावरण करवारूप एकज छे, एम स्वसत्ता परसत्तानी वेंचण करी पोतना स्वरूपमां रहे, तेटली वार जीवने संवर कहीयें. अने ए संवरमां जीव रहे, तिहां सुधी समय समय अनंता कर्मना थोकडा निर्जरावे, एटले निर्जरातत्त्व कहीयें, माटे ए नव तत्त्वमां समकेती जीवने साध्यरूप एक मोक्षतत्त्व जाणवुं. अने साधन रूप संवर अने निर्जरा ए बे तत्त्व जाणवां.

२०७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी मिथ्यात्वीनेसाध्यसाधनरूपकेटलां तत्त्व छे.

गुरुः—मिथ्यादृष्टि जीव, पहेले गुणठाणे शुभकरणीरूप पुण्यफलहेतु इंद्रिय सुखनी लालचें अनेक प्रकारें कष्टक्रिया, व्रत, पच्चरकाण, तप, जप करे छे, पण अंतरंग पुण्यरूप फलनी वांछायें परिणाम वर्त्ते छे, एटले एक कर्त्ता जीवतत्त्व, अने वांछा पुण्यनी ते बीजुं पुण्यतत्त्व, तथा पुण्यनां दलीयां अजीव छे ते आश्रवरूप जाणवां, एटले त्रीजुं अजीवतत्त्व, चोथुं आश्रवतत्त्व अने ए दलीये जीव बंधाणो, ते पांचमुं बंधतत्त्व थयुं. ए रीतें नव तत्त्वमांथी मिथ्यादृष्टि जीवने साध्य साधनरूप पांच तत्त्व जाणवां.

२०८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यनयमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—नैगम, संग्रह, व्यवहार अने ऋजुसूत्र, ए चार द्रव्य नय कहीयें, ए चार नयनुं जाणपणुं प्रथम गुणठाणें जाणवुं. माटे ए द्रव्य नयने मतें जे जीवना परिणाम वर्त्ते छे, ते जीव, शुभाशुभ कर्मरूप पुण्य पापना फल प्रत्यें उपार्जे छे, माटे कर्त्ता जीव अने पुण्यपापनां दलीयां अजीव ते आश्रवरूप जाणवां अने ए दलीये मली जीव बंधाणो, ए रीतें जीव, पुण्य, पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए छ तत्त्व, द्रव्यनयें जे जीवना परिणाम वर्त्तता होय, तेमां जाणवा.

२०९ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी भावनयमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत ए त्रण भावनय जाणवा, एटले जे जीवना शब्द अने समभिरूढ नयने मतें छद्मस्थ अवस्थापर्यंत परिणाम वर्त्ते छे, तेमां आठ तत्त्व पामीयें, अने समभिरूढ नयने मतें तेरमे गुणठाणे केवली भगवान् वर्त्ते छे, तेमां नव तत्त्व पामीयें, तथा एवंभूत नयने मतें सिद्ध भगवान् वर्त्ते छे, तेमां त्रण तत्त्व पामीयें, ए रीतें भाव नयें जे जीव वर्त्तता होय, तेमां आठ नव अने त्रण तत्त्व जाणवां.

२१० शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी अढीद्वीपव्यापि केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः–अढी द्वीपमां मिथ्यात्वी जीव रह्या छे, ते आश्रयी छ तत्त्व पामीयें, अने समकेतभावें छद्मस्थ अवस्था पर्यंत जे जीव वर्त्ते छे, ते निर्जराप्रत्यें करे छे, तेमां आठ तत्त्व पामीयें, अने तेरमे गुणठाणे केवली भगवान् वर्त्ते छे, तेमां नव तत्त्व पामीयें,

२११ शिष्यः–एनवतत्त्वमांथी अढीद्वीपथी बाहेरना लोकमां केटलां तत्त्व?

गुरुः–अढी द्वीपथी बाहेर तिर्यंच जीव रह्या छे,अने देवता,विद्याधर तथा मुनिराजनुं अढीद्वीप बाहेर आवागमन छे,माटे तिहां मिथ्यात्वी जीवमां छ तत्त्व पामीयें,अने समकेत भावें जे जीव वर्त्ते छे, तेमां आठतत्त्व पामीयें.

२१२ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी ऊर्ध्व लोकमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः–ऊर्ध्वलोकमां वैमानिक देव रह्या छे, सिद्धना जीव रह्या छे, पांच स्थावरना जीव रह्या छे,अने निगोदीया जीव रह्या छे, तेमां सिद्धना जीव आश्रयी त्रण तत्त्व पामीयें, अने मिथ्यात्वी जीव आश्रयी छ तत्त्व पामीयें, तथा समकेती जीव आश्रयी आठ तत्त्व पामीयें.

२१३ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी तिर्छा लोकमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः–तिर्छा लोकमां जे मिथ्यात्वी जीव छे, ते आश्रयी छ तत्त्व अने समकेतभावें छद्मस्थ अवस्था पर्यंत जे जीव वर्त्ते छे,तेमां आठ तत्त्व, तथा तेरमे गुणठाणे केवली भगवान् वर्त्ते छे, तेमां नव तत्त्व पामीयें.

२१४ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी अधोलोकमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः–अधोलोकमां भवनपति, देव तथा नारकीना जीव अने पांच स्थावरना जीव, तथा निगोदीया जीव रह्या छे, तेमां समकेती जीव आश्रयी आठ तत्त्व पामीयें, अने मिथ्यात्वीजीव आश्रयी छ तत्त्व पामीयें.

२१५ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी व्यवहार नयमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः–व्यवहारनयनो मूलभेद तो एक छे, अने विस्तारथकी छ भेद जाणवा. ते आवी रीतें:–एक तो अशुद्धव्यवहार नय छे, ते अशुद्धव्यवहारनयें करी जीवमां अज्ञान, राग, द्वेष, ए अनादिकालनां शत्रुभूत थइ लाग्यां छे, तेणें करी जीवमां अशुद्धपणुं जाणवुं,माटे ए अशुद्धतानी चिकाशें करी जीवने समय समय अनंतां कर्मरूप दलीयां सत्तायें लागे छे,

ए अशुद्धता जीवने अनादिनी जाणवी, ए रीतें ए अशुद्ध व्यवहारनयें जीव कर्त्ता जाणवो. तेनुं स्वरूप संक्षेपमात्र कह्युं.

हवे बीजो शुभव्यवहार नय छे. तेणें करी जीव, दान, शीयल, तप, भावना, पूजा, प्रभावना, सेवा, भक्ति, साहम्मिवात्सल्य अने विनय, वैयावच्च, उपकार, करुणा, दया, यत्न, मनोहर वचन बोलवुं, सर्व जीवनुं रूडुं चिंतववुं, ए आदें देइ अनेक प्रकारें जीव शुभव्यवहारनयें कर्त्ता जाणवो.

हवे त्रीजो अशुभव्यवहार नय. तेणे करी जीव क्रोध, मान, माया, लोभ, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, हांसी, विनोद, निंदा, ईर्ष्या, चाडी, मूर्छा, ममता, हिंसा, मृषा, अदत्त, मैथुन, ए आदें देइने अनेक प्रकारें जीव, अशुभ व्यवहारनयें कर्त्ता जाणवो.

हवे चोथो उपचरितव्यवहारनय. तेणें करी जीव, धन, कुटुंब, परिवार, हाट, घर, वखार, गाम, गरास, देश, चाकररूप दास, दासी, वाणोतर, राजऋद्धि, क्षेत्र, खलां, वाडी, वन, आराम, कूवा, वाव्य, सरोवर, नवाण, ए आदि अनेक प्रकारनी जे वस्तु पोताथकी प्रत्यक्ष जूदी छे, तेने जीव, अज्ञानपणे पोतानी करी जाणे छे, तेने म्हारुं म्हारुं करतो फरे छे, तेथी तेना पापनो अधिकारी थाय छे, ए उपचरितव्यवहारनयें जीव; कर्त्ता जाणवो.

हवे पांचमो अनुपचरित व्यवहारनय. तेणें करी जीव, शरीरादिक पर वस्तु जे पोताना आत्मस्वरूपथकी प्रत्यक्षपणे जूदी छे, परंतु पारिणामिक भावें लोलीभूतपणे एकठी जीवनी साथें मली रही छे, तेने जीव, पोतानी करी जाणे छे, जो पण जीवें एवां शरीर तो संसारमां अनंती वार कर्यां, अने अनंती वार मूक्यां, तो पण अज्ञानपणे जीव, पोतानी करी जाणे छे, तेथी तेने वास्ते अनेक प्रकारनां हिंसादिक पापें करी जीवने पुष्ट करे छे, ए अनुपचरितव्यवहारनयें जीवने कर्त्ता जाणवो.

ए पांच प्रकारें व्यवहारनयमां जे जीवना परिणाम वर्त्ते छे, ते जीव, शुभाशुभरूप फल प्रत्यें पामे. ए पांच व्यवहार ते ऋजुसूत्र नयने मतें पहेले गुणठाणे जाणवा. एमां वर्त्तनारो जीव, मिथ्यादृष्टि होय, तेमां छ तत्त्व पामीयें.

हवे छठो शुद्धव्यवहार नय, एटले शुभाशुभकर्मरूप कचरामां जीव, लेपाणो छे तिहांथकी शुभनिर्मलतानो करनार, तेने छठो शुद्धव्यवहार नय कहीयें. एटले नीचेना गुणठाणानुं छोडवुं अने उपरला गुणठाणानुं लेवुं,

तेने शुद्धव्यवहारनय जाणवो. माटे पहेले गुणठाणे मोहनीय कर्मनी सात प्रकृति खपावी, चोथे गुणठाणे आव्यो, तेवारें आत्माना अनंता गुणमांथी एक समकेत गुण प्रगट्यो, एटली जीवने शुद्धता थइ, एमज चोथेथी पांचमे, पांचमेथी छठे, छठेथी सातमे, एम यावत् अगीयारमे बारमे गुणठाणे छद्मस्थ अवस्था पर्यंत जे जीव वर्त्ते छे, तेमां आठ तत्त्व पामीयें.

तथा समभिरूढनयने मतें तेरमे चौदमे गुणठाणे केवली भगवान् शुद्धव्यवहारमां वर्त्ते छे, तेमां नव तत्त्व पामीयें, एटले चौदमे गुणठाणे केवली भगवानने पण पंचलघु अक्षररूप कार्य करवुं बाकी छे, तेथी एटली जीवने अशुद्धता जाणवी. ते अशुद्धताने टाले अने शुद्धता निपजावे, तेने शुद्धव्यवहार नय कहीयें. एटले जेम जेम आगलनां गुणठाणानुं छोडवुं अने उपरलां गुणठाणानुं लेवुं, तेने शुद्धव्यवहारनय जाणवो. ए रीतें छ प्रकारें व्यवहारनयना स्वरूपमां छ, आठ तथा नव तत्त्व जाणवां.

२१६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी निश्चयनयमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—एवंभूतनयने मतें जीवें १ ज्ञानावरणीयकर्मनी पांच प्रकृति क्षय करी अनंत ज्ञान प्रगट कर्युं, २ दर्शनावरणीय कर्मनी नवप्रकृति क्षय करी अनंत दर्शन प्रगट कर्युं, ३ वेदनीयकर्मनी बे प्रकृति क्षय करी अव्याबाध सुख प्रगट कर्युं. ४ मोहनीय कर्मनी अठ्ठावीश प्रकृति खपावी, क्षायिक समकेत अने यथाख्यातचारित्र प्रगट कर्युं. ५ नामकर्मनी एकशो त्रण प्रकृति खपावी, अरूपी गुण प्रगट कर्यो. ६ आयुःकर्मनी चार प्रकृति खपावी, अक्षयस्थितिगुण प्रगट कर्यो, ७ गोत्रकर्मनी बे प्रकृति खपावी, अगुरुलघुगुण प्रगट कर्यो, ८ अंतरायकर्मनी पांच प्रकृति खपावीने, अनंत वीर्यशक्तिरूप गुण प्रगट कर्यो. ए रीतें ए आठ कर्म अनादिकालनां आत्मगुणने घातक हतां, आत्मगुणने रोधक हतां, आत्मगुणने आवर्या हता, तेने शुक्लध्यानरूप अग्नियें करी आत्मप्रदेशथकी अष्ट कर्म बाली अष्टगुणसंपन्न लोकने अंतें विराजमान सादि अनंतमे भागें अनंता सिद्ध परमात्मा एवंभूतनयने मतें थया छे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें. ए रीतें नव तत्त्वमांथी निश्चयनयमां त्रण तत्त्व जाणवां.

२१७ शिष्यः—जीवना व्यवहारप्राण ते कयां ? अने निश्चयप्राण ते कयां ?

गुरुः—व्यवहार नयना मतवालो तो बाह्यथकी जेनुं जेवुं स्वरूप देखे,

तेने तेहवुं कही बोलावे, एटले चार गतिरूप संसारमां जीव नव नवा ज्ञवें करी एकेंद्रियथी मांफी पंचेंद्रिय पर्यंत देवता, नारकी, तिर्यंच अने मनुष्य नाम धरावी चववुं उपजवुं करे बे, माटे जे गतिमां उपजे, ते गतिनां जे प्राण जीव धरे बे, ते व्यवहारनयें प्राण जाणवां, अने निश्चय प्राण तो जीवने सत्तागतें ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य अने उपयोगरूप बे. ए जीवनां निश्चयप्राण ते सदाकाल शाश्वतां बे, एनो कोइ कालें विनाश थतो नथी. एटले व्यवहारप्राणनी तो घट वध थाय, गतियें गतियें विनाश थाय, परंतु निश्चयप्राण तो शाश्वतां जाणवां.

२१८ शिष्यः—एक मुठीमां जीव केटला पामीयें ?

गुरुः—निगोदिया गोला लोकाकाशप्रमाणे असंख्याता बे, एटले चौद राजलोक, जीवें करी काजलनी कूपी प्रमाणें ज्ञस्यो बे, अने एक मुठीमां पण निगोदना गोला असंख्याता बे, तेमां अनंता जीव पामीयें.

२१९ शिष्यः—षड्द्रव्यमांहेलां एक मुठीमां केटलां द्रव्य पामीयें ?

गुरुः—एक मुठीमां बए द्रव्य पामीयें, केम के लोकमां धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेश बे,अधर्मास्तिकायना पण असंख्याता प्रदेश बे,अने आकाशास्तिकायना पण असंख्याता प्रदेश बे, तेम निगोदिया गोला पण ते प्रमाणें असंख्याता बे, अने ते असंख्याता असंख्याता ज्ञेद बे, तेथी एक मुठीमां पण धर्म, अधर्म अने आकाशना असंख्याता असंख्याता प्रदेश जाणवा. तेम जीव पण अनंता जाणवा. जेम कोइ एक वैद्यें पैशाज्ञार पैशाज्ञार लाख औषधी खांफीने ज्ञेली करी तेमांथी एक चपटी ज्ञरीने आपे, तेने लक्ष औषधी कहीयें, अने महोटो ढगलो पड्यो बे तेने पण लक्ष औषधी कहीयें. ए दृष्टांतें चौद राजलोकमां एण एकेक द्रव्यना असंख्याता असंख्याता प्रदेश जाणवा अने एक मुठीमां पण असंख्याता असंख्याता प्रदेश जाणवा, एटले एक मुठीमां धर्म, अधर्म, आकाश अने निगोदीया जीवना गोला पण असंख्याता आव्या, माटे एक धर्मास्तिकाय बीजुं अधर्मास्तिकाय, त्रीजुं आकाशास्तिकाय अने चोथुं जीवास्तिकाय, ए चार द्रव्य थयां. हवे ते निगोदमांहेलो एक गोलो लहियें, तेमां असंख्याती निगोद बे,ते असंख्यातीमांथी एक निगोद लहियें तेमां अनंता जीवबे,तेमांहेलो एक जीव लइयें, तेना असंख्याता प्रदेश बे, अने जीवना एकेका प्रदे

शें कर्मनी अनंती वर्गणाउं लागी छे, अने एकेक वर्गणामां अनंता पुद्ग ल परमाणुआ रह्या छे, ए पांचमुं पुद्गलद्रव्य थयुं, अने ए परमाणुआ सदा काल शाश्वता छे, माटे एकेका परमाणुआमां अनंतो उत्पादव्यय रूप काल वही गयो, माटे छठ्ठुं कालद्रव्य पण अनंतुं कहीयें. अने पर माणुआ तो एना ए शाश्वता छे. ए रीते एक मुठीमां छ द्रव्य जाणवां,

११० शिष्यः—जीवना पांचशें त्रेशठ भेद छे, तेमांथी केटला भेदना जीव मरण पामे अने केटला भेदना जीव नहीं मरण पामे ?

गुरुः—जीवना पांचशो त्रेशठ भेदमांथी देवताना अपर्याप्तावस्थाना नवा णुं भेद नहीं मरे, तथा नारकीना अपर्याप्तावस्थाना सात भेद नहीं मरे, तथा युगलीया मनुष्यना अपर्याप्तावस्थाना छयाशी भेद नही मरे, ए री तें सर्व मली (१९२) भेद नहीं मरे, बाकीना (३७१) भेदवाला मरे.

ए रीतें नव तत्त्वनुं स्वरूप समकेतदृष्टि जीवना हितने अर्थें समकित रूप रत्न निर्मल करवाने वास्ते स्वसत्ता परसत्तानी प्रतीति करवाने दीपक समान, आत्मार्थी जीवने आभरण समान नवतत्त्व विचार कह्यो ॥

॥ हवे अध्यात्मस्वरूपबावनी कहीयें छेयें ॥

॥ दोहा ॥ माया जाल मूकी परी, श्रुत शारीत्र विचार ॥ भवजल ता रण पोतसम, धर्म हियामां धार ॥ १ ॥ धर्मथकी धन संपजे, धर्मैं सुखी या होय ॥ धर्मैं धन्न वधे घणुं, धर्म करे जग कोय ॥२॥ धर्म करे जे प्रा णीया, ते सुखीया भवमांय ॥ जगमां सहु जीजी करे, आवी लागे पाय ॥ ३ ॥ धर्म धर्म सहु को करे, धर्म न जाणे कोय ॥ धर्म शब्द जगमां वडो, विरला बूझे सोय ॥४॥ आतम साखें धर्म जे, त्यां जननुं शुं काम ॥ जनमन रंजन धर्मनुं, मूल्य न एक बदाम ॥ ५ ॥ पोचेगा तब कहेगा, तब लग क ह्यो न जाय ॥ मनमें रोष नही करो, भडके भागी जाय ॥६॥ माणस होणां मुसकिल्ल है, तो साध्य कहांसे होत ॥ साध हुवा तब सिद्ध भया, केनी न रही ज्योत ॥७॥ साधु भया तो क्या हुवा, न गया मनका द्वेख ॥ समता सूं चित्त लाय कर, अंतरदृष्टि देख ॥८॥ चेतन तें परच्यो नही, क्या हूवा व्रतधार ॥ शालि विहूणा खेतमें, वृथा वनाइ वाड ॥९॥ आतम अनुभव वासकी, कोइक नवली रीत ॥ नाक न पकरे वासना, कानग्रहे परतीत ॥ १० ॥ श्री जिनवाणी स्युं नमी, कीजें आतम शुद्ध ॥ चिदानंद सुख

पामीयें, मिटे अनादि अशुद्ध ॥ ११ ॥ शुद्धातमदर्शन विना, कर्म न छूटे कोय ॥ ते कारण शुद्धातमा, दर्शन करो थिर होय ॥ १२ ॥ आतम अनुभव रमणथें, मटे मोहअंधार ॥ आपस्वरूपमें जलहले, नहीं तस अंत अपार ॥१३॥ तिहां आतम त्रिविधा कह्यो, बाहिर अंतर नाम ॥ परमातम तिहां तीसरो, सो अनंत गुणधाम ॥१४॥ प्रथम बहिरात्मलछन ॥ पुद्गलसें रातो रहे, जाने एह निधान॥ तसलाभें लोभ्यो रहे, बहिरातमअभिधान॥१५॥ द्वितीय अंतरात्म लछन ॥ पुद्गल खलसंगीपरें, सेवे अवसर देख ॥ तनुशक्ति ज्युं लकडी, ग्यानभेद पद लेख ॥ १६ ॥ बहिरातम तज आतमा, अंतर आतम रूप ॥ परमातमने ध्यावतां,प्रगटे सिद्ध स्वरूप ॥ १७ ॥ पुद्गल भाव रुचे नहीं, ताथें रहे उदास ॥ सो अंतर आतम लहे, परमातम परकाश ॥ १८॥ सिद्ध स्वरूपी जो कहुं, पण कबु देखुं न रूप ॥ अंतरदृष्टि विचारतां, औसे न सिद्ध अनूप ॥ १९ ॥ अनुभव गोचर वस्तुका, जाणे एहि अलाद ॥ कहन सुननमें किसुं नहीं, पामे परम आल्हाद ॥२०॥ छंद॥ आतम परमातम हुई, अनुभव रस संगतें ॥ द्वैतभाव मल नीसरे, भगवंतनी भकतें ॥२१॥ दोहा ॥ आतमसंगें विलसतां,प्रगटे वचनातीत ॥ महानंद रस मोकलो, सकल उपाधि रहीत ॥२२॥ सिद्धस्वरूपी आतमा,समता रस भरपूर ॥ अंतरदृष्टि विचारतां, प्रगटे आतम नूर॥ २३ ॥ आपें आप विचारतां,मन पामे विशराम ॥ रस स्वादित सुख उपजे, अनुभव ताको नाम ॥ २४ ॥ अनुभव चिंतामणि रतन, अनुभव है रसकूप ॥ अनुभव मारग मोक्षको, अनुभव शुद्ध स्वरूप ॥ २५ ॥ चिदानंद चिन्मय सदा, अविचल भाव अनंत ॥ निर्मलज्योति निरंजनो, निरालंब भगवंत ॥ २६ ॥ कतकमल परपंथकी, निःसंगें निर्लेप ॥ जिहां विभाव दुर्भावनो, नहीं लवलेशें खेप ॥ ॥ २७ ॥ ज्युं नवनीतको जल बले, तब प्रगटे घृत खास ॥ तिम अंतर आतमथकी, परमातम परकाश ॥ २८ ॥ शुद्धातम भावें रहे, प्रगटे निर्मल ज्योति ॥ ते त्रिभुवनशिर मुकुटमणि, गइ पाप सवि छोति ॥ ॥ २९ ॥ निजस्वरूप रहेतां थकां, परस्वरूपको नाश ॥ सहज भावथी संपजे, उरते वचन विलास ॥ ३० ॥ अंतरदृष्टि देखीयें, पुद्गल चेतन रूप ॥ परपरिणति होय वेगली, न पडे ते भवकूप ॥ ३१ ॥ अंतर्गत जाण्या विना, जे पहेरे मुनिवेश ॥ शुद्धक्रिया तस नवि हुवे, इम जाणो ध

रो नेह ॥ ३२ ॥ अंतर्गतनी वातडी, नवि जाणे मति अंध ॥ केवललिंग धारी तणो, न करो तेह प्रसंग ॥ ३३ ॥ अंतर आत्मस्वभाव छे, ते जाणे मुनिराय ॥ कर्ममल दूरें करे, एम जाणो मनमांय ॥ ३४ ॥ आतम वस्तु स्वभाव छे, ते जाणे ऋषिराय ॥ अध्यातम वेदी कहे, इम जाणो चित्तमांय ॥ ३६ ॥ आतम ध्यानें पूर्णता, रमता आत्म स्वभाव ॥ अष्ट कर्म दूरें करे, प्रगटे शुद्ध स्वभाव ॥३६॥ लाख कोड वरसां लगें, किरिया यें करी कर्म ॥ ज्ञानी श्वासोच्छ्वासमां, इम जाणे ते मर्म ॥३७॥ अंतर मेल सवि उपशमे, प्रगटे शुद्ध स्वभाव ॥ अव्याबाध सुख भोगवे, करी कर्म अभाव ॥३८॥ अक्षय ऋद्धि लेवा भणी, अष्ट कर्म करो दूर ॥ अष्ट कर्म ना नाशथी, सुख पामे भरपूर ॥ ३९ ॥ संतोषीय सदा सुखी, सदा सुधारस लीन ॥ इंद्रादिक जस आगलें, दीसे दुःखीया दीन ॥४०॥ जे सुख नहिं सुररायने, नही राया नहीं राय ॥ आतम सुखने अनुभवे, ते संतोष पसाय ॥ ४१ ॥ सुरगण सुख त्रिहुं कालनां, अनंत गुणां ते कीध ॥ अनंतवर्गें वर्गित कर्यां, तोपण सुख समीध ॥ ४२ ॥ ते सुखनी इच्छा करो, मूको पुद्गलसंग ॥ अल्पसुखने कारणें, दुःख भोगवो परसंग ॥४३॥ अथ तृतीय परमात्म लक्षन ॥ दोहा ॥ प्यारो आप स्वरूपमां, न्यारो पुद्गल खेल ॥ सो परमातम जाणीयें, नही जस भवको मेल ॥ ४४ ॥ नामातम वहिरातमा, थापना कारण जेह ॥ सो अंतर द्रव्यातमा, परमातम गुण गेह ॥ ४५ ॥ भावातम सो देखीयें, कर्म मर्मको नाश ॥ स करुणा भगवंतकी, भावें भाव उदास ॥ ४६ ॥ परम अध्यातमने लखे, सद्गुरु केरे संग ॥ तिनको भव सफलो हुवे, अविहड प्रगटे रंग ॥ ४७ ॥ धर्म ध्यानको हेतु है, शिवसाधनको खेल ॥ ऐसो अवसर कब मिले, चेत सके तो चेत ॥ ४८ ॥ वक्ता श्रोता सब मिले, प्रगटे निज गुण रूप ॥ अखय खजानो ग्यानको, तीन भवनको भूप ॥४९॥ अष्टकर्म वन दाहिकें, तप सिद्ध जिनचंद ॥ तासम जो अप्पा गणे, ताकूं वंदे इंद ॥५०॥ कर्मरोग औषध समी, ग्यान सुधारस वृष्टि ॥ शिवसुख अमृत सरोवरें, जय जय सम्यग्दृष्टि ॥ ५१ ॥ ज्ञानवृक्ष सेवो भविक, चारित्र समकित मूल ॥ अजर अगम फल पद लहो, जिनवर पदवी फूल ॥५२॥ ए रीतें वहिरात्मादिक त्रण आत्मानुं स्वरूप अध्यातम वावनीयें करी जाणवुं.

हवे जीव स्वरूपनुं ध्यान करवाने गाथा कहे छेः– अहमिक्को खलु सुद्धो, निम्ममओ नाण दंसण सम्मग्गो ॥ निमम निओत्तचित्तो, सवे एए खयं नेमि ॥१॥ अर्थः–ज्ञानी जीव एवी रीतें ध्यान करे जे हुं एक छुं, परपुद्गलथी न्यारो छुं, निश्चयनयें करी शुद्ध छुं, माहारुं ज्ञान कर्ममलथी न्यारुं छे, निर्मम एटले ममताथी रहित छुं, ज्ञान दर्शनथी नर्यो छुं, हुं महारा ज्ञानभाव सहित छुं, हुं महारा गुणमां रह्यो छुं, ते चेतना गुण महारी सत्ता छे, एवुं पोतानुं आत्मस्वरूप तेने ध्यावतो सर्व कर्मने क्षय करे छे.

हवे समकेतनी शुद्धि करवा सारु निश्चय व्यवहाररूप चोभंगीयेंकरी देव, गुरु अने धर्मनुं स्वरूप देखाडे छे.

२२१ निश्चयथकी शुद्ध देव ते आपणो जीव, निष्पन्नस्वरूपी, तत्त्वरमणी, आपणा आतमानुं तरण तारण जहाज ते आपणो आत्मा छे, सर्व कर्म क्लेशनो खपावनार अने अनंतगुणरूप लक्ष्मीनो प्रगट करवा वालो आपणो जीव छे, माटे पोताना आत्मानुं ध्यान एकाग्र चित्तें करतो आराधना करतोथको जीव, संसार समुद्रना (तीर के०) कांठा प्रत्यें पामे.

२२२ तथा व्यवहारथकी सुदेव ते श्रीअरिहंत भगवान् बार गुणें करी सहित, चोत्रीश अतिशयेंकरी बिराजमान, पांत्रीश वाणीरूप गुणें करी भव्य प्राणीने हितोपदेश करता आरीसानी पेरें निमित्त कारणरूप जाणवा.

२२३ तथा निश्चयथकी कुदेव ते पोताना आत्मानुं स्वरूप न ओलख्युं अने ज्ञान दशायें करी जडरूप विभावदशामां जेनुं चित्त सदाकाल लागी रह्युं छे ए रीतें पोताना आत्मानी विराधना करतो थको प्राणी संसाररूपसमुद्रमां बूडे

२२४ व्यवहारथकी कुदेव ते कृष्ण, महादेव, क्षेत्रपाल, ब्रह्मा, पितृ प्रमुख जाणवा. ए रीतें निश्चय व्यवहाररूप देवनुं स्वरूप जाणी समकित शुद्ध करवुं.

हवे निश्चय व्यवहारथी गुरु ओलखवा रूप चोभंगी कहे छे.

२२५ प्रथम निश्चयथकी सुगुरु ते आपणा जीवने एकांतें बेसाडी रूडी शीखामण आपी, मिथ्यात्वरूप कुमार्गथकी निवारी अने समकेतरूप शुद्धमार्गें चढावे, एवी रीतें आत्माने मार्गें आणे, तो तुरत आवे, माटे निश्चय सुगुरु ते आपणो आत्मा जाणवो.

२२६ व्यवहारथकी सुगुरु ते जे साधुमुनिराज सत्तावीश गुणें करी स

हित आचार व्यवहार सहित, कृपापात्र, शुद्धमार्गना प्ररूपक, नव्यप्राणीने प्रतिबोधवा उद्यमवंत, ते व्यवहार सुगुरु कारणरूप जाणवा.

२२७ निश्चयथकी कुगुरु ते जे जिन वचनना खोटा अर्थ करे अने अज्ञानने वशें खोटी प्ररूपणा करी संसारवृद्धिनां कारण सेवी पोतें बूडे, अने परने बूडावे.

२२८ व्यवहारथकी कुगुरु ते योगी, संन्यासी, ब्राह्मण, कुलिंग प्रमुख तेमज स्वलिंगी जे आचार रहित भेखधारी एवा यति प्रमुख जाणवा.

हवे धर्मनुं स्वरूप निश्चय व्यवहाररूप चोभंगीयें करी देखाडे छे.

२२९ निश्चयथकी सुधर्म ते जीवने अंतरंग सत्तागमें अनंतचतुष्टयरूप ज्ञान, दर्शन, चारित्र वीर्यरूप अनंतो धर्म रह्यो छे, ते कर्में करी आवराणो छे. जेम आडां वादलां आव्याथी सूर्यनी कांति दबाइ जाय, पण अंतरमां देदीप्यमान कांति छे. तेम आत्माने कर्मरूप वादलां आडां आव्यां, तेणें करी आत्मानी कांति दबाणी पण अंतरंग आत्मानी कांति सूर्यनी पेरें देदीप्यमान छे, ते निश्चयधर्म कहीयें.

२३० ते पूर्वोक्त धर्म निरावरण प्रगट करवाने वास्ते साध्य एक चोखुं निर्मल राखीने जे बाह्य व्यवहार क्रियारूप व्रत पच्चरकाण आदि जे करणी करवी, ते व्यवहारथकी सुधर्म जाणवो.

२३१ निश्चयथकी कुधर्म ते जे एकांत मार्गे बाह्यकरणी ते उपर राच्यो परंतु अंतरंग ज्ञानहिन आत्मधर्म ओलख्यो नथी, ते निश्चयकुधर्म छे.

२३२ व्यवहारथकी कुधर्म, ते पारका परदर्शनीना मतने अनुयायी जे धर्म करणी करवी, ते व्यवहारथकी कुधर्म जाणवो. ए रीतें निश्चय व्यवहाररूप चोभंगीयें करी देव, गुरु अने धर्मनुं स्वरूप जाणे, अने अंतरंग प्रतीतें निर्मल पणे सद्दहे, ते निश्चयसमकेतना धणी जाणवा.

हवे निश्चय व्यवहाररूप पांच महाव्रतनुं स्वरूप जे जाणे तेने ज्ञानी कहीयें. अने जाणीने पाले, तेने साधुमुनिराज कहीयें ?

२३३ शिष्यः– ए पांच महाव्रतनुं स्वरूप केवी रीतें जाणीयें ?

गुरुः–एकेंद्रियथी मांडीने पंचेंद्रिय पर्यंत त्रस अने स्थावर जीव ते सहुने पोताना जीव सरखा जाणी, ते जीवोनी यत्ना करे, रक्षा करे, दया पाले, कोइ जीवने मनथकी, वचनथकी अने कायाथकी पोतें डुहवे नहिं,

अने बीजाने पण एज रीतें उपदेश आपे, ते जीवने व्यवहारप्राणातिपातथकी विरम्यो कहीयें. ए व्यवहार प्राणातिपातविरमणनुं स्वरूप कह्युं.

२३४ हवे निश्चय प्राणातिपातविरमणनुं स्वरूप कहे छे. आपणो जीव अज्ञानने वशें करी दुःखी छे, जन्म, जरा मरण, भय, शोक, आधि, व्याधि रूप पीडायें करी संसारमां अनंता काल थया दुःख भोगवे छे, तेथी आत्मज्ञानरूप लोचनें करी अज्ञानरूप मिथ्यात्वने खपावी ज्ञान, दर्शनरूप गुण प्रगट करी आपणा जीवने कर्मथी छोडाववो, तेवारें जन्म जरारूप सर्व दुःख मटे अने आत्मज्ञानने बलें करी आत्मप्रदेशें नवा कर्मनी रज लागवा न आपे, एवा जेना शब्द नयने मतें परिणाम वर्त्ते छे, ते जीव, निश्चय प्राणातिपातथकी विरम्या कहीयें.

२३५ हवे व्यवहारथकी मृषावादनुं स्वरूप कहे छे. कडवुं वचन बोलवुं. परजीवने विश्वास प्रतीति उपजावी असत्य वचन बोलवुं, तेथी जे विरम्याछे अने मुखथकी सत्यवचन बोलेछे ते व्यवहार मृषावादथकी विरम्या कहीयें.

२३६ हवे निश्चयथकी मृषावाद विरमण व्रतनुं स्वरूप कहे छे. पौद्गलिक परवस्तुने आपणी कहेवी, ते निश्चय मृषावाद जाणवो कारण के पुद्गल परमाणुआ छे ते शाश्वता छे, ते एकेक जीवें अनंती वार आहार पणे लइ निहार पणे करी अनंता जीव सिद्धि वस्या अने हजी पण सर्वे जीव आहार पणे लइ निहारपणे करे छे, तेम आपणा जीवें पण अनंती वार आहारपणे लइ निहारपणे कस्या, ते कारणें ए साधारण वस्तु कहीयें. माटे ते पौद्गलिक वस्तुने जीव आपणी करी माने ते निश्चय मृषावाद कहीयें. अने जीवने अजीव करी जाणे इत्यादिक अज्ञानपणुं तेने निश्चयमृषावाद जाणवो. अथवा सिद्धांतना अर्थ खोटा कहे, ते पण मृषावादमां छे, ए मृषावाद जेणें त्याग्यो ते निश्चय मृषावादथकी विरम्यो कहीयें. एटले बीजां सर्वे व्रत भांगे तेथी एक चारित्र भंग थाय, परंतु ज्ञान दर्शननो भंग न थाय, अने जेणें निश्चयमृषावाद भांग्यो, तेणे दर्शन, ज्ञान अने चारित्र ए त्रणे भांग्या, जे कारणे आगममां एम कह्युं छे के एक साधुयें चोथुं व्रत भांग्युं अने एक साधुयें बीजुं मृषावादव्रत भांग्युं तेमां जेणें चोथुं व्रत भांग्युं ते आलोचना लीधे शुद्ध थाय, परंतु जेणें सिद्धांतना खोटा अ

र्थ कही मृषावाद उपदेश दीधो, ते आलोचना लीधे पण शुद्ध न थाय. ए निश्चयथकी बीजा मृषावाद विरमणव्रतनुं स्वरूप कह्युं.

२३७ हवे व्यवहारथकी अदत्तादान विरमणव्रतनुं स्वरूप कहे छे, जे पारकुं धन वस्तु प्रमुख छुपावे, चोरावे, ठगी लीये, तेने चोर कहीयें एटले आण दीधी पारकी वस्तु लेवी, तेने अदत्तादान कहीयें. तेथी जे विरम्यो छे, ते व्यवहार अदत्तादानथी विरम्यो कहीयें.

२३८ हवे निश्चय अदत्तादान विरमण व्रतनुं स्वरूप कहे छे. जीव,पांच इंद्रियनां त्रेवीश विषयरूप सुख, तेनी वांछायें आठ कर्मनी वर्गणाने ग्रहण करे छे,इत्यादिक परवस्तुने लेवा वांछे,ते निश्चय अदत्तादान जाणवुं. इहां शिष्य पूछे छे के विषयनी अने कर्मनी वांछा कोण करे छे ? तेवारें गुरु कहे छे. पुण्यप्रकृतिना जे बहेंतालीश भेद छे, ते चार कर्मनी शुभ प्रकृति छे, तेने योगें जीव, आगल जतां इंद्रियसुख पामे छे, तेमाटे जे जीव पुण्यने आगल भेलुं लेवा योग्य कहे छे, ते जीव, कर्मनी अने विषयनी वांछा करे छे, एटले कोइक जीव व्यवहारथकी तो अदत्तादान एक तृणमात्र पण ले तो नथी तो पण तेने जो अंतरंग पुण्यादिकनी वांछा छे, तो तेणें करी तेने निश्चय अदत्तादान लागे छे.

२३९ हवे व्यवहारथकी मैथुनव्रतनुं स्वरूप कहे छे. जे पुरुष, परस्त्रीनो परिहार करे, तेने व्यवहारथकी मैथुनविरमण व्रत कहीयें, एटले साधुने सर्वथा स्त्रीनो त्याग छे, तथा गृहस्थने हाथे परणेली स्त्री मोकली छे अने परस्त्रीनां पच्चरकाण छे, ते सर्व व्यवहार मैथुनविरमणव्रत जाणवुं.

२४० हवे निश्चय मैथुनविरमणव्रत कहे छे. जे जीव, अंतरंग विषय अभिलाषनो त्याग अने मननी तृष्णानो त्याग करी पोतानी आत्मपरिणतिने विषे रमण करे छे, पण परपरिणतिमांहे पेसतो नथी पोताना गुणनुं चिंतन करे छे, पण परनुं चिंतन करतो नथी एटले पोताना स्वभावरूप घर मूकी विभावरूप परघरमां पेशी कुशीलीयो थतो नथी ते जीव निश्चय मैथुनथकी विरम्यो छे.

२४१ हवे व्यवहारथकी परिग्रह व्रतनुं स्वरूप कहे छे. जे धन,धान्य,दास, दासी,चतुष्पद, घर, धरती, वस्त्र, आभरणादिकनो त्याग, ते व्यवहारथी परिग्रहत्याग व्रत जाणवुं. एटले साधुने सर्वथा परिग्रहनो त्याग छे अने गृह

स्थने इछा प्रमाणें परिग्रह छे, ते जेटली इछा होय, तेटलो परिग्रह मोकलो राखे अने उपरांत परिग्रहनी निवृत्ति करे, ते व्यवहारथकी पांचमुं व्रत कहीयें.

२४५ हवे निश्चयथकी परिग्रह विरमण व्रतनुं स्वरूप कहे छेः– जे नावकर्म रूप राग, द्वेष, अज्ञान तेनी चिकाशें द्रव्यकर्मरूप ज्ञानावरणादि आठ कर्म नीपन्यां तेने मूके, शरीर इंद्रियनो परिहार एटले शरीर अने इंद्रिय उपरथी मूर्छा मूकी अने शुनाऽशुन विकाररूप जे कर्म, तेने पर जाणीने छांके, ते निश्चयपरिग्रहनो त्याग कहीयें. एटले आ नवसंबंधि तथा परनवसंबंधी शरीरादि परवस्तुनी मूर्छा छोडी ते जीवें निश्चय परिग्रह छोड्यो, एम जाणवुं. ए रीतें निश्चय व्यवहारथकी पांच महाव्रतनुं स्वरूप संक्षेपमात्र जाणवुं.

ए रीतें पांच महाव्रत पाले पण ज्ञानदृष्टि विना पांच महाव्रत पले नहीं, माटे ज्ञाननुं जाणपणुं करवा सारु जीवनुं स्वरूप चोनंगीयें करी उलखावे छे, एटले एक जीव, हिंसा करता नथी पण हिंसानां फल नोगवे छे, अने बीजा जीव, हिंसा करे छे, पण हिंसानां फल नोगवता नथी तथा त्रीजा जीव, हिंसा करे छे अने हिंसानां फल पण नोगवे छे, चोथा जीव, हिंसा करता नथी अने हिंसानां फल पण नोगवता नथी, एवी रीतें ए चार प्रकारना जीव उलखवा जोइयें.

२४६ शिष्यः–पहेला जीव जे हिंसा करता नथी अने हिंसानां फल नोगवे छे, ते कया जीव जाणवा ? अने तेमां गुणठाणां केटलां पामीयें ? तथा तेमां सात नय मांहेला केटला नय पामीयें ? तथा तेमां नव तत्त्वमांहेलां केटलां तत्त्व पामीयें ? तथा तेना चार निक्षेपा केम जाणियें ? ए चार प्रश्नोनी पूछा छे.

गुरुः–समुद्रने विषे हजार हजार योजनना शरीरवाला महोटा मत्स्य छे, तेनी आंखनी पापणमां तंदूलीयो मत्स्य गर्नज पर्याप्तो उपजे छे, तेनुं आयुष्य एक अंतर मुहूर्त्तनुं होय छे, तथापि एटला आयुष्यमां ते एवुं चिंतवन करे छे जे आ मत्स्यना मुखमांहे क्रोडो गमे जीव आवे छे अने जाय छे, पण हुं जो एटलुं महोटुं शरीर पाम्यो होत तो एक पण जीवने जीवतो जवा देत नहीं ! ए रीतें यद्यपि ए मत्स्य व्यवहार नयने मतें एक जीवने पण हणतो नथी, तथापि ऋजुसूत्र नयने मते जीवहिंसारूप अशुन परिणामें करी पाप बांधी मरीने सातमी नरकें जाय छे, ए जीव मिथ्यात्वी जाणवा. एनुं गुणठाणुं पहेलुं जाणवुं. तथा ए जीवमां नव तत्त्वमांहेलां

ठ तत्त्व पामीयें. हवे ए मिथ्यात्वी जीवमां चार निक्षेपा आवी रीतें लगा डवा. प्रथम तो जेनुं मिथ्यात्वी एवुं नाम होय ते नाममिथ्यात्वी कहेवो अने बीजो स्थापनामिथ्यात्वी ते मिथ्यात्व एवा अक्षर लखी स्थापवा अथवा मूर्त्ति स्थापवी, तथा त्रीजो द्रव्यमिथ्यात्वी ते जीवने सत्तायें द्रव्य मिथ्यात्वरूप दलीयां रह्यां छे, चोथो भावमिथ्यात्वी, ते मिथ्यात्वनां दलीयां उदयरूप भावें भोगवे छे. वली प्रकरांतरें चार निक्षेपा कहे छे. प्रथम नाममिथ्यात्वी, एटले जे कोइनुं मिथ्यात्वी एवुं नाम होय ते, तथा बीजो स्थापनामिथ्यात्वी ते तेनी मूर्त्ति स्थापवी, तथा त्रीजो द्रव्यमिथ्यात्वी ते ब्राह्मण, अतीत, वैरागी प्र मुख कृष्ण महादेवने माने तेने द्रव्य मिथ्यात्वी कहीयें, अने चोथा भाव मिथ्यात्वी ते ढूंढीया प्रमुख जिनशासनना द्वेषी शत्रुरूप जाणवा.

२५० शिष्यः—बीजा जीव जे हिंसा करे छे अने हिंसानां फल भोगवता नथी, ते जीव कया? अने तेमां चौद गुणठाणां मांहेलां केटलां गुणठाणां पामीयें? अने नव तत्त्वमांहेलां केटलां तत्त्व पामीयें? तथा सातनय मां हेला केटला नय पामीयें? अने तेना चार निक्षेपा केम जाणीयें?

गुरुः— ए जीव समकेती जाणवा. एनुं गुणठाणुं चोथुं जाणवुं. शब्द नयने मतें अंतरंग सत्तागतना भासनरूप साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें श्रीवीतरागनी आज्ञा प्रमाणें जेणें प्रतीति करी छे, पण पूर्वकृतकर्मने योगें करी संसारमां व्यवहार नयने मतें अरुचिपणे विषयादिक आश्रवरूप हिंसानां काम करे छे, अने आरंभना कामना आदेश उपदेश आपे छे, एटले शब्दनयने मतें समकितभावें वर्त्तता जे पोतानां पूर्वकृत कर्म छे, तेने निर्जा रावे छे, पण तेने अशुभरूप नवा कर्मनो बंध पडतो नथी. ए जीवमां नव तत्त्वमांहेलां आठ तत्त्व पामीयें. हवे एना उपर चार निक्षेपा लगावे छे. प्रथम कोइनुं समकेती एवुं नाम ते नामसमकेती, बीजुं समकेतनी मूर्त्ति प्रमुख स्थापीयें, ते स्थापना समकेत, त्रीजुं यात्रा, दर्शन, सेवा, भक्ति, संघ, सामीवत्सल इत्यादि समकेतनी करणी करवी पण अंतरंग जीव अजीवनी वेंचणरूप प्रतीति करी नथी, तेने द्रव्य समकेत कहीयें. चोथुं आगल कह्या प्रमाणे सर्व कार्य करे, अने अजीवरूप नवतत्त्व षड्द्रव्यनुं जाणपणुं करी अंतरंग स्वसत्तापरसत्तानी प्रतीति पण करी छे, तेने भावसमकेत कहीयें.

२५१ शिष्यः—त्रीजा जीव जे हिंसा करे छे अने हिंसानां फल पण भो

गवे छे, ते जीव कया? तेमां गुणठाणां केटलां पामीयें? अने नव तत्त्वमां हेलां तत्त्व केटलां पामीयें? तथा सात नयमांहेला नय केटला पामीयें? अने एमां चार निक्षेपा शी रीतें जाणवा?

गुरुः— ए जीव, मिथ्यादृष्टि पहेले गुणठाणे जाणवा. ऋजुसूत्र नयने मतें तेना परिणाम महाआरंभपरिग्रहरूप हिंसाभावें वर्त्ते छे, तथा व्यवहार नयने मतें उपरथी पण हिंसारूप आश्रवनां काम करे छे, एमां छ तत्त्व पामीयें. एना चार निक्षेपा आगल प्रश्नें लगाव्या छे, ते रीतें जाणवा.

२५८ शिष्यः— चोथा जीव जे हिंसा करता नथी अने हिंसानां फल पण भोगवता नथी ते कया? तेमां गुणठाणां केटलां पामीयें? अने नव तत्त्व मांहेलां तत्त्व केटलां पामीयें? तथा सात नयमांहेला नय केटला पामीयें? अने एना चार निक्षेपा केम जाणीयें?

गुरुः— ए जीव साधुमुनिराज जाणवा. ते संग्रहनयने मतें सर्व जीवने पोताना जीव समान जाणी ऋजुसूत्रनयने मतें तेवाज मनःपरिणाम वर्त्ते छे, व्यवहार नयने मतें उपरथकी छकायनी दया पाले छे, अने शब्दसमभिरूढ नयने मतें छठा सातमा गुणठाणाथी मांडीने यावत् बारमा गुणठाणा पर्यंत छद्मस्थ मुनिराज आत्मस्वरूपमां रमण करता कर्मरूप लेपने लागवा देता नथी. ए रीतें भावदयामां वर्त्तता पोताना आत्मानी रक्षा करे छे, तेमां आठ तत्त्व पामीयें. एना चार निक्षेपा आवी रीतें कहेवा. ते कोइनुं साधु एवुं नाम ते नामसाधु, साधुनी मूर्त्ति स्थापीयें, ते स्थापनासाधु, साधुनी क्रिया पाले, सूजतो आहार लीये, पडिलेहण पडिक्कमणुं करे, पांच महाव्रत पाले, सत्तर भेदें संयम आराधे, पण अंतरंग सत्तागतना जाणपणा विना ज्ञान ध्याननो तेवो उपयोग वर्त्ततो नथी, तेमाटे ते द्रव्य साधु कहीयें. तथा आगल जे रीतें साधुनी क्रिया कही, ते प्रमाणें सर्व क्रिया पण करे छे, अने अंतरंग जीव अजीवरूप स्वसत्ता परसत्तानी वेंचण करी साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें सत्तागतना धर्मने साधे, ते भावसाधु छे.

२६१ वली हिंसा करता नथी अने हिंसानां फल भोगवता नथी ए भांगामां अरिहंत केवली पण जाणवा. ए अरिहंत, व्यवहारनयें करी द्रव्यदयारूप छकायना प्रतिपालक छे, समभिरूढनयने मतें तेरमे चौदमे गुणठाणे शुक्ल ध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या वर्त्ते छे, तेमां आगल कह्यां, ते

रीतें नवे तत्त्व पामीयें, एना चार निक्षेपा कहे छे. अरिहंत एवुं नाम, ते नामअरिहंत, एनी मूर्त्तिप्रमुख करी स्थापवी, ते स्थापनाअरिहंत अने ज्यां सुधी केवलज्ञान नथी उपन्युं तिहां सुधी छद्मस्थावस्थापर्यंत अरिहंतनो जीव, ते द्रव्यअरिहंत जाणवो, तथा अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, लोकालोकनुं स्वरूप एक समयमां जाणे अने त्रिग डाने विषे बेसी भव्यप्राणीने हितोपदेश आपे, तेने भावअरिहंत कहीयें.

२६६ वली हिंसा करता नथी अने हिंसानां फल भोगवता नथी ए भां गामां सिद्ध परमात्माना जीव पण जाणवा. ए जीव, गुणठाणावर्जित छे, एवंभूतनयने मतें सकलकर्म क्षय करी लोकने अंतें बिराजमान वर्त्ते छे. एमां आगल कह्यां, ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें. हवे एना चार निक्षेपा कहे छेः—प्रथम सिद्ध एवुं नाम ते नामसिद्ध, बीजो श्रीजिनप्रतिमा स्था पीयें ते स्थापनासिद्ध, त्रीजा केवली भगवानने द्रव्यसिद्ध कहीयें, चोथा सकल कर्मनो क्षय करी अनंतगुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी लोकने अंते बि राजमान वर्त्ते, ते भावसिद्ध कहीयें. ए रीतें चोभंगीनुं स्वरूप जाणवुं. ए रीतें रत्नत्रयीनुं स्वरूप जाणी जे चारित्र पाले, तेने साधु मुनिराज कहीयें. ए साधु मुनिराजनुं स्वरूप जाणवारूप चोभंगी लखियें छैयें. एक जीव, उपरथी तो साधुपणा सहित छे अने अंतरंगथकी साधुपणा रहित छे, तथा बीजा जीव, अंतरथकी साधुपणा सहित छे अने उपरथकी सा धुपणा रहित छे तथा त्रीजा जीव, अंतरथकी साधुपणा रहित छे अने उ परथकी पण साधुपणा रहित छे, चोथा जीव, अंतथकी पण साधुपणा सहित छे अने उपरथकी पण साधुपणा सहित छे.

१७० शिष्यः—पहेला जीव जे उपरथकी साधुपणा सहित अने अंतरथ की साधुपणा रहित ते कया जीव ? तेमां गुणठाणां केटलां पामीयें ? तथा सात नयमांहेला नय केटला पामीयें ? तथा तेमां नव तत्त्वमांहेलां तत्त्व केटलां पामीयें ? अने एना चार निक्षेपा केम जाणीयें ?

गुरुः—ते जीव, साधुलिंगधारक पहेले गुणठाणे होय, तेमां नयनुं स्वरू प बतावे छे, ते जीवने नरकनिगोदनां दुःखथकी बीहीतां सुखनी लालचें पुण्यरूप वांछायें साधुपणुं लेवानो मनमां अंश उपन्यो एटले नैगमनयना मतवालो तेने साधु कही बोलावे, कारण के ए नयना मतवालो एक अं

श ग्रहीने सर्व वस्तुनुं प्रमाण करे ठे तेमाटे. तथा संग्रहनयना मतवालो सत्ताने ग्रहण करे ठे, माटे साधुपणानां उपकरण जे उंघो, मुहपत्ती, कपडां, पात्रां प्रमुख ए सर्व साधुपणानी सत्ता ठे तेने ग्रहे, तेवारें संग्रहनयना मतवालो तेने साधु कही बोलावे. तथा व्यवहारनयने मतें जे उपरथी आचार व्यवहार क्रिया प्रमुख पांच महाव्रत पाले ठे, सूजतो आहार लीये ठे, बे टंकनां आवश्यक साचवे ठे, ए रीतें उपरथकी प्रवर्त्ततो देखीने व्यवहारनयना मतवालो तेने साधु कही बोलावे, तथा रुजुसूत्रनयने मतें जे अंतरंग वैराग्यजावरूप संसारनां दुःख देखी उदासीजावें वर्त्ते, तो शुजफल उपार्जन करे, अने कोइ जीवना मनना परिणाम लोकने ठगवारूप अथवा उदरपूर्णा माटे कपटरूप वर्त्तता होय, ते जीव अशुजफल उपार्जन करे, ए रुजुसूत्रनयना मतें साधु कहेवाय. ए रीतें द्रव्यलिंगी जीवमां चार नय जाणवा. हवे चार निक्षेपा बतावे ठे. प्रथम कोइनुं साधु एवुं नाम होय, ते नामकाधु, बीजो साधुनी मूर्त्ति प्रमुख स्थापीयें, ते स्थापनासाधु, त्रीजो जे साधुनी क्रिया, आचार, व्यवहार प्रमुख करे ठे, पांच महाव्रत पाले ठे, सूजतो आहार लीये ठे, पण अंतरंग सत्तागतना जाणपणा विना ज्ञान ध्यानतो तेहवो उपयोग वर्त्ततो नथी, अने पुण्याधिकनी वांठायें अनेक रीतें साधन तो करे ठे, तोपण ते व्यवहार नयने मतें द्रव्यसाधु जाणवा. ए त्रण निक्षेपा द्रव्यलिंगी साधुमां कहीयें. हवे एमां नव तत्त्वनुं स्वरूप बतावे ठे, ए लिंगी जीवनी सत्तायें पुण्य पापरूप अजीवनां दलीयां अनंतां लागां ठे, ते आश्रवरूप जाणवां अने ए दलीये ए जीव बंधाणोथको चार गतिरूप संसारमां फरे ठे, माटे जीव, पुण्य, पाप, अजीव, अने बंध, ए ठ तत्त्व जाणवां.

२७४ शिष्यः—बीजा जीव जे अंतरथकी साधुपणा सहित ठे, अने उपरथकी साधुपणा रहित ठे, ते जीव कया? तेमां गुणठाणां केटलां पामीयें? तथा तेम सात नयमांहेला नय केटला पामीयें? नव तत्त्व मांहेलां तत्त्व केटलां पामीयें? अने एना चार निक्षेपा केम जाणीयें?

गुरुः—ते जीव, चोथा गुणठाणा वाला समकेती तथा पांचमा गुणठाणा वाला देशविरति श्रावक जाणवा, एटले ते जीव, व्यवहार नयने मतें उपरथकी तो साधु पणा रहित ठे पण अंतरंग वैराग्य सहित उदासी जा

वें विषयकषायथकी विरक्त त्याग वैराग्यरूप साधु समान एवा ऋजु सूत्रनयने मतें अंतरमां परिणाम वर्त्ते छे, अने शब्दनयने मतें स्वसत्ता परसत्तारूप जीव अजीवनी वेंचण करतां स्वरूपना चिंतनमां वर्त्ते छे, ते णें करी महानिर्जरा प्रत्यें करे छे, एमां नव तत्त्व मांहेलां आठ तत्त्व आगल कह्यां, ते रीतें जाणवां. हवे एमां चार निक्षेपा कहे छे. ते जीव, व्यवहारनयने मतें तो संसारी गृहस्थ कहीयें. पण अंतरंग भाव साधु समान परिणाम वर्त्ते छे, माटे तेमां एक भाव निक्षेपोज पामीयें.

२७८शिष्यः–त्रीजा जीव, जे उपरथकी साधु पणा रहित छे, अने अंतरथकी पण साधुपणा रहित छे, ते जीव कया? तथा तेमां गुणठाणां केटलां पामीयें? अने सात नयमांहेला केटला नय पामीयें? तथा नव तत्त्व मांहेलां केटलां तत्त्व पामीयें? तथा तेना चार निक्षेपा केम जाणीयें?

गुरुः–ते जीव, मिथ्यादृष्टि पहेले गुणठाणे जाणवा, तेमां नयनुं स्वरूप आवी रीतें छे, नैगम नयने मतें आगल गये कालें मिथ्यात्वी हतो अने आवते कालें मिथ्यात्वरूप गुणें करी मिथ्यात्व भावें वर्त्तशे तथा वर्त्तमानकालें पण मिथ्यात्व भावें वर्ते छे. ए रीतें तेने नैगमनयना मतवालो मिथ्यात्वी करी बोलावे,अने संग्रहनयना मतवालो तो सत्तानुं ग्रहण करे छे, माटे जे जीवने मिथ्यात्वरूप दलीयां सत्तायें अनंतां रह्यां छे, तेथी ते जीवने संग्रह नयना मतवालो पण मिथ्यात्वी करी बोलावे, अने व्यवहार नयना मतवालो बाह्यथकी उपरथी मिथ्यात्वरूप आचरण करतो देखे छे. माटे ए पण मिथ्यात्वी करी बोलावे, तथा ऋजुसूत्र नयना मतवालो पण एने अंतरंग परिणामें मिथ्यात्वरूप कार्यनुं चिंतन करतो देखी मिथ्यात्वी करी बोलावे. ए रीतें ए मिथ्यात्वी जीवमां चार नय जाणवा. तथा एमां आगल कहेली रीतें नव तत्त्वमांहेलां छ तत्त्व पामीयें. हवे एमां चार निक्षेपा कहे छेः–जे कोइनुं नाम, मिथ्यात्वी होय ते नामनिक्षेपो अने अक्षर लखवा अथवा तेनी मूर्त्ति स्थापवी, ते स्थापनामिथ्यात्व, तथा ते जीवने सत्तायें मिथ्यात्वरूप दलीयां रह्यां छे, ते द्रव्यमिथ्यात्व कहियें. तथा ते दलीयां उदयरूप भावपणे भोगवे छे, ते भावमिथ्यात्व जाणवुं. वली बीजी रीतें चार निक्षेपा कहे छेः–जे कोइनुं मिथ्यात्वी एवुं नाम, ते नाममिथ्यात्व, तथा मिथ्यात्वीनी मूर्त्ति प्रमुख स्थापवी, ते स्थापनामि

थ्यात्व. तथा अन्यदर्शनी जे अतीत, वैरागी, ब्राह्मण प्रमुख ते द्रव्यमिथ्यात्वी जाणवा. तथा जे जिनशासनना द्वेषी, अवला, विपरीत मार्गना देखाडनारा, ढुंढीया प्रमुख ते भावमिथ्यात्वी जाणवा. ए मिथ्यात्वीना चार निक्षेपा छे, तेमां नवतत्त्व मांहेलां छ तत्त्व आगल कह्यां, तेप्रमाणें जाणवां.

२७२ शिष्यः—चोथा जीव, उपरथकी साधु पणा सहित छे, अने अंतरथकी पण साधु पणा सहित छे, ते जीव कया? तथा तेमां गुणठाणां केटलां पामीयें? अने सात नय मांहेला नय केटला पामीयें? तथा नव तत्त्वमांहेलां केटलां तत्त्व पामीयें? तथा तेमां चार निक्षेपा केवी रीतें जाणवा?

गुरुः—ते जीव, साधु मुनिराज छठा सातमा गुणठाणाथी मांमीने यावत् अगीयारमा बारमा गुणठाणा पर्यंत छद्मस्थ मुनिराज जाणवा, हवे तेमां नयनुं स्वरूप बतावे छे, कोइ जीव, संसारथकी उभग्यो साचा धर्मनी परीक्षा करतो मोक्षसुखनी लालचें साधुपणुं लेवानो तेना मनमां अंश उत्पन्न थयो एटले नैगमनयना मतवालो एक अंश ग्रहीने ते जीवने साधु कही बोलावे, तथा ते जीव, जेवारें साधुपणुं लेवाने अर्थें उपकरणादि उघो, मुहपत्ती, कपडां, कांबली, पात्रां प्रमुख साधुपणानी सत्ताने ग्रहे, तेवारें संग्रहनयना मतवालो तेने साधु कही बोलावे, तथा जे पांच महाव्रत सूधां पाले अने साधुनी क्रिया आचार व्यवहार प्रमुख सूधी रीतें करे उभय टंकना आवश्यक साचवे, सांज सवार पडिलेहणां, पोरिसी भणावे, ए रीतें उपरथी आचरणारूप क्रिया देखे, तेने व्यवहारनयना मतवालो साधु कही बोलावे, तथा रुजुसूत्रनयना मतवालो पारिणामिक भाव ग्रहण करे छे, माटे संसारउदासी, विषय कषायथकी विरक्त भाव त्याग वैराग्यरूप परिणाम जेना वर्त्ते छे, तेने रुजुसूत्रनयना मतवालो साधु कहे, तथा शब्द नयने मतें तो जे, जीव अजीवरूप नव तत्त्व षड्द्रव्यनी उलखाण करी जीव सत्ताने ध्यावे, अजीवसत्तानो त्याग करे, तेवा शुद्ध निश्चयनयरूप परिणाम होय अने साधुनी क्रिया पण जे आगल कही, ते रीतें सर्वे करे, तथा साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें सत्तागतना धर्मने साधे, तेने शब्द नयना मतवालो साधु कही बोलावे. तथा समभिरूढ नयना मतवालो श्रेणिभावने ग्रहे छे, माटे कोइ जीव, नवमा दशमा गुणठाणाथी मांमी यावत् अगीआरमा बारमा गुणठाणा पर्यंत शुद्ध शुक्ल ध्यान रूपातीत परिणाम

क्षपकश्रेणिरूप ध्यानें वर्त्ते छे, तेने समभिरूढ नयना मतवालो साधु कही बोलावे, ए रीतें साधुनुं स्वरूप छ नयें करी कह्युं. हवे चार निक्षेपे करी साधुनुं स्वरूप उंलखावे छे. तिहां जे कोइनुं साधु एवुं नाम छे, ते नामसाधु. तथा जे साधु एवा अक्षर लखवा ते असद्भावस्थापना जाणवी अने जे साधुनी मूर्त्ति प्रमुख स्थापवी, ते सद्भावस्थापना जाणवी, तथा जे साधुनी क्रिया, पडिक्कमणुं पडिलेहण शुद्धरीतें करे, सूजतो आहार लीये, पण तेहवो ज्ञान, ध्यान, मोक्षरूप साधननो उपयोग वर्त्ततो नथी माटे तने द्रव्य साधु कहीयें. तथा भावसाधु कहेतां जे आगला त्रण निक्षेपामांहे साधुनी क्रिया कही, ते रीतें सर्व क्रिया करे अने साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें सत्तागतना धर्मने साधे, तेने भावसाधु कहीयें. ए चार निक्षेपा साधुमां कह्या, एमां आगल एटले आ पछीना प्रश्नमां केहेशे ते प्रमाणे नव तत्त्व मांहेलां आठ तत्त्व पामीयें. ए रीतें चोभंगीयें करी साधुपणानुं स्वरूप जाणीने जे पाले, ते प्राणी, गण्या दिवसमां परमानंद पदप्रत्यें पामे.

हवे समकेतनी शुद्धि करवा वास्ते षड्द्रव्य नव तत्त्वनुं स्वरूप, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावनी चोभंगीयें करी देखाडे छे एमां प्रत्येकमां चार चार प्रश्न छे.

२०६ तिहां प्रथम जीवद्रव्यनुं स्वरूप कहे छेः—द्रव्यथकी जीवद्रव्य, निश्चयनयने मतें ज्ञानादि गुणें करी सर्व एक सरखा छे अने व्यवहार नयें करी देवता, नारकी, मनुष्य, तिर्यंचरूप जीवनी अनेक जाति जाणवी, तथा क्षेत्रथकी सर्व जीव, असंख्यातप्रदेशी लोकव्यापि जाणवा, तथा कालथकी निश्चयनयें करी सर्व जीव, अनादि अनंत भांगे वर्त्ते छे, अने व्यवहार नयें करी संसारी जीव, चारगतिरूप संसारमां उत्पाद व्ययरूप पलटण स्वभावें करी सादि सांत भांगे वर्त्ते छे, तथा भावथकी जोतां तो सर्व जीव, पारिणामिक भावें पोताना स्वभावमां रह्या वर्त्ते छे अने व्यवहारनयें करी संसारी जीव शुभाऽशुभ भावमां प्रवर्त्ते छे.

२०७ हवे धर्मास्तिकाय द्रव्यनुं स्वरूप कहे छेः—द्रव्यथकी धर्मास्तिकाय द्रव्यनो चलणसहायक गुण जाणवो, तथा क्षेत्रथकी एना असंख्याता प्रदेश लोकव्यापी जाणवा तथा कालथकी धर्मास्तिकाय द्रव्य, अनादि अनंत भांगे वर्त्ते छे अने एना देश, प्रदेश तथा अगुरुलघु सादि सांत भांगे जाणवा, तथा भावथकी धर्मास्तिकाय द्रव्य अवर्णे, अरसें, अगंधें, अफरसें जाणवुं.

२९४ हवे अधर्मास्तिकायद्रव्यनुं स्वरूप कहे छेः–द्रव्यथकी अधर्मास्ति काय द्रव्यनो स्थिर सहायक गुण, तथा क्षेत्रथकी एना असंख्याता प्रदेश लोकव्यापी जाणवा, तथा कालथकी अनादि अनंत भांगे वर्त्ते छे अने देश, प्रदेश तथा अगुरु लघु, सादि सात भांगे जाणवा. तथा भावथकी अधर्मास्तिकाय अवर्णं, अगंधे, अरसें अने अफरसें जाणवुं.

२९७ हवे आकाशास्तिकाय द्रव्यनुं स्वरूप कहे छेः–द्रव्यथकी आकाशास्तिकाय द्रव्यनो अवगाहना गुण जाणवो, तथा क्षेत्रथी अनंतप्रदेशी लोकालोकव्यापी जाणवो, तथा कालथकी अनादि अनंत भांगे वर्त्ते छे, अने देश, प्रदेश तथा अगुरुलघु सादि सांत भांगे जाणवा. तथा भावथकी आकाशास्तिकाय अवर्णं, अगंधे, अरसें, अफरसें जाणवो.

३०१ हवे कालद्रव्यनुं स्वरूप कहे छेः–द्रव्यथकी काल द्रव्यनो नवा पुराणा वर्त्तनालक्षण गुण जाणवो, तथा क्षेत्रथकी कालद्रव्य, अढी द्वीप व्यापि जाणवुं. तथा कालथकी अनादि अनंत भांगे वर्त्ते छे, अने उत्पाद व्ययरूप पलटण काल सादि सांत भांगे जाणवुं. तथा भावथकी कालद्रव्य अवर्णं अगंधें अफरसें जाणवुं.

३०६ हवे पुद्गलद्रव्यनुं स्वरूप कहे छेः–द्रव्यथकी पुद्गलद्रव्यनो मिलण विखरण पूर्णगलन गुण जाणवो तथा क्षेत्रथकी पुद्गल परमाणुआ लोकव्यापी जाणवा. तथा कालथकी पुद्गलद्रव्यना अनंता परमाणुआ निश्चयनयें करी अनादि अनंतभांगे वर्त्ते छे. अने व्यवहारनयें करी पुद्गलना खंध सर्वें सादिसांत भांगे जाणवा, तथा भावथकी वर्ण, गंध, रस, फरस सहित छे. ए रीतें जीव अजीवरूप षद्द्रव्यना स्वरूपमां चोभंगी जाणवी. एटले ए षद्द्रव्यना स्वरूपमां नव तत्त्वमांहेलां जीव अने अजीव, ए बे तत्त्वनुं स्वरूप कहेवाणुं. हवे शेष पुण्यादिक सात तत्त्वनुं स्वरूप कहे छे.

३१० पुण्यतत्त्व द्रव्यथकी बेंतालीश भेदें कहीयें. तथा क्षेत्रथकी पुण्यतत्त्व लोकव्यापी जाणवुं तथा कालथकी पुण्यतत्त्व अभव्यजीव आश्रयी संतति भावे अनादि अनंतभांगे वर्त्ते छे अने भव्यजीव आश्रयी अनादि सांत भांगे जाणवुं, तथा भावथकी पुण्यतत्त्वने उपार्जन करवाना नव प्रकार जाणवा.

३१४ पापतत्त्व, द्रव्यथकी ब्याशी भेदें कहीयें, तथा क्षेत्रथकी पापतत्त्व लोकव्यापी जाणवुं. तथा कालथकी अभव्यजीव आश्रयी संततिभावें अना

दि अनंत भांगे जाणवुं. अने भव्यजीव आश्रयी अनादि सांत भागे जाणवुं. तथा भावथकी पाप उपार्जन करवाना अढार भेद जाणवा.

३१८ आश्रवतत्त्वनां द्रव्यथकी पुण्यपापरूप दलीयां ते द्रव्याश्रव कहीयें. तथा क्षेत्रथकी आश्रवतत्त्व लोकव्यापि जाणवुं. तथा कालथकी आश्रव तत्त्व अभव्यजीव आश्रयी संततिभावें अनादि अनंतभांगे वर्त्ते छे, अने भव्य जीव आश्रयी अनादिसांतभांगे वर्त्ते छे, तथा भावथकी आश्रवतत्त्व ते पुण्य पापरूप दलीयां उपार्जन करवा बहेंतालीश भेद जाणवा.

३२२ द्रव्यथकी संवरतत्त्वना सत्तावन भेद कहीयें. तथा क्षेत्रथकी संवर तत्त्व चौदराज लोक त्रसनाडी प्रमाणे जाणवुं. तथा कालथकी संवर तत्त्व क्षायिक भाव आश्रयी तो सादि अनंत भांगे वर्त्ते छे, अने क्षायोपशम भाव आश्रयी सादि सांत भांगे वर्त्ते छे, तथा भावथकी पोताना स्वरूपमां रमण करवुं ते संवरतत्त्व कहीयें.

३२६ द्रव्यथकी निर्जरातत्त्व बार भेदें कहीयें. तथा क्षेत्रथकी चौद राज लोक त्रस नाडी प्रमाणे जाणवुं तथा कालथकी सादि सांत भांगे वर्त्ते छे, तथा भावथकी सर्व प्रकारें इच्छानो रोध करी समताभावें वर्त्तवुं, ते निर्जरा.

३३० बंधतत्त्वना द्रव्यथकी चार भेद कहीयें. तथा क्षेत्रथकी लोकव्यापि जाणवुं अने कालथकी बंधतत्त्व सादिसांत भागे वर्त्ते छे, तथा भावथकी जे अज्ञानरूप राग द्वेषनी चिकाश ते भावबंध जाणवो.

३३४ मोक्षतत्त्व द्रव्यथकी तेरमे चौदमे गुणठाणे केवलीने कहीयें, तथा क्षेत्रथकी अढीद्वीपव्यापि जाणवुं. तथा कालथकी सर्वे सिद्धआश्रयी अनादि अनंतभांगे वर्त्ते छे अने एक सिद्धआश्रयी सादि अनंत भांगे जाणवुं. तथा भावथकी मोक्षतत्त्व ते सकल कर्म क्षय करी लोकने अंतें विराजमान एवा सिद्धपरमात्माने कहीयें. ए रीतें नव तत्त्वना स्वरूपमां द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावरूप चोभंगीनुं स्वरूप जाणवुं.

३३८ शिष्यः– द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव, ए चारमांथी कोण कोणथी सूक्ष्म अने कोण कोणथी बादर छे ? ए चार प्रश्न छे.

गुरुः–एक आंखना मिचकारामांहे असंख्याता समय थाय, माटे ए समयरूप काल, सूक्ष्म छे अने ते थकी वली क्षेत्र घणुंज सूक्ष्म छे. केमके एक अंगुल श्रेणि प्रमाणें जे क्षेत्र, तेमांथी आकाशरूप द्रव्यना जे प्र

देश, तेने समय समय एकेको अपहरतां असंख्याती उत्सर्प्पिणी अने अवसर्प्पिणी काल व्यतीत थइ जाय, माटे कालथकी क्षेत्र घणुं सूक्ष्म छे, तथा क्षेत्रथकी द्रव्य सूक्ष्म छे जे माटे एकेक आकाश प्रदेशरूप क्षेत्रमां अनंतानंत पुद्गलद्रव्यना परमाणुओ अवगाही रह्या छे, माटे क्षेत्रथकी द्रव्य सूक्ष्म जाणवुं तथा द्रव्यथकी भाव सूक्ष्म छे, केम के एकेका पुद्गलपरमाणुआमां वली अनंता गुण पर्याय रह्या छे,माटे द्रव्यथकी भाव सूक्ष्मजाणवो. ए विचार आचारांगनी निर्यूक्तिनी टीकामां तथा आवश्यकमां जाणवो.

हवे निक्षेपानुं स्वरूप श्रीअनुयोगद्वारसूत्रना पाठथी कहे छेः—गाथा॥ जत्थ य जं जाणिज्जा, निक्खेवं निक्खेवे निरविसेसं ॥ जत्थ य नो जाणिज्जा, चउक्कयं निक्खेवे तत्थ ॥१॥ अर्थः—हे शिष्य ! जो जाणपणुं होय तो एकेक वस्तुमां अनेक प्रकारें निक्षेपा उतारजे अने तेहवुं जाणपणुं जो न होय, तो पण जे वस्तुनुं नाम पड्युं तेमां चार निक्षेपा तो जरूर उतारवा.

शिष्यः—ते पूर्वोक्त जीव अजीवरूप नव तत्त्व, षड्द्रव्यनुं स्वरूप चार चार निक्षेपे करी केम जाणीयें ?

३३ए गुरुः—प्रथम (नामजीव के०) जे "जीव" एवुं नाम ते गये कालें जीवतो हतो अने आवते कालें पण जीवतो हशे, तथा वर्त्तमानकालें पण जीवे छे, ए रीतें नैगमनयने मतें त्रणे काल एकरूप पणे वर्त्ते, तेने नामजीव कहीयें. तथा जेमां चैनैवाणमां जीव ए सद्भावस्थापना अने जीव एवा अक्षर लखवा, ते असद्भावस्थापना एटले ए संग्रहनयने मतें स्थापनारूप जीव जाणवो. तथा ऋजुसूत्र अने व्यवहार नयने मतें एकेंद्रियथी मांमीने पंचेंद्रिय पर्यंत जे जीव पहेले गुणठाणे अनुपयोगें मिथ्या स्वभावें वर्त्ते, तेने "अणुवउंगो दव्वं" ए वचनथकी द्रव्यजीव कहीयें. तथा शब्दनयने मतें समकेत भावें चोथा गुणठाणाथी मांमीने यावत् छठा सातमा गुणठाणा पर्यंत जीव अजीवरूप स्वपरनी वेंचण करी जीवस्वरूपना उपयोगमां वर्त्ते, तेने "उवउंगोभावं" ए वचनथकी भावजीव कहीयें. ए रीतें जीवनुं स्वरूप पांच नयें करी चार निक्षेपे जाणवुं.

३४० नामथकी धर्मास्तिकाय एवुं नाम ते नामधर्मास्तिकाय जाणवुं. तथा स्थापनाथकी धर्मास्तिकाय एवा अक्षर लखवा, ते स्थापना धर्मास्ति

काय. तथा द्रव्यथकी धर्मास्तिकाय द्रव्य असंख्यातप्रदेशी जाणवुं अने भावथकी धर्मास्तिकायद्रव्य, चलणसहायरूप जाणवुं.

३४१ नामथकी अधर्मास्तिकाय एवुं नाम, ते नाम, अधर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्तिकाय एवा अक्षर लखवा, ते स्थापना अधर्मास्तिकाय तथा द्रव्यथकी अधर्मास्तिकाय द्रव्य, असंख्यातप्रदेशी जाणवुं, अने भावथकी अधर्मास्तिकायद्रव्य, स्थिरसहायरूप जाणवुं.

३४२ नामथकी आकाशास्तिकाय एवुं नाम, ते नाम आकाशास्तिकाय जाणवुं. तथा आकाशास्तिकाय एवा अक्षर लखवा, ते स्थापना आकाशास्तिकाय जाणवुं. तथा द्रव्यथकी आकाशास्तिकाय अनंतप्रदेशी जाणवुं. अने भावथकी आकाशास्तिकायद्रव्य, अवगाहनारूप जाणवुं.

३४३ नामथकी कालद्रव्य एवुं नाम, ते नामकालद्रव्य, तथा कालद्रव्य एवा अक्षर लखवा,ते स्थापना कालद्रव्य जाणवुं. तथा द्रव्यथकी तो कालनो एक समय लोकमां सदाकाल शाश्वतो वर्त्ते छे, ते द्रव्यकाल जाणवो अने भावथकी कालद्रव्य, नवी पुराणी वर्त्तनारूप जाणवुं.

३४४ नामथकी पुद्गलास्तिकाय एवुं नाम,ते नाम पुद्गलास्तिकाय जाणवुं, तथा पुद्गलास्तिकाय एवा अक्षर लखवा, ते स्थापनारूप पुद्गलास्तिकाय जाणवुं. तथा द्रव्यथकी पुद्गलद्रव्यना अनंता परमाणुआ लोकमां सदाकाल शाश्वता वर्त्ते छे, तथा भावथकी पुद्गलद्रव्य गलण पूर्ण मिलण विखरण रूप जाणवुं. ए रीतें जीव अजीरूप षड्द्रव्यमां चार निक्षेपा जाणवा.

३४५ पुण्यतत्त्वमां निक्षेपा कहे छे. एटले प्रथम नामथकी पुण्य कहेतां जे पुण्य एवुं नाम ते नैगमनयने मतें त्रणेकाल एक रूपपणे वर्त्ते छे. अने स्थापनापुण्य कहेतां जे पुण्य एवा अक्षर लखीने स्थापवा. अने द्रव्यपुण्य कहेतां जे कोइ जीवनी सत्तायें पुण्यनां दलियां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यांछे. ते संग्रह नयने मतें कर्मसत्तारूप द्रव्यपुण्य जाणवुं. अने भावपुण्य कहेतां जे ते दलियानो उदय थयो,ते व्यवहार नयने मतें उदयभावरूप भावपुण्य जाणवुं. ए रीतें उदयभावरूप पुण्यनेविषे त्रणनयमां चार निक्षेपा जाणवा.

३४६ पुण्य एवुं नाम ते नैगमनयने मतें त्रणे काल एकरूपपणे जाणवुं. तथा पुण्य एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनापुण्य जाणवुं. तथा जे कोइ जीवनी सत्तायें पुण्यनां दलीयां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां छे, ते सं

ग्रहनयने मतें जाणवां अने तेदलियांनो उदय थयो, ते व्यवहारनयने मतें न्यारा रही उपरथकी लूखे परिणामें जोगवे ठे माटे एने ड्रव्यपुण्य कहीयें, तथा जे कोइ जीव, ऋजुसूत्रनयने मतें मन, वचन, कायायें करी एकचित्तें पुण्यनां दलीयां व्यवहारनयने मतें उदयरूप जावें जोगवे ठे, तेने जावपुण्य कहीयें. ए रीतें चार नयमां चार निक्षेपा पुण्य जोगववा उपर जाणवा.

३४७ नामपुण्य कहेतां पुण्य एवुं नाम ते नैगमनयने मतें त्रणे काल एकरूप जाणवुं. अने पुण्य एवा अक्षर लखीने स्थापवा ते संग्रह नयने मतें स्थापनारूप पुण्य जाणवुं. तथा ड्रव्यपुण्य एटले जे कोइ जीव, दान, शीयल, तप, जाव, दया, यत्ना इत्यादिक कष्टक्रियारूप करणी लोकने देखाडवारूप वीराशालवीनी परें कृष्णवासुदेवनुं मन रीजववारूप अथवा पूर्णशेठनी परें करे, ते व्यवहारनयने मतें करणीरूप ड्रव्यपुण्य जाणवुं. तथा जावपुण्य ते आगल ड्रव्यनिक्षेपामां जे व्यवहारनयने मतें पुण्यनी करणी कही, ते करणी सर्व करे, पण अंतरंग ऋजुसूत्रनयने मतें मन, वचन, कायायें करी एकचित्तें जीर्णशेठनी परें करे, ते जावपुण्य जाणवुं. ए रीतें चार नयमां चार निक्षेपा पुण्य करवा उपर जाणवा.

३४८ हवे पाप उपर निक्षेपा उतारे ठे. प्रथम नाम थकी पाप एवुं नाम, ते नैगमनयने मतें त्रणे काल एकरूपपणे वर्त्ते ठे, ते नामपाप जाणवुं. तथा पाप एवा अक्षर लखवा, ते स्थापनारूप पाप जाणवुं. तथा कोइ जीवनी सत्तायें पापनां दलीयां प्रकृतिरूप सात्तापणे बांध्यां ठे, ते संग्रहनयने मतें कर्म सत्तारूप ड्रव्यपाप जाणवुं तथा ते दलीयांनो उदय थयो, ते व्यवहारनयने मतें उदयजावरूप जावपाप जाणवुं. ए रीतें ए उदयजावरूप पापमांहे त्रण नयमां चार निक्षेपा जाणवा.

३४ए पाप एवुं नाम ते नैगमनयने मतें त्रणे काल एकरूप पणे वर्त्ते ठे ते नामपाप जाणवुं. तथा पाप एवा अक्षर लखवा ते स्थापनारूप पाप जाणवुं तथा जे कोइ जीवनी सत्तायें पापनां दलीयां प्रकृतिरूप सत्तापणे संग्रहनयने मतें बांध्यां ठे, तेनो उदय थयो, तेवारें व्यवहार नयने मयें पण जूदा रही उपरथकी लूखे परिणामें जोगवे ठे, तेने ड्रव्यपाप कहीयें. तथा जे कोइ जीव, ऋजुसूत्र नयने मतें मन, वचन, कायायें करी डुःखरूप विपाकें पापनां दलीयां व्यवहारनयने मतें उदयरूप जावें जोगवे ठे, तेने जावपाप

कहीयें. ए रीतें चार नयमां चार निक्षेपा पाप भोगववा उपर जाणवा.

३५० पाप एवुं नाम ते नामपाप ते नैगम नयने मतें त्रणे काल एक रूपपणे वर्त्ते छे. तथा पाप एवा अक्षर लखवा ते संग्रहनयने मतें स्थापनारूप पाप जाणवुं. तथा कोइ जीव, हिंसा मृषा आदिक कजीया झगडा रूप अनेक प्रकारें उदयरूप भावने योगें करी चेडा राजानी परें करे, ते व्यवहार नयने मतें द्रव्यपाप, करणीरूप जाणवुं. तथा जे आगल त्रीजा निक्षेपामां व्यवहार नयने मतें करणी कही, ते सर्व करे, पण अंतरंग रुजुसूत्र नयने मतें मन, वचन, कायायें करी एकचित्तें कालकसूरिया खाटकीनी परें करे, ते भावपाप जाणवुं. ए रीतें चार निक्षेपा पाप करवा रूपें जाणवा.

३५१ आश्रवमां चार निक्षेपा उतारे छे. प्रथम आश्रव एवुं नाम ते नैगमनयने मतें त्रणे काल एकरूपपणे जाणवुं ते नाम आश्रव. तथा आश्रव एवा अक्षर लखवा, ते स्थापनारूप आश्रव जाणवुं तथा बहेंतालीश प्रकाररूप आश्रवने गडनालें करी व्यहार नयने मतें शुभाशुभ आश्रव रूप दलीयानुं ग्रहण करवुं, ते द्रव्यआश्रव जाणवुं तथा रुजुसूत्र अने व्यवहार नयने मतें मन, वचन, कायायें करी उदयभावने योगें ते दलीयानुं भोगववुं, ते उदय भावरूप भावआश्रव जाणवुं.

३५२ संवरमां चार निक्षेपा उतारे छे. प्रथम संवर एवुं नाम, ते नैगमनयने मतें त्रणे काल एकरूपपणे जाणवुं, ते नामसंवर तथा संवर एवा अक्षर लखीने स्थापवा, अथवा संवर रूप मूर्त्ति स्थापवी, ते संग्रह नयने मतें स्थापनारूप संवर जाणवुं. तथा व्यवहार नयने मतें उपरथकी अरुचि भावें लोक देखाडवारूप पोसा पडिक्कमणां सामायिक आदि अनेक प्रकारें संवरनी करणी करवी, ते द्रव्यसंवर व्यर्थरूप जाणवुं. तथा रुजुसूत्र नयने मतें मन, वचन अने कायायें करी यथाप्रवृत्तिरूप करणना परिणामें पोसा, पडिक्कमणां, व्रत, पच्चरकाण आदें व्यवहार नयने मतें उपर थकी संवररूप करणीनुं करवुं. ते भावसंवर जाणवुं एटले चार नयमां चार निक्षेपे यथाप्रवृत्तिकरणरूप संवर जाणवुं.

३५३ नामथकी संवर एवुं नाम, ते नामसंवर नैगमनयने मतें जाणवुं. तथा संवर एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनासंवर अथवा संवररूप

मूर्त्ति स्थापवी, ते संग्रह नयने मतें स्थापनारूप संवर जाणवुं तथा ऋजुसूत्र नयने मतें मन, वचन, कायायें करी व्रत पच्चरकाणरूप, उपरथकी व्यवहारनयने मतें संवररूप करणीनुं करवुं. ते द्रव्यसंवर जाणवुं तथा शब्द नयने मतें जीव, अजीवरूप स्वसत्ता परसत्तानी वेंचण करी स्थिरतारूप परिणामें आगल द्रव्यनिक्षेपा मध्यें जे ऋजुसूत्र अने व्यवहार नयने मतें संवररूप करणी कही, ते करणी करतां थकां महा निर्ज्जरा प्रत्यें करे, ते भावसंवर जाणवुं. ए रीतें संवरविषे पांच नयमां चार निक्षेपा जाणवा.

३५४ निर्ज्जरामां निक्षेपा उतारे छेः– निर्ज्जरा एवुं नाम ते नैगमनयने मतें नाम निर्ज्जरा जाणवी तथा निर्ज्जरा एवा अक्षर लखवा, ते संग्रहनयने मतें स्थापना रूप निर्ज्जरा जाणवी, तथा जे व्यवहार नयने मतें ऋजुसूत्रना उपयोग सहित मिथ्यात्वभावें अकाम निर्ज्जरा करवी, ते सर्व, द्रव्यनिर्ज्जरा जाणवी. तथा शब्द नयने मतें जीव अजीवरूप षट्द्रव्य नव तत्त्वनुं जाणपणुं प्रतीत करी ऋजुसूत्रनयना उपयोग सहित उपरथकी व्यवहार नयने मतें बार भेदें तपस्यारूप करणीनुं करवुं ते भावनिर्ज्जरा जाणवी. ए रीतें पांच नयमां चार निक्षेपा निर्ज्जराने विषे जाणवा.

३५५ बंधमां चार निक्षेपा उतारे छे. प्रथम बंध एवुं नाम ते नैगमनयने मतें नामबंध जाणवो. तथा बंध एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापना रूप बंध जाणवो. तथा जे प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, रसबंध अने प्रदेशबंध, ए चार प्रकारें बंधरूप दलीयां जीवनी सत्तायें बांध्यां छे, ते संग्रहनयने मतें कर्म सतारूप द्रव्यबंध जाणवो, तथा जे व्यवहारनयने मतें ते दलीयांनो उदय थयो, ते उदयभावरूप भावबंध जाणवो. ए रीतें उदयभावरूप बंधने त्रण नयमां चार निक्षेपा जाणवा.

३५६ तथा वली नामथकी बंध एवुं नाम, ते नैगमनयने मतें नामबंध जाणवो. तथा बंध एवा अक्षर लखवा अथवा बंधरूप मूर्त्ति स्थापवी, ते स्थापनारूप बंध जाणवो. तथा आगल कह्या जे चार प्रकार, ते चार प्रकारें बंधरूप दलीयां संग्रहनयने मतें जीवनी सत्तायें रह्यां छे, तेनो स्थितिपरिपाकें व्यवहारनयने मतें उदय थयो, ते द्रव्यबंध जाणवो. तथा ऋजुसूत्रनयने मतें मिथ्यात्व, अव्रत, कषाय अने योगरूप सत्तावन्न बंध हेतुप्रमुख जीवना परिणाम एटले तेनी चिकाशें वली पाछो कर्मरूप दली

यांनो बंध पाडे, माटे रुजुसूत्रनयने मतें तेने ज्ञावबंध कहीयें. ए रीतें बंध बांधवाने विषे चार नयमां चार निक्षेपा जाणवा.

३५७ मोक्षतत्त्व निःकर्मावस्थामां चार निक्षेपा उतारे ठेः–प्रथम नाम थकी मोक्ष एवुं नाम, ते नामनिक्षेपो, तथा जे मोक्षरूपें मूर्त्ति स्थापवी, अथवा मोक्ष एवा अक्षर लखवा, ते स्थापनामोक्ष जाणवो. तथा समज्ञिरूढनयने मतें शुद्ध शुक्लध्यान रूपातीत परिणामरूप एटले क्षपक श्रेणियें अज्ञानरूप राग, द्वेष अने मोहनीय कर्मनो बारमे गुणठाणे क्षय कस्यो अने तेरमे गुणठाणे केवल ज्ञान पाम्या, एवा केवली ज्ञगवानने ज्ञव्यशरीर आश्रयी द्रव्यमोक्षपद कहीयें, ते त्रीजो द्रव्यनिक्षेपो जाणवो, तथा एवंज्ञूतनयने मतें अष्ट कर्मने क्षयें, अष्टगुणसंपन्न लोकने अंतें विराजमान, एवा सिद्ध परमात्माने ज्ञावमोक्षपद जाणवुं. ए रीतें जीव, अजीव रूप षड्द्रव्य नव तत्त्वमां नयसंयुक्त चार निक्षेपा जाणवा.

३५७ व्रतमां निक्षेपा उतारतो थको प्रथम प्राणातिपात विरमणव्रतें निक्षेपा कहे ठेः–तिहां प्रथम दया एवुं नाम ते नामदया जाणवी, तथा दया एवा अक्षर लखवा, ते असद्भावस्थापना अने दयालुमूर्त्ति स्थापवी, ते सद्भावस्थापना, तथा व्यवहार नयने मतें उपरथकी लोकने देखाडवारूप दया पालवी, ते द्रव्यदया जाणवी, तथा रुजुसूत्र नयने मतें मन, वचन, कायायें करी एकचित्तें परजीवनां प्राण हणे नही, हणावे नही, तथा हणताने अनुमोदे नहीं ते ज्ञावदया जाणवी. ए चार निक्षेपा रुजुसूत्रनयने मतें यथाप्रवृत्तिकरणरूप पहेले गुणठाणे जाणवा.

३५ए तथा वली दया एवुं नाम ते नामदया तथा दया एवा अक्षर लखवा, अथवा दयालुमूर्त्ति स्थापवी ते स्थापनादया तथा रुजुसूत्रनयने मतें एकचित्तें करी व्यवहारनयने मतें उपरथकी मन, वचन अने कायायें करी परजीवनां प्राण हणे नहि, हणावे नहि, हणताने अनुमोदे नहि, ते द्रव्यदया जाणवी. तथा शब्दनयने मतें जीव अजीवरूप स्वसत्ता परसत्तानी वेंचण करी, ज्ञान, दर्शन अने चारित्र प्रमुख ज्ञावप्राण पोतानां अने परनां तेने कर्मरूप आवरणपणे हणे नहि, हणावे नहि, हणताने अनुमोदे नहि, ते स्वदया, तथा पोतानो आतमाकर्मरूप आवरणें वींटाणोथको जन्म मरणनां दुःख ज्ञोगवे ठे, तेने स्वहिंसा कहीयें. ते माटे

ते पोताना जीवने कर्मरूप आवरणथकी मूकाववा निमित्तें साध्य चोखो राखी ऋजुसूत्र तथा व्यवहारनयना मतें जे रीतें आगल द्रव्यदयारूप आचरण कह्युं,ते रीतें करतां थकां सर्वे लेखे जाणवी. ए चोथी नावदया छे.

३६० बीजा व्रत उपर निक्षेपा उतारे छेः—प्रथम अमृषावाद एवुं नाम, ते नाम अमृषावाद जाणवो, बीजो जे अमृषा एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनाअमृषावाद जाणवो, त्रीजो व्यवहारनयने मतें उपरथकी स्वदर्शनी अन्यदर्शनी मिथ्यादृष्टिजीवने सहेजें सत्यवचन बोलवारूप ढाल पडी गयो छे, ते व्यवहारनयने मतें द्रव्य अमृषावाद जाणवो. चोथो जे ऋजुसूत्रनयने मतें मन, वचन अने कायायें करी एकचित्तें व्यवहारनयने मतें उपरथकी सत्यवचन बोले छे, ते जीव, यथाप्रवृत्तिकरणरूप पहेले गुणठाणे जाणवा. ते नावथकी अमृषावाद जाणवो.

३६१ अमृषावाद एवुं नाम ते नाम अमृषावाद तथा अमृषावाद एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापना अमृषावाद तथा ऋजुसूत्र नयने मतें क्रोधें करी,मानें करी,नयें करी,लोनें करी सूक्ष्म तथा बादर लौकिक तथा लोकोत्तर, मन, वचन अने कायायें करी जूवुं पोतें बोले नहि, बीजाने बोलावे नहि, बोलताने अनुमोदे नहि, ते द्रव्यथकी अमृषावाद जाणवो. तथा नाव अमृषावाद ते सर्व द्रव्य गुण पर्याय नयनिक्षेपा निश्चय व्यवहाररूप द्रव्यनावरूप जाणपणुं सत्यनासनरूप ज्ञायकता शक्ति साधे,ज्ञानसत्य पणुं पाले, तथा श्रीवीतरागना आगम प्रमाणें जे अर्थ नाव छे,तेनी सद्याय करे, जेथकी पोताना ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप गुण निर्मल थाय, तेवी नाषा बोले, ते नाव अमृषावाद जाणवो.

३६२ त्रीजा व्रत उपर निक्षेपा उतारे छेः—अदत्त रहित एवुं नाम ते नाम अदत्त तथा अदत्त रहित एवा अक्षर लखीने स्थापवा ते स्थापना अदत्त. तथा व्यवहारनयने मतें उपरथकी कोइनी अणदीधी वस्तु लेवानो सहजथकी ढाल नथी, ते द्रव्यथकी अदत्तरहित जाणवो. तथा ऋजुसूत्रनयने मतें मन, वचन अने कायायें करी अदत्तनो त्याग करे, एटले नरकनिगोदना दुःखथकी बिहीतो थको सुखनी लालचें व्यवहार नयने मतें उपरथकी कोइनी अणदीधी वस्तु कांइ पण लेतो नथी ते जीव, यथाप्रवृत्तिकरणरूप पहेले गुणठाणे नावथकी अदत्तरहित जाणवो.

३६३ वली निक्षेपा कहे छे. अदत्त रहित एवुं नाम,ते नाम अदत्तरहित, अने बिजुं अदत्तरहित एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापना अदत्त रहित, तथा त्रीजुं ऋजुसूत्र नयने मतें मन, वचन, कायायें करी तृण तुष मात्र पण कोइनी अणदीधी वस्तु लीये नहीं, जे लीये, ते कहीने लिये, ए टले संसारी जीवनी वस्तु चोरी लेवी, तेने लौकिक चोरी कहीयें, ते न करे, तथा श्रीतीर्थंकरनी आज्ञामां जे न लेवानुं कह्युं ते न लीये, तेने लोकोत्तर चोरीथी रहित कहीयें. ए द्रव्यादत्तरहित कहीयें, तथा चोथुं शब्दनयने मतें आत्मानी ग्राहकतारूप जे शक्ति, ते स्वरूप ग्रहणरूप कार्यनी कर्त्ता छे, ते अनादिनी परभाव ग्राहकता करी रही छे, तेने परभावग्राहक पणाथकी निवारीने स्वरूपग्राहकपणे परिणमावे,ते भावअदत्तरहित कहीयें.

३६४ हवे अदत्तना चार भेद छे, ते कहे छे. जे श्रीतीर्थंकरनी आज्ञामां न लेवानुं कह्युं, ते सर्व शुभाशुभरूप परस्वभाव लेवानी वांछा, तेने प्रथम तीर्थंकर अदत्त लागे तथा जे गुरु आणा परंपरा विना सूत्रना अर्थ कहेवा तेने वीजुं गुरुअदत्त लागे. तथा जे वस्तुनो धणी होय तेनी अणदीधी वस्तु लीये, तेने त्रीजुं स्वामी अदत्त लागे, एटले संग्रहनयने मतें सर्व जीव सत्तायें स्वामीरूप जाणवा. अने व्यवहार नयने मतें क्रिया आचार प्रवृत्तिरूप एक समाचारी सरखो होय, ते आपणा स्वामी तेनी अणदीधी वस्तु लीये तेने त्रीजुं स्वामीअदत्त लागे. तथा जे कोइ जीवें एम कह्युं नथी जे म्हारां प्राण तमें हणो, तेम छतां पोताना इंद्रियना स्वाद माटे जे परजीवनां प्राण हणे, तेने चोथुं जीवअदत्त लागे, अने प्रशस्त काम करतां जीवविराधना थाय, तेने भगवंतें हिंसा कही नथी. श्रीभगवतीसूत्रे "सुभजोगपडुच्च अणारंभा" ए पाठ छे, एटले (शुभयोग के०) शुभकार्यमां मन, वचन अने कायाना योगनी प्रवृत्ति करतां थकां हिंसा लागे नहीं, एने अनारंभ कह्यो छे. ए रीतें ए चार प्रकारना अदत्तनो परमार्थ जाणवो.

३६५ चोथा महाव्रत उपरें चार निक्षेपा उतारे छेः—प्रथम सुशील एवुं नाम ते नामसुशील, वीजुं सुशील एवा अक्षर लखीने स्थापवा अथवा सुशीलरूप मूर्त्ति स्थापवी, ते स्थापनासुशील, त्रीजुं व्यवहार नयने मतें उपरथकी व्रतनो उच्चार करे अथवा लोकलाजथी कुलमर्यादायें यशःकीर्त्तिरूप शोभाने अर्थे अथवा परवश पणे राजादिकना भयथकी शीयल पाले,

पण अंतरंग परिणामनी आतुरतारूप चपलता मटी नथी, ते व्यवहार नयने मतें द्रव्यथकी सुशील जाणवुं. तथा रुजुसूत्र नयने मतें मन, वचन अने कायायें करी नववाडें अढार न्नेद सहित शीयल पाले, ते न्नावसुशील बे.

३६९ वली प्रकारांतरें सुशील उपर चार निक्षेपा कहे बेः—एक सुशील एवुं नाम ते नामसुशील, तथा सुशील एवा अक्षर लखीने स्थापवा, अथवा मूर्त्ति स्थापवी, ते स्थापनासुशील, तथा रुजुसूत्र नयने मतें मन, वचन अने कायायें करी पांचे इंद्रियोना त्रेवीश विषय सेवे नही, सेवरावे नही सेवताने अनुमोदे नही, तथा मनुष्य, तिर्यंच अने देवता संबंधि विषयनी वांबा करे नही, करावे नही, अनुमोदे नही, ते रुजुसूत्र तथा व्यवहार नयने मतें करी द्रव्यसुशील जाणवुं. तथा शब्द नयने मतें जोतां तो पोतानो आत्मा पोताना ज्ञानादि अनंत गुणनो न्नोगी बे,ते परन्नावने न्नोगवे, माटे तेने न्नावमैथुन कहीयें, ते सर्व परन्नावन्नोगी पणे न्नोगववुं नहीं, अने पोतानो आत्मा निःकर्मा करवा माटे परन्नाव साधनपणे ग्रहे, पण अग्राह्यपणे अरमणिकपणे माने अने एवुं चिंतवे जे ए आत्मानी न्नूल बे,ए रीतें आत्माने निंदतो ए परन्नावने अनंत जीवें अनंती वार लइ न्नोगवीने वम्युं ते मुजने ग्रहवुं, न्नोगववुं घटे नही, एम सर्वे परन्नाव न्नोगीपणुं तजीने स्वन्नाव न्नोक्तापणे रहे, ते जीव, शब्दनयने मतें करी न्नावसुशील जाणवो.

३७० द्रव्य, क्षेत्र, काल न्नावें करी मैथुननुं स्वरूप देखाडे बेः-प्रथम द्रव्यथकी मैथुन ते करणीरूप सेववुं तथा क्षेत्रथकी मैथुन ते त्रणलोकने बिषे इंद्रियना सावद्यनी इबा, तथा कालथकी मैथुन ते दिवस तथा रात्रि,अने न्नावथकी मैथुन ते रागथी तथा द्वेषथी ए सर्वथा सेववुंनही.

३७१ पांचमा व्रत उपर चार निक्षेपा उतारे बेः—प्रथम अपरिग्रही एवुं नाम, ते नाम अपरिग्रही जाणवुं. वीजुं अपरिग्रही एवा अक्षर लखीने स्थापवा अथवा अपरिग्रहीरूप मूर्त्ति स्थापवी ते स्थापना अपरिग्रही. त्रीजो द्रव्यथकी अपरिग्रही ते व्यवहार नयने मतें अतीत,वैरागी,संन्यासी,मिथ्या दृष्टि लिंगी प्रमुख बालजीव जाणवा. चोथो न्नाव अपरिग्रही ते व्यवहार न, यने मतें उपरथकी सात धातुमांहेली एके धातु मात्र रुजुसूत्रनयने मतें मन वचन अने कायायें करी पासें राखता नथी, रखावता नथी, ते जीव, यथाप्रवृत्तिकरणें करी पहेले गुणठाणे न्नाव अपरिग्रही जाणवा.

३७२ निक्षेपा कहे छेः—एक अपरिग्रही एवुं नाम ते नाम अपरिग्रही. बीजो अपरिग्रही एवा अक्षर लखीने स्थापवा अथवा अपरिग्रहीरूप मूर्त्ति स्थापवी, ते स्थापना अपरिग्रही जाणवो. त्रीजो व्यवहार तथा ऋजुसूत्र नयने मतें परिग्रहरूप जे धन, धान्य, दास,दासी, चतुःपद, घर,धरती, वस्त्र,आभरणरूप, नव प्रकारना परिग्रहनो मन, वचन अने कायायें करी त्याग करे, सूक्ष्म बादर परिग्रह राखे नहि,रखावे नहि, राखे तेने अनुमोदे नहि, ते जीव, द्रव्यथकी अपरिग्रही जाणवा. तथा भाव अपरिग्रही ते निश्चय भावकर्म जे रागद्वेषरूप अज्ञानदशा ते जीवने अनादिनी छे, तेने छांडवी अने तेनी चिकाशें द्रव्यकर्म ज्ञानावरणीय प्रमुख आठ कर्मरूप शरीर इंद्रियनो परिहार, एटले शुभाशुभ कर्मरूपने परभाव जाणीने तेने छांडवा रूप परिणाम, ते निश्चयपरिग्रहनो त्याग जाणवो, एटले परवस्तु जे छे, ते पोताना स्वरूपथकी जूदी बे, तेनी मूर्छा छोडवी. जेणें मूर्छा छोडी, ते जीवने भावथकी परिग्रहरूप त्याग जाणवो.

ए रीतें ए पांच महाव्रतनुं स्वरूप चार निक्षेपे करी देखाड्युं, ते साधुमुनिराजने जाणवुं अने एमांथी श्रावकने तो देशरूप धारवुं, ए पांच महाव्रतमां सर्वे व्रत आव्यां. हवे श्रावकनां बारे व्रत कहे छे, तेमां पांच व्रतना निक्षेपा तो लखाइ गया, हवे शेष व्रतना निक्षेपा कहे छे.

३७३ प्रथम छठा व्रत उपर निक्षेपा लगावे छे. प्रथम दिशिव्रत एवुं नाम ते नामथी दिशिव्रत जाणवुं. बीजुं दिशिव्रत एवा अक्षर लखी स्थापवा,ते स्थापना दिशिव्रत, त्रीजुं चार दिशि, चार विदिशि, अधोदिशि अने ऊर्ध्वदिशि,ए रीतें दशदिशि रूप क्षेत्रनुं मान करी व्यवहारनयने मतें पच्चरकाण करे अने ऋजुसूत्रनयने मतें मन, वचन, कायायें करी पोतानी शक्ति अनुसारें पालवुं, ते द्रव्यथकी दिशिव्रत जाणवुं अने भावथकी दिशिव्रत, ते जे चारगतिने दुःखरूप जाणीने तिहांथकी उदासीपणुं त्यागरूप परिणाम अने सिद्ध अवस्था साथें उपादेयपणुं ते भावथी दिशिव्रत जाणवुं.

३७४ सातमा व्रत उपर निक्षेपा लगावे छे. प्रथम भोगउपभोग एवुं नाम ते नाम भोगउपभोग जाणवुं. बीजुं भोगउपभोग एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनाभोग उपभोग जाणवुं. त्रीजुं जे एकवार भोगवीयें, ते भोग अने जे वारंवार भोगवीयें, ते उपभोग, तेनुं जेणें पच्चरकाण क

री व्यवहार नयने मतें उपरथकी परिणाम करी, ऋजुसूत्र नयने मतें मन, वचन अने कायायें करी एकचित्तें पाले छे, ते द्रव्यथकी भोग उपभोग व्रत जाणवुं. तथा भावथकी तो अनादि कालना जीवें परस्वभाव विभावरूप पुद्गलना भोग उपभोगने विषे सुख करी मान्युं छे, तिहांथकी मन पलटा वीने शब्दनयने मतें जीव, अजीवरूप स्वसत्ता परसत्तानी वेंचण करी परसत्ता उपर त्याग बुद्धि अने स्वसत्तारूप ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य आदिक अनंता गुण छे, तेने प्रगट करवारूप बुद्धि, एटले ए गुणनुं उप भोगपणुं जे वारंवार तेना तेज भोगववामां आवे, माटे उपभोग कहीयें. अने तेना पर्याय अनंता छे ते, समय समय पलटाइ रह्या छे,तेनुं भोगीपणुं कहीयें, एवो वांछारूप परिणाम वर्त्ते, ते भावथकी भोग उपभोग व्रत छे.

३७५ आठमा व्रतमां निक्षेपा लगावे छे. प्रथम अनर्थदंडविरमण व्रत, एवुं नाम, ते नाम अनर्थदंड विरमणव्रत जाणवुं.बीजुं अनर्थदंड विरमण व्रत एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापना अनर्थदंड विरमणव्रत जाणवुं. त्रीजुं जे अनर्थने कामें जीवने पापरूप आरंभ लगाडवा, तथा पारके कामें आज्ञा प्रमुख आपवी, तेनाथी जे विरम्या छे, ते द्रव्य अनर्थदंडथी रहित जाणवा. चोथुं जे जीवने अनादि कालनी मिथ्यात्वदशायें करी शुभा शुभ कर्मरूप फलनी वांछाना परिणाम वर्त्ते, तेने निवारी आत्मधर्म निरावरणरूप प्रगट करवानी रुचि, ते भावथी अनर्थदंड रहित जाणवा.

३७६ नवमा व्रत उपर निक्षेपा उतारे छेः–प्रथम सामायिक एवुं नाम ते नामसामायिक जाणवुं. बीजुं सामायिक एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापना सामायिक जाणवुं. त्रीजुं व्यवहार नयने मतें उपरथकी व्रत रूप उच्चार करी बे घडी पर्यंत पुण्यपणे रहेवुं, ते द्रव्यसामायिक व्यवहारनयने मतें जाणवुं. चोथुं भावथकी सामायिक ते जे द्रव्यरूप व्यवहारनयने मतें उच्चार करी ऋजुसूत्र नयने मतें मन, वचन, कायायें करी एकचित्तें सावद्यने छोडी बे घडी पर्यंत शुभध्यानमां वर्त्तवुं ते जीव, यथा प्रवृत्तिकरणरूप पहेले गुणठाणे भावसामायिकी जाणवो.

३७७ वली चार निक्षेपा कहे छे. एक सामायिक एवुं नाम,ते नामसामायिक जाणवुं. बीजुं सामायिक एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते असद्भाव स्थापना अने सामायिक रूपें मूर्त्ति स्थापवी, ते सद्भावस्थापना, ए स्था

पनाथकी सामायिक जाणवुं. त्रीजुं जे ऋजुसूत्रनयने मतें " करेमि ज्ञंते " रूप व्रतनो उच्चार करी मन,वचन,कायायें करी सावद्यने ठोडी एक चित्तें बत्रीश दूषण टाली सद्यायध्यानरूप शुन्नपरिणामें वर्त्तवुं. ते द्रव्यथ की सामायिक व्रत जाणवुं. तथा चोथुं ज्ञावथकी सामायिक ते शब्दन यने मतें (सम के०) जे समता, तेनो (आय के०) लान्न तेनुं नाम सामायिक ठे, एटले जेटली वार जीव, सत्तागतना ध्यानरूप संवर ज्ञाव मां वर्त्ते, तेटली वार सामायिकनो लान्न जाणवो. माटे एक अंतरमुहूर्त्त पर्यंत जीव, पोताना स्वरूपना ध्यानरूप चिंतवनमां वर्त्ततो, घातिकर्म खपा वीने केवल ज्ञान पामे. ए ज्ञावसामायिक जाणवुं.

३७० दशमा व्रत उपर चार निक्षेपा लगाडे ठेः—देशावकाशिक एवुं नाम, ते नामदेशावकाशिक जाणवुं, तथा देशावकाशिक एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनादेशावकाशिक जाणवुं. तथा ऋजुसूत्रनयने मतें जे मन, वचन अने कायाना योगने एक ठोर करी, एक स्थानकें चार पहोर बेसी धर्म ध्यान करवुं ते द्रव्यथी देशावकाशिक जाणवुं तथा शब्दन यने मतें श्रुतज्ञानें करी ठ द्रव्यनुं स्वरूप उलखीने पांच द्रव्यनो त्याग करवो अने एक ज्ञानवंत जीवद्रव्यनुं ध्यावंवुं ते ज्ञावदेशावकाशिक व्रत ठे.

३७ए अगोयारमा व्रत उपर चार निक्षेपा लगाडे ठे. प्रथम पोसह एवुं नाम, ते नामपोसह जाणवुं. वीजुं पोसह एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनापोसह जाणवुं. त्रीजुं ऋजुसूत्र अने व्यावहारनयने मतें चार पहोर अथवा आठ पहोर पर्यंत एक चित्तें व्रत उच्चरी समता परिणामें निरारंज्ञ सावद्य ठोडी सद्याय ध्यानमां प्रवर्त्तवुं, ते द्रव्यपोसह जाणवुं. चोथुं शब्दनयने मतें आपणा जीवने ज्ञान ध्यानथी पोषीने पुष्ट करवुं. एटले " पोषे धर्मने शोषे कर्म, अग्यारमुं व्रत ते पोषो मर्म " ए रीतें आपणा जीवने स्वगुण साथें पोषीयें, ते ज्ञावपोसह जाणवुं.

३७० वारमा व्रत उपर चार निक्षेपा लगाडे ठे. प्रथम अतिथि संविज्ञाग एवुं नाम, ते नामथकी अतिथिसंविज्ञाग जाणवुं. वीजुं अतिथि संविज्ञाग एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापना अतिथि संविज्ञाग व्रत जाणवुं. त्रीजुं पौषधने पारणे अथवा सदा काल साधुने तथा जिनधर्मि श्रावकने पोतानी शक्ति प्रमाणें दान देवुं, ते द्रव्यथकी अतिथिसंविज्ञाग व्रत जा

एवुं चोथुं शब्दनयने मतें उलखाण सहित ज्ञान जणवुं, जणावबुं. सांजलवुं, संजलाववुं जे रीतें पोताना तथा परना ज्ञानादिक गुण वृद्धि पामे, ते रीतें करवुं, ते जावथकी अतिथिसंविजाग व्रत जाणवुं. ए रीतें पांच महाव्रतरूप बार व्रतमां निक्षेपानुं स्वरूप जाणी प्रतीति करी ने जली रीतें पालवां.

३०१ हवे क्रोध, मान, माया अने लोज उपर चार निक्षेपा लगाडे ले, तिहां प्रथम क्रोध एवुं नाम, ते नामथकी क्रोध जाणवो, तथा क्रोध एवा अक्षर लखीने स्थापवा, अथवा क्रोधरूप मूर्त्ति स्थापवी, ते स्थापनाक्रोध जाणवो, तथा संग्रहनयने मतें जीवने सत्तायें क्रोधरूप दलीयां ते प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां ले, ते ड्रव्यथकी क्रोध जाणवो, तथा व्यवहारनयने मतें ते दलीयांनो उदय थयो, अने रुजुसूत्रनयने मतें क्रोधरूप परिणामें एकचित्तें करी लौकिक तथा लोकोत्तर मार्गमां प्रवर्त्तवुं, तेथकी जीव, महापापरूप कर्मप्रत्यें बांधे, ते जावथकी क्रोध जाणवो.

३०२ मान उपर चार निक्षेपा लगाडे ले. प्रथम मान एवुं नाम, ते नामथकी मान जाणवुं. बीजुं मान एवा अक्षर लखी स्थापवा, अथवा मानरूप मूर्त्ति स्थापवी, ते स्थापना मान जाणवुं. त्रीजुं संग्रहनयने मतें जीवने सत्तायें मानरूप दलीयां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां ले, ते ड्रव्यथकी मान जाणवुं. चोथुं व्यवहार नयने मतें ते दलीयांनो उदय थयो अने रुजुसूत्रनयने मतें एकचित्तें मानरूप परिणामें लौकिक तथा लोकोत्तर मार्गमां प्रवर्त्तवुं तेथकी जीव महापापरूप कर्मप्रत्यें बांधे ते जावथकी मान ले.

३०३ माया उपर चार निक्षेपा लगावे लेः—प्रथम माया एवुं नाम, ते नामथकी माया जाणवी, बीजो माया एवा अक्षर लखीने स्थापवा, तथा मायारूप मूर्त्ति स्थापवी, ते स्थापनाथकी माया जाणवी. त्रीजो संग्रहनयने मतें जीवनी सत्तायें माया एटले कपटरूप दलीयां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां ले, ते ड्रव्यथकी माया जाणवी. चोथो जे रुजुसूत्र अने व्यवहार नयने मतें मायाना उदयरूप जावें करी लौकिक मार्ग एटले संसारी कार्यमां मायारूप कपटनुं करवुं तथा लोकोत्तर मार्ग जे सामायिक, पडिक्कमणां, पोसह, व्रत, पच्चरकाणरूप धर्म करणीमां माया कपट करीने लोकने ठगवां, तथा आ जव अने परजवनी वांलारूप माया कपटना परिणाम वर्त्ते, तेथकी जीव महापाप बांधे ते जावथकी मायाकपट जाणवुं.

३०४ लोभ उपर चार निक्षेपा लगाडे छे. प्रथम लोभ एवुं नाम, ते नाम लोभ. बीजो लोभ एवा अक्षर लखीने स्थापवा, अथवा लोभरूप मूर्त्ति स्थापवी ते स्थापनालोभ, त्रीजो संग्रहनयने मतें जीवनी सत्तायें लोभरूप दलीयां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां छे, ते द्रव्यथकी लोभ जाणवो. चोथो ऋजुसूत्र तथा व्यवहार नयने मतें उदयरूप भावें करी लौकिकमार्गमां धन, माल, राज, ऋद्धि, स्त्री, कुटुंब पुत्र, परिवारनी लालचरूप तीव्र लोभना परिणाम अने लोकोत्तरमार्गमां जे धर्मरूप करणी छे, तेमां आ भवने विषे यशःकीर्त्ति, शोभा, वस्त्र, पात्र, आहार पाणीनी वांछारूप तीव्रलोभना परिणाम, ते भावथकी लोभ जाणवो. ए रीतें क्रोधादिकनी चोकडीमां निक्षेपा छे.

३०५ दान उपर चार निक्षेपा लगावे छे. प्रथम दान एवुं नाम ते नामथकी दान जाणवुं. बीजुं दान एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनादान जाणवुं, त्रीजुं व्यवहारनयने मतें उपरथकी अरुचिपणे लाज थकी, शरमथकी, भयप्रमुखथकी दान देवुं, ते सर्व द्रव्यथकी दान जाणवुं. चोथुं ऋजुसूत्र तथा व्यवहारनयने मतें मन, वचन, कायायें करी एक चित्तें साधु, साधवी, श्रावक, श्राविका प्रमुखने पोतानी शक्तिने अनुसारे दान आपवुं, ते सर्वे भावथकी दान जाणवुं.

३०६ वली निक्षेपा कहे छेः—दान एवुं नाम ते नामदान, तथा दान एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनादान, तथा ऋजुसूत्र अने व्यवहार नयने मतें मन, वचन, कायायें करी एक चित्तें अभयदान, सुपात्रदान, अनुकंपादान, उचितदान, कीर्त्तिदानरूप पांच प्रकारें दान देवुं. ते स द्रव्यदान जाणवुं. तथा शब्दनयने मतें जीव अजीवरूप षट्द्रव्य नव तत्त्वनुं जाणपणुं तथा पोताना जीवने अने शिष्यने प्रतीति करावीने समकेतरूप रत्ननुं दान देवुं, ते सर्व भावदान जाणवुं.

३०७ लाभ उपर चार निक्षेपा लगाडे छेः—प्रथम लाभ एवुं नाम, ते नाम लाभ, बीजो लाभ एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनालाभ त्रीजो संग्रहनयने मतें जीवने सत्तायें लाभरूप दलीयां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां छे, ते द्रव्यलाभ जाणवो. चोथो ऋजुसूत्र अने व्यवहार नयने मतें ते दलीयां उदयरूप भावें प्रगट्यां, तेवारें धन, धान्य, राज, ऋद्धि, पुत्र, क

लान्न, परिवार, द्विपद, चतुष्पदरूप एम अनेक प्रकारें वस्तुनो लान्न थाय, ते सर्व न्नावथी लान्न जाणवो.

३०० वली प्रकारातरें लान्न उपर चार निक्षेपा कहे छेः– प्रथम लान्न एवुं नाम, ते नामलान्न, बीजो लान्न एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनालान्न, त्रीजो जे सांसारिक वस्तुनो लान्न ते उदयन्नावने योगें करी इंद्रियरूप सुखनां कारण मले, ते सर्व द्रव्यलान्न जाणवो. चोथो जे संसारमां न्नमता जीवने अनंत पुद्गल परावर्त्तमान थयां, तेमां सर्व वस्तुनो लान्न पाम्यो, परंतु ज्यां सुधी एक समकेतरूप रत्ननो लान्न पाम्यो नथी, त्यां सुधी सर्व लान्न व्यर्थ जाणवा, माटे जे समकेतरूप रत्नो लान्न पामवो, ते न्नावलान्न जाणवो.

३०९ न्नावमां चार निक्षेपा उतारे छे. प्रथम न्नाव एवुं नाम ते नामन्नाव, बीजो न्नाव एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनान्नाव, त्रीजो जे ऋजुसूत्रनयने मतें दान, शील, तप, विनय, वैय्यावच्चरूप जे जीवना परिणामनुं तल्लीनपणुं ते शुन्नन्नाव जाणवो. अने क्रोध, मान, माया, लोन्न, विषय, कषाय, निद्रा, विकथारूप जीवना परिणामनुं तल्लीनपणुं ते अशुन्नन्नाव जाणवो. ए रीतें शुन्नाशुन्नन्नाव ते द्रव्यथकी न्नाव जाणवो. तथा वली चोथो शब्द अने समन्निरूढनयने मतें स्वसता परसत्तारूप स्वन्नाव परन्नावनी वेंचणरूप प्रतीति करी, अजीवरूप परन्नावने त्यागे, अने जीव स्वरूपना ध्यानमां रहेवुं, ते शुद्धन्नाव जाणवो. ए चोथो न्नावथकी न्नाव छे.

३९० रूपमां निक्षेपा लगाडे छे. प्रथम रूप एवुं नाम, ते नामरूप. बीजुं रूप एवा अक्षर लखीने स्थापवा, अथवा रूपवंत मूर्त्ति स्थापवी, ते स्थापना रूप, त्रीजुं संग्रह नयने मतें जीवें सत्तायें रूपनां दलीयां प्रकृति रूप सत्तापणें लीधां छे, ते द्रव्यरूप जाणवुं. चोथुं ते दलीयां व्यवहार नयने मतें उदयरूप न्नावें प्रगट्यां, एटले चार गतिमां जीव, काले, धोले, राते, नीले, पीले रूपें करी अनेक प्रकारें शोन्ना पामे, ते न्नावथकी रूप जाणवुं.

३९१ तथा वली प्रकारांतरें रूपना चार निक्षेपा कहे छेः–प्रथम रूप एवुं नाम ते नामरूप, बीजुं रूप एवा अक्षर लखवा अथवा रूपवंत मूर्त्ति स्थापवी, ते स्थापनारूप, त्रीजुं रूपवंत पुरुष जे मंमलिकराजा, बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्त्ती, देवता, इंद्र, गणधर तथा तीर्थंकरनां रूप, ते सर्वे द्रव्यथी

रूप जाणवां. चोथो शब्दनयने मतें जीव, शुन्नाशुन्न विन्नावरूप अशुद्धता थकी रहित शुद्धनिश्चयनयने मतें अंतर्दृष्टियें करी एक पोताना आत्मा नुं रूप जोवुं प्रतीति करवी, ते न्नावरूप जाणवुं.

३ए२ अनुन्नव उपर चार निक्षेपा लगाडे ठेः—प्रथम अनुन्नव एवुं नाम ते नामथकी अनुन्नव जाणवो. बीजो अनुन्नव एवा अक्षर लखीने स्थाप वा, ते स्थापना अनुन्नव जाणवो. त्रीजो ऋजुसूत्रनयने मते जीवने शुन्ना शुन्नरूप परिणाम, तेमां शुन्नअनुन्नवरूप परिणाम ते सेवा, स्तुति, न्नक्ति, पूजा, पडिक्कमणुं, सामायिक, पोसहरूप व्रत उच्चरी शुन्नपरिणामें तल्लीन मननुं एकाग्रपणुं ते शुन्न अनुन्नव जाणवो.अने अशुन्न अनुन्नव ते विषय, कषाय, निद्रा, विकथारूप प्रमादनेविषे जीवना अशुन्न परिणामें तल्लीन पणुं मननुं एकाग्रपणुं ते अशुन्न अनुन्नव जाणवो. ए रीतें शुन्नाशुन्न परि णामने विषे जीवने तल्लीनपणुं ते त्रीजो द्रव्यअनुन्नव जाणवो. तथा चोथो जे शब्द अने समन्निरूढ नयने मतें शुद्ध निश्चयनयें आत्मस्वरूपनी प्रतीति करी, एकाग्रचित्तें तल्लीनपणे मन, वचन, कायाना योग रुंधी पो ताना स्वरूपमां रमवुं, ते न्नाव अनुन्नव जाणवो.

३ए३ मनुष्यगति आश्रयी चार निक्षेपा उतारे ठेः—एक तो पुरुष एवुं नाम, ते नामथकी पुरुष जाणवो. बीजो पुरुष एवा अक्षर लखीने स्थाप वा, अथवा परुषरूपें मनुष्यनी मूर्त्ति चित्रीने स्थापवी, ते स्थापनापुरुष जाणवो. त्रीजो संग्रहनयने मतें जीवें सत्तायें पुरुषवेदनां दलीयां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां ठे, ते द्रव्यपुरुष जाणवो. चोथो ते दलीयांनो उदय थयो, एटले उदयन्नावरूप व्यवहार नयने मतें करी न्नावथकी पुरुष जाणवो.

३ए४ वली प्रकारांतरें पुरुष उपर चार निक्षेपा कहे ठेः—प्रथम पुरुष एवुं नाम, ते नामपुरुष, बीजो पुरुष एवा अक्षर लखीने स्थापवा अथ वा पुरुष एवी मूर्त्ति स्थापवी, ते स्थापना पुरुष, त्रीजो उदयन्नावरूप व्यव हार नयने मतें पुरुषपणानां दलीयां न्नोगवे ठे, ते द्रव्यपुरुष जाणवो. चोथो ऋजुसूत्रनयने मतें न्नद्रिकपणुं सरल स्वन्नावें दया, यत्ना, करुणा, विनीतपणुं, सेवा न्नक्तिरूप करणी करे ठे, ते जीव, न्नावपुरुष कहीयें.

३ए५ मनुष्यरूप स्त्रीमां चार निक्षेपा लगाडे ठेः—प्रथम स्त्री एवुं नाम ते नामस्त्री जाणवी, बीजो स्त्री एवा अक्षर लखी स्थापवा, अथवा स्त्रीरूपें मू

र्त्ति चित्रीने स्थापवी, ते स्थापनास्त्री, त्रीजो संग्रहनयने मतें जीवें सत्तायें स्त्रीवेदनां दलीयां प्रकृतिरूप सत्तापणें बांध्यां छे, तेने द्रव्यस्त्री कहीयें. चोथो ते दलीयांनो उदय थयो, एटले उदयभावरूप व्यवहार नयने मतें करी भावस्त्री जाणवी.

३९९ वली प्रकारांतरें स्त्री उपरें चार निक्षेपा कहे छे. प्रथम स्त्री एवुं नाम, ते नामस्त्री जाणवी, बीजुं स्त्री एवा अक्षर लखवा अथवा मूर्त्ति चित्रीने स्थापवी, ते स्थापनास्त्री जाणवी. त्रीजो उदयभावने योगें स्त्रीपणानो भव पामी व्यवहार नयने मतें स्त्रीपणानां दलीयां भोगवे, तेने द्रव्य स्त्री कहीयें, अने चोथो मायारूप कूड कपट छल भेल " मुखेमिष्टा, हृदये दुष्टा, " ए रीतें ठगविद्यारूप जे जीवना परिणाम वर्त्ते, ते जीव, भावस्त्रीरूप जाणवो. ए रीतें चार गतिमां निक्षेपानुं स्वरूप जाणवुं.

हवे जीव अजीवरूप षट् द्रव्य नव तत्त्वनुं स्वरूप चार भांगे करी उलखावे छे, तिहां प्रथम जेनी आदि नथी अने अंत एटले छेडो पण नथी, ते निश्चयनयने मतें अनादि अनंत नामें प्रथमभांगो जाणवो. तथा बीजो जेनी आदि नथी, पण अंत छे, ते व्यवहारनयने मतें अनादि सांत नामें बीजो भांगो जाणवो, तथा त्रीजो जेनी आदि छे अने अंत पण छे, ते व्यवहार नयने मतें सादिसांत नामें त्रीजो भांगो जाणवो. तथा चोथीजेनी आदि छे पण अंत नथी ते निश्चयनयने मतें आदि अनंत नामे चोथो भांगो जाणवो, चार भांगे करी प्रथम षट् द्रव्यनुं स्वरूप उलखावे छे.

४०० तिहां प्रथम जीव द्रव्यमां चार भांगा लगावे छेः–तिहां जीवमां जे ज्ञानादिक गुण छे, तेनी आदि नथी, अने अंत पण नथी, माटे निश्चयनयने मतें अनादि अनंत नामे प्रथम भांगो जाणवो. तथा भव्य जीवने कर्म साथें तथा शरीरनी साथें अनादिनो संबंध छे ते संबंधनो जेवारें सिद्धि वरशे तेवारें अंत आवशे माटे व्यवहार नयने मतें ए अनादिसांत नामें बीजो भांगो जाणवो. तथा जे जीव, देवता, नारकी, तिर्यंच अने मनुष्यरूप नाना भव करी चववुं उपजवुं करे छे, एटले ते ते भवनी आदि पण थाय छे, अने अंत पण थाय छे, माटे व्यवहार नयने मतें ए सादिसांत नामें त्रीजो भांगो जाणवो. तथा जे जीव, कर्म खपावी मोक्षें गया, तिहां मोक्ष

मां सिद्धपणे करी तेनी आदि छे, पण ते जीवोने वली पाछुं फरीने संसार मां आववुं नथी, माटे निश्चयनयने मतें ए सादि अनंत नामें चोथो नांगो छे,

४०४ अजीवनुं स्वरूप चार नांगे करी उलखावे छेः– तिहां प्रथम धर्मा स्तिकायमां गुण चार, अने पर्यायमां खंधपणुं. ते निश्चयनयने मतें अना दि अनंत नामे पहेले नांगे छे, एटले तेनी आदि नथी अने अंत पण नथी तथा अनादि सांतनामें बीजो नांगो धर्मास्तिकायमां लागतो नथी, तथा ध र्मास्तिकायना देश, प्रदेश अने अगुरुलघु ते व्यवहारनयने मतें सादि सां त नामें त्रीजे नांगे जाणवा, तथा सिद्धना जीवें जे धर्मास्तिकायना प्रदेश फरस्या छे ते प्रदेश मूकीने बीजे प्रदेशें सिद्धना जीवने जवुं नथी माटे ते निश्चयनयने मतें सादि अनंत नामे चोथो नांगो जाणवो, केम के जे सिद्ध नो जीव मोक्षे पहोंचे, ते वखत धर्मास्तिकायना प्रदेशने फरसे, माटे तेनी आदि छे, परंतु पछी ते प्रदेशथकी बीजे प्रदेशें जाय नही, माटे अंत नथी, ए धर्मास्तिकायमां चोनंगी कही, तेज रीतें अधर्मास्तिकायमां पण चोनंगी छे,

४०७ आकाशास्तिकायमां चोनंगी कहे छे. आकाशास्तिकायमां गुण चार, अने पर्यायमां खंधपणुं ते निश्चयनयने मतें अनादि अनंत पहेले नांगे जाणवुं, एटले तेनी आदि नथी अने अंत पण नथी, तथा अनादि सांत नामें बीजो नांगो आकाशास्तिकायमां लागतो नथी, तथा आकाशास्ति कायना देश, प्रदेश अने अगुरुलघु, ते व्यवहारनयने मतें सादिसांत नामें त्रीजे नांगे जाणवा, एटले तेनी आदि छे, अने छेडो पण छे तथा जे सिद्ध ना जीव, मोक्षे गया छे, ते आकाशास्तिकायना जे प्रदेश फरशीने लोकनें अंतें रह्या छे, ते प्रदेश मूकीने बीजे प्रदेशें जाता नथी, माटे निश्चयनयने मतें ए सादि अनंत नामें चोथो नांगो जाणवो.

४१२ पुद्गलास्तिकायमां चार नांगा लगावे छे. पुद्गलमां गुण चार छे, ते तो निश्चयनयने ममें अनादि अनंत नामें पहेले नांगे जाणवा. एटले तेनी आदि नथी अने अंत पण नथी, तथा जीव पुद्गलनो संबंध, नव्यजीवने तो व्यवहारनयने मतें अनादिसांत नामें बीजे नांगे जाणवो केमके नव्यजी व केवारेंक कर्मरूप पुद्गलने छांमीने मोक्षें जाशे, तथा अनव्य जीवने पुद्गल साथें संबंध अनादिअनंतनामें पहेले नांगे छे, ए संततिपणे जाणवो. केवारें टलशे नहीं माटे अनव्य जीवने कर्मरूप पुद्गलसाथें संबंध ते निश्च

यनयने मतें संततिपणे जाणवो, तथा पुद्गल खंध सादि सांत छे, केम के जे बंधाय छे, ते स्थितिप्रमाणें रही वली पाछा विखरे छे, वली नवा खंध थाय छे, माटे पुद्गलना खंध ते व्यवहार नयने मतें सादि सांत नामें त्रीजे जांगे जाणवा अने चोथो सादि अनंत नामें जांगो पुद्गलमां लाजतो नथी,

४१६ कालद्रव्यमां चार जांगा लगावे छे. तिहां कालद्रव्यमां गुण चार तो निश्चयनयने मतें अनादि अनंत नामें पहेले जांगे जाणवा अने पर्यायमां अतीतकाल तो अनादि सांत नामें बीजे जांगे छे. तथा वर्त्तमानकाल, सादि सांत नामें त्रीजे जांगे छे, तथा अनागतकाल ते सादि अनंत नामें चोथे जांगे छे, ए कालनुं स्वरूप, ते सर्व उपचारमात्र छे, ए रीतें ए छ द्रव्यनुं स्वरूप चार जांगे करी उलखवुं. इहां षट्द्रव्यमां नव तत्त्वमांहेला जीव अने अजीव, ए बे तत्त्व उपर चार जांगा लगाव्या.

४२० पुण्य तत्त्वमां चार जांगा लगावे छे. तिहां अजव्य जीव आश्रयी पुण्यमां अनादि अनंत नामें पहेलो जांगो जाणवो, केम के अजव्य जीवने पुण्यनी साथे संबंध अनादि अनंत जांगे छे. कारण के अजव्य जीव पुण्य नां दलीयां क्षय करीने केवारें पण सिद्धि वरशे नहीं माटे अनादि अनंत संबंध जाणवो. तथा जव्य जीवने पुण्यनी साथें संबंध अनादि सांत नामें बीजे जांगे छे, केम के व्यवहार राशियां जव्य जीव, स्थितिपाकें एक दिवस, पुण्यनां दलीयां छोडी सिद्धि वरशे, तेवारें छेहडो आवशे, माटे अनादि सांत बीजो जांगो जाणवो. तथा जीव, पुण्यनां दलीयां समय समय अनंतां लीये छे अने समय समय अनंतां खेरवे छे, ते सादिसांत त्रीजे जांगे जाणवां. तथा सादि अनंत नामें चोथो जांगो पुण्यमां लागतो नथी.

४२४ पाप तत्त्वमां चार जांगा लगावे छे. प्रथम पापमां अनादि अनंत नामें पहेलो जांगो अजव्य जीव आश्रयी जाणवो. केम के अजव्य जीव, पापनां दलीयां छोडी केवारें सिद्धि वरशे नहीं माटे अजव्य जीवने पापनी साथें संबंध ते अनादि अनंत पहेले जांगे जाणवो. तथा जव्य जीवने पापनी साथें संबंध अनादि सांत नामें बीजे जांगे जाणवो, केम के व्यवहार राशि जव्य जीव, स्थितिपाकें एक दिवस पापनां दलीयां छोडी सिद्धि वरशे, तेवारें पापनो छेहडो आवशे माटे अनादि सांत बीजो जांगो जाणवो तथा जे जीव समय समय पापनां अनंतां दलीयां लीये छे अने समय समय

अनंतां खेरवे छे, ते आश्रयी सादि सांत नामें त्रीजो नांगो जाणवो. तथा सादि अनंत चोथो नांगो पापमां लागतो नथी.

४३७ आश्रवमां चार नांगा लगावे छे. आश्रवने अनव्य जीव साथें संबंध ते अनादि अनंत पहेले नांगे जाणवो. केम के अनव्य जीवने शुनाशुन आश्रवनुं आववुं केवारें मटशे नहीं, तथा आश्रवने नव्य जीवनी साथें संबंध ते अनादिसांत बीजे नांगे जाणवो. एटले व्यवहारराशि नव्य जीवने आश्रवनां अनंतां दलीयां समय समय आवे छे, ते एक दिवसें यथाख्यातरूप संवरनावें करी आश्रवनुं आववुं रुंधशे माटे अनादिसांत बीजो नांगो जाणवो. तथा जे जीव,आश्रवनां दलीयां समय समय अनंतां लीये छे अने समय समय अनंतां खेरवे छे, ते सादिसांत त्रीजो नांगो जाणवो. तथा अनादि अनंत चोथो नांगो आश्रवमां लागतो नथी.

४३९ संवरनुं स्वरूप चार नांगे करी उलखावे छे. प्रथम सर्व सिद्धना जीव आश्रयी संवरनाव जोतां तो अनादि अनंत पहेले नांगे जाणवो. एटले सिद्धना जीव, सदा संवरनावमां रह्या वर्त्ते छे, तेनी आदि पण नथी अने अंतपण नथी तथा अनादिसांत नामें बीजो नांगो संवरमां लागतो नथी तथा क्षयोपशम नावआश्रयी जे जीव, संवरनावें वर्त्ते छे, ते सादि सांत त्रीजो नांगो जाणवो क्षायिक नावआश्रयी जे जीवने संवरगुण प्रगट्यो छे, ते सादिअनंत चोथो नांगो जाणवो.

४३६ निर्ज्जरानुं स्वरूप चार नांगे करी देखाडे छे, प्रथम अनव्य जीव आश्रयी अकाम निर्ज्जरा तो अनादि अनंत पहेले नांगे जाणवी. केम के अनव्य जीव सदा काल अकाम निर्ज्जरा करतांज फिरशे, पण सकाम निर्ज्जरा अनव्यने कोइ वारें उदय आवशे नहीं, माटे अनादि अनंत पहेलो नांगो जाणवो. तथा अनादि सांत बीजो नांगो व्यवहारराशिया नव्यजीव आश्रयी जाणवो, केम के नव्यजीव अकामनिर्ज्जरा अनादि कालनी करे छे, परंतु जेवारें समकेत गुणरूप धर्मध्यानमां आवशे, तेवारें अकामनिर्ज्जराने छोडशे, माटे अनादिसांत बीजो नांगो जाणवो, ए बे नांगा अकामनिर्ज्जरामां लगाव्या, पण ते सर्व व्यर्थ जाणवा. तथा सादि सांत त्रीजो नांगो ते समकेती जीव आश्रयी चोथा गुणठाणाथी मांमीने यावत् तेरमे चौदमे गुण

ठाणे केवलीपर्यंत सर्वे जीवने सकाम निर्जरा जाणवी, ते सकामनिर्जरा सादि सांत ज्ञांगे बे, तथा सादि अनंत चोथो ज्ञांगो निर्जरामां लागतो नथी.

४४७ बंधतत्त्वनुं स्वरूप चार ज्ञांगे करी उंलखावे बे. प्रथम अनादि अनंत पहेलो ज्ञांगो बंधमां अज्ञव्य जीव आश्रयी जाणवो. केम के अज्ञव्य जीवने ज्ञानावरणी प्रमुख कर्मनां दलीयां सत्तामां रह्यां बे, ते कोई दिवसें बूटशे नहीं ते आश्रयी अनादि अनंत पहेलो ज्ञांगो जाणवो. तथा ज्ञव्य जीवने कर्मरूप दलीयां सत्तायें बांध्यां बे, ते जे वारें सिद्धि वरशे तेयारें सर्व बूटशे, ते आश्रयी अनादिसांत बीजो ज्ञांगो जाणवो. तथा जे जीव कर्मरूप दलीयां बांधे बे अने वली पाबा स्थितिपाकें गेडे बे, ते जीवआश्रयी सादिसांत त्रीजो ज्ञांगो जाणवो. तथा सादिअनंत चोथो ज्ञांगो बंधतत्त्वमां लागतो नथी.

४४४ मोक्षनिःकर्मावस्थानुं स्वरूप चार ज्ञांगे करी उंलखावे बें. प्रथम सर्व सिद्धआश्रयी अनादि अनंत पहेलो ज्ञांगो जाणवो. केम के सिद्धि वस्या तेनी आदि पण नथी अने अमुक दिवसें सिद्धि वरी रहेशे, हवे कोइ सिद्धि वरशेज नही एवो अंत पण नथी माटे. तथा अनादि सांत नामें बीजो ज्ञांगो सिद्धिमां लागतो नथी तथा सिद्धना अनंता गुणने विषे पर्यायनी हानिवृद्धिरूप उपजवुं विणसवुं समय समय थइ रह्युं बे ते सादिसांत त्रीजो ज्ञांगो जाणवो. तथा श्रीऋषज्ञादि एवुं नाम लेतां एक सिद्ध आश्रयी सादिअनंत चोथो ज्ञांगो जाणवो. ए रीतें षट्द्रव्य नव तत्त्व स्वरूप, चार ज्ञांगे करी जाणवुं.

४४७ निगोदीया जीव आश्रयी चार ज्ञांगा कहे बेः—प्रथम अनादि अनंत पहेले ज्ञांगे निगोदमां अनंता जीव रह्या बे, केम के ते जीव, कोइ कालें निगोदमांथी निकलवा पामशेज नही माटे ते आश्रयी अनादि अनंत पहेलो ज्ञांगो जाणवो. तथा जे जीव, निगोदमांथी निकली निकलीने सिद्धि वरे बे पण फरी पाबा निगोदमां जाता नथी ते जीव आश्रयी अनादि सांत बीजो ज्ञांगो जाणवो. तथा जे जीव, निगोदमांथी निकली फरी पाबा निगोदमां जइ पडे बे, वली पाबा निकले बे, ते जीवआश्रयी सादि सांत त्रीजो ज्ञांगो जाणवो. तथा सादि अनंत चोथो ज्ञांगो निगोदमां लागतो नथी.

४५५ देवलोकना जीव उपर चार भांगा लगाडे छे, प्रथम देव गति आश्रयी जोतां तो अनादि अनंत पहेलो भांगो जाणवो. केम के देवगतिनी आदि पण नथी अने अंत पण नथी, तथा अनादि सांत नामे बीजो भांगो देवगतिमां लागतो नथी अने देवगतिमां जीव, समय समय असंख्याता चवे छे अने असंख्याता उपजे छे माटे ते सादि सांत त्रीजो भांगो जाणवो तथा सादि अनंत नामें चोथो भांगो देवगतिमां लागे नहीं. एवी रीतें मनुष्यादि चारे गतिमां भांगा जाणवा.

४५६ शाश्वती अशाश्वती वस्तुमां चार भांगा लगाडे छे. एटले शाश्वती वस्तु सर्वे अनादि अनंत पहेले भांगे जाणवी अने अनादि सांत बीजो भांगो शाश्वती वस्तुमां लागतो नथी तथा त्रीजो शाश्वतो वस्तुमां पुद्गल परमाणुआ समय समय अनंता पेसे छे अने निकले छे, माटे सादिसांत त्रीजो भांगो जाणवो अने अशाश्वती वस्तु पण सर्वे सादिसांत त्रीजे भांगे जाणवी, केम के अशाश्वती वस्तु नीपनी तेनी आदि छे अने वली क्षय थाशे तेवारें अंत पण आवशे तथा सादि अनंत चोथो भांगो एमां लागतो नथी. ए रीतें सर्व वस्तुनुं चार भांगे करी प्रमाण करवुं.

४५७ हवे छ द्रव्यना परस्पर संबंधनी चोभंगी कहे छेः—तेमां प्रथम आकाश द्रव्य छे, ते लोकालोकव्यापि छे अने शेष पांच द्रव्य तो लोकव्यापि जाणवां, तेमां वली लोकमां एक आकाशद्रव्य, बीजुं धर्मास्तिकाय द्रव्य, त्रीजुं अधर्मास्तिकायद्रव्य, ए त्रणे द्रव्यनो एकेक प्रदेश भेलो रह्यो छे, ते पण कोइ कालें विछडशे नहीं माटे ए निश्चयनयने मतें अनादि अनंत पहेलो भांगे संबंध जाणवो. तथा लोकमां आकाशरूप क्षेत्रनी साथें सर्वजीवद्रव्यने संबंध, ते निश्चयनयने मतें अनादि अनंत छे, तथा संसारी जीव, कर्म सहितने आकाशप्रदेशनी साथें संबंध ते सादिसांत छे, कारण के संसारी जीवें जेटला आकाशद्रव्यना प्रदेश छे, ते एकेक जीवें सर्वे फरस्या छे अने वली फरसशे माटे व्यवहारनयने मतें सादिसांत संबंध जाणवो. तथा लोकाकाश अने पुद्गलने मांहोमांहे संबंध ते निश्चयनयने मतें अनादि अनंत पहेले भांगे जाणवो. तथा आकाशप्रदेशनी साथें पुद्गलपरमाणुआने संबंध ते व्यवहारनयने मतें सादिसांत त्रीजे भांगे छे, कारण के एक पुद्गल परमाणुए ते सर्वे आकाश प्रदेशने फरस्यो छे अने वली फरसशे माटे सादिसांत

संबंध कहीयें. ए रीतें आकाशद्रव्यनी पेरें धर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्ति कायनो पण मांहोमांहे संबंध जाणवो.

हवे जीवपुद्गलनो संबंध कहे छेः— अभव्यजीवने पुद्गलनी साथें संबंध, ते निश्चयनयने मतें अनादि अनंत पहेले भांगे छे, केम के अभव्य जीव नां कर्म, केवारें पण खपशे नही, अने भव्यजीवने कर्मरूप पुद्गलनी साथें संबंध ते अनादिनो छे, पण कारण सामग्री मले, त्यारें केवारेंक छूटशे, माटे व्यवहारनयने मतें अनादि सांत जाणवो अने निश्चयनयने मतें करी छए द्रव्य स्वभावरूप परिणामें करीने परिणामी छे, माटे परिणामिपणुं सदा शाश्वतुं छे, तेथी अनादि अनंत जाणवो. तथा जीव अने पुद्गल, ए बे द्रव्य मली खंधभाव पामे छे, तेणें करी पारिणामिक जाणवा. ते पारिणामिक पणुं अभव्यजीवने निश्चयनयने मतें अनादि अनंत छे अने भव्यजीवने व्यवहारनयने मतें अनादि सांत छे, वली पुद्गलद्रव्यनुं पारिणामिकपणुं तो निश्चयनयें करी अनादि अनंत छे अने पुद्गलपरमाणुआनुं मलवुं, विखरवुं, ते व्यवहारनयने मतें सादिसांत छे, एटले जीव, पुद्गल साथें मल्यां सक्रिय छे.

हवे श्रीसम्मतिसूत्रमां कह्युं छे जे पांच समवाय मलवाथी सर्व कार्य नीपजे छे, तेनी व्याख्या करीयें छैयें ॥ गाथा ॥ कालो सहाव नियई, पुव्व कयं पुरिस कारणे पंच ॥ समवाए सम्मत्तं, एगंते होइ मिछत्तं ॥१॥ अर्थः— काल, स्वभाव, नियति केतां भावि, कर्म अने उद्यम, ए पांच समवायांग माने, ते समकेती जाणवा अने ए मांहेलो एक समवाय उछापे, ते मिथ्यात्वी जाणवो, ए सम्मतिसूत्रनुं वचन छे. एवुं सांभली ए पांच समवाय आश्रयी शिष्य पूछे छे.

४७१ शिष्यः—जीव, समकेत केवारें पामशे ?

गुरुः—जेवारें काललब्धि पाकशे, तेवारें जीव समकेत पामशे, पण काल पाक्या विना कोइ जीव, समकेत पामे नहीं, केम के काल सर्वनुं कारण छे जे कालें जे कार्य होणार होवे, ते कालें ते वेलायें ते कार्य थाय.

४७२ शिष्यः—अभव्यजीवनेतोकालघणोगयो,पणतेसमकेतकेमनथी पामता?

गुरुः—अभव्यमांभव्यस्वभावनथी,जेनेभव्यस्वभावहोय,तेजीव समकेतपामे.

४७३ शिष्यः— भव्यजीव सर्वे समकेत पामशे ?

गुरुः—सर्व जीव समकेत नही पामशे जेने ज्ञावि कारणरूप देव, गुरु, धर्मनी जोगवाइ मलशे, ते जीव, समकेत पामशे बीजा नही पामे.

४०४ शिष्यः—ज्ञावि देव, गुरु, धर्मरूप कारणनी जोगवाइ तो घणा जीवने मली ठे ते केम समकेत नथी पामता ?

गुरुः—देव, गुरु, धर्मरूप कारणनी जोगवाइ तो मली, पण ते जीव उद्यम नथी करता परंतु जो उद्यम करे, तो समकेत पामे.

४०५ शिष्यः—वखाण सांज्ञले ठे, पच्चरकाण करे ठे, यात्रा,दर्शन,पूजा,ज्ञक्ति आदि उद्यम तो घणा जीव करे ठे, तो पण केम समकेत पामता नथी ?

गुरुः—ते जीवने पूर्वकृत कर्म घणां ठे, एटले सात कर्मनी बशें ने त्रीश कोडाकोडी सागरोपमरूप स्थिति ठे,ते विवर आपे, तो जीव समकेत पामे.

४०६ शिष्यः—यथाप्रवृत्तिकरणरूप परिणामें करी, जीवें बशेंने त्रेवीश कोडाकोडी सागरोपमरूप कर्मनी स्थिति खपावी, एटले कर्में तो विवर दीधुं तों पण हजी केम समकेत नथी पामता ?

गुरुः—हजी तेउनो उद्यम काचो ठे, परंतु अपूर्वकरणना परिणामरूप उद्यम करशे, तेवारें जीव, समकेत पामशे एटले ए पूर्वोक्त पांच समवाय ज्ञले, तेवारें समकेतरूप कार्य नीपजे.

४०७ शिष्यः—मोक्षरूपकार्य जीवने केम सिद्ध थाय ?

गुरुः—जेवारें काललब्धि पाकशे, तेवारें जीवने मोक्षरूप कार्य नीपजशे, पण काल पाक्या विना कोइ जीव, मोक्षें जाय नही. एटले काल सर्वेनुं कारण बे,जे कालें जे कार्य होणार होवे, ते कालें ते कार्य ते वेलायें नीपजे.

४०८शिष्यः-अज्ञव्यजीवनेतोकालघणोगयोतोकेममोक्षरूपकार्यसिद्धथयुंन

गुरुः—अज्ञव्यमां स्वज्ञाव नही ज्ञव्यस्वज्ञाव होय तो सिद्धरूप कार्य निपजे.

४०९ शिष्यः—तो ज्ञव्यजीव सर्वे मोक्षें केम जाय नही ?

गुरुः—निश्चय समकेत गुणरूप कारण मख्या विना कोइ जीव,मोक्ष पामे नही.

४१० शिष्यः—नियतिनिश्चय एटले ज्ञावि समकेतरूप कारण तो श्रेणिकादिक पाम्या हता तो पण तेने मोक्षरूप कार्य केम न थयुं ?

गुरुः—तेनेपूर्वकृतकर्म घणां हतां अथवा पुरुषाकार उद्यम न कस्यो.

४११ शिष्यः—उद्यम तो शालिज्ञद्र प्रमुखें घणो कस्यो, पण मोक्षरूप कार्य तो न नीपन्युं ?

गुरुः-एने पूर्वकृतकर्म घणां हतां तेणें रोकी राख्या.

४५२ शिष्यः-कर्म तो प्रसन्नचंद्रराजर्षियें सातमी नरकनां दलीयां मेलव्यां हतां, तो तेने मोक्षरूप कार्य केम नीपन्युं ?

गुरुः-एणें शुक्लध्यानरूप श्रेणिनो उद्यम घणो कीधो, माटे पांचे कारण मले,सर्व कार्य नीपजे छे, एमां जे कोइ एक कारण उत्थापे,ते मिथ्यादृष्टि जाणवा अने पांचे समवाय मलवाथी कार्य माने, ते समकेतदृष्टि जीव जाणवा.

४५३ समकेतनुं स्वरूप, षट् कारकें करी देखाडे छे. तिहां प्रथम षट् कारकनां नाम कहे छेः-१ कर्त्ता, २ करण, ३ कार्य, ४ संप्रदान, ५ अपादान, ६ आधार, ए षट् कारकनां नाम जाणवां. तिहां प्रथम कर्त्ता ते जीव, बीजुं करण ते देवगुरु धर्म, त्रीजुं कार्य ते जीवने समकेतरूप कार्य करवुं छे, चोथुं जे आत्मप्रदेशें जीवने निर्मलता संपजती जाय, ते संप्रदान, पांचमुं कर्मरूप आवरण टलतुं जाय, ते अपादान, छठुं ए छए समकेतरूप कार्यमां जल्यां आधारभूत जाणवां, माटे छठुं आधारनामा कारक जाणवुं

४५४ मोक्षनिःकर्मा अवस्थानुं स्वरूप, ए षट्कारक मले निपजे, ते कहे छे. तिहां प्रथम कर्त्ता ते जीव जाणवो अने बीजुं कारण ते जीवने समकेतरूप मले, तेवारें त्रीजुं मोक्षरूप कार्य नीपजे, तथा चोथुं संप्रदान ते गुणश्रेणिरूप निर्मलता जीवने संपजती जाय अने पांचमुं अपादान ते कर्मरूप आवरण टलतां जाय अने छठुं आधार, ते ए छए मोक्षरूपकार्यमां मल्यां आधाररूप जाणवां. एणी रीतें षट्कारकरूप चक्र करी मोक्षनिःकर्मा

विषयभोग तो घणा अशुचि छे माटे महारे बहुरत्ता देवतापणुं प्राप्त होजो ? एवी इच्छा, ते पांचमुं नियाणुं जाणवुं. वली कोइ देवता अने (अन्य के०) बीजो कोइ देवता ते मांहोमांहे देव देवीनां रूप विकूर्वीने भोग भोगव्यानी तथा कोइ देवता पोतेंज देव देवीरूप विकूर्वीने भोगव्यानी वांछा ते बहुरत्ता देव कहीये, एवी वांछारूप परिणाम एटले एवुं सामर्थ्य हुं पामुं ? एवी इच्छा ते छट्ठुं नियाणुं जाणवुं. ए छ नियाणांना करवावाला जीव परभवें दुर्लभबोधी थाय. एटले तेने बोधबीजरूप समकेतनी प्राप्ति न थाय, वली कोइ जीव एवुं चिंतवे के जे देवताउने संभोग नथी, ते देवोने अरत्ता देव कहीयें. ते अरत्तादेव थवानी वांछा ते सातमुं नियाणुं जाणवुं, वली कोइ एक जीव, एम चिंतवे छे मुजने साधुने पडिलाभण वालुं रूडुं श्रावकपणुं प्राप्त थाजो, एटले हुं घणा साधु, साधवीने आहार पाणी प्रमुख वहोरावुं ? एवी इच्छा करवी, ते आठमुं नियाणुं जाणवुं. वली कोइ एवुं चिंतवे जे मुजने दारिद्री श्रावकपणानी प्राप्ति होजो, के जेथकी मुजने चारित्रनी प्राप्ति तरत उदय आवे, एवी प्रार्थना करवी, ते नवमुं नियाणुं जाणवुं. ए पाछलां त्रण नियणांनुं फल, अनुक्रमें पूर्वले भवें समकेत, देशविरति अने सर्वविरतिनुं दायक छे, पण मोक्षनुं दायक नथी. ए सर्व अर्थ, पांखीसूत्रनी टीकामध्यें छे. तथा बृहत्कल्पवृत्तिमां एम कह्युं छे जे तीर्थंकरपणुं तथा चरमशरीरीपणुं प्रमुख पण साधुने प्रार्थवुं युक्त नथी, अपवादें पण ए नियाणुं साधुने नहीं करवुं. तथा आवश्यकवृत्तिमां ध्यानशतकने अधिकारें कह्युं छे, जे सर्व कर्मना क्षयथकी मुजने मोक्ष होजो ? ए पण नियाणुंज छे, एने पण निश्चयनयथी निषेध्युं छे, परंतु भावनामां जे जीव काचा छे, तेने आश्रयी व्यवहारनयें निर्दोष छे. एम योगशास्त्रवृत्तिमां पण कह्युं छे. अने 'जयवीयराय' इत्यादिक प्रणिधान छे, ते छट्ठा गुणठाणाथी उपर न करवुं. इत्यादि, वली एवो विस्तारें अधिकार, पूजापंचाशकवृत्तिमां छे. सर्व थइने प्रश्न ५१३ थया.

हवे श्री नवपदजीनी पूजा खरतरगछमां थयेला देवचंदजीकृत छे, तेमां कह्युं छे ॥ गाथा ॥ इम नव पद गुण मंडली, चउनिरकेप प्रमाणो जी ॥ सात नयें जे आदरे, सम्यग् ज्ञानी जाणो जी ॥ १ ॥ अर्थः—श्री सिद्धचक्रजीना यंत्रनुं स्वरूप ते नैगमादिक सात नयें करी जाणवुं. तथा

नामादिक चार निक्षेपे करी जाणवुं. तथा प्रत्यक्ष अने परोक्ष, ए बे प्रमाणें करी जाणवुं. तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल अने जावनी चोजंगीयें करी जाणवुं, तथा चौद गुणठाणे करी जाणवुं, तथा गुणें करी जाणवुं. तथा नव तत्त्वें करी जाणवुं तथा गुणिगुणें करी जाणवुं तथा पंचवर्णें करी जाणवुं तथा देव, गुरु, धर्मनी उलखाणें करी जाणवुं. ए दश जांगे करी श्री सिद्धचक्रजीना यंत्रनुं स्वरूप जे जाणे, सद्दहे, तेने सम्यग्ज्ञानी जाणवा.

५२२ तेमां प्रथम जांगे साते नयें करी यंत्रनुं स्वरूप देखाडे छे. तिहां प्रथम नैगमनयने मतें अतीतकालें सिद्धचक्रजीनो यंत्र एवुं नाम वर्त्ततुं हतुं अने अनागत कालें पण ते नाम वर्त्तशे, तथा हमणां वर्त्तमान कालें पण ते नाम वर्त्ते छे, ए रीतें त्रणे काल एकरूपपणे वर्त्ते, ते नैगमनय जाणवो. हवे संग्रह नयना मतवालो सर्वनो संग्रह करीने बोल्यो, जे आ श्री सिद्धचक्रजीनो यंत्र छे, पछी व्यवहार नयना मतवाले वेंचण करीने जुदा जुदा जेद देखाड्या, ते आवी रीतें के प्रथम पदें अरिहंत, बीजे पदें सिद्ध, त्रीजे पदें आचार्य, चोथे पदें उपाध्याय, पांचमे पदें साधु, छठे पदें दर्शन, सातमे पदें ज्ञान, आठमे पदें चारित्र, अने नवमे पदें तप, ए रीतें जेवा दीठा, तेवा जेद वेंच्या, ते व्यवहार नय जाणवो. पछी व्यवहार नयना मतवालो ऋजुसूत्र नयनो उपयोग लइने बोल्यो जे ए सिद्धचक्रजीना यंत्रनी स्थापनामां मध्यजागें अरिहंत देव, ते छठे समजिरूढ नयें वर्त्ते छे. अने उपर सिद्ध परमात्मा ते सातमे एवंजूतनयें वर्त्ते छे, पडखामां आचार्य, उपाध्याय अने साधु, ते पांचमे शब्दनयें वर्त्ते छे, तथा दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप, ते पांचमे शब्दनयें अंश अंश मात्र प्रगट्या, अने छठे समजिरूढनयें संपूर्ण प्रगट्या, तथा सातमे एवंजूतनयें सकल कार्य नीपजावी परमात्मा जीव, जोगवे छे. ए सात नयें यंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५२३ बीजे जांगे चार निक्षेपे करी श्री सिद्धचक्रजीना यंत्रनुं स्वरूप देखाडे छे. तिहां प्रथम श्रीअरिहंतजी उपर चार निक्षेपा उतारे छे. प्रथम जे अरिहंत एवुं नाम लही स्मरण करवुं, ते नाम अरिहंत. तथा श्री अरिहंतजीनी मूर्त्ति प्रमुख प्रतिमा स्थापीयें, ते सद्भाव स्थापना. तथा श्री अरिहंत एवा अक्षर लखवा, ते असद्भावस्थापना. ए बीजो स्थापना निक्षेपो जाणवो. तथा त्रीजो श्री अरिहंतनो जीव श्रेणिकादि प्रमुख ते ज

व्य शरीरनुं द्रव्य जाणवुं अने जिहां लगें तीर्थंकर भगवानने केवल ज्ञान न उपज्युं होय, त्यां लगें छद्मस्थ अवस्थायें व्यतिरिक्त शरीरनुं द्रव्य जाणवुं. तथा श्री अरिहंतजी मुक्तें गया पछी तेना शरीरनी भक्ति इंद्रादिक देवता तथा मनुष्य करे छे, ते ज्ञशरीरनुं द्रव्य जाणवुं एवी रीतें भव्यशरीर, तद्व्यतिरिक्त शरीर अने ज्ञशरीर, ए त्रण प्रकारें त्रीजो द्रव्यनिक्षेपो जाणवो. हवे चोथो भावनिक्षेपो ते श्री अरिहंतने केवल ज्ञान उपन्या पछी त्रिगडाने विषे बेसीने बार पर्षदाने देशना आपे, तेने भाव अरिहंत कहीयें.

५२४ ए चार निक्षेपे श्रीसिद्धनुं स्वरूप कहे छे. प्रथम श्री सिद्ध एवुं नाम त्रणे काल एकरूपें शाश्वतुं वर्त्ते छे, ते नामथकी सिद्ध जाणवा, तथा श्रीसिद्धजीनी प्रतिमा प्रमुख स्थापवी, ते सद्भावस्थापना अने सिद्ध एवा अक्षर लखवा, ते असद्भावस्थापना. ए रीतें स्थापनानिक्षेपो बे भेदें जाणवो. तथा त्रीजो द्रव्यनिक्षेपो ते तेरमे अने चौदमे गुणठाणे वर्त्तता केवली भगवान्ने भव्यशरीर आश्रयी द्रव्य कहीयें अने जे सिद्धि वस्या तेना शरीरनी भक्ति करीयें, ते ज्ञशरीरनुं द्रव्य जाणवुं. ए त्रीजो द्रव्यनिक्षेपो जाणवो. तथा भावसिद्ध जे सकलकर्म क्षय करी लोकने अंतें विराजमान अव्याबाध सुखना भोगी, तेने भावसिद्ध कहीयें.

हवे सिद्धभगवानमां तद्व्यतिरिक्तशरीर आश्रयी चार निक्षेपा कहे छे. प्रथम सिद्ध एवुं नाम. ते त्रणे कालें एकरूपें शाश्वतुं वर्त्ते छे, ते नामसिद्ध जाणवा तथा जे देहमान मध्येथी त्रीजो भाग घटाडी बे भागना शरीरप्रमाणे आत्मप्रदेशनो घन करी स्थापनारूप क्षेत्र अवगाही रह्यो छे, ते बीजो स्थापनासिद्ध जाणवो. तथा द्रव्यसिद्ध ते शुद्ध, निर्मल, असंख्यातप्रदेशने विषे ज्ञानादिक अनंतगुणरूप छती पर्यायप्रत्यें वस्तुरूप प्रगट्या छे, ते सिद्धनो तद्व्यतिरिक्तशरीर आश्रयी द्रव्यनिक्षेपो जाणवो. तथा भावथकी सिद्धनुं स्वरूप तो सामर्थ्यपर्यायप्रवर्त्तनारूप अनंतो धर्म प्रगट्यो छे, तेने विषे सदा काल नवा नवा ज्ञेयनी वर्त्तनारूप पर्यायनो उत्पाद, व्यय, समय समय अनंतो अनंतो थइ रह्यो छे. तेणे करी सिद्ध परमात्मा अनंतुं सुख भोगवे छे, ते चोथो भावनिक्षेपो जाणवो.

५२५ आचार्यनुं स्वरूप चार निक्षेपे करी कहे छेः—प्रथम आचार्य एवुं नाम, ते नाम आचार्य, बीजुं आचार्यजीनी मूर्त्तिप्रमुख स्थापवी, अथवा आचार्य एवा

अक्षर लखी स्थापवा, ते स्थापना आचार्य, त्रीजो जे आचार्यपदवीने योग्य छे पण हजी आचार्य पदवी पाम्या नथी, परंतु आगल पामशे, ते तद्व्यतिरिक्तशरीरनुं द्रव्य जाणवुं. तथा जे कोइ गतिमां जीव छे, परंतु त्यांथकी आवी आचार्य पदवी पामशे, तेने भव्यशरीरनुं द्रव्य कहियें. तथा जे कोइ आचार्य कालंगत थया पछी तेना शरीरनी भक्ति महोत्सव करीयें, ते ज्ञशरीरनुं द्रव्य जाणवुं, ए त्रीजो द्रव्यनिक्षेपो कह्यो. हवे चोथो भावनिक्षेपो ते जे भावाचार्य छत्रीश गुणें करी बिराजमान पांच प्रस्थानें करी सेवित भव्य प्राणीने हितोपदेश कर्त्ता गछना नायक थका विचरे, तेने भावथकी आचार्य कहीयें. एज रीतें चार निक्षेपा उपाध्यायने विषे पण जाणी लेवा.

५२६ साधुजीनुं स्वरूप चार निक्षेपे करी कहे छेः—प्रथम साधु एवुं नाम, ते नामसाधु, तथा बीजो साधुजीनी मूर्त्ति प्रमुख स्थापीयें, अथवा अक्षर लखीयें, ते स्थापना साधु तथा जे श्रावकमांहेथी आगल साधुपणुं नीपजशे, तेने द्रव्यसाधु कहीयें. ए भव्य शरीरनुं द्रव्य जाणवुं तथा जे साधु पांच महा व्रत सूधां पाले साधुनी क्रिया करे, सूजतो आहार लीये, पण तेवो ज्ञान ध्याननो उपयोग वर्त्ततो नथी ते तद्व्यतिरिक्त शरीर आश्रयी द्रव्य जाणवुं. तथा जे कोइ साधुने देवगति थया पछी तेना शरीरनी महोत्सव भक्ति करवी, ते ज्ञशरीरनुं द्रव्य जाणवुं ए त्रण प्रकारें साधुनो द्रव्यनिक्षेपो कह्यो. हवे भाव निक्षेपो कहे छे. जे साधुने गुणें करी सहित अने आगल जे साधुनो आचार, व्यवहार कह्यो ते प्रमाणें सर्व करे अने ज्ञान ध्यानमां वर्त्ततो साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें सत्तागतना धर्म रूप मोक्षने साधे, ते भावनिक्षेपे साधु जाणवो.

५२७ दर्शन उपर चार निक्षेपा लगावे छे. तिहां प्रथम दर्शन एवुं नाम, ते नामदर्शन कहीयें. बीजुं मूर्त्ति प्रमुख स्थापवी, ते सद्भावस्थापना अने दर्शन एवा अक्षर लखी स्थापवा, ते असद्भावस्थापना, ए स्थापनानिक्षेपो जाणवो. त्रीजो जे अंतरंग उपयोग विना कुलाचारें अति आडंबरें विधि सहित दर्शननी करणी करे छे, परंतु ते आत्मदर्शन विना करे छे, माटे ते सर्व द्रव्यदर्शन जाणवुं ॥गाथा॥ दर्शन दर्शन भटकियो, शिर पटक्युं सो वार ॥ पण जे दर्शन [illegible], ते फरियो अनंत संसार ॥ ॥ १ ॥ ए परमार्थ [illegible] हवे [illegible] कहे छे. तिहां जे

कार्यकारणनी उंलखाण सहित दर्शन करवुं एटले उपरथी श्री वीतरागना दर्शननी आचरणारूप (करणी के०) सेवा, स्तुति, जक्ति, पूजा विधि सहित मन, वचन अने कायायें करी एकचित्तें करे ने, ते सर्व ड्रव्यदर्शन कारणरूप जाणवुं अने जावदर्शन केतां तो जे अंतरंग आत्मदर्शनरूप लेजो धारीने आत्मा निरावरण करवारूप साध्य चोखुं राखीने ड्रव्यदर्शनरूप विधिसहित करणी करवी, ते सर्व निर्ज्जरारूप जाणवी ॥ गाथा ॥ जे दर्शन दर्शन विना, ते दर्शन प्रतिपक्ष ॥ जे दर्शन दर्शन हुवे, ते दर्शन सापेक्ष ॥ १ ॥ ए परमार्थ जाणवो. ए जावनिक्षेपे दर्शन कह्युं.

५२७ ज्ञान उपर चार निक्षेपा लगाडे ने. प्रथम ज्ञान एवुं नाम, ते नामज्ञान जाणवुं. वीजुं पुस्तकमां लख्युं ते स्थापनाज्ञान जाणवुं. त्रीजुं अन्यमतनां सर्वशास्त्र, तेनां तथा जिनमतनां सूत्र, सिद्धांत, टीका, चूर्णि प्रमुखना अंतरंग आत्म उपयोग विना तथा निश्चयव्यवहाररूप कार्य कारणना जाणपणा विना जे अर्थ करवा, ते सर्वे ड्रव्यज्ञान जाणवुं तथा जावज्ञान ते षड्ड्रव्य नव तत्त्वनुं जाणपणुं ड्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव, नय, निक्षेपा, अने प्रमाणें करी जाणपणुं अने अंतरंग निश्चयनय आत्मसत्तानुं सर्द्दहवुं ते जावज्ञान जाणवुं ॥ गाथा ॥ क्षण अर्द्धे जे अघ टले, ते न टले जवनी कोडें ॥ तपस्या करतां अति घणी, पण नावे ज्ञान तणी कोइ जोडें ॥ १ ॥

५२ए चारित्र उपर चार निक्षेपा लगाडे ने, प्रथम चारित्र एवुं नाम, ते नामचारित्र जाणवुं. तथा जे पुस्तकमां चारित्रना विधि प्रथम लखीने स्थापवुं ते स्थापनाचरित्र जाणवुं. तथा जे पांच महाव्रत सूधी रीतें मन, वचन, कायायें करी निवृत्ति प्रवृत्तिरूप आचार व्यवहार प्रमुख सहित सूधी रीतें करणी करवी, ते सर्व ड्रव्यचारित्र जाणवुं ॥ गाथा ॥ विरया सावज्जाउ, कसाय हीणा महावयधरावि ॥ सम्मद्दिठि विहूणा, कयावि मुरकं न पावंति ॥ १ ॥ ए परमार्थ जाणवो. हवे जावचारित्र कहे ने. जे कर्मने चूरे, तेने चारित्र कहीयें. एटले जीव, अजीवरूप स्वपरनी वेंचण करी स्वरूपनुं चिंतववुं. एकाग्रता तन्मयरूप परिणाम होय एटली वार नवा कर्मरूप आश्रवनुं रोकवुं जाणवुं, तेने जावचारित्र कहीयें ॥ गाथा ॥ चय ते अन्न कर्मनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुक्तें जांख्युं, ते वंदो गुण गेह ॥ १ ॥ ए परमार्थ जाणवो. ए जावचारित्र जाणवुं.

५३० तप उपर चार निक्षेपा लगाडे छेः–प्रथम तप एवुं नाम, ते नाम निक्षेपो जाणवो. बीजुं पुस्तकमां तपना विधि प्रमुखनुं लखवुं, ते स्थापनातप जाणवुं. त्रीजुं छठ्ठ अठ्ठमादि प्रमुख पास खमण मासखमण आदिक अनेक प्रकारनुं तप जे आ नव परनवें पुण्यरूप इंद्रियसुखनी वांछारूप परिणामें करवुं, ते सर्वे द्रव्यतप जाणवुं. चोथुं नावतप. ते इह नव परनवें इंद्रिय सुखनी वांछा रहित सर्व प्रकारें इछानो रोध करी एक पोतानो आत्मा कर्मरूप आवरणथकी रहित करवाने अर्थें जे आगल द्रव्यतप कह्युं, ते सर्व करतां थकां निर्जरारूप जाणवुं ॥गाथा॥ इछा रोधे संवरी, परिणति समता जोगें ॥ तप तेहीज आतमा, वर्त्ते निजगुण नोगें ॥ ए नावतपनो परमार्थ जाणवो. ए रीतें चार निक्षेपे करी सिद्धचक्रना यंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५३१ त्रीजे नांगे ए यंत्रनुं स्वरूप, प्रत्यक्षादि प्रमाणें करी उलखावे छे. तिहां प्रथम प्रमाणना नेद छे. एक प्रत्यक्षप्रमाण अने बीजुं परोक्षप्रमाण, तेमां प्रत्यक्ष प्रमाणना वली बे नेद छे. तिहां अरिहंत तथा सिद्ध नगवान् केवल ज्ञानें करी लोकालोकनुं स्वरूप जाणे छे, ते सर्व प्रत्यक्ष प्रमाणें करी जाणे छे. माटे एने सर्वप्रत्यक्ष कहीयें. तथा जे मनःपर्यवज्ञान अने अवधिज्ञान ते बीजुं देशप्रत्यक्ष कहीयें. तिहां कोइक आचार्य, उपाध्याय अने साधु, मनःपर्यव ज्ञानवाला छे, ते मनोवर्गणाने प्रत्यक्षपणे जाणे छे अने कोइक आचार्य, उपाध्याय अने साधु, अवधिज्ञानवाला छे, ते पुद्गलवर्गणाने प्रत्यक्ष पणे जाणे छे. ते देशप्रत्यक्ष जाणवो. एटले अरिहंत अने सिद्ध, ए बे सर्वप्रत्यक्ष प्रमाणवाला तथा आचार्य, उपाध्याय अने साधु, ए त्रण देशप्रत्यक्षवाला छे, ए रीतें नव पदमांहेला पांच पदमां प्रत्यक्ष प्रमाणनुं स्वरूप कह्युं. हवे शेष दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप, ए चार पदमां प्रत्यक्षप्रमाणनुं स्वरूप कहे छे. तिहां प्रथम (दर्शन के०) समकेत जाणवुं. अने ए समकेत विनानुं जे ज्ञान ते नव पूर्व सुधी नण्या छे, तो पण ते अज्ञानरूप छे, माटे समकेत सहित ते बीजुं ज्ञान जाणवुं अने ते ज्ञानना तीक्ष्णता एटले उपयोगनुं एकाग्रपणुं, ते त्रीजुं चारित्र जाणवुं अने चारित्र एटले पोताना स्वरूपमां रमण करवुं, ते पोताना स्वरूपमां रमण करतां सर्व प्रकारें इछानुं रोधपणुं तेहीज तप जाणवुं. एटले पांचमे शब्दनयने मतें जे जीवने दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप प्रगट्यां छे, तेमां कोइ जीवने अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान

होय, माटे तेमां देशप्रत्यक्षपणुं जाणवुं. अने छठे समभिरूढनयें तथा सातमे एवंभूतनयें जे जीवने दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप प्रगट्यां छे, तेमां सर्वप्रत्यक्षपणुं जाणवुं.

हवे परोक्ष प्रमाणनुं स्वरूप कहे छेः–ते परोक्ष प्रमाणना त्रण भेद छे. एक आगमप्रमाण, बीजुं अनुमानप्रमाण, त्रीजुं उपमाप्रमाण. तिहां कोइक आचार्य, उपाध्याय अने साधु, ते आगमें करी सर्व वस्तुनुं प्रमाण करे छे. तथा कोइक आचार्य, उपाध्याय अने साधु उपमायें करी वस्तुनुं प्रमाण करे छे. तथा कोइक आचार्य, उपाध्याय अने साधु, अनुमानें करी वस्तुनुं प्रमाण करे छे. हवे दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप, ए पांचमे शब्दनयें जे जीवने प्रगट्यां छे, तेमां पण आगम, अनुमान अने उपमा प्रमाणे जाणपणुं जाणवुं. ए परोक्ष प्रमाणनुं स्वरूप कह्युं. ए रीतें प्रत्यक्ष अने परोक्ष, ए बे प्रमाणें करी सिद्धचक्रना यंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५४० चोथे भांगे द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव तेणें करी सिद्धयंत्रनुं स्वरूप देखाडे छे. तिहां प्रथमपदें श्री अरिहंतनुं स्वरूप देखाडे छे. तेमां द्रव्यथकी अरिहंत ते चोत्रीश अतिशयें करी विराजमान पांत्रीश वचन वाणीने गुणें करी संपूर्ण आठ महाप्रातिहार्यरूप बार गुणें करी सहित होय, तथा क्षेत्रथकी श्री अरिहंत देव, ते अढी द्वीप प्रमाण क्षेत्रमां जाणवा. तथा कालथकी अरिहंत देव, संततिभावें अनादि अनंत भांगे वर्त्ते छे अने एक अरिहंतआश्रयी सादिसांतभांगो जाणवो. तथा भावथकी अरिहंतदेव, ते जे ज्ञानावरणादि घाति कर्मना क्षयें अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, शुक्लध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या वर्त्ते छे.

५४१ सिद्ध परमात्मा उपर द्रव्यादि चार भांगा कहे छे. द्रव्यथकी सर्वे सिद्ध परमात्मा असंख्यातप्रदेशी जाणवा तथा क्षेत्रथकी सिद्ध परमात्मा, लोकने अंतें पीस्तालीश लाख योजन सिद्धशिला प्रमाणें विराजमान जाणवा अने कालथकी सिद्ध परमात्मा, सर्व सिद्ध आश्रयी अनादि अनंत भांगे वर्त्ते छे अने एक सिद्ध आश्रयी सादिसांत भांगो जाणवो. तथा भावथकी सिद्ध परमात्मा ते सकल कर्मने क्षयें अनंत गुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी लोकने अंतें विराजमान वर्त्ते छे, ते जाणवा.

५४२ आचार्य भगवाननुं स्वरूप कहे छे. द्रव्यथकी आचार्य भगवान्

छत्रीश गुणें करी बिराजमान जाणवा, तथा क्षेत्रथकी आचार्य जगवान् अढी द्वीप प्रमाणें जाणवा तथा कालथकी आचार्य जगवान् संततिजावें अनादि अतंत जांगे वर्त्ते छे अने एक आचार्य आश्रयी सादिसांत जांगो जाणवो. तथा जावथकी आचार्य जगवान् सदाकाल सत्तागतना जासन रूप ज्ञानस्वरूपना उपयोगमां जेनुं चित्त वर्त्ते छे, ते जाणवा.

५४३ उपाध्यायजीनुं स्वरूप कहे छे. द्रव्यथकी उपाध्यायजी पच्चीश गुणें करी बिराजमान कहीयें. तथा क्षेत्रथकी उपाध्यायजी अढी द्वीप व्यापी जाणवा. तथा कालथकी उपाध्यायजी संततिजावें अनादि अनंत जांगे वर्त्ते छे, अने एक उपाध्यायजी आश्रयी सादिसांत जांगो जाणवो. तथा भावथकी उपाध्यायजी जीव अजीवरूप नव तत्त्व षट् द्रव्यनुं जाणपणुं करी सत्तागतना चिंतनरूप स्वजावमां जेनुं चित्त वर्त्ते छे ते जाणवा.

५४४ साधुनुं स्वरूप कहे छे. द्रव्यथकी साधु सत्तावीश गुणें करी बिराजमान कहीयें. तथा क्षेत्रथकी साधु अढी द्वीपव्यापी जाणवा, तथा कालथकी साधु संततिजावें अनादि अनंतजांगे वर्त्ते छे, अने एक साधुआश्रयी सादिसांत जांगो जाणवो. तथा जावथकी साधु जे साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें सत्तागतना धर्मने साधे, ते जावसाधु जाणवा.

५४५ दर्शननुं स्वरूप कहे छे. द्रव्यथकी दर्शन, ते इंद्रियना बलथी वस्तुनुं देखवुं तथा जासनपणुं ते सर्व द्रव्यदर्शन कहीयें. तथा क्षेत्रथकी दर्शन, चौदराज लोक त्रसनाडी प्रमाणें जाणवुं तथा काल थकी दर्शन, क्षायिक जाव आश्रयी जे जीवने प्रगटयुं छे, ते सादि अनंत जांगे जाणवुं, अने क्षायोपशमजाव आश्रयी सादिसांत जांगे वर्त्ते छे. तथा जावथकी दर्शन ते लोकालोकनुं स्वरूप एक समयमां देखवुं, तेने कहीयें.

५४६ ज्ञाननुं स्वरूप कहे छे. द्रव्यथकी ज्ञान जे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान इत्यादि, इंद्रियने अनुयायी जे जाणपणुं ते सर्व द्रव्यज्ञान कहीयें. तथा क्षेत्रथकी ज्ञान, ते चौदराज लोक त्रसनाडी प्रमाणें जाणवुं. तथा कालथकी ज्ञान ते क्षायिक जावआश्रयी जे जीवने ज्ञान प्रगटयुं छे, ते सादि अनंत जांगे जाणवुं अने क्षायोपशमिक जाव आश्रयी सादि सांत जांगो जाणवो. तथा जावथकी ज्ञान ते जे लोकालोकनुं स्वरूप एक समयमां जाणवुं.

५४७ चारित्रनुं स्वरूप कहे छे. द्रव्यथकी चारित्र ते चरणसित्तरी करणसित्तरीने गुणें करी विराजमान तथा क्षेत्रथकी चारित्र ते चौदराज लोक त्रसनाडि प्रमाणें जाणवुं तथा कालथकी चारित्र ते क्षायिक भाव आश्रयी सादि अनंत भांगे वर्त्ते छे अने क्षयोपशम भाव आश्रयी सादिसांतभांगो जाणवो. तथा भावथकी चारित्र ते यथाख्यात चारित्ररूपगुणें करी पोताना स्वभावमां रमण करवुं, ते जाणवुं,

५४८ तपनुं स्वरूप कहे छे, द्रव्यथकी तपना बार भेद कहीयें तथा क्षेत्रथकी तप ते चौदराजलोक त्रसनाडी प्रमाण जाणवुं. तथा कालथकी तप ते क्षायिकभाव आश्रयी सादिअनंतभांगे वर्त्ते छे अने क्षयोपशमभाव आश्रयी सादिसांतभांगे जाणवुं. तथा भावथकी तप ते सर्व प्रकारें इच्छानो रोध करी समता भावमां वर्त्तवुं. ए रीतें द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनी चोभंगीयें करी सिद्धयंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५५७ पांचमे भांगे चौद गुणठाणें करी यंत्रनुं स्वरूप ओलखावे छे. तीहां प्रथमपदें श्रीअरिहंतदेव, तेरमे गुणठाणें जाणवा. बीजे पदें सिद्धपरमात्मा ते गुणठाणा वर्जित जाणवा. त्रीजे पदें आचार्यप्रभु तथा चोथे पदें उपाध्याय अने पांचमे पदें साधुमुनिराज, ते छठे सातमे गुणठाणे अने श्रेणीप्रतिपन्न छद्मस्थमुनि ते अगीयारमे बारमे गुणठाणे जाणवा. हवे छठुं दर्शन पद, सातमुं ज्ञानपद, आठमुं चारित्रपद अने नवमुं तपःपद, ए चारे पद, चोथा गुणठाणाथी मांडी यावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा लगें जाणवां, ए रीतें चौद गुणठाणे करी सिद्धयंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५६६ छठे भांगे गुणें करी सिद्धयंत्रनुं स्वरूप देखाडे छे. तिहां प्रथम पदें श्रीअरिहंतदेव ते बार गुणें करी सहित जाणवा. बीजे पदें सिद्ध परमात्मा ते आठगुणें तथा एकत्रीश गुणें करी सहित जाणवा. त्रीजे पदें आचार्य भगवान्, ते पांच गुणें तथा छत्रीश गुणें करी जाणवा. चोथे पदें उपाध्यायजी ते पच्चीश गुणें करी जाणवा. पांचमे पदें साधुजी ते सत्तावीश गुणें करी जाणवा. छठे पदें दर्शन, ते सडशठ गुणें करी जाणवुं. सातमे पदें ज्ञान, ते पांच गुणें तथा एकावन गुणें करी जाणवुं. आठमे पदें चारित्र, ते सत्तर तथा सित्तेर गुणें करी जाणवुं. नवमे पदें तप, ते बार गुणें तथा पचास गुणें करी जाणवुं. ए रीतें सिद्धयंत्रनुं स्वरूप गुणें करी जाणवुं.

छत्रीश गुणें करी बिराजमान जाणवा, तथा क्षेत्रथकी आचार्य नगवान् अढी द्वीप प्रमाणें जाणवा तथा कालथकी आचार्य नगवान् संततिनावें अनादि अनंत नांगे वर्त्ते छे अने एक आचार्य आश्रयी सादिसांत नांगो जाणवो. तथा नावथकी आचार्य नगवान् सदाकाल सत्तागतना नासन रूप ज्ञानस्वरूपना उपयोगमां जेनुं चित्त वर्त्ते छे, ते जाणवा.

५४३ उपाध्यायजीनुं स्वरूप कहे छे. द्रव्यथकी उपाध्यायजी पच्चीश गुणें करी बिराजमान कहीयें. तथा क्षेत्रथकी उपाध्यायजी अढी द्वीप व्यापी जाणवा. तथा कालथकी उपाध्यायजी संततिनावें अनादि अनंत नांगे वर्त्ते छे, अने एक उपाध्यायजी आश्रयी सादिसांत नांगो जाणवो. तथा भावथकी उपाध्यायजी जीव अजीवरूप नव तत्त्व षट् द्रव्यनुं जाणपणुं करी सत्तागतना चिंतनरूप स्वनावमां जेनुं चित्त वर्त्ते छे ते जाणवा.

५४४ साधुनुं स्वरूप कहे छे. द्रव्यथकी साधु सत्तावीश गुणें करी बिराजमान कहीयें. तथा क्षेत्रथकी साधु अढी द्वीपव्यापी जाणवा, तथा कालथकी साधु संततिनावें अनादि अनंतनांगे वर्त्ते छे, अने एक साधुआश्रयी सादिसांत नांगो जाणवो. तथा नावथकी साधु जे साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें सत्तागतना धर्मने साधे, ते नावसाधु जाणवा.

५४५ दर्शननुं स्वरूप कहे छे. द्रव्यथकी दर्शन, ते इंद्रियना बलथी वस्तुनुं देखवुं तथा नासनपणुं ते सर्व द्रव्यदर्शन कहीयें. तथा क्षेत्रथकी दर्शन, चौदराज लोक त्रसनाडी प्रमाणें जाणवुं तथा काल थकी दर्शन, क्षायिक नाव आश्रयी जे जीवने प्रगट्युं छे, ते सादि अनंत नांगे जाणवुं, अने क्षायोपशमनाव आश्रयी सादिसांत नांगे वर्त्ते छे. तथा नावथकी दर्शन ते लोकालोकनुं स्वरूप एक समयमां देखवुं, तेने कहीयें.

५४६ ज्ञाननुं स्वरूप कहे छे. द्रव्यथकी ज्ञान जे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान इत्यादि, इंद्रियने अनुयायी जे जाणपणुं ते सर्व द्रव्यज्ञान कहीयें. तथा क्षेत्रथकी ज्ञान, ते चौदराज लोक त्रसनाडी प्रमाणें जाणवुं. तथा कालथकी ज्ञान ते क्षायिक नावआश्रयी जे जीवने ज्ञान प्रगट्युं छे, ते सादि अनंत नांगे जाणवुं अने क्षायोपशमिक नाव आश्रयी सादि सांत नांगो जाणवो. तथा नावथकी ज्ञान ते जे लोकालोकनुं स्वरूप एक समयमां जाणवुं.

५४७ चारित्रनुं स्वरूप कहे छे. द्रव्यथकी चारित्र ते चरणसित्तरी करणसित्तरीने गुणें करी विराजमान तथा क्षेत्रथकी चारित्र ते चौदराज लोक त्रसनाडि प्रमाणें जाणवुं तथा कालथकी चारित्र ते क्षायिक भाव आश्रयी सादि अनंत भांगे वर्त्ते छे अने क्षयोपशम भाव आश्रयी सादिसांतभांगो जाणवो. तथा भावथकी चारित्र ते यथाख्यात चारित्ररूपगुणें करी पोताना स्वभावमां रमण करवुं, ते जाणवुं,

५४८ तपनुं स्वरूप कहे छे, द्रव्यथकी तपना बार भेद कहीयें तथा क्षेत्रथकी तप ते चौदराजलोक त्रसनाडी प्रमाण जाणवुं. तथा कालथकी तप ते क्षायिकभाव आश्रयी सादिअनंतभांगे वर्त्ते छे अने क्षयोपशमभाव आश्रयी सादिसांतभांगे जाणवुं. तथा भावथकी तप ते सर्व प्रकारें इच्छानो रोध करी समता भावमां वर्त्तवुं. ए रीतें द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनी चोभंगीयें करी सिद्धयंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५५७ पांचमे भांगे चौद गुणठाणें करी यंत्रनुं स्वरूप ओलखावे छे. तीहां प्रथमपदें श्रीअरिहंतदेव, तेरमे गुणठाणें जाणवा. वीजे पदें सिद्धपरमात्मा ते गुणठाणा वर्जित जाणवा. त्रीजे पदें आचार्यप्रभु तथा चोथे पदें उपाध्याय अने पांचमे पदें साधुमुनिराज, ते छठे सातमे गुणठाणे अने श्रेणीप्रतिपन्न छद्मस्थमुनि ते अगीयारमे बारमे गुणठाणे जाणवा. हवे छठुं दर्शन पद, सातमुं ज्ञानपद, आठमुं चारित्रपद अने नवमुं तपःपद, ए चारे पद, चोथा गुणठाणाथी मांडी यावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा लगें जाणवां, ए रीतें चौद गुणठाणे करी सिद्धयंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५६६ छठे भांगे गुणें करी सिद्धयंत्रनुं स्वरूप देखाडे छे. तिहां प्रथम पदें श्रीअरिहंतदेव ते बार गुणें करी सहित जाणवा. वीजे पदें सिद्ध परमात्मा ते आठगुणें तथा एकत्रीश गुणें करी सहित जाणवा. त्रीजे पदें आचार्य भगवान्, ते पांच गुणें तथा छत्रीश गुणें करी जाणवा. चोथे पदें उपाध्यायजी ते पच्चीश गुणें करी जाणवा. पांचमे पदें साधुजी ते सत्तावीश गुणें करी जाणवा. छठे पदें दर्शन, ते सडशठ गुणें करी जाणवुं. सातमे पदें ज्ञान, ते पांच गुणें तथा एकावन गुणें करी जाणवुं. आठमे पदें चारित्र, ते सत्तर तथा सित्तेर गुणें करी जाणवुं. नवमे पदें तप, ते बार गुणें तथा पचास गुणें करी जाणवुं. ए रीतें सिद्धयंत्रनुं स्वरूप गुणें करी जाणवुं.

५७५ सातमे भांगे यंत्रनुं स्वरूप नव तत्त्वें करी उंलखावे छे. प्रथमपदें श्रीअरिहंत देव, तेरमे गुणठाणे वर्तता तेमां नवे तत्त्व पामीयें. तथा बीजे पदें श्री सिद्धपरमात्मा, तेमां आगल कह्यां ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें. तथा त्रीजे पदें श्रीआचार्यजी, चोथे पदें श्रीउपाध्यायजी अने पांचमे पदें श्री साधु, ए त्रण पदमां पूर्वें समकेतमां कह्यां, ते रीतें आठ आठ तत्त्व पामीयें, तथा दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप, ए चार गुणमां शब्दनयने मतें चोथा गुणठाणाथी मांमीने छठ्ठा सातमा गुणठाणां जे जीवने प्रगठ्यां छे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें अने समभिरूढनयने मतें आठमा गुणठाणाथी मांमी यावत् अगीयारमा बारमा गुणठाणा पर्यंत श्रेणी भावें जे जीव वर्त्ते छे, तेने ए दर्शनादिक चार गुण प्रगठ्या छे, तेमां आठ तत्त्व पामीयें अने तेरमे गुणठाणे केवली भगवानने चार गुण प्रगठ्या छे, तेमां नवे तत्त्व पामीयें. अने गुणठाणां वर्जित लोकने अंतें सिद्धपरमात्मा वर्त्ते छे, तेने ए चार गुण प्रगठ्या छे, तेमां त्रण तत्त्व पामीयें. ए रीतें सिद्धयंत्रनुं स्वरूप, नव तत्त्वें करी जाणवुं.

५७७ आठमे भांगे गुणिगुणें करी सिद्धयंत्रनुं स्वरूप उंलखावे छे. तिहां प्रथम अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु, ए पांचे गुणी जाणवा अने दर्शन, ज्ञान चारित्र अने तप, ए चारगुण जाणवा, एटले ए पूर्वोक्त पांच गुणीमां ए दर्शनादिक चार गुण रह्या छे, माटे ए गुण जाणवा. अने ए अरिहंतादिक पांचे जे छे, ते दर्शनादिक चार गुणें करी सहित छे, माटे गुणी जाणवा. ए रीतें सिद्धयंत्रनुं स्वरूप गुणी गुणें करी उंलखाव्युं.

५७८ नवमे भांगे सिद्धयंत्रनुं स्वरूप पांच वर्णें करी देखाडे छे. प्रथम चंद्रप्रभ अने सुविधिनाथ, ए बे तीर्थंकर धोले वर्णें छे, माटे प्रथमपदें अरिहंतनुं ध्यान धोले वर्णें करवुं तथा श्री पद्मप्रभ अने वासुपूज्य, ए बे रक्ते वर्णें छे, माटे बीजे पदें श्री सिद्धनुं ध्यान रक्तवर्णें करवुं तथा शोल तीर्थंकर पीतवर्णें छे, माटे त्रीजे पदें श्री आचार्यजीनुं ध्यान पीले वर्णें करवुं तथा श्री मल्लिनाथ अने श्री पार्श्वनाथ, ए बे प्रभु लीले वर्णें छे, माटे चोथे पदें श्री उपाध्यायजीनुं ध्यान लीले वर्णें करवुं, तथा श्री मुनिसुव्रत अने नेमनाथ, ए बे तीर्थंकर श्याम वर्णें छे, माटे पांचमे पदें साधुजीनो ध्यान श्यामवर्णें करवुं, तथा ए श्री अरिहंतादिक पांचने दर्शन, ज्ञान

रित्र अने तप, ए चार गुण, कर्मरूप मेलने अभावें करी निर्मल प्रगट्या छे, माटे श्वेतवर्णें ए चारेनुं ध्यान करवुं. ए पांच वर्णें यंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५७५ दशमे भांगे देव, गुरु, अने धर्मे करी यंत्रनुं स्वरूप उंलखावे छेः—तिहां ए नव पदमां श्रीअरिहंत अने सिद्ध, ए बे देव जाणवा. तथा आचार्य, उपाध्याय अने साधु, ए त्रणे गुरु जाणवा. तथा दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप ए चारे धर्म जाणवा. ए रीतें देव, गुरु, धर्मे करी यंत्रनुं स्वरूप उंलखाव्युं. ए दश भांगे करी जे जीव, श्रीसिद्धचक्रना यंत्रनुं स्वरूप अंतरंग प्रतीति सहित उंलखाणे ध्यावे, ते परमानंद पद पामे.

५७६ श्रीअनुयोगद्वार सूत्रमध्यें नयनुं स्वरूप कह्युं छे, ते इहां शिष्यने उंलखाण करवा सारु विस्तारपणे विशेष व्याख्यायें लखीयें छैयें ॥ गाथा ॥ नय भंग पमाणेहिं, जो अप्पा सायवाय भावेणं ॥ जाणेइमो सरूवं, सम्म द्दिठ्ठि सो नेउ ॥ १ ॥ अर्थः—(नयभंग के०) मूलनय बे अने उत्तरनय सात, तथा उपनय अठावीश अने तेना भांगा सातशें थाय. तथा (पमाणेहिं के०) मूल प्रमाण बे अने उत्तर प्रमाण पांच, तेना पण वली अनेक भेद थाय. अने (अप्पा के०) आत्मा तेने (सायवाय के०) स्याद्वादादि आठ पक्षें उंलखीने भली रीतिथी पोताना स्वरूपने (भावेण के०) भाववुं. (जाणेइमोसरूवं के०) ए रीतें जेणें आत्मस्वरूपने उंलखीने प्रतीति करी छे,(सम्मद्दिठ्ठिएसोनेउ के०) ते जीव निश्चे समकेतनो धणी जाणवो.

५७७ विशेषार्थ महे छे. तिहां एक निश्चय अने बीजो व्यवहार, ए मूल बे नय जाणवा. अने एक नैगम,बीजो संग्रह, त्रीजो व्यवहार, चोथो ऋजुसूत्र,पांचमो शब्द,छठो समभिरूढ,सातमो एवंभूत, ए सात उत्तर भेद जाणवा. सातमांथी पहेला छ नय व्यवहारमां जाणवा अने सातमो एक एवंभूत नय ते निश्चयमां जाणवो. तेनो परमार्थ आवी रीतें छे, छ नयें जे कार्य ते अपवादें कारणरूप जाणवुं अने सातमे एवंभूतनयें जे कार्य, ते उत्कृष्टे उत्सर्गे निश्चयकार्यरूप छे, माटे छ नय ते व्यवहारमां गण्या अने सातमो एक एवंभूतनय ते कार्यरूप छे, तेमाटे निश्चयमां गण्यो छे.

५७८ शिष्यः—सिद्धमां नय छे, किंवा नथी ?

गुरुः—जे कारणरूप सात नय छे,तेतो व्यवहाररूप छे;ते माटे ते सिद्धमां

नथी, केम के सिद्धने तो कार्य संपूर्ण नीपन्युं छे, माटे तिहां कारणनो खप नथी,ते वास्ते कारणरूप सात नय ते सिद्धमां न पामीयें अने जे जे नि कार्य नीपन्युं ते कार्य सर्वे सिद्धमां वर्त्ते छे, माटे कार्यरूपें जोतां तो सिद्धमां साते नय पामीयें. एनो विस्तारें खुलासो आगल बतावशुं. श्री

५८९ शिष्यः– ए सात नयमां द्रव्यनय केटला अने भावनय केटलायें,

गुरुः–श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणजी तो एक नैगम, बीजो संग्रह त्रीजो व्यवहार अने चोथो ऋजुसूत्र, ए चार नयमां नाम, स्थापना तेमां द्रव्य, ए त्रण निक्षेपा ते द्रव्यास्तिकपणे माने छे, तथा शब्दादिक त्रण नय ते भावनिक्षेपे पर्यायास्तिकपणे माने छे,अने श्रीसिद्धसेनदिवाकरजी तो प्रथमना त्रण नयमां त्रण निक्षेपा ते द्रव्यास्तिकपणे माने छे अने ऋजुसूत्रादिक चार नय ते एकज भावनिक्षेपे पर्यायास्तिकपणे माने छे, न्यायरीतें आशयरूपें जोतां बन्ने आचार्यनुं वचन प्रमाण छे, ते देखाडे छे.

५९० वस्तुनी त्रण अवस्था छे. एक प्रवृत्ति, बीजी संकल्प अने त्रीजी परिणति,ए त्रण भेद छे,तेमां प्रवृत्ति ते योग व्यापाररूप क्रिया अने संकल्प ते चेतनाना योग सहित मननो विकल्प माटे श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणजीयें प्रवृत्तिधर्म तथा संकल्पधर्म,ए वेने औदयिक मिश्रितपणी माटे द्रव्यनिक्षेपो कहेलो छे अने एक परिणतिधर्म तेने भावनिक्षेप कहे छे,अने श्रीसिद्धसेनदिवाकरजी तो विकल्प ते जीवनी चेतना, माटे तेने भावनयमां गवेषे छे,अने प्रवृत्तिसीम ते व्यवहारनय छे तथा संकल्प ते ऋजुसूत्र छे अने परिणति एक वचनपर्यायरूप ते शब्दनय अने संकल्प वचनपर्यायरूप ते समभिरूढनय तथा वचनपर्याय अर्थपर्यायरूप संपूर्ण,ते एवंभूतनय. ए त्रण नय शुद्ध छे अने भावधर्ममध्ये मुख्यभावने उत्तरोत्तर सूक्ष्मताना ग्राहक छे. ए रीतें संक्षेप अधिकारें नयनुं स्वरूप कह्युं.

५९१ हवे अठावीश उपनयनुं स्वरूप बतावे छे. तिहां प्रथम नैगमनयना त्रण भेद कहे छे. एक वर्त्तमानें अतीतारोपण नैगम,बीजो वर्त्तमानें अनागतारोपण नैगम, त्रीजो वर्त्तमाननैगम. हवे संग्रहनयना बे भेद कहे छे. एक सामान्यसंग्रह अने बीजो विशेषसंग्रह, तथा व्यवहारनयना बे भेद, एक शुद्धव्यवहार, बीजो अशुद्धव्यवहार, तथा ऋजुसूत्रनयना बे भेद, एक सूक्ष्मऋजुसूत्र, बीजो बादर ऋजुसूत्र, तथा शब्द समभिरूढ

ने एवंभूत, ए त्रणे नयनो एकेक भेद छे. ए रीतें ए सात नयना बार भेद
छे, ११. हवे द्रव्यास्तिक अने पर्यायास्तिक ए बे नयना भेद कहे छे. तिहां ए
त्यद्रव्यास्तिक, बीजो एकद्रव्यास्तिक, त्रीजो सत्द्रव्यास्तिक, चोथो व
द्रव्यास्तिक, पांचमो अशुद्धद्रव्यास्तिक, छठ्ठो अन्वयद्रव्यास्तिक, सा
परमद्रव्यास्तिक, आठमो शुद्धद्रव्यास्तिक, नवमो सत्ताद्रव्यास्तिक अ
मो परमभावग्राहकद्रव्यास्तिक. ए रीतें द्रव्यास्तिकनयना दश भेद छे
क बार भेद साथें मेलवतां बावीश भेद थया. हवे जे पर्यायने ग्रहे,
ास्तिक नय, तेना छ भेद कहे छे. एक द्रव्यपर्याय, बीजो द्रव्य
र्याय, त्रीजो गुणपर्याय, चोथो गुणव्यंजनपर्याय, पांचमो स्वभाव
ठ्ठो विभावपर्याय, ए छ भेदने पूर्वोक्त बावीश साथें मेलवतां अठा
नय जाणवा. अने ए सात नय मांहेला एकेक नयना शो शो
, तेथी सातसो भांगा पण जाणवा. ए सामान्य कथन कह्युं.
२ हवे शिष्यने समजाववा विशेष अर्थ जूदा जूदा भेदें करी देखाडे
हां प्रथम मूलनयथी मंडाण करे छे. ते मूल तो एकनिश्चय अने बी
यवहार, ए बे नय छे. तेणें करी सर्व वस्तु पदार्थनुं जाणपणुं करवुं.
के श्रीउत्तराध्ययनमां क्षायिक समकेती जीवने दश जातिनी रुचिनुं ज्ञान
हे, तिहां प्रथम निसर्ग रुचिमां कह्यो छे, जे निश्चय अने व्यवहारनयें
ो तथा नैगमादि सात नयें करी तथा चार निक्षेपे करी जीव अजीवरूप
व तत्त्व, षड्द्रव्यनुं स्वरूप जाणे, तेने निश्चय समकेती जाणवा माटे
थम निश्चय अने व्यवहार, ए बे मूल नयनुं स्वरूप कहे छे.

तिहां प्रथम व्यवहारनयना बे भेद छे. एक अशुद्ध व्यवहार अने बीजो शुद्ध व्यवहार, तेमां अशुद्ध व्यवहारना वली पांच भेद छे. एक अशुद्धव्यवहार बीजो उपचरितव्यवहार, त्रीजो अशुभव्यवहार, चोथो शुभव्यवहार, पांचमो अनुपचरित व्यवहार अने छठ्ठो शुद्धव्यवहार, ए छ भेद छे, ते विस्तारें करी प्रत्येकें उलखावे छे.

५९५प्रथम अशुद्ध व्यवहार, ते जे जीवने सत्तायें राग, द्वेष, अज्ञानरूप अशुद्धता खाणि संपन्न अनादिकालनी लागी छे, ते अशुद्धव्यवहारनयें जाणवो. अने ए अशुद्धतानी चिकाशें कर्मरूप दलीयां जीवनें प्रकृतिरूप सत्तापणे रह्यां छे, ते संग्रहनयने मतें छे, तथापि व्यवहाररूप जाणवां.

अने नैगमनयने मतें जीवें अतीत कालें दलीयां ग्रह्यां हतां अने अनागतकालें ज्ञोगवशे तथा वर्त्तमानकालें सत्तायें रह्यां वर्त्ते बे, तथा ते दलीयां स्थितिपाकें व्यवहारनयें उदयरूपन्नावें अज्ञानपणे अनुपयोगें एकेंद्रिय विकलेंद्रियादि प्रमुख संमूर्छिम जीव न्नोगवे बे, ते उदयन्नावरूप व्यवहारनय जाणवो. एटले ए अशुद्धव्यवहारनयमां एक नैगम, बीजो संग्रह अने त्रीजो व्यवहार, ए त्रण नय जाणवा.

५एए बीजो उपचरित व्यवहारनय कहे बेः—कोइ जीव घर, हाट, वखार, न्नाई, पिता, स्त्री, कुटुंब, परिवार, ग्राम, गरास, नगर, दास, दासी, वाणोतर, शीपाइ, सुन्नट आदि अनेक प्रकारनी वस्तु ते पोताथकी प्रत्यक्षपणे जूदी बे, तेनो जीव स्वामीरूप कर्त्ता थइ, रुजुसूत्रनयना उपयोग सहित वर्त्ते, ते उपचरितव्यवहारनय कर्त्ता जाणवो ॥ १ ॥ अने तेनी चिकाशें करी अशुन्नकर्मरूप दलीयां जीव ग्रहण करे बे, ते दलीयां ग्रहवारूप व्यवहारनय जाणवो ॥२॥ अने कोइ जीव, देहरा, उपासरा, ज्ञानोपकरण, पाटी, पोथी, नोकरवाली प्रमुख तथा देव, गुरु, साधर्मी प्रमुख चारित्रनां उपकरण ते सर्व पोताथी प्रत्यक्षपणे जूदां बे, तेहनो जीव कर्त्तारूप थइ रुजुसूत्रना उपयोग सहित वर्त्ते बे, ते पण उपचरित व्यवहार नय जाणवो ॥३॥ अने तेनी चिकाशें शुन्नकर्मरूप दलीयां ग्रहण करे बे, ते ग्रहवारूप व्यवहारनय जाणवो ॥ ४ ॥ एटले उपचरित व्यवहार नयें करी शुन्नाशुन्नरूप बे प्रकारें दलीयांनुं ग्रहण करी ते दलीयां जीवें प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां, ते संग्रहनयने मतें बे, पण व्यवहाररूप जाणवां ॥ ५ ॥ तथा नैगमनयने मतें अतीतकालें दलीयां ग्रह्यां हतां अने आवते कालें न्नोगवशे तथा वर्त्तमानकालें प्रकृतिरूप सत्तापणे रह्यां बे, ते नैगमनयें जाणवां ॥६॥ अने ते दलीयां व्यवहारनयने मतें उदयरूपन्नावें समकेती जीव, उदासपणे न्यारा रही न्नोगवे बे, ते न्नोगववारूप कोरो व्यवहारनय जाणवो ॥ ७ ॥ अने मिथ्यात्वी जीव, रुजुसूत्रना उपयोग सहित, मांहे मलीने न्नोगवे बे, ते वाधकरूप व्यवहारनय जाणवो ॥ ८ ॥ एटले उपचरित व्यवहारनयमां नैगम, संग्रह, व्यवहार अने रुजुसूत्र, ए चार नय जाणवा.

६०३ त्रीजो अशुन्नव्यवहार नय कहे बे. कोइ जीव, क्रोध, मान, माया, लोन्न, हास्य, विनोद, निंदा, ईर्ष्या, चाडी, हिंसा, मृषा, अदत्त, मैथुन, इ

त्यादिक अनेक प्रकारें विवाह, वाजिम, व्यापार वाणिज्यरूप करणी, रुजु सूत्रना उपयोग सहित करे, ते अशुभव्यवहारनय जाणवो ॥ १ ॥ अने तेनी चिकाशें अशुभकर्मरूप दलीयानुं ग्रहण करवुं, ते ग्रहवारूप व्यवहार नय जाणवो ॥ २ ॥ एटले ए अशुभव्यवहारनयें करी जीव, कर्मरूप दली यांने ग्रहण करीने प्रकृतिरूप सत्तापणे बांधे, ते संग्रहनयने मतें व्यवहार रूप जाणवां ॥३॥ अने नैगमनयने मतें जे अतीतकालें दलीयां ग्रह्यां हतां अने अनागतकालें भोगवशे, तथा वर्त्तमानकालें सत्तायें रह्यां छे, ते नैगम नयें जाणवां ॥ ४ ॥ तथा ते दलीयां स्थितिपाकें व्यवहारनयने मतें उद यरूपभावें समकेती जीव उदासपणे न्यारा रही भोगवे छे, ते भोगववा रूप कोरो व्यवहारनय जाणवो ॥५॥ तथा मिथ्यात्वी जीव, तो ते दली यांने रुजुना उपयोग सहित, मांहे मलीने भोगवे छे, ते बाधकरूप व्य वहारनय जाणवो ॥६॥ एटले अशुभव्यवहारनयमां नैगम, संग्रह, व्यव हार अने रुजुसूत्र, ए चार नय जाणवा.

६०७ चोथो शुभव्यवहारनय कहे छेः—कोइ जीव, दान, शीयल, तप, भाव, करुणा, दया, यत्न, सेवा, भक्ति, पूजा, प्रभावना, इत्यादि अनेक प्रकारें रुजुना उपयोग सहित करणी करे छे, ते शुभव्यवहारनय जाणवो ॥ १ ॥ तथा तेनी चिकाशें शुभकर्मरूप दलीयानुं ग्रहण करवुं, ते ग्रहवा रूप व्यवहारनय जाणवो ॥२॥ एटले ए शुभव्यवहारनयें करी जीवें कर्म रूप दलीयाने ग्रहण करी प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां, ते संग्रहनयने मतें छे, पण व्यवहाररूप जाणवां ॥३॥ तथा नैगमनयने मतें अतीतकालें द लीयानुं ग्रहणकरुं हतुं अने आवते कालें भोगवशे तथा वर्त्तमानकालें सत्तायें रह्यां छे, ते नैगमनयने मतें व्यवहाररूप जाणवां ॥ ४ ॥ तथा ते दलीयां स्थितिपाकें उदयरूपभावे समकेती जीव, उदासपणे न्यारा रही भोगवे छे, ते भोगववारूप कोरो व्यवहारनय जाणवो ॥५॥ अने मिथ्या त्वीजीव, रुजुसूत्रना उपयोग सहित मांहे मलीने भोगवे छे, ते बाधक रूप व्यवहारनय जाणवो ॥ ६ ॥ एटले शुभव्यवहारनयमां नैगम, संग्र ह, व्यवहार अने रुजुसूत्र, ए चार नय जाणवा.

६११ पांचमा अनुपचरित व्यवहारनयनुं स्वरूप कहे छे. कोइ जीव, रुजु सूत्रना उपयोगें अजाणपणे शरीरादि द्रव्यकर्मरूप परवस्तु ते पो

ताथी प्रत्यक्षपणे जूदी छे, तेने जीव, अज्ञानने वशें करी पोतानी करी जाणे छे तेने पोताना शरीरने विषे जीवबुद्धि छे, ते अनुपचरित व्यवहारनयें कर्त्ता जाणवो ॥ १ ॥ तथा ते अशुद्धयोगें करी व्यवहारनयने मतें कर्मरूप दलीयानुं ग्रहण करी बांधवुं, ते ग्रहवारूप व्यवहारनय जाणवो ॥ २ ॥ अने ते दलियां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां, ते संग्रहनयने मतें कर्मसत्ता रूप छे, पण व्यवहारनयें जाणवां ॥३॥ तथा नैगमनयने मतें अतीतकालें दलीयां ग्रह्यां हतां अने अनागतकालें जोगवशे तथा वर्त्तमानकालें सत्तायें बंधरूप रह्यां छे, ते नैगमनयने मतें व्यवहाररूप जाणवां ॥ ४ ॥ तथा ते दलीयां स्थितिपाकें व्यवहारनयनें मतें समकेती जीव, उदयरूपजावें उदासपणे न्यारा रही जोगवे छे, ते जोगववारूप कोरो व्यवहारनय जाणवो॥५॥ अने मिथ्यात्वी जीव, ऋजुसूत्रना उपयोग सहित मांहे मलीने जोगवे छे, ते बाधकरूप व्यवहारनय जाणवो ॥ ६ ॥ एटले अनुपचरित व्यवहारनयमां नैगम, संग्रह, व्यवहार अने ऋजुसूत्र, ए चार नय जाणवा. ए रीतें अशुद्धव्यवहारनयनो मूलजेद एक, तेना उत्तरजेद पांच कह्या. ए अशुद्ध व्यवहारनयनो विचार, सर्व प्रथमना नैगमादिक चार नयमां जाणवो.

६१६ हवे शुद्धव्यवहारनयनुं स्वरूप कहे छे. शब्दनयने मतें समकेत जावथी मांमीने यावत् छठा, सातमा गुणठाणा पर्यंत साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, ए सर्व शुद्धव्यवहारनयें वर्त्ते छे. तेमां पांच नय पामीयें, ते आवी रीतेंः—प्रथम संग्रहनयने मतें सिद्ध समान पोताना आत्मानी सत्ता असंख्यात प्रदेशरूप छे. बीजे नैगमनयने मतें आठ रुचक प्रदेश सदा कालसिद्ध समान निर्मला छे. त्रीजे व्यवहारनयने मतें उपरथकी गुणठाणां माफक पोतानी करणी करे छे, चोथे ऋजुसूत्रनयने मतें संसार उदासी वैराग्यरूप परिणाम वर्त्ते छे, पांचमे शब्दनयने मतें जीव अजीवरूप स्वपरनी वेंचण करी जेवी हती, तेवीज शुद्धनिर्मल पोताना आत्मानी प्रतीति करी छे. ए रीतें समकेत जावथी मांमीने यावत् छठा सातमा गुणठाणा पर्यंत उपरथकी व्यवहारदृष्टियें जोतां एक शब्दनय कहीयें अने अंतरंग निश्चय दृष्टियें पांच नय जाणवा. ए शब्दनयने मतें शुद्धव्यवहारनुं स्वरूप कह्युं.

६२२ समजिरूढ नयने मतें शुद्ध व्यवहार नयनुं स्वरूप उलखावे छे. ए समजिरूढ नयने मतें आठमा नवमा गुणठाणाथी मांमीनें यावत् तेर

मा चौदमा गुणठाणा पर्यंत केवली भगवान् ते शुद्ध व्यवहारनयें वर्त्ते छे, तेमां छ नय पामीयें. ते आवी रीतेंः— संग्रहनयने मतें सिद्ध समान पोताना आत्मानी सत्ता आगल ओलखी हती, तेवी शुद्ध निर्मल पणे प्रगट करी छे ॥ १ ॥ अने नैगम नयने मतें आठ रुचकप्रदेश आगल निरावरण हता, ते तेवांने तेवांज वर्त्ते छे ॥ २ ॥ तथा व्यवहार नयनें मतें अंतरकरणीरूप स्वरूपमां रमवारूप क्रिया करे छे अने बाह्यकरणीरूप क्रिया पण साचवे छे ॥ ३ ॥ तथा ऋजुसूत्र नयने मतें शुद्ध उपयोगमां वर्त्ते छे ॥ ४ ॥ शब्दनयने मतें क्षायिक सम्यक्त्वरूप गुण प्रगट्यो छे, ते पण पोतानी पासें छे ॥ ५ ॥ तथा समभिरूढ नयने मतें शुक्लध्यानरूप श्रेणी भावना बीजा त्रीजा पाया अंतरालें रह्या वर्त्ते छे, ॥ ६ ॥ ए रीतें श्रेणीभाव पर्यंत केवली भगवानना स्वरूपमां उपरथकी व्यवहारदृष्टियें जोतां तो एक समभिरूढनय कहीयें अने अंतरंग निश्चय दृष्टियें जोतां तो छ नय जाणवा. ए रीतें शब्दसमभिरूढनयने मतें शुद्ध व्यवहारनयनुं स्वरूप जाणवुं.

६९ए शुद्ध निश्चय व्यवहारनुं स्वरूप कहे छे. एटले शुद्ध निश्चय नय कार्य तो जे एवंभूत नयने मतें अष्ट कर्मने क्षयें अष्ट गुण संपन्न लोकने अंतें विराजमान सादि अनंतमे भांगे वर्त्तता एवा सिद्ध परमात्मा ते शुद्ध निश्चय नय जाणवा. तेमां साते नय पामीयें. तिहां नैगमनयने मतें सिद्ध परमात्माने आठ रुचक प्रदेश, अतीतकालें निरावरण हता, तथा आवते कालें निरावरण वर्त्तशे अने वर्त्तमान कालें पण निरावरण वर्त्ते छे. बीजे संग्रह नयने मतें पोताना आत्मानी सत्ता अंतरंग शुद्ध निर्मलपणे जेवी हती, तेवीज निरावरणपणे प्रगट करी छे. त्रीजे व्यवहार नयने मतें पलटण स्वभावें समय समय नवनवा ज्ञेयनी वर्त्तनारूप पर्यायनो उत्पाद व्यय थइ रह्यो छे. चोथे ऋजुसूत्र नयने मतें सिद्ध परमात्मा पोताना पारिणामिकभावें रह्या सामान्य विशेषरूप उपयोगमां सदाकाल वर्त्ते छे, पांचमे शब्दनयने मतें आगल जीव अजीवनी वेंचण करी क्षायिक समकेतरूप गुण प्रगट्यो छे, ते पण पोता पासें छे, छठ्ठे समभिरूढ नयने मतें अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी छे, ते पण पोतानी पासें छे. सातमे एवंभूत नयने मतें सिद्ध परमात्मा अष्ट कर्मने क्षयें अष्ट गुण प्र

गट करी, लोकने अंतें बिराजमान वर्त्ते छे. ए रीतें सिद्धना स्वरूपमां अंतरंग दृष्टियें जोतां कार्यरूप साते नय पामीयें अने उपरथकी व्यवहार दृष्टियें जोतां तो एक एवंभूतनय जाणवो. ए रीतें निश्चय व्यवहारनुं स्वरूप सामान्य प्रकारें करी जाणवुं.

हवे द्रव्यभावनुं स्वरूप साते नयें उलखवा रूप लखीयें छैयें.

६४० तिहां प्रथम द्रव्यनुं स्वरूप उलखवा रूप छे. नैगम अने संग्रहनयें करी सर्व जीवद्रव्य, सत्तायें एकरूप छे, तेने प्रथम सत्तारूप द्रव्य कहीयें. हवे बीजुं कर्मरूप द्रव्य उलखावे छे. जे जीवने प्रकृतिरूप सत्तायें शुभाशुभ कर्मनां दलीयां बांध्यां छे, तेने पण नैगम अने संग्रह नयने मतें करी कर्मसत्तारूप द्रव्य कहीयें. त्रीजुं व्यवहारनयने मतें ते दलीयांनो उदय थयो, ते उदयभावरूप द्रव्य कहीयें ते भोगववा रूप द्रव्य जाणवुं. चोथुं व्यवहारनयने मतें अनुपयोगें संमूर्छिम प्रायः शुभाशुभ रूप करणी करवी, ते चोथुं करणीरूप द्रव्य जाणवुं. पांचमुं रुजुसूत्रनयने मतें उपयोग सहित शुभाशुभ परिणामें करी कर्मनां दलीयांनुं ग्रहण करवुं, ते पांचमुं कर्म ग्रहवारूप द्रव्य जाणवुं. छठुं वली पण रुजुसूत्रनयने मतें शुभाशुभ परिणामें करी उपरथकी जे करणी करवी, ते करणीरूप द्रव्य जाणवुं. ते पण बाधकरूप द्रव्य जाणवुं. सातमुं शब्दनयने मतें रुजुसूत्रना उपयोग सहित चोथा गुणठाणाथी मांडी यावत् छठा सातमा गुणठाणा पर्यंत उपरथकी करणी करवी, ते साधकरूप द्रव्य जाणवुं. आठमुं ते जीवने अंतर करणीरूप उपयोग वर्त्ते छे, ते उपरला नयनी अपेक्षायें तेने साधकरूप द्रव्य कहीयें. नवमुं वली समभिरूढ नयने मतें रुजुसूत्रना उपयोग सहित जे जीव, श्रेणीभावें केवली प्रमुख वर्त्ते छे, ते उपर थकी करणी करे छे, ते पण साधकरूप द्रव्य जाणवुं अने दशमुं अंतरंग श्रेणीरूप करणी करे छे, ते पण उपरला नयनी अपेक्षायें जोतां साधकरूप द्रव्य कहीयें. अगीयारमुं जे जीव, एवंभूतनयने मतें लोकने अंतें वर्त्ते छे, एवा सिद्ध परमात्माने पर्यायनो उत्पाद, व्यय, समय समय थइ रह्यो छे, ते अंतरकरणीरूप द्रव्य जाणवुं. ए सात नयें करी द्रव्यनुं स्वरूप कह्युं.

६४५ हवे सात नयें करी भावनुं स्वरूप कहे छेः—प्रथम नैगम अने संग्रह नयने मतें जे जीवने सत्तायें कर्मनां दलीयां बांध्यां छे, तेने उदय थयो, ते

कर्मउदयरूप भाव जाणवो. बीजो ऋजुसूत्रनयने मतें शुभाशुभ परिणामें करी जे कर्मरूप दलीयांनु ग्रहण करवुं, ते कर्मग्रहवारूप भाव जाणवो. त्रीजो शब्दनयने मतें ऋजुसूत्रना उपयोग सहित स्वपरनी वेंचण करी जीव अजीवने जूदा जूदा वेंचवा, ते साधकरूप भाव जाणवो. चोथो समभिरूढ नयने मतें श्रेणीभावें जे जीव वर्त्ते छे, ते पण हेठला नयनी अपेक्षायें साधकरूप भाव जाणवो. पांचमो एवंभूतनयने मतें जे जीवने अव्याबाधसुख प्रगटथुं, ते स्वरूपभोगीरूप भाव जाणवो.

हवे निश्चय अने व्यवहार ए बे मूलनय छे, तेणें करी जाणवारूप नवतत्त्व षट् द्रव्यनुं स्वरूप लखीयें छैयें.

६५१ प्रथम जीवादि छ तत्त्वनुं स्वरूप कहे छेः—निश्चयनयें करी सर्व जीव सत्तायें एकरूप सरखा सिद्ध समान शाश्वता छे अने व्यवहारयें करी जीवनी अनेक भांती देवता, नारकी, तिर्यंच, मनुष्यरूप जाणवी. तथा कोइ जीव, शुभपरिणामें करी पुण्यरूप आश्रवनां दलीयां बांधे, तेने अजीव कहीयें. ते निश्चयनयें करी छांमवा योग्य छे अने व्यवहार नयें करी आदरवा योग्य छे. वली कोइ जीव अशुभ परिणामें करी पापरूप आश्रवनां दलीयां बांधे, तेने अजीव कहीयें, ते निश्चयनयें करी छांमवा योग्य छे, अने व्यवहारनयें करी पण छांमवा योग्य कहीयें. एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव अने बंध, ए छ तत्त्वमां निश्चय व्यवहार नय कहेवाणा.

६५२ हवे सातमा संवर तत्त्वनुं स्वरूप कहे छेः—व्यवहारनयें करी संवरनुं स्वरूप ते निवृति प्रवृत्तिरूप चारित्र जाणवुं अने निश्चयनयें करी तो पोताना स्वरूपमां रमण करवुं, ते संवर जाणवुं.

६५३ हवे आठमा निर्जरातत्त्वनुं स्वरूप कहे छेः—व्यवहारनयें करी निर्जराना बार भेद जाणवा अने निश्चयनयें करी निर्जरानुं स्वरूप तो, सर्व प्रकारें इछानो रोध करी समताभावें प्रवर्त्तवुं ते जाणवुं.

६५४ हवे मोक्षनिःकर्मावस्थानुं स्वरूप कहे छे. व्यवहारनयें करी मोक्ष, तो तेरमे, चोदमे गुणठाणें केवलीने कहीयें अने निश्चयनयें मोक्षपद ते सकल कर्म क्षय करी लोकने अंतें विराजमान एवा सिद्ध परमात्माने जाणवो. ए रीतें नव तत्त्वनुं स्वरूप निश्चय अने व्यवहार नयें करी धारवुं.

६६० षट् द्रव्यनुं स्वरूप निश्चय व्यवहाररूप नयें करी उलखावे छे. ते

मां प्रथम जीवद्रव्यनुं स्वरूप तो आगल कह्युं, ते रीतें जाणवुं तथा धर्मा स्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय, ए बे द्रव्यनुं स्वरूप साथे कहे छे. तिहां निश्चयनयथकी ए बे द्रव्य लोकव्यापी खंध असंख्यात प्रदेशरूप शाश्वतो छे अने व्यवहार नयें करी ए बे द्रव्यना देश, प्रदेश अने अगुरुलघु जाणवा. हवे आकाशास्तिकाय द्रव्यनुं स्वरूप कहे छे. तिहां निश्चयथकी तो आकाशास्तिकायनो खंध लोकालोकव्यापी अनंतप्रदेशी शाश्वतो छे, तथा व्यवहारनयें करी देश, प्रदेश अने अगुरुलघु जाणवा. हवे काल द्रव्यनुं स्वरूप कहे छे. निश्चयथकी कालद्रव्यनो एक समय ते सदाकालें लोकमां शाश्वतो वर्त्ते छे अने व्यवहार नयें करी काल ते उत्पादव्ययरूप पलटण स्वभावें जाणवो. हवे पुद्गल द्रव्यनुं स्वरूप कहे छे. निश्चयनयें करी पुद्गल द्रव्यना अनंता परमाणुआ लोकमां सदाकाल शाश्वता वर्त्ते छे अने व्यवहारनयें करी पुद्गलना खंध सर्वे अशाश्वता जाणवा. ए रीतें निश्चय अने व्यवहारथकी षट्र द्रव्य नव तत्त्वनुं स्वरूप जाणवुं.

हवे नैगमादि सात नयें करी सर्व वस्तुनुं जाणपणुं कराववानो जिन दास नामा शेठ, श्रावकपुत्र प्रत्यें प्रश्न पूछे अने श्रावकपुत्र, जिनदास शेठने उत्तर आपे छे. एवी रीतना व्याख्यानरूपें कहे छेः–

६६१ जिनदास शेठः–सात नयमां नैगमनयें करी षट्र द्रव्यनुं स्वरूप जाणवामां प्रथम नैगमनयें करी धर्मास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः–नैगमनयने मतें धर्मास्तिकाय एवुं नाम कहीयें. केम के नैगम नयना मतवालो त्रणे काल वस्तुने एकरूपपणे माने छें, एटले अतीतकाले धर्मास्तिकाय एवुं नाम हतुं अने अनागतकाले धर्मास्तिकाय एवुं नाम रहेशे, तथा वर्त्तमानकालें पण धर्मास्तिकाय एवुं नाम वर्त्ते छे.

६६२ जिनदासः–संग्रह नयें करी धर्मास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः–ए नयना मतवालो, सत्तानुं ग्रहण करे छे, माटे संग्रह नयने मतें असंख्यात प्रदेशरूप सत्ता सहित ते धर्मास्तिकाय कहीयें.

६६३ जिनदासः–व्यवहार नयें करी धर्मास्तिकायनुंस्वरूपकेमजाणीयें ?

श्रावकपुत्रः–ए नयना मतवालो जेवो उपरथकी देखे, तेवो भेद वेहेंचे, माटे व्यवहार नयने मतें खंध, देश, प्रदेशरूप धर्मास्तिकाय जाणवो.

६६४ जिनदासः–ऋजुसूत्रनयने मतें धर्मास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो पारिणामिकन्नाव ग्रहे छे, माटे न्नावथकी धर्मास्तिकाय अनेक जीव पुजलने चलनसहायरूप न्नावपणे परिणमे छे, ए रीतें धर्मास्तिकायमां चार नय जाणवा.

६६५ जिनदासः—नैगमनयने मतें अधर्मास्तिकायनुं स्वरूपकेमजाणीयें?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयने मतें अधर्मास्तिकाय एवुं नाम कहीयें. केम के नैगम नयना मतवालो त्रणे काल वस्तुने एकरूपपणे माने छे. एटले अतीतकालें अधर्मास्तिकाय एवुं नाम हतुं अने अनागत कालें पण अधर्मास्तिकाय एवुं नाम वर्त्तशे, तथा वर्त्तमान कालें पण ए नाम वर्त्ते छे

६६६ जिनदासः—संग्रहनयने मतें अधर्मास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो सत्तानुं ग्रहण करे छे, माटे संग्रहनयने मतें अधर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशरूप सत्ता सहित लोकमां सदाकाल शाश्वतो वर्त्ते छे.

६६७ जिनदासः—व्यवहारनयने मतें अधर्मास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो जेवो उपरथकी देखे, तेवो न्नेद वेहेंचे, माटे व्यवहारनयने मतें खंध, देश, प्रदेशरूप अधर्मास्तिकाय जाणवो.

६६८ जिनदासः—रुजुसूत्रनयने मतें अधर्मास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो पारिणामिकन्नाव ग्रहे छे, माटे न्नावथकी अधर्मास्तिकाय अनेक जीव पुजलने स्थिरसहायरूप न्नावपणे परिणमे छे, ए रीतें अधर्मास्तिकायमां चार नय जाणवा,

६६९ जिनदासः—आकाशास्तिकायमां नैगमनयनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयने मतें आकाशास्तिकाय एवुं नाम कहीयें. केम के नैगमनयना मतवालो त्रणे काल वस्तुने एकरूपपणे माने छे. एटले अतीतकालें आकाशास्तिकाय एवुं नाम हतुं अने अनागतकालें आकाशास्तिकाय एवुं नाम रहेशे, तथा वर्त्तमानकालें आकाशास्तिकाय एवुं नाम वर्त्ते छे.

६७० जिनदासः—संग्रहनयने मतें आकाशास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो सत्तानुं ग्रहण करे छे. माटे संग्रहनयने मतें अनंत प्रदेशरूप सत्ता सहित ते आकाशास्तिकाय द्रव्य कहीयें.

६७१ जिनदासः—व्यवहारनयने मतें आकाशास्तिकायनुं स्वरूप केमजाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो जेवो उपरथी देखे, तेवो न्नेद वेहेंचे,

माटे व्यवहार नयने मतें खंध, देश, प्रदेशरूप आकाशास्तिकाय जाणवो.

६७२ जिनदासः–ऋजुसूत्रनयनेमतें आकाशास्तिकायनुं स्वरूप केमजाणीयें?

श्रावकपुत्रः–ए नयना मतवालो पारिणामिक भाव ग्रहे छे, माटे भाव थकी आकाशास्तिकाय अनेक जीव पुद्गलने अवगाहनारूप भावपणे परिणमे छे. ए रीतें आकाशास्तिकायमां चार नय जाणवा.

६७३ जिनदासः–नैगमनयने मतें कालद्रव्यनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः–नैगमनयने मतें काल एवुं नाम कहीयें. केम के नैगमनयना मतवालो त्रणे कालें वस्तुने एकरूपपणे माने छे. एटले अतीतकालें काल एवुं नाम हतुं, तथा अनागतकालें पण काल एवुं नाम रहेशे अने वर्त्तमानकालें काल एवुं नाम वर्त्ते छे.

६७४ जिनदासः–संग्रहनयने मतें कालद्रव्यनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः–ए नयना मतवालो सत्ताने ग्रहे छे, तेमाटे संग्रह नयने मतें कालनो एक समय, सत्तारूप सदाकाल लोकमां शाश्वतो वर्त्ते छे,

६७५ जिनदासः–व्यवहार नयने मतें कालद्रव्यनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः–व्यवहार नयने मतें कालना त्रण भेद कहीयें, तिहां अतीत काल ते अनंता समय गया अने अनागत काल ते अनंता समय आवशे, तथा वर्त्तमान काल ते एक समय वर्त्ते छे, एम अनेक भेद जाणवा.

६७६ जिनदासः–ऋजुसूत्रनयने मतें कालनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः–ए नयना मतवालो पारिणामिकभाव ग्रहे छे, माटे ए नयने मतें कालद्रव्य जीव, अजीवरूप सर्वे वस्तुमां नवी पुराणी वर्त्तनारूप भावपणे सदाकाल परिणमी रह्यो छे, ए रीतें कालद्रव्यमां चार नय जाणवा.

६७७जिनदासः–नैगमनयनेमतेंपुद्गलास्तिकाय द्रव्यनुं स्वरूपकेमजाणीयें?

श्रावकपुत्रः–नैगमनयने मतें पुद्गलास्तिकाय एवुं नाम कहीयें, कारण के नैगमनयना मतवालो त्रणे काल वस्तुने एकरूपपणे माने छे, एटले अतीतकालें पुद्गलद्रव्य एवुं नाम हतुं तथा अनागतकालें पण पुद्गल द्रव्य एवुं नाम रहेशे अने वर्त्तमान कालें ते नाम वर्त्ते छे.

६७८ जिनदासः–संग्रहनयने मतें पुद्गलद्रव्यनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः–ए नयना मतवालो सत्तानुं ग्रहण करे छे, माटे संग्रहनयने

मतें पुद्गलद्रव्यनो सत्तारूप एकपरमाणु, एवा अनंतपरमाणुआ लोकमां सदाकाल शाश्वता वर्त्ते छे,

६७ए जिनदासः—व्यवहारनयने मतें पुद्गलद्रव्यनुंस्वरूपकेमजाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो बाह्यथकी जेवुं स्वरूप देखे, तेवा नेद वेहेंचे. माटे व्यवहारनयने मतें पुद्गलना बे नेद कहीयें. एक खंध बीजा परमाणुआ, ते वली खंधना बे नेद, एक तो जीवने लाग्या ते जीव सहित खंध जाणवा,बीजा जीव रहित अजीवरखंध ते घडा प्रमुखना जाणवा. तथा वली जीव सहित खंधना बे नेद,एक सूक्ष्म अने बीजा बादर, तेमां सूक्ष्मना चार नेद ते नाषा, उच्छ्वास, मन अने कार्मण ए चार, वर्गणारूप जाणवा. तथा बादरना चार नेद ते औदारिक, वैक्रिय,आहारक अने तैजस ए चार वर्गणारूप जाणवा. तिहां प्रथम जे चार वर्गणा सूक्ष्म कही, तेमां चार फरस, पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, ए शोल गुण जाणवा. तथा बादर चार वर्गणामां पांच वर्ण, पांच रस, आठ फरस अने बे गंध, ए वीश गुण जाणवा. अने एक परमाणुआमां बे फरस,एक वर्ण,एक रस, एक गंध, ए पांच गुण जाणवा. ए रीतें व्यवहारनय उपरथकी देखे,तेवा नेद वेहेंचे

६७० जिनदासः—ऋजुसूत्रनयने मतें पुद्गलद्रव्यनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो पारिणामिक नाव ग्रहे छे, माटे एने मतें पुद्गल परमाणुआने मांहोमांहे अनादिकालनुं मलवाविखररूप पूर्ण गलननावरूप परिणामिकपणुं वर्त्ती रह्युं छे, ए पुद्गल द्रव्यमां चार नय जाणवा.

६७१ जिनदासः—नैगमनयने मतें जीवद्रव्यनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयना मतवालो एक अंश ग्रहीने सर्व वस्तु संपूर्णपणे माने, एटले सर्व जीवनी चेतना अक्षरने अनंतमे नागें उघाडी छे, तिहां कर्म आवरण लागतां नथी, माटे नैगमनयने मतें सर्व जीव एकरूप कहियें.

६७२ जिनदासः—संग्रहनयने मतें जीवनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो सत्तानुं ग्रहण करे छे, एटले सर्व जीवनी सत्ता असंख्यात प्रदेशरूप एक समान (सरखी) छे, माटे संग्रहनयने मतें करी सर्वजीव सत्तायें एकरूप जाणवा.

६७३ जिनदासः—व्यवहार नयने मतें करी जीवनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो बाह्यथकी जेवुं स्वरूप देखे, तेवा नेद

वेहेंचे, माटे व्यवहारनयने मतें करी जीवना बे भेद. तेमां एक तो सकल कर्म क्षय करी लोकने अंतें बिराजमान थयेला सिद्ध जीव जाणवा, अने बीजा संसारी जीव जाणवा. ते संसारी जीवना वली बे भेद, एक तो चौदमा गुणठाणाना जीव अयोगी अने बाकी बीजा सर्व सयोगी जाणवा. ते सयोगीना बे भेद,एक तेरमा गुणठाणाना जीव ते केवली भगवान् अने बाकी बीजा सर्व छद्मस्थ, ते छद्मस्थना वली बे भेद, एक बारमा गुणठाणावाला क्षीणमोही अने बाकी बीजा उपशांतमोही, ते उपशांतमोहीना बे भेद, एक अगीयारमा गुणठाणाना जीव ते अकषायी अने बाकी बीजा सर्वे सकषायी, ते सकषायीना बे भेद, एक दशमा गुणठाणाना जीव ते सूक्ष्मकषायी अने बीजा सर्वे बादरकषायी,ते बादरकषायीना बे भेद,एक आठमा नवमा गुणठाणाना जीव ते श्रेणीप्रतिपन्न अने बाकी बीजा श्रेणीरहित ते श्रेणीरहितना वलि बे भेद एक सातमा गुणठाणाना जीव ते अप्रमादी अने बाकी बीजा सर्वे प्रमादी, ते प्रमादीना बे भेद, एक सर्व विरति,बीजा देशविरति, ते देशविरतिना बे भेद, एक विरतिपरिणामवाला, बीजा अविरतिपरिणामवाला जीव, ते अविरतिना बे भेद, एक अविरतिसमकेती,बीजा मिथ्यात्वी,ते मिथ्यात्वीना बे भेद, एक भव्य, बीजा अभव्य, भव्यना बे भेद, एक गंठीभेदी, बीजा गंठी अभेदी, ए रीतें व्यवहार नयना मतवालो जेवा देखे, तेवा भेद वहेंचे.

वली प्रकारांतरें जीवना बे भेद, एक त्रस अने बीजा स्थावर, तेमां पृथ्वी, अप्, तेउ, वायु अने वनस्पति, ए पांच प्रकारना स्थावर, जीव ते पांच सूक्ष्म अने पांच बादर मली दश भेद थाय. ते वली पर्यासा अने अपर्यासा मली वीश भेद थाय. तथा तेनी साथें प्रत्येक वनस्पतिनो एक भेद पर्यासो अने बीजो भेद अपर्यासो मेलवतां बावीश भेद स्थावरना थाय. हवे त्रस जीवना भेद कहे छे. देवता, नारकी, तिर्यंच अने मनुष्य, ए सर्व जीवना मूल चार भेद छे, तेमां देवताना नवाणुं भेद पर्यासा अने नवाणुं अपर्यासा मली १९८ भेद छे, तथा साते नारकीना सात पर्यासा अने सात अपर्यासा मली चौद भेद थाय. तथा मनुष्यना एकशो एक, क्षेत्रना १०१ पर्यासा, १०१ अपर्यासा, अने १०१ संमूर्छिम, ए रीतें सर्व मली ३०३ भेद थाय. तथा बेंद्रिय, तेंद्रिय अने चौरिंद्रिय, ए त्रण विकलेंद्रिय

तिर्यंचना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता करतां ८ भेद थाय. तथा पंचेंद्रिय तिर्यंचना एक जलचर, बीजा चतुष्पद, त्रीजा उरःपरिसर्प,चोथा भुजपरिसर्प अने पांचमा खेचर, ए पांच संमूर्छिम अने पांच गर्भज मली दश भेद थाय. ते वली दश पर्याप्ता अने दश अपर्याप्ता मली वीश भेद थाय. ए रीतें ४२ भेद स्थावरना,१९८ देवताना, १४ नारकीना, ३०३ मनुष्यना, ६ विकलेंद्रियना, २० पंचेंद्रिय तिर्यंचना, मली ५६३ भेद व्यवहारनयने मतें जाणवा.

६७४ जिनदासः—ऋजुसूत्र मयने मतें जीवनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो पारिणामिक भाव ग्रहे छे,माटे जे समय जे उपयोगरूप परिणाम वर्त्ते, ते समय ते जीवने तेवो कही बोलावे, एटले एणे इंद्रियादिक भेद सर्वे टाल्या,पण ज्ञान अज्ञाननो भेद न टाल्यो.

६७५ जिनदासः—शब्दनयने मतें जीवनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो जीवनो समकेतभाव ग्रहण करे छे, माटे जीव अजीवरूप स्वरूपनुं जाणपणुं करी शुद्ध निर्मलपणे पोताना आत्मानी जेणें प्रतीति करी छे,तेने शब्दनयना मतवालो जीव कही बोलावे.

६७६ जिनदासः—समभिरूढ नयने मतें जीव कोने कहीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो श्रेणीभाव ग्रहण करे छे, माटे जेणें शुद्ध शुक्लध्यान रूपातीत परिणाम क्षपक श्रेणीयें घाती कर्मने चूरी अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, तेने समभिरूढ नयने मतें जीव कहीयें. एटले ए नयवालो तेरमे,चौदमे गुणठाणे केवलीभगवानने जीव कही बोलावे.

६७७ जिनदासः—एवंभूतनयनेमतें जिननुं स्वरूप केम जाणियें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो संपूर्ण भावरूप वस्तु माने छे, माटे जे सकल कर्मने क्षयें अनंत गुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी लोकने अंतें विराजमान अव्याबाध सुखना भोगी थया, तेने जीव कही बोलावे, एटले ए नयने मतवाले सिद्धि अवस्थामां जे गुण हता, ते इहां ग्रहण कर्या. ए रीतें षट् द्रव्यनुं स्वरूप साते नयें करी बताव्युं.

६७८ हवे जिनदास शेठ पूछे छे के साते नयें करी नव तत्त्वनुं स्वरूप केम जाणीयें ? तेवारें श्रावकपुत्र कहे छे के आगल षट् द्रव्य रूप जीव तत्त्व अने अजीवतत्त्वनुं स्वरूप तो बताव्युं, शेष सात तत्त्वनुं स्वरूप सात नयें करी देखाडतां प्रथम त्रीजा पुण्यतत्त्वनुं स्वरूप नैगमनयें करी कहुं छुं.

६७६ जिनदासः—पुण्यादिक सात तत्त्वनुं स्वरूप सातनयेंकरी केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—कोइ जीवें ऋजुसूत्र नयने मतें शुन्न परिणामें करी व्यवहारनयने मतें पुण्यरूप आ वनां दलीयां ग्रहण करी संग्रह नयने मतें प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां, तेने अजीव कहीयें अने ते दलीयां नैगम नयने मतें करी त्रणें काल एकरूपपणे जाणवां, ए रीतें ऋजुसूत्र, व्यवहार, संग्रह अने नैगम, ए चार नयें करी जे जीवें द्रव्यपुण्य उपार्ज्युं, तेमां पुण्य, अजीव, आश्रव अने बंध, ए चार तत्त्व जाणवां. अने न्नावपुण्य तो ते पुण्यनां दलीयां शब्दनयने मतें स्थितिपाकें उदयरूप न्नावें प्रगट्यां, तथा समन्निरूढनयने मतें सर्वपर्याय प्रवर्त्तनारूप वस्तु प्रत्यें पाम्यो अने एवंन्नूतनयने मतें ते पुण्यपर्यायरूप सर्व वस्तु जीवें न्नोगववा मांमी, एम साते नयें करी पुण्यनुं स्वरूप जाणवुं.

हवे पापनुं स्वरूप,साते नयें करी कहे छे. कोइ जीवें, ऋजुसूत्र नयने मतें अशुन्न परिणामें करी व्यवहार नयने मतें पापरूप आश्रवनां दलीयांने ग्रहण करी संग्रहनयने मतें प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां, तेने अजीव कहीयें. अने ते दलीयां नैगमनयने मतें त्रणे काल एकरूपपणे जाणवां. एम चार नयें करी जे जीवें द्रव्यपाप उपार्ज्युं, तेमां पाप, आश्रव, अजीव अने बंध, ए चार तत्त्व जाणवां अने न्नावथकी पाप तो ते दलीयां शब्दनयने मतें स्थितिपाकें उदयरूपन्नावें प्रगट्यां अने समन्निरूढ नयने मतें सर्व पर्याय प्रवर्त्तनारूप वस्तुप्रत्यें पाम्यो, तथा एवंन्नूतनयने मतें करी पाप पर्यायरूप सर्व वस्तु, जीवें न्नोगववा मांमी,एम साते नयें करी पापनुं स्वरूप जाणवुं.

हवे साते नयें करी संवर अने निर्जरानुं स्वरूप देखाडे छे. कोइजीवने संवररूप व्रत लेवानो मनमां अंश उपन्यो, तेने नैगम नयना मतवालो संवर करी माने अने संग्रह नयना मतवालो संवररूप श्रावकनां बार व्रत अथवा साधुनां पांच महाव्रतरूप संवर अंगीकार करे, तेवारें तेने संवर करी माने, तथा व्यवहारनयना मतवालो संवररूप आचार, व्यवहार, क्रियामां प्रवर्त्ततो देखे, तेने संवर करी माने. तथा ऋजुसूत्र नयना मतवालो मन,वचन, कायायें करी एकचित्तें त्याग वैराग्यरूप परिणामें वर्त्ते, तेने संवर करी माने, एटले ए चार नयें करी द्रव्यसंवर जाणवुं.

अने जावसंवर तो शब्दनयने मतें स्वसत्ता परसत्ता रूप जीव, अजीव, नव तत्त्व, षट् द्रव्यनुं स्वरूप जाणे, ते जीव, समजिरूढ नयने मतें श्रेणीजावें चढतां जीवसत्ताने ध्यावे, अजीवसत्तानो त्याग करे, शुक्ल, शुक्ल ध्यान, रूपातीत परिणामें करी स्वरूपमां रमे, तेवारें तेने संवर कहीयें. अने एवी रीतें संवरमां रहे, तिहां सुधी समय समय अनंती निर्जरा करे. ए रीतें निर्जरा थइ, तेवारें एवंजूतनयने मतें सकल कर्मने क्षयें मोक्षपद पाम्यो, एम साते नयें करी संवर निर्जरानुं स्वरूप जाणवुं.

हवे मोक्षनिःकर्मा अवस्था ते सिद्धिरूप कार्य तेमां सात नय, कार्य रूपें देखाडे छेः– प्रथम नैगमनयने मतें सिद्ध परमात्माना आठ रुचक प्रदेश अतीतकालें निरावरण हता, अने अनागत कालें पण निरावरण वर्त्तशे, तथा वर्त्तमानकालें पण निरावरण वर्त्ते छे. ए रीतें त्रणे काल एक रूपपणे जाणवा. तथा संग्रहनयने मतें पोताना आत्मानी सत्ता अंतरंग शुद्ध निर्मलपणे जेवी हती, तेवीज निरावरण पणे प्रगट करी छे, तथा व्यवहार नयने मतें सिद्धने पलटणस्वजावें समय समय नवनवा ज्ञेयनी वर्त्तनारूप पर्यायनो उत्पाद व्यय थइ रह्यो छे, तथा ऋजुसूत्र नयने मतें सिद्ध परमात्मा पोताना पारिणामिक जावमां रह्या, सामान्य विशेषरूप उपयोगमां सदाकाल वर्त्ते छे, तथा शब्दनयने मतें आगल जीव अजीव रूप स्वसत्ता परसत्तानी वेहेंचण करी क्षायिक समकेतरूप गुण प्रगट्यो, ते पण पोतानी पासें छे, तथा समजिरूढनयने मतें शुक्लध्यानरूप श्रेणीयें चढी अनंतचतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, ते पण पोतानी पासें छे, तथा एवंजूतनयने मतें सिद्ध परमात्मा अष्ट कर्मने क्षयें अष्टगुण प्रगट करी, लोकने अंतें विराजमान वर्त्ते छे. ए रीतें सिद्धना स्वरूपमां अंतरदृष्टियें जोतां कार्यरूप साते नय पामीयें. ए प्रमाणें षट् द्रव्य नव तत्त्वनुं स्वरूप साते नयें करी बालजीवने समजणरूप जाणवुं.

हवे ए नव तत्त्व उपर सात नय उतारे छे.

३०३ जिनदास शेठः–सात नयें करी नव तत्त्वनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः–नैगम अने संग्रह नयना मतवालो अंश तथा सत्ताने ग्रहण करे छे, माटे ए नयना मतवालो सर्वनो संग्रह करीने बोल्यो जे एक तत्त्व छे, तेवारें व्यवहार नयवालो वेहेंचण करीनें बोल्यो जे एक जीव

तत्त्व, बीजुं अजीवतत्त्व, ए रीतें बे प्रकारनां तत्त्व जाणवां, तेवारें ऋजुसूत्र नयना मतवालो उपयोग दइने बोल्यो जे कोइ जीव शुनाशुन परिणामें करी पुण्य पापरूप आश्रवनां दलीयां बांधे, तेने अजीव कहीयें, एटले जीव, पुण्य, पाप, आश्रव, बंध, अने अजीव, ए ठ तत्त्व थयां. हवे शब्द समन्निरूढ नयना मतवालो बोल्यो जे चोथा गुणठाणाथी मांमी यावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा पर्यंत जीव, संवरनावमां वर्त्ततो महानिर्ज्जरा प्रत्यें करे ठे. एम संवर तथा निर्ज्जरा, ए बे तत्त्व कह्यां, एटले आठ तत्त्व थयां. वली एवंनूतनयने मतें जे जीव, सकल कर्म क्षय करी लोकने अंतें बिराजमान यथाख्यात चारित्ररूप गुणें करी पोताना स्वरूपमां रमण करे ठे, तेने नावमोक्षपद कहीयें. ए रीतें नव तत्त्वनुं स्वरूप सात नयें करी जाणवुं.

३०४ शिष्यः—देवतामां सात नय केम जाणीयें ?

गुरुः—कोइ जीव, ऋजुसूत्रनयने मतें शुनपरिणामें करी व्यवहार नयने मतें पुण्यरूप दलीयानुं ग्रहण करे, ते संग्रह नयने मतें प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां तथा नैगमनयने मतें अतीत कालें ते दलीयां ग्रह्यां हतां अने अनागत कालें नोगवशे तथा वर्त्तमान कालें सत्तायें रह्यां वर्त्ते ठे, ए रीतें नैगम नयने मतें त्रण काल एक रूपपणे जाणवां. एटले जे जीवें देवतानुं आयु बांध्युं ते प्राणी ए चार नयें करी ऊव्य देव जाणवा. अने ते जीव, शब्दनयने मतें देवतापणे उपन्या, तेने नावदेव कहीयें. इहां शिष्य पूठे ठे के शब्दनयना मतवालो तो चारे निक्षेपे वस्तुनुं प्रमाण करे ठे. माटे देवतामां चार निक्षेपा केम जाणीयें ? गुरुः—देव एवुं नाम, ते नामदेव जाणवो. तथा देव एवा अक्षर लखवा, ते असद्भाव स्थापना अने देवरूपें मूर्त्ति स्थापवी, ते सद्भावस्थापना तथा आगल अनागत कालें चार नयें करी देवतानुं आयु बांध्युं, तेने ऊव्यदेव कहीयें. तथा जे शब्दनयने मतें देवतापणे उपन्यो ते उदयनावरूप नावदेव जाणवो. ए देवमां चार निक्षेपा कह्या. हवे समन्निरूढ नयना मतवालो कहे के जे देवताना नावना सर्व पर्याय प्रवर्त्तनारूप वस्तु प्रत्यें पामे, तेने देव कहीयें. तेवारें एवंनूतनयना मतवालो कहे के ते सर्व पर्यायरूप वस्तु प्रत्यें तखतें बेठा नोगवे, ते देव जाणवा. ए रीतें सात नयें करी देवतापणुं जाणवुं.

७०५ शिष्यः—नारकी जीवमां सात नय केम जाणीयें ?

गुरुः—कोइ जीव, ऋजुसूत्र नयने मतें अशुभपरिणामें करी व्यवहार नयने मतें पापरूप दलीयानुं ग्रहण करे, ते दलीयां संग्रहनयने मतें प्रकृतिरूप सत्तापणें वांध्यां अने नैगमनयने मतें ते दलीयां त्रणे काल एकरूपपणे जाणवां. ए रीतें जे जीवें नारकीनुं आउखुं वांध्युं, ते प्राणी ए चार नयें करी द्रव्यनारकी जाणवा. पछी ते जीव, शब्दनयने मतें नारकी पणें उपन्यो, तेने भावनारकी कहीयें. इहां शिष्य पूछे छे के शब्द नयना मतवालो तो चारे निक्षेपे वस्तुनुं प्रमाण करे छे, माटे नारकीमां चार निक्षेपा केम जाणीयें? तेवारें गुरु कहे छे जे प्रथम नारकी एवुं नाम ते नामनारकी वीजो नारकी एवा अक्षर लखवा, ते असद्भावस्थापना, अने नारकीरूपें मूर्त्ति स्थापवी, ते सद्भावस्थापना, ए वे प्रकारें स्थापना नारकी जाणवा. तथा त्रीजो जेणे आगल कह्या प्रमाणें चार नयें करी नारकीनुं आउखुं वांध्युं छे, तेने द्रव्य नारकी कहीयें. तथा चोथा शब्द नयने मतें ते जीव नारकीपणे जइ उपन्यो, ते उदयभावरूप भावनारकी जाणवो. ए चार निक्षेपा नारकीने विषे कह्या. हवे समभिरूढ नयना मतवालो कहे छे, के नरक भवना सर्व पर्याय प्रवर्त्तनारूप वस्तुप्रत्यें पामे, ते नारकी जाणवो. तेवारें एवंभूत नयना मतवालो कहे के ते पाप पर्याय रूप सर्वे वस्तु दुःख रूप विपाकें करी जीवें भोगववा मांमी, तेवारें ते नारकी जाणवो. ए रीतें साते नयें करी नारकीपणुं जाणवुं.

७०६ शिष्यः—राजामां सात नय केम जाणीयें ?

गुरुः—नैगमनयना मतवालो हाथ पगमां शुभलक्षण रेखा प्रमुख जोइने वोल्यो जे आगल जतां आ पुरुष, राजा थाशे, तेवारें संग्रह नयना मतवालो सर्वनो संग्रह करी वोल्यो जे ए राजा न कहेवाय, परंतु जे राजाना कुलमां उपन्या, ते राजा कहेवाय, तेवारें व्यवहार नयना मतवालो वोल्यो जे राजाना कुलमां तो घणा उपन्या पण जे युवराजपदवी भोगवे छे, ते राजा जाणवो. तेवारें ऋजुसूत्र नयना मतवालो उपयोग दइने वोल्यो के एम राजा नही कहेवाय, परंतु राज्यकार्यना चिंतनरूप उपयोगमां जेना परिणाम वर्त्ते, ते राजा कहेवाय, तेवारें शब्दनयना मतवालो वोल्यो जे राजकाजना चिंतनरूप उपयोगमां परिणाम वर्त्ते, तेथी कांइ गरज सरे नही परंतु

राजरूप तखतें बेठा चिंतन करे, ते राजा जाणवो. तेवारें समभिरूढ नयना मतवालो बोल्यो के राजरूप तखतें बेठो, पण राज्य अवस्थाना सर्व पर्याय प्रवर्त्तनारूप कारण मले, तेवारें राजा जाणवो. त्यारें एवंभूत नयना मतवालो बोल्यो जे राज्य अवस्थाना सर्वपर्याय प्रवर्त्तनारूप करणनी सामग्री सर्व एकठी करी राज्यरूप तखतें बेठो राज भोगवे हाल हुकम चलावे, जे मुखथी वचन नीकले, ते प्रमाणें काम थाय. सर्व लोक आज्ञा माने, ते राजा जाणवो. एम साते नयें करी राज्यावस्थानुं स्वरूप जाणवुं

७०७ शिष्यः—मनुष्यमां सात नय केम जाणीयें ?

गुरुः—कोइ जीव, ऋजुसूत्र नयने मतें भद्रकपरिणामरूप सरल स्वभावें करी व्यवहारनयने मतें पुण्यरूप दलीयानुं ग्रहण करे, ते संग्रह नयने मतें प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां अने नैगमनयने मतें ते दलीयां त्रणे काल एकरूपपणे जाणवां. ए रीतें जे जीवें मनुष्यनुं आउखुं बांध्युं, ते प्राणी, ए चार नयें करी द्रव्यमनुष्य जाणवा. अने जेवारें ते जीव, शब्दनयने मतें मनुष्य पणे उपन्या, तेवारें तेने भावमनुष्य कहीयें. एवुं सांभली शिष्य पूछे छे के शब्दनयना मतवालो तो चार निक्षेपे वस्तुनुं प्रमाण करे छे. माटे मनुष्यमां चार निक्षेपा केम जाणीयें ? तेवारें गुरु कहे छे, प्रथम जे मनुष्य एवुं नाम ते नामनिक्षेपे मनुष्य जाणवो. बीजो मनुष्य एवा अक्षर लखवा अथवा मनुष्यरूपें मूर्त्ति स्थापवी, ते स्थापनामनुष्य, त्रीजो जेणें आगल कह्या प्रमाणें चार नयें करी मनुष्यनुं आउखुं बांध्युं छे, तेने द्रव्यमनुष्य कहीयें अने चोथो जे शब्द नयने मतें मनुष्यपणे उपन्यो ते भावमनुष्य जाणवो. एटले उदय भावरूप मनुष्यपणुं ते भावमनुष्य जाणवो, ए चार निक्षेपा कह्या. हवे समभिरूढ नयना मतवालो बोल्यो जे मनुष्यभवना सर्वपर्यायप्रवर्त्तनारूप वस्तुप्रत्यें पामे, ते मनुष्य जाणवा. तेवारें एवंभूतनयना मतवालो बोल्यो जे मनुष्यभवना सर्व पर्यायरूपवस्तुप्रत्यें भोगववा मांडी, ते मनुष्य जाणवा.

७०८ जिनदासः—सातनयमांथीनैगमनयेंकरीसामायिकनुंस्वरूपकेमजाणीयें?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयने मतें करी सर्व जीव अंशथकी संवर भावरूप सामायिकमां रह्या वर्त्ते छे, कारण के सर्व जीवना आठ रुचकप्रदेश त्रणे काल निरावरण पणे वर्त्ते छे, तिहां कर्म आवरण लागतुं नथी, माटे नैगम

नयें करी सर्वें जीव, सदाकाल अंशथकी संवरजावरूव सामायिकमां जाणवा.

जिनदास शेठः—संग्रहनयें करी सामायिकनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो सत्तानुं ग्रहण करे ठे, माटे सर्व जीव सत्तायें पोताना पारिणामिकजावें करी संवरजावरूप सामायिकमां रह्या वर्त्ते ठे, जे कारणें अंतरंग सर्वे जीवने सत्तायें निश्चय नयें करी कर्मरूप लेप लागतो नथी, कर्मनो जे लेप लागवो ते मात्र व्यवहारनयथी ठे माटे संग्रह नयने मतें करी सत्तायें सर्व जीव संवरजावरूप सामायिकमां जाणवा.

जिनदास शेठः—व्यवहार नयने मतेंकरी सामायिकनुंस्वरूपकेमजाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो बाह्यथकी जेनुं जेवुं स्वरूप देखे, तेने तेवुं कहे. माटे जे जीव, एकांत निरवद्य जगायें जाइ "करेमि जंते" एम पाठ उच्चरी बे घडीथी मांमी जावजीव लगें निःसंगपणें वर्त्ते ठे, तेने व्यवहार नयना मतवालो सामायिकवंत कहे, एटले ए नयने मतें बाह्यथकी करणी आचरणारूप देखती क्रिया ते सामायिक जाणवुं.

जिनदासः—ऋजुसूत्रनयने मतें सामायिकनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो पारिणामिकजाव ग्रहे ठे, माटे कोइ जीव नरकनिगोदना दुःखथकी बीहीतो सुखनी लालचें उदासजावें त्याग वैराग्यरूप परिणामें करी पोताना चित्तने वर्त्तावे, ते समय ते जीव, ऋजुसूत्रनयने मतें करी सामायिकमां जाणवो. एटले तेतो यथाप्रवृत्तिकरणरूप परिणाम प्रमुख पहेले गुणठाणे मिथ्यात्वी जीवने पण होय.

जिनदासः—शब्दनयने मतें सामायिकनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयने मतें करी सामायिकना चार प्रकार जाणवा. एक श्रुतसामायिक, बीजुं समकेतसामायिक, त्रीजुं देशविरतिसामायिक अने चोथुं सर्वविरतिसामायिक, ए रीतें शब्दनयने मतें करी सामायिकना चार जेद ठे

जिनदासः—समजिरूढनयने मतें सामायिकनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो श्रेणीजाव ग्रहे ठे, माटे शुरुशुक्लध्यानरूपातीतपरिणामरूप क्षपकश्रेणीयें चढी घातीकर्मने चूरी अनंतचतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, एवा केवली जगवानने संवरजावरूप सामायिक जाणवुं.

जिनदासः—एवंजूतनयने मतें करी सामायिकनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो संपूर्ण जाव ग्रहे ठे. माटे अष्ट कर्म क्ष

यें अष्टगुण संपन्न लोकने अंतें विराजमान सादि अनंतमे भांगे वर्त्तता ए
वा सिद्ध भगवानने यथाख्यात चारित्ररूप संवरभाव जाणवो. ए रीतें
सात नयें करी सामायिकनुं स्वरूप धारवुं.

७०९ हवे एक आकाशप्रदेशमां षट् द्रव्यनुं तथा सात नयनुं स्वरूप कहे छेः—
एटले जिनदास शेठ एक आकाशप्रदेश मात्र क्षेत्र अंगीकार करिने श्रावक
पुत्र प्रत्यें प्रश्न पूछे छे के आ विवक्षित एक आकाशप्रदेश केहेनो कहीयें?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयने मतें ए प्रदेश छए द्रव्यनो छे,कारण के एक आका
श प्रदेशमां छए द्रव्य भेलां छे,तथा संग्रहनयने मतें एक कालद्रव्य अप्रदेशी
छे, केम के सर्व लोकमां एनो एक समय व्यापी रह्यो छे, माटे ते आकाश
प्रदेशमां काल जूदो नथी संग्रनयने मतें एक कालद्रव्य विना शेष पांच
द्रव्यनो ए प्रदेश कहियें. तथा व्यवहारनयने मतें जे द्रव्य एमां मुख्य दे
खाय छे, ते द्रव्यनो ए प्रदेश कहीयें. तथा ऋजुसूत्रनयने मतें जे समयें
जे द्रव्यनो उपयोग दइ पूछीयें,ते समयें ते प्रदेश,तेहीज द्रव्यनो कहीयें.
एटले जो धर्मास्तिकायनो उपयोग दइ पूछीयें,तो धर्मास्तिकायनो प्रदेश
कहीयें अने जो अधर्मद्रव्यनो उपयोग दइ पूछीयें,तो अधर्मास्तिकायनो
प्रदेश कहीयें. इत्यादि जे समय जे द्रव्यनो उपयोग दइ पूछीयें,ते समय
ते प्रदेश ते द्रव्यनो कहीयें. तथा शब्दनयने मतें जे द्रव्यनुं नाम लइ पूछी
यें, ते प्रदेश ते द्रव्यनो कहीयें. तथा समभिरूढ नयने मतें एक आकाश
प्रदेशमां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश रह्यो छे,तथा अधर्मास्तिकायनो एक
प्रदेश रह्यो छे तथा जीव अनंताना अनंता प्रदेश रह्या छे. एम पुद्गल
परमाणुआ पण अनंता जाणवा. तथा एवंभूतनयने मतें जे समय जे प्रदेश
जे द्रव्यना क्रियागुणने अंगीकार करतो देखीयें,तेसमय ते प्रदेश,ते द्रव्यनो
गणीजें. ए रीतें एकआकाशप्रदेशमांषट्द्रव्यनुंस्वरूप सातनयें करी जाणवुं.

७१० वली जिनदासशेठ श्रावकपुत्र प्रत्यें प्रश्न पूछे छे के तमें क्यां वसो छो ?
त्यारें अशुद्ध नैगमनयने वचनें श्रावकपुत्र बोल्यो जे हुं लोकमां वसुं छुं.
तेवारें जिनदास शेठें पूछयुं जे लोकना तो अधोलोक, ऊर्ध्वलोक अने ति
र्छो लोक, एवा त्रण भेद छे, तेमां तमें कया लोकमां वसो छो ? तेवारें शु
द्ध नैगमनयने वचनें श्रावकपुत्र बोल्यो के हुं तिर्छा लोकमां वसुं छुं, ते
वारें शेठ बोल्या के तिर्छा लोकमां तो असंख्याता द्वीप अने असंख्या

ता समुद्र छे. तेमां तमें कया द्वीप समुद्रमां वसो छो? त्यारें शुद्धतर नैगमनयने वचनें श्रावकपुत्र बोल्यो के हुं जंबू द्वीपमां वसुं छुं. शेठ बोल्या जंबूद्वीपमां तो घणां क्षेत्र छे तेमां तमे कया क्षेत्रमां वसो छो? तेवारें अतिशुद्ध नैगमनयने वचनें श्रावकपुत्र बोल्यो जे हुं भरतक्षेत्रमां वसुं छुं. शेठ बोल्या भरतक्षेत्रमां बत्रीश हजार देश छे, तेमां तमें कया देशमां वसो छो? तेसमय श्रावकपुत्र बोल्यो जे हुं अमुक देशमां वसुं छुं,शेठ बोल्या ते देशमां तो घणां नगर छे, तो तमें कया नगरमां वसो छो? श्रावक पुत्र बोल्यो के अमुक नगरमां वसुं छुं, शेठ बोल्या ते नगरमां घणा पाडा छे, तो तमें कया पाडामां वसो छो? श्रावकपुत्र बोल्यो अमुक पाडामां वसुं छुं. एमज पाडामां घरादिक सहु बताव्यां. ए नैगमनयनो मत जाणवो.

वली जिनदास शेठ संग्रहनयने मतें पूछे छे के तमें क्यां वसो छो? तेवारें श्रावकपुत्रें कह्युं हुं शरीरमां वसुं छुं. वली शेठें व्यवहार नयने मतें पूछ्युं तमें क्यां वसो छो? त्यारें श्रावकपुत्रें कह्युं हुं आ संथारे बेठो छुं, एटले बीछानामां रह्यो छुं. वली ऋजुसूत्रनयने मतें पूछ्युं तमें क्यां वसो छो? तेणें कह्युं हुं उपयोगमां रहुं छुं, एटले ए नयने मतवाले ज्ञान अज्ञाननो भेद न पड्यो,वली शब्दनयने मतें पूछ्युं, पामें क्यां रहो छो? तेणें कह्युं हुं स्वभावमां रहुं छुं, वली समभिरूढनयने मतें पूछ्युं तमें क्यां रहो छो? तेणें कह्युं के हुं गुणमां रहुं छुं. वली एवंभूत नयने मतें पूछ्युं तमें किहां रहो छो? तेणें कह्युं जे हुं ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप गुणमां रहुं छुं. एम साते नयनुं स्वरूप सर्व ठेकाणें उतारवुं.

३११ जिनदास शेठः—साते नयें करी जीवनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—नैगम नयने मतें गुण पर्यायवंत शरीर सहित ते जीव जाणवो. एटले ए नयने मतवाले शरीरमांहे जीवपणुं मान्युं, तेथी बीजा पुद्गल तथा धर्मास्तिकायादिक द्रव्य, ते सर्वे जीवमां गणाणां, तथा संग्रहनयने मतें असंख्यात प्रदेशी ते जीव एटले ए नयने मतवाले एक आकाश प्रदेश टाल्यो, पण बीजा सर्वे द्रव्य जीवमां गण्यां, व्यवहार नयने मतें भेख लइ काम चितारी जे ते जीव एटले एणे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, तथा बीजा पुद्गल सर्वे टाल्या, मण पंचेंद्रिय, मन, लेश्याना पुद्गल छे, तेणें जीवमां गण्या, एटले विषया

दिक तो इंद्रियो लीये बे, ते जीवथी न्यारा बे, पण ए नयने मतवाले इ हां जीवनी साथें लीधा, तथा रुजुसूत्र नयने मतें तो जे उपयोगवंत ते जीव,एटले ए नयने मतवाले इंद्रियादिक तो सर्व टाल्यां पण ज्ञान अज्ञाननो नेद टाल्यो नहीं, तथा शब्दनयने मतें तो नामजीव, स्थापना जीव, इव्यजीव अने नावजीव, एटले ए नयने मतवाले चार निक्षेपे जीवपणुं कह्युं, पण गुणी निर्गुणीनो नेद नही पाड्यो, तथा समनिरूढ नयने मतें ज्ञानादिक गुणवंत ते जीव एटले ए नयने मतवाले मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, इत्यादिक साधक सिद्धरूप परिणाम ते जीवस्वरूपमां गण्या, तथा एवंनूतनयने मतें अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र, शुद्ध सत्तामात्र ते जीव जाणवो. एटले ए नयने मतवाले सिद्धि अवस्थाना जे गुण हता, ते इहां ग्रहण कस्या. ए रीतें जीवमां सात नय कह्या.

७१२ जिनदास शेठः—नयनी अपेक्षायें करी ज्ञाननुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—नैगम नयना मतवालो एक अंश ग्रहीने सर्व वस्तुनुं प्रमाण करे बे, माटे नैगमनयने मतें सर्व जीव, ज्ञानी कहीयें. कारण के सर्व जीवनी चेतना अक्षरने अनंतमे नागें उघाडी बे, तिहां ज्ञानावरणादि कर्मनुं आवरण लागतुं नथी, माटे नैगमनयनेमतें सर्व जीव अंशथकी ज्ञानी जाणवा. तथा संग्रहनयना मतवालो सत्तानुं ग्रहण करे बे, माटे सर्व जीवनी सत्ता ज्ञानरूप बे, तेथी संग्रहनयने मतें सर्व जीव,सत्तायें ज्ञानी जाणवा. तथा व्यवहारनयना मतवालो तो बाह्यथकी जेनुं जेवुं स्वरूप देखे, तेने तेवुं कही बोलावे, पण अंतरंग उपयोग न माने, माटे जे अन्यमतनां सर्व शास्त्र प्रत्यें वांचे तथा,जैनमतनां सर्व सूत्र,सिद्धांत,नाष्य, निर्यूक्ति, टीका, चूर्णिप्रत्यें वांचे, गुरुमुखें सर्दहे, अर्थ करे, तेने व्यवहार नयना मतवालो ज्ञानी कहीने बोलावे, तथा रुजुसूत्रनयने मतें तो अंतरंग प्रतीति सहित वस्तु गतनां नासनरूप ज्ञान स्वरूपना उपयोगमां जेनुं चित्त, जे समयें वर्त्ते बे, ते समयें ते जीव, ज्ञानी जाणवा. एटले ए नयने मतवाले समकेती जीवने ज्ञानी कही बोलाव्या, तथा शब्दनयमे मते तो जे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, इत्यादिक शुद्ध शुक्लध्यानरूप साधक सिद्ध परिणाम ते ज्ञानी जाणवा. तथा समनिरूढ नय अने एवंनूत नयने मतें करी तो जे ज्ञानावरणादि घाति

अघाती कर्मने क्षयें करी अनंतचतुष्टय रूप लक्ष्मी प्रगट करी, लोकालोक नुं स्वरूप एक समयमां जाणे, तेने ज्ञानी जाणवा.

३१३ जिनदास शेठः—साते नयें करी साधर्मिपणानुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—नैगम अने संग्रह नयने मतें करी सर्वजीव सत्तायें एक रूप छे, एटले सर्व जीवनो धर्म, सरखो कहीयें माटे ए बे नयनें मतें सर्व जीव, सत्तायें साधर्मी जाणवा. तथा व्यवहारनयना मतवालो तो बाह्य थकी जेनी जेवी आचरणा देखे, तेने तेवो कहे, पण अंतरंग सत्ता उपयोग न माने, एटले जे जीवनी क्रिया प्रवृत्तिरूप एक सामाचारी सरखी होय, तेने व्यवहार नयना मतवालो साधर्मी कही बोलावे, तथा ऋजुसूत्र नयना मतें तो जे समय उपयोग सहित त्यग वैराग्यरूप उदासज्ञावें जेनुं चित्त वर्त्ते छे, ते समय ते जीव साधर्मी जाणवा. एटले ए नयने मतवाले यथाप्रवृत्त्यादिकरणना परिणाम हता, ते इहां ग्रहण कस्या, ए परिणाम तो पहेले गुणठाणे मिथ्यात्वीने पण थाय. तथा शब्दनयने मतें तो अंतरंग उपयोगरूप समकेत ज्ञावें साध्य एक साधन अनेक, ए रीतें जे जीव सत्तागतना धर्मने साधे, ते साधर्मी जाणवा. एटले ए नयने मतवाले समकेती जीवने साधर्मी कही बोलाव्या, तथा समभिरूढ नयना मतवालो श्रेणी ज्ञावनुं ग्रहण करे छे, एटले नवमा दशमा गुणठाणाथी मांमी यावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा पर्यंत जे जीव, घाती कर्मने क्षयें अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी शुक्लध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या संवरज्ञावें वर्त्ते, एवा केवली जगवान् ते साधर्मी जाणवा. तथा एवंजूत नयने मतें तो जे अष्ट कर्म क्षय करी अष्टगुण संपन्न लोकने अंतें विराजमान अव्याबाध सुखना जोगी सादि अनंतमे जांगे वर्त्ते छे, एवा सिद्ध परमात्माने साधर्मी जाणवा. ए रीतें साधर्मी उपर सात नय कह्या.

३१४ जिनदास शेठः—सात नयें करी धर्मनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—नैगम नयनें मतें तो सर्व धर्म छे, केम के सर्वे धर्मने चाहे छे. एटले ए नयने मतवाले सर्वधर्मने धर्मनाम कही बोलाव्या, तथा संग्रहनयने मतें जे वडेरायें आदर्यो, ते धर्म. एटले ए नयने मतवाले अनाचार तो छोड्यो अने कुलाचारने धर्म करी मान्यो. एटले जे जेना कुलक्रमागत आव्यो, ते धर्म जाणवो ॥ गाथा ॥ जेखधारीकुं गुरु कहे, पु

एयवंतकूं कहे देव ॥ कुलाचारकूं धर्म कहे, ए कुकर्मकी टेव ॥ १ ॥ तथा व्यवहारनयना मतें जे सुखनुं कारण ते धर्म कहीयें एटले ए नयने मत वाले पुण्यरूप करणीने धर्म करी मान्यो, तथा ऋजुसूत्र नयने मतें उपयोग सहित उदास जावें वैराग्यरूप परिणाम ते धर्म जाणवो. एटले ए नयने मतवाले यथाप्रवृत्तिकरणरूप परिणाम प्रमुखने धर्म करी मान्यो, ते तो पहेले गुणठाणे मिथ्यात्वीने पण थाय. तथा शब्द नयने मतें जे अंतरंग सत्तागतना जासनरूप समकेत ते धर्म जाणवो. केम के समकेत जे बे, ते धर्मनुं मूल बे. तथा समन्निरूढ नयने मतें जीव अजीवरूप नव तत्त्व, षट् ड्रव्य, नय, निक्षेपा, प्रमाण, उत्सर्ग, अपवाद, निश्चय, व्यवहार, ड्रव्य, जावनुं स्वरूप जाणी जीवसत्ताने ध्यावे. अजीवसत्तानो त्याग करे, ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप शुद्ध निश्चयनय परिणाम, ते धर्म कहीयें. एटले ए नयने मतवाले साधक सिद्धरूप परिणाम, ते धर्मपणे करी मान्या. तथा एवंजूतनयने मतें जे शुद्ध शुक्लध्यान रूपातीतपरिणाम क्षपकश्रेणी कर्म क्षयनां कारण, ते साधनधर्म जाणवो अने जीवनो मूलस्वजाव मोक्षरूप कार्य निष्पन्न सिद्धिमां रहे, ते धर्म जाणवो.

३१५ जिनदास शेठः—सिद्ध जगवाननुं स्वरूप, साते नयें करी केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयवालो एक अंश ग्रहीने वस्तुनुं प्रमाण करे बे, माटे नैगमनयने मतें सर्व जीव सिद्ध बे, कारण के सर्वजीवना आठ रुचकप्रदेश सदाकाल सिद्धसमान निर्मल बे, तिहां कर्मावरण लागतां न थी, माटे नैगमनयने मतें सर्वजीव सिद्धसमान जाणवां. तथा संग्रहनयना मतवालो सत्तानुं ग्रहण करे बे, एटले सर्वजीवनी सत्ता एक समान सरखी बे, माटे संग्रहनयने मतें करी सर्वजीव सत्तायें सिद्धसमान जाणवा. एटले एणे पर्यायास्तिकनयें करी कर्म सहित अवस्था टाली, पण ड्रव्यास्तिकनयनी अवस्था अंगीकार करावी, तथा व्यवहारनयने मतें जे विद्यालब्धि प्रमुख गुणें करीने सिद्ध थया, तेने सिद्धपणुं जाणवुं. एटले ए नयवाले जे बाह्यतप प्रमुख गुण हता, ते अंगीकार कस्या, तथा ऋजुसूत्रनयने मतें तो जे समयें जे जीवें सिद्धसमान आपणा आत्मानीसत्ता उलखी बे, अने ध्याननो उपयोग पण तेहीज वर्त्ते बे, ते समयें ते जीव, सिद्ध समान बे. एटले ए नयने मतवाले समकेतिजीवने सिद्धसमान कही

वोलाव्या, तथा शब्दनयने मतें तो जे शुद्धशुक्लध्यानपरिणाम नामादिक चार निक्षेपे, ते सिद्ध कहीयें. तथा समभिरूढनयने मतें जे केवल ज्ञान, केवलदर्शन, यथाख्यातचारित्ररूप गुणवंत होय ते सिद्ध, एटले ए नयने मतवाले तेरमे, चौदमे गुणठाणें वर्त्तता केवली भगवान्ने सिद्ध समान कही वोलाव्या. तथा एवंभूतनयने मतें जे ज्ञानवरणादि सकल कर्मनो क्षय करी अनंतगुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी लोकने अंतें विराजमान सादि अनंतमे भांगे वर्त्ते एवा जे, सिद्ध भगवान् ते सिद्ध कहीयें.

७२४ जिनदास शेठः–वलीनयनीअपेक्षायेंकरीनवतत्त्वनुंस्वरूपकेमजाणीयें?

श्रावकपुत्रः–ऋजुसूत्रनयने मतें पहेले गुणठाणे एकेंद्रियथी पंचेंद्रिय पर्यंतना जीव अनुपयोगें मिथ्यात्वभावें वर्त्ते, तेने द्रव्यजीव कहीयें अने शब्दनयने मतें चोथे गुणठाणें आत्मस्वरूपमां समकेतभावें वर्त्ते, तेने भाव जीव कहीयें. हवे अजीवनुं स्वरूप कहीयें छेयें. एटले कोइक जीव ऋजु सूत्रनयने मतें शुभाशुभ परिणामें करी पुण्यपापरूप आश्रवनां दलीयां वांधे, तेने अजीव कहीयें. अने व्यवहारनयने मतें अव्रतिपणे अणक स्यां आश्रव आवे, एवुं पण श्रीभगवतीसूत्रमां कह्युं छे. हवे संवरनुं स्व रूप कहे छे. शब्दनयने मतें चोथे गुणठाणे समकेती जीव अने पांचमे गुणठाणे देशविरति जीव, तथा छठे सातमे गुणठाणे सर्वविरतिजीव, ए संवरभावमां रह्या वर्त्ते छे, तथा समभिरूढनयने मतें श्रेणीभावें नवमा द शमा गुणठाणाथी मांमी यावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा पर्यंत केवली भगवान् पण संवरभावें रह्या वर्त्ते छे अने एवंभूतनयने मतें सकल कर्म क्षय करी लोकने अंतें विराजमान सादि अनंतमे भांगे सिद्ध परमात्मा पण संवरभावमां रह्या वर्त्ते छे. हवे निर्जरानुं स्वरूप कहे छे. शब्द, सम भिरूढनयने मतें श्रेणीभावें नवमा दशमा गुणठाणाथी मांमी तेरमा चौ दमा गुणठाणा पर्यंतना जीव आत्मस्वरूपमां वर्त्तता महानिर्जरा प्रत्यें करे छे. हवे मोक्षनिःकर्मावस्थानुं स्वरूप कहे छे. समभिरूढनयने मतें श्रेणीभावें तेरमे चौदमे गुणठाणें केवली भगवान् वर्त्ते छे,तेने द्रव्यमोक्षपद कहीयें. अने एवंभूतनयने मतें सकल कर्म क्षय करी लोकने अंतें विराज मान सादिअनंतमे भांगे वर्त्ते छे, एवा सिद्धपरमात्माने भावमोक्षपद क हीयें. ए नव तत्त्वमां स्वरूप जाणवुं.

७३३ जिनदासशेठः—साते नयें करी नव तत्त्वनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयने मतें सर्वे तत्त्व छे, जे कारणे सर्वकोइ तत्त्वने चाहे छे, तथा संग्रहनयना मतवालो सर्वनो संग्रह करीने बोल्यो जे एकज तत्त्व छे, एटले जे जेहने मन मान्युं, ते तत्त्व, बीजां सर्वे अतत्त्व जाणवां. तथा व्यवहार नयना मतवालो बाह्यस्वरूप देखीने भेद वेहेंचे, एटले जे दीसता गुण देखे, ते माने, माटे एक जीवतत्त्व अने बीजुं अजीवतत्त्व, ए बे तत्त्व माने, तेमां वली प्रथमजीव तत्त्वना बे भेद, इत्यादि आगल कह्या,ते रीतें यावत् गंठीभेदी तथा अगंठीभेदी सुधी कहीने वली प्रकारां तरें ५६३ भेद कहे. तथा अजीव तत्त्वना भेदनी वेहेंचण आवी रीतें करवी प्रथम अजीवना बे भेद छे, एक रूपी अजीव अने बीजो अरूपी अजीव, तेमां धर्मास्तिकायनो खंध, देश अने प्रदेश, तथा अधर्मास्तिकायनो खंध, देश अने प्रदेश,तथा आकाशास्तिकायनो खंध, देश अने प्रदेश, तथा एक भेद कालद्रव्यनो मली अरूपी अजीवना दश भेद थया. वली धर्मास्तिकाय द्रव्यथकी, क्षेत्रथकी, कालथकी, भावथकी अने गुणथकी,ए पांचभेदें छे. ए रीतें अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, तथा काल, सर्वना पांच पांच भेद करतां वीश भेद थाय. ते पूर्वोक्त दश साथें मेलवतां त्रीश भेद अरूपी अजीवना थया. हवे रूपी अजीवना पांचशो ने त्रीश भेदनुं स्वरूप कहे छे. फरसना आठ, गंधना बे, रसना पांच, वर्णना पांच अने संस्थानना पांच, ए रीतें पच्चीश भेद मूल छे, तेना उत्तर भेद पांचशे ने त्रीश,ते आवी रीतें थायः—प्रथम आठ फरस मांहेला प्रत्येक फरस ने पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, पांच संस्थान अने छ स्पर्श, ए रीतें त्रेवीश साथें गुणतां १८४ भेद थाय. आठ स्पर्श छे, तेमांथी छ स्पर्श साथें गणवानुं कारण ए छे के जो भारी स्पर्शना भेद साथें गणवो होय,तो ते भारी स्पर्श, तथा तेनो प्रतिपक्षी वीजो हलवो स्पर्श, ए बे स्पर्श मूकी देवा. बाकी छ स्पर्श लेवा. तेमज जो लुखा साथें गणवो होय, तो तेनो प्रतिपक्षी चोपड्या स्पर्श पण मूकी आपवो. ए रीतें सर्वत्र समजी लेवुं. ए आठ स्पर्शना १८४ भेद थया. तेमज पच्चीश भेदमांथी बे गंध कहाडीने त्रेवीश भेदने बे गंध साथें गुणीये, तेवारें बे गंधना छेतालीश भेद थाय तथा पच्चीश भेदमांथी पांच रस, बाद करतां बाकी वीश भेदने पांच रस साथें गुणतां पांच रसही

१०० भेद थाय. तथा तेवीज रीतें पांच वर्णना पण शो भेद थाय. अने तेमज पांच संस्थानना पण शो भेद थाय. ए सरवाले ५३० भेद पुद्गल द्रव्यरूपी अजीव छे तेना थया. तेनी साथें पूर्वोक्त अरूपी अजीवना त्रीश भेद मेलवतां ५६० भेद थाय. ए सर्व व्यवहारनयने मतें भेदनी वेहेंचण छे.

तथा ऋजुसूत्रनयने मतें जे जीव, शुभाशुभ परिणामें करी पुण्य, पाप रूप आश्रवनां दलीयां बांधे, तेने अजीव कहीयें. ए छ तत्त्व थयां, तथा शब्दनयने मतें तो चोथे गुणठाणे समकेती जीव, पांचमे गुणठाणे देशविरतिजीव, छठे सातमे गुणठाणे सर्वविरति जीव, ए त्रणे सत्तागतना भासनरूप संवरभावमां वर्त्तता समय समय अनंतां कर्म निर्जरावे छे, तथा समभिरूढनयना मतवालो श्रेणीभावने ग्रहे छे, माटे नवमा दशमा गुणठाणाथी मांमीने यावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा पर्यंत केवली भगवान् पण संवरभावमां वर्त्तता महा निर्जराप्रत्यें करे छे, तेने द्रव्यमोक्षपद कहीयें. ए नवे तत्त्व आव्यां. तथा एवंभूतनयने मतें सकल कर्मक्षयें करी लोकने अंतें विराजमान सादि अनंतमे भांगे वर्त्तता एवा सिद्धपरमात्मा, तेने भावमोक्षपद कहीयें. ए रीतें साते नयें करी नव तत्त्वनुं स्वरूप छे,

७३४ हवे पाथा उपरे उत्सर्ग अपवाद मार्गे नय उतारे छे. एटले कोइ जीव पाथाने अर्थें वनमां काष्ट वेवाने चाल्यो, तिहां वीजो कोइ सन्मुख मल्यो तेणें पूछ्युं तुं क्यां जाय छे? तेवारें ते अशुद्ध नैगमनयने वचनें बोल्यो जे हुं पाथो लेवा जाउं छुं. हवे वनमां जइने काष्ट छेदवा मांड्युं, तेवारें वली कोइयें पूछ्युं के शुं छेदे छे? तेवारें शुद्ध नैगमनयने वचनें बोल्यो के हुं पाथो छेदुं छुं. हवे काष्ट लइने पाछो वल्यो, तेवारें वली कोइयें पूछ्युं के तुं शुं लाव्यो? तेवारें शुद्धतर नैगमनयने वचनें बोल्यो के हुं पाथो लाव्यो. हवे पाथो सराणें चडावी उतारवा मांड्यो, तेवारें वली कोइयें पूछ्युं जे तुं शुं उतारे छे? त्यारें ते अतिशुद्ध नैगमनयने वचनें बोल्यो के हुं पाथो उतारुं छुं. ए रीतें नैगमनय जाणवो. हवे व्यवहारनयना मतवालो बोल्यो के एवी रीतें पाथो हुं मानुं नही परंतु हुंतो संपूर्ण नीपजाती वस्तुमां वस्तुपणुं मानुं, एटले पाथो उतारी तैयार करी मेल्यो, तेवारें व्यवहारनयना मतवालो कहे, जे हवे एने पाथो कहीयें. हवे संग्रहनयना मतवालो बोल्यो के एम पाथो नही पाथानी सत्तारूपमांहे धान्य

न्नख्युं, तेवारें संग्रहनयना मतवालो कहे के हवे पाथो कहीयें. हवे ऋजुसूत्र नयना मतवालो बोल्यो के एवी रीतें पाथो नहीं. हुंतो वस्तुना न्नावने ग्रहण करुं, एटले पांच, सात, पाथा धान्य न्नरीने एक बाजु ढगलो कर्यो, अने पाथारूप खोखुं दूर काढी नाख्युं, तेवारें ऋजुसूत्रनयना मतवालो कहे के हवे एने पाथो कहीयें. वली कोइयें पूब्युं जे ए पांच सात पाथानुं ज्ञान किहां रह्युं बे? तेवारें शब्दनयना मतवालो वेहेंचण करीने बोल्यो जे आ शरीररूप पाथो बे, तेमां ज्ञानादि अनंतगुणरूप धान्य न्नख्युं बे, तेवारें समन्निरूढनयना मतवालो बोल्यो के एम पाथो नही, ए शरीररूप पाथा मांहेथी उपयोग काढी अने ज्ञानादिक अनंतगुणरूप मांहे धान्य न्नख्युं बे, तेमां उपयोग लगावीने श्रेणीन्नावें चड्यो, एटले एने पाथो कहीयें. तेवारें एवंन्नूतनय वालो बोल्यो, के एम पाथो नही परंतु ज्ञानादि अनंतगुणरूप धान्य मांहे न्नख्युं बे, ते संपूर्ण प्रगट करी पाथारूप शरीरनुं खोखुं मूकी जे लोकने अंतें शिवपुरीमां बिराजमान थया, तिहां पाथो कहीयें. एमां आगला चार नय अपवादमार्गें अने पाबला त्रण नय उत्सर्गमार्गें जाणवा.

७३५ हवे जिनमंदिररूप देरासर उपर सात नय उत्सर्ग अने अपवाद मार्गें उतारे बे. कोइ पुरुष, देरासर कराववा सारु सामान लेवा चाल्यो, तेवारें बीजो कोइ सामो मल्यो, तेणें पूब्युं तुं क्यां जाय बे? ते समय ते अशुद्ध नैगमनयने वचनें बोल्यो के हुं देहरुं लेवा जाउं बुं. पबी देहराना सामान लेवा मांड्यो, ते वखत वली कोइयें पूब्युं तुं शुं लीये बे? त्यारें शुद्ध नैगमनयने वचनें बोल्यो के हुं देहरुं लउं बुं. हवे देहरानो सामान लइने पाबो आवतां वली कोइयें पूब्युं के तुं शुं लाव्यो? त्यारें शुद्धतर नैगमनयने वचनें बोल्यो के हुं देहरुं लाव्यो. हवे घेर आवीने देहरुं चणाववा मांड्युं, तेवारें वली कोइयें पूब्युं के तुं शुं चणावे बे? त्यारें अतिशुद्ध नैगमनयने वचनें बोल्यो के हुं देहरुं चणावुं बुं ॥ इति नैगम नयः ॥ हवे व्यवहार नयना मतवालो बोल्यो के ए रीतें देहरुं नहीं, परंतु हुं तो संपूर्ण दीसती वस्तुमां वस्तुपणुं मानुं, एटले जेवारें संपूर्ण देहरुं तैय्यार थयुं, तेवारें व्यवहार नयना मतवालो कहे के हवे एने देहरुं कहीयें. हवे संग्रहनयना मतवालो बोल्यो के एम देहरुं नही, पण देहरानी सत्तारूप मांहे देव बिराजमान थाय, तेवारें देहरुं कहीयें. एटले प्रतिष्ठा

होत्सव विधिप्रमुख करी मांहे देव वेसाडे, तेवारें संग्रहनयना मतवालो कहे के एने देहरुं कहीयें. हवे ऋजुसूत्रनयना मतवालो वोल्यो के एम देहरुं नही, हुंतो नावने ग्रहण करुं बुं; आपणे देहरानुं शुं काम ठे, पण एमां देव कोण ठे? ऋषन्न देव ठे? किंवा अजितनाथ ठे? किंवा संन्नवनाथ ठे? इत्यादि जे देव मांहे वेठा होय,तेनुं प्रयोजन ठे.'एटले ए ऋजुसूत्रन यने मतवाले देहरा उपरथी उपयोग उतारीने देव विराज्या ठे, तेना ध्या नमांहे उपयोग लगाव्यो. तेवारें कोइ वोल्यो जे देरासरमां देव विराज्या ठे, तेनी उलखाणरूप ज्ञान किहां रह्युं ठे? तेवारें शब्दनयना मतवालो अंत रंग उपयोग दइने वोल्यो के आ शरीररूप देहरुं तेमां निश्चय देव आत्मा पोतेंज ठे,तेने विषे ए ज्ञान रह्युं ठे. हवे समन्निरूढनयना मतवालो वोल्यो के एम देहरुं नही. ए शरीररूप देहरामांथी उपयोग काढी तेमांहे निश्चय देव आत्मा विराजे ठे,तेना स्वरूपना चिंतनरूप ध्यानमां उपयोग लगा डी श्रेणीनावें चढे, तेवारें देहरुं कहियें. त्यारें एवंन्नूत नयना मतवालो कहेवा लाग्यो के एम देहरुं नही,परंतु मांहे निश्चयदेव आत्मा विराजे ठे,ते नुं स्वरूप संपूर्ण प्रगट करी अने देहरारूप शरीरनुं खोखुं इहां मूकी लो कने अंतें सिद्धपुरीमां विराजमान थया, त्यां देहरुं कहीयें.

७३६ हवे उत्सर्ग अपवाद मार्गें घट उपर सात नय उतारे ठे. कोइक घट लेवा चाल्यो, तेवारें मार्गमां तेनें वीजो कोइ सन्मुख मल्यो, तेणें पूब्युं तुं शुं लेवा जाय ठे? ते वखत ते अशुद्ध नैगमनयने वचनें वोल्यो के हुं घट लेवा जाउं बुं. पठी तिहां जइने माटी खणवा मांमी ते वारें कोइयें पूब्युं तुं शुं करे ठे? त्यारें शुद्ध नैगमनयने वचनें वोल्यो के हुं घट लउं बुं. हवे माटी लइने पाठो वल्यो, तेवारें वली कोइचें पूब्युं तुं शुं लाव्यो! तेवखत शुद्धतरनैगमनयने वचनें वोल्यो हुं घट लाव्यो; हवे माटी चाकडे चडावी घट उतारवा मांम्यो, तेवारें वली कोइयें पूब्युं तुं शुं उ तारे ठे? त्यारें अतिशुद्धनैगमनयने मतें वोल्यो हुं घट उतारुं बुं॥ इतिनैग मनयः॥ हवे व्यवहारनयना मतवालो वोल्यो के एम घट न थाय हुंतो संपूर्ण वस्तु नजरें देखुं, तेमां वस्तुपणुं मानुं एटले घडो तैयार संपूर्ण नी पजे, तेवारें एने घट कहीयें. हवे संग्रहनयना मतवालो वोल्यो के एम घट नही,परंतु घटनी सत्तारूप जल मांहे जल्युं होय, तेवारें घट कहेवाय,

एटले घटनी सत्तारूप जलें करी संपूर्ण नरे,तेवारें एने घडो कहीयें. हवे ऋजुसूत्रनयना मतवालो बोल्यो के एम घट हुं मानुं नही हुंतो नावने ग्रहण करुं बुं. एटले पांच, सात, घट नरीने एक गामडामां रेड्या अने घडा रूप खोखुं एक बाजु काढी नाख्युं, त्यारें तेने घट कहीयें. तेवारें कोइक बोल्यो जे ए पांच,सात,घटरूप जलनुं ज्ञान किहां रह्युं बे! ते वखत शब्द नयना मतवालो वेहेंचण करीने बोल्यो के आ शरीररूप घट अनेज्ञानादि अनंतगुणरूप मांहे जलनस्युं बे, तेवारें समनिरूढनयना मतवालो बोल्यो के एम घट नही आ शरीररूप घटमांथी उपयोग काढी अने मांहे ज्ञानादि अनंतगुणरूप जे जल नस्युं बे, तेमां उपयोग लगावी श्रेणीनावें चढे, तेवारें घट कहीयें. एटले एणें शरीररूप घटमांथी उपयोग काढी अने ज्ञानादि अनंतगुणरूप मांहे जल नस्युं बे, तेमां उपयोग लगावीने श्रेणीनावें चढ्यो,तेवारें समनिरूढनयना मतवालो घट कहे. हवे एवंनूत नयना मतवालो बोल्यो जे एम घट नही,परंतु एमां जे ज्ञानादि अनंतगुणरूप जल नस्युं बे,ते प्रगट करी घटरूप शरीरनुं खोखुं इहां मूकी लोकने अंतें सिद्धपुरीमां बिराजमान थया. तिहां घट कहीयें.

७३७ हवे घर उपर उत्सर्ग अपवाद मार्गें करी सात नय उतारे बे. कोइ पुरुष घरनो सामान लेवा चाल्यो, तेने कोइ बीजो पुरुष मार्गमां सामो मल्यो, तेणें पूब्युं तुं किहां जाय बे? तेवारें ते अशुद्धनैगमनयने मतें बोल्यो के हुं घर लेवा जाउं बुं. पढी ज्यारें घरनो सामान लेवा मांड्यो, तेवारें वली कोइयें पूब्युं के तुं शुं लीये बे? तेसमय शुद्धनैगमनयने मतें बोल्यो के हुं घर लउं बुं. हवे घरनो सामान लइने पाबो वल्यो,तेवारें वली कोइयें पूब्युं तुं शुं लाव्यो? त्यारें शुद्धतरनैगमनयने वचनें बोल्यो के हुं घर लाव्यो. हवे घर करावबा मांड्युं,तेवारें कोइयें पूब्युं तुं शुं करावे बे? त्यारें अति शुद्धनैगमनयने वचनें बोल्यो के हुं घर चणावुं बुं ॥ इतिनैगमनयः॥ हवे व्यवहारनयना मतवालो बोल्यो के एम घर न थाय,हुं तो संपूर्ण तैय्यार घर नजरें देखुं, तेवारें घर मानुं. एटले संपूर्ण तैय्यार घर नीपन्युं, तेवारें व्यवहारनयना मतवालो कहे जे ए घर थयुं. हवे संग्रहनयना मतवालो बोल्यो जे एम घर नही, परंतु घरनी सत्ताने ग्रहण करे, तेवारें घर कहेवाय. एटले जेम तेम खटपट करी परणीने घरनी सत्तारूप स्त्री लावी गर

मां वेसाडी, तेवारें संग्रहनयना मतवालो कहे हवे एने घर कहीयें. तेवारे ऋजुसूत्रनयना मतवालो वोल्यो के एम घर न थाय, हुंतो नावनें ग्रहण करुं छुं. घरनुं शुं प्रयोजन छे? माहारे तो मांहे घरनी धणीयाणी स्त्री वेठी छे, तेनी साथें काम छे, घरनुं शुं काम छे? एटले ए ऋजुसूत्रनयने मतवाले घररूप खोखा उपरथी उपयोग काढी अने मांहे घरनी धणीयाणी स्त्री वेठी छे,तेमां उपयोग लगाव्यो,वली तेवारें कोइ वोल्यो के ए घरमां स्त्री वेठी छे,तेनुं ज्ञान किहां रह्युं छे? तेवारें शब्दनयना मतवालो वेहेंचण करीने वोल्यो के आ शरीरूप घर अने मांहे चेतन महाराजरूप पुरुष अने समतारूप स्त्री वेठी छे,तेमध्ये ए ज्ञान रह्युं छे, तेवारें समभिरूढनयना मतवलो वोल्यो के एम घर नही,परंतु शरीररूप घरमांथी उपयोग काढी अने समतारूप स्त्रीमां उपयोग लगावी,श्रेणीनावे चढे,तेवारें घर कहीयें. हवे एवंभूत नयवालो वोल्यो एम घर नही,पण ए शरीररूप घरनुं खोखुं इहां मूकी समतारूप स्त्रीने लइ लोकने अंतें मोक्षपुरीमां जइ वस्या, तिहां घर कहीयें.

५३७ हवे राज्य उपर उत्सर्ग अपवादमार्गे सात नय उतारे छे. कोइ पुरुष, राज्य लेवा चाल्यो,तेने मार्गमां कोइ सामो मल्यो,तेणें पूछ्युं तुं किहां जाय छे? त्यारें ते अशुद्ध नैगमनयने वचनें वोल्यो हुं राज्य लेवा जाउं छुं. हवे राज्य लेवानी सामग्री मांमी, तेवारें वली कोइयें पूछ्युं तुं शुं लीये छे? एटले शुद्ध नैगमनयने वचनें वोल्यो के हुं राज्य लउं छुं? हवे राज्य लइने पाछो वल्यो, तेवारें वली कोइयें पूछ्युं के तुं शुं लाव्यो? तेवारें शुद्धतर नैगमनयने वचनें वोल्यो के हुं राज्य लाव्यो. हवे राज्य पालवा मांम्युं, तेवारें कोइयें पूछ्युं तुं शुं पाले छे? एटले अतिशुद्ध नैगमनयने वचनें वोल्यो के हुं राज्य पालुं छुं॥ इति नैगमनयः॥ हवे व्यवहारनयना मतवालो वोल्यो के एम राज्य कहेवाय नहीं, हुंतो संपूर्ण राज्य नोगवतां नजरें देखुं, तेवारें राज्य मानुं,ते वखत संग्रहनयना मतवालो वोल्यो,एम राज्य कहेवाय नहीं जे राज्यनी सत्ताने ग्रहे, ते राज्य कहेवाय. एटले राज्यनी सत्तारूप प्रधान कामदार, शिरदार, सुनट, शीपाइ, जमादार, फोजदार, कोटवाल, हाली, मुहाली, हाथी, घोडा, रथ, पायक आदिक राजानी सत्तारूप सामग्री मले त्यारें राजा कहीयें. हवे ऋजुसूत्रनयना मतवालो वोल्यो एम राज्य कहेवाय नहीं, हुं तो नावने ग्रहण करुं छुं. एटले राज्यरूप सामग्री तो सर्व मली,

पण राज्य कार्यनी चिंतारूप हाल हुकम, न्याय, इनसाफ, वात, विचार रूप राज्य कार्यना चिंतनमां उपयोगना परिणाम वर्त्ते, ते समय राज्य कहेवाय, नहीं तो रातना राजानी परें अंधुं राज्य जाणवुं. वली कोइ बोल्यो ए राज्यकाजना उपयोगरूप चिंतननुं ज्ञान क्यां रह्युं छे? तेवारें शब्दनयनो मतवालो बोल्यो के आ शरीररूप नगर नवद्वारें करी शोभतुं अने मांहे चेतन माहाराजारूप राजा राज्य करे छे. तेमांहे ए ज्ञान रह्युं छे, तेवारें समभिरूढनयना मतवालो बोल्यो के एम राज्य कहेवाय नहीं, पण ए शरीररूप नगरमांथी उपयोग काढी अने जे एमांहे चेतन महाराजारूप राजा राज्य करे छे, तेना स्वरूपमां उपयोग लगावी, श्रेणीभावें चढे, तेवारें राजा कहीयें. हवे एवंभूतनयना मतवालो बोल्यो के एम राजा कहेवाय नहीं, पण मांहे चेतनमाहाराजारूप राजा राज्य करे छे, तेनुं स्वरूप संपूर्ण प्रगट करी, ए शरीररूप नगरनुं खोखुं इहां मूकी लोकने अंतें सिद्धपुरीमां मोक्षनगरनुं राज्य करे, तेने राजा कहीयें.

७३० हवे धर्मीजीवने समकेतनी स्थिरता करवा वास्ते जाणपणारूप सात नयनुं स्वरूप लखियें छैयें. कोइ जीवने मार्गे जातां बाण लाग्यो, एटले नैगमनयने मतें बाण हाथमां लइने लोकने कहेवा लाग्यो, जे आ बाण मुजने लाग्यो, आ बाणथकी हुं दुःख भोगवुं छुं.

एटले वली संग्रहनयना मतवालो बोल्यो के ए बाणनो कांइ वाक नथी बाण तो कोइकनो नाख्यो आव्यो पण बाणनो मारनारो कोण छे? तेने शोधी काहाढो. एटले आपणुं वैर लइयें? एम संग्रहनयने मतें तेनो संग्रह करी चित्तमां धारी राख्यो,हवे व्यवहारनयना मतवालो बोल्यो के भाई! ए बाण मारनारनो कांइ वांक नथी,पण कोइ प्रकारें ताहारा ग्रहनो वांक छे. एटले ताहारा ग्रह वांका आव्या देखाय छे, तेवारें ए धणीने तुने मारवाना परिणाम थया, तो ए विचारो शुं करे? माटे कोइ रीतें ग्रहनी पूजा करी, ग्रहनी शांति करो. एटले सुख थाय. माटे ज्योतिष, वैद्यक, जोइने चालवुं काम करवुं, ए प्रमाणें व्यवहारनयें लौकिक वचन छे.

हवे ऋजुसूत्रनयना मतवालो उपयोग दइने बोल्यो के हे भाइ! ग्रहनो कांइ वांक नथी. ग्रहतो सर्वे सम्यग्दृष्टि छे, माटे तेतो कोइने दुःख देता नथी, पण ताहारा कर्मनो वांक छे, जेवां कर्मरूप दलीयां ताहरी सत्तायें

हतां,तेवा ग्रह पण आव्या,माटे शुभाशुभरूप कर्म, सर्वेने सुखदुःख दीये छे. ए विपाक सर्वे कर्मना कस्या उदय आवे छे. एमां ग्रहनो कांइ वांक नथी. ॥गाथा॥ कर्म करे ते न करेकोय,कर्मे कीडी कुंजर होय॥ कर्मे सुख दुःख पामे सहु, कर्मे जीव भमे ते बहु ॥ १ ॥ माटे सर्व जीव, कर्मने वश छे. ए ऋजुसूत्रनुं वचन छे. ए रीतें चारनयें जाणपणुं करीसंसारमां जीव परिभ्रमणपणुं करे छे.

हवे शब्दनयना मतवालो बोल्यो के ए कर्म विचारां शुं करे? एतो जड छे,कोइने सुख दुःख देतां नथी, पण सुख दुःखनो पेदा करवावालो तथा भोगववा वालो आपणो जीव छे, जेवा परिणामें करीने जीवें कर्म बांध्यां होय, तेवा विपाक उदय आवे,माटे एमां कर्मनो कांइ वांक नथी. जीवें पोतें उद्यमें करी कर्म बांध्यां,तेवा विपाक भोगवे छे माटे वांक ताहारा जीवनो छे, पण कर्मनो वांक नथी. कर्म तो जीवनां कस्यां थाय छे, अने वली जीवज उद्यम करीने टालतो जाय. ए रीतें शब्दनयने मतवाले जीव अने अजीवरूप जे कर्म, तेनी जूदी जूदी वेहेंचण करीने देखाडी.

हवे समभिरूढनयना मतवालो बोल्यो के एमां जीवनो कांइ वांक नथी, जे वेलायें, जे कालें,जेवा केवली भगवाननें भाव दीठा होय ते वेलायें,ते कालें,तेवाज जीवना परिणाम थाय, पण ते भाव कोइना टाल्या टले नही, एटले केवली भगवानें जेवी रीतें आगल आपणा भव दीठा होय, के जे देवता,नारकी,तिर्यंच, मनुष्यना एटला भव करीने सिद्धि वरशे ते दिवस,ते घडी, ते वेला आवे,तेवारें जीव,तेवे परिणामें करी तेवा कर्मनुं ग्रहण करे,एमां जीवनो कांइ वांक नथी, केवली भगवानें दीठेला भाव कोइना टाल्या टले नजी, जेप्रमाणें केवलीयें दीठुं होय, ते प्रमाणेंज बने.

हवे एवंभूतनयना मतवालो बोल्यो के एतो सर्वे बाह्य व्यवहाररूप वात छे,परंतु निश्चयनयें करी अंतरदृष्टियें जोतां तो जीवने जन्म नथी,मरण नथी, कर्म नथी, भर्म नथी, रोग नथी, शोक नथी, राग नथी, रोष नथी,शुद्ध, चिदानंद, निर्मल, परमज्योति, ज्ञानदर्शनचारित्रमय, अक्षत, अखंड,अलिप्त, शाश्वतो, परमानंदसुखमय, सत्तायें सिद्धसमान, एवो ताहारो जीव छे,जेवो सिद्धक्षेत्रें वसे, तेवो आ शरीरमांहे अंतरदृष्टियें विचारतां भेद नथी मनमांहे ए रीतें भांगे,लागे,इंट लागे, थांभो लागे,शस्त्र लागे,कोइ निंदा करे,चाडी करे,नुकशान करे,रोग उपजे, ए आदि सर्वेकारणें,

ए रीतें साते नयेंकरी अर्थविचारतां जीव संवरन्नावमां आवे अने जेवारें संवर न्नावमां आवे, तेवारें जीव, निर्जरा करे, पण नवां कर्म न बांधे.

७४०कोइजीव एम कहे ले,के"जहागति,तहामति"ए वचन अन्यथा एकांतवादीनुं ले. अने"जहामति, तहागति"ए वचन,ते आगम प्रमाणें श्रीजिनवचन अनुसारें ले. माटे "जहागति, तहामति" ए वचनने अनुसारें सात नय उतारे ले:–कोइ जीवना रुजुसूत्रनयनेमतें शुन्नाशुन्नरूप परिणाम थया,ते शुन्नाशुन्न परिणामें करीने जीवें व्यवहारनयने मतें पुण्य पापरूप कर्मनां दलीयानुं ग्रहण कर्युं,ते कर्मनां दलीयानुं ग्रहण करीने संग्रहनयने मतें जीवें आउखारूप सत्तापणे बांध्यां,अने नैगमनयने मतें ते दलीयां अतीतकालें ग्रह्यां हतां, अने अनागतकालें न्नोगवशे तथा वर्त्तमानकालें सत्तायें रह्यां वर्त्ते ले. ए चार नयें करी द्रव्यकर्मरूप आउखानो बंध जाणवो. अने शब्दनयने मतें न्नावपणे चारे गतिने विषे जीव उपन्यो अने समन्निरूढनयने मतें जे गतिमां जीव उपजे, ते गतिना सर्व पर्यायरूप वस्तु प्रत्यें पामे.तेने तेवो कहीयें, तथा एवंन्नूतनयने मतें ते पर्यायरूप वस्तु जीवें न्नोगववा मांमी, तेने तेवो कहीयें. ए रीतें "जहामति, तहागति" तेमां सात नय कह्या.

७५० हवे अठ्ठावीश उपनयनुं स्वरूप देखाडे ले:–तिहां प्रथम द्रव्यास्तिकदश नयनुं स्वरूप कहे ले. सर्वद्रव्यमां अनेक स्वन्नाव ले,ते एक वचनथी कह्या जाय नही. तेथी मांहो मांहे संक्षेपपणे कहे ले. तिहां जे उत्पाद, व्यय, पर्याय गुणपणे द्रव्यनी गुणसत्ताने ग्रहे, ते द्रव्यास्तिकनय कहीयें. ते द्रव्यास्तिकनयना दश न्नेद ले, ते कहे ले. तिहां प्रथम सर्वे द्रव्य नित्य माटे नित्यद्रव्यास्तिक कहीयें. बीजो जे अगुरुलघु अने क्षेत्रनी अपेक्षा न करे, अने मूल गुणने पिंमीपणे ग्रहे, जेम ज्ञानादिक गुणें करी सर्वे जीव एक सरिखा ले माटे सर्वे जीव एक कहीयें, ते एकद्रव्यास्तिक जाणवो त्रीजो जे स्वद्रव्यादिकने ग्रहे,ते सत्यद्रव्यास्तिकनय चार प्रकारें ले. तेमां प्रथम सर्वे द्रव्य पोतपोताना गुणे करी सत्य ले. ते स्वद्रव्य सत्यद्रव्यास्तिक कहीयें तथा जे सर्वे द्रव्य पोतपोताना प्रदेशरूप क्षेत्रने मानें करी सहित ले,ते स्वक्षेत्रद्रव्यास्तिक तथा स्वकालद्रव्यास्तिक ते सर्वद्रव्यमां पोतपोना अगुरुलघु जाणवो तथा स्वन्नावद्रव्यास्तिक ते सर्वे द्रव्य पोतपोताना गुण पर्यायरूपन्नावें करी सहित वर्त्ते ले. ए रीतें सर्वद्रव्य, आपआपणे स्व

द्रव्य, स्वक्षेत्र स्वकाल अने स्वभावें करी सत्य छे, ए त्रीजो सत्यलक्षण द्रव्यास्तिक कहीयें. चोथो ते सर्वे द्रव्यना कहेवा योग्य गुण अंगीकार करे, ते वक्तव्यद्रव्यास्तिक जाणवो. पांचमो जे आत्माने विषे अज्ञान रह्युं छे, ते अशुद्धद्रव्यास्तिकनयने मतें छे. माटे एने अशुद्ध द्रव्यास्तिक कहीयें. छठो सर्वे द्रव्य, गुणपर्यायरूपअवयवेंकरीने सहित छे, ते अवयवद्रव्यास्तिक कहीयें. तथा सातमो सर्वे द्रव्य मूलसत्तायें एक छे, ते परमद्रव्यास्तिक कहीयें. आठमो सर्वे जीवना आठरुचक प्रदेश निर्मल छे ते शुद्धद्रव्यास्तिक कहीयें, नवमो सर्वे जीव सत्तायें असंख्यात प्रदेशरूप एक सामान्यपणे सरखा छे ते सत्ताद्रव्यास्तिक कहीयें. तथा दशमो गुणी, गुण अने द्रव्य, ते एक छे ते परमभावग्राहक द्रव्यास्तिक कहीयें. ए रीतें द्रव्यास्तिक दश नयनुं स्वरूप कह्युं.

७५६ हवे पर्यायास्तिकनयनुं स्वरूप कहे छेः—जे पर्यायने ग्रहे, ते पर्यायास्तिकनय कहीयें. तेना छ भेद छे, ते कहे छेः—प्रथम द्रव्यपर्याय ते भव्यपणुं अथवा सिद्धपणुं, बीजो द्रव्यव्यंजनपर्याय, ते पोतपोताना प्रदेशनुं मान, त्रीजो गुणपर्याय, ते एकगुण, अनेकतापणे परिणमे, जेम धर्मादिद्रव्य पोताना चलणसहायरूप एक गुणथी पण अनेक जीवपुद्गलने सहाय करे छे, ते रीतें सर्वत्र जाणी लेवुं. चोथो गुणव्यंजनपर्याय, ते एक गुणना घणा भेद छे. पांचमो स्वभावपर्याय ते अगुरुलघुपर्याय सर्वद्रव्यमां जाणवो. ए पांच पर्याय सर्वद्रव्यमां छे,अने छठो विभावपर्याय ते एक पुद्गलद्रव्यमां छे, एटले पुद्गलना जे खंध ते सर्वे विभावपर्यायरूप जाणवा. ए छ पर्यायास्तिकनय कह्या, अने आगल दश द्रव्यास्तिक कह्या, सर्व मली शोल भेद थया.

हवे नैगमादि सात नयनां भेदो सहित स्वरूप कहे छे.

७५७ तिहां प्रथम नैगमनयनुं स्वरूप कहे छे. नहिं छे एक गम जेने विषे ते नैगम एटले एक अंशें जेमां गुणपणुं नीपन्युं होय, तेमां वस्तुपणुं माने, तेने नैगमनय कहीयें. तेना त्रण भेद छे. ते आवी रीतेंः—श्रीमहावीरस्वामीनो आगल जन्म थयो हतो, तेने घणो काल व्यतीत थइ गयो, पण हमणां पर्युषणमां जन्मकल्याणिकादिनो महोत्सव करियें, अथवा दीवालीने दिवसें निर्वाण कल्याणिकनो महोत्सव करियें, ते सर्वे वर्त्तमानें अतीतारोपणनामें नैगमनयनो प्रथम भेद जाणवो. तथा अनागतकालें

श्रीपद्मनाभजी तीर्थंकर थाशे, तेनो आज जन्मकल्याणिकादिक भक्ति म होत्सव करीयें, ते सर्वे वर्त्तमान अनागतारोपण नामें नैगमनयनो बीजो भेद जाणवो, तथा हमणां वर्त्तमानें जे कामनो आदर करी अंगीकारकरीयें, ते वर्त्तमाननैगमनयनो त्रीजोभेद जाणवो. ए नैगमनयना त्रण भेद कह्या.

७६१ हवे संग्रहनयनुं स्वरूप कहे छे. जे सत्ताने ग्रहे, ते संग्रहनय जाण वो जे कारणें एक नाम लीधाथी सर्वगुण पर्याय परिवार सहित आवे, ते संग्रहनय जाणवो. तेना बे भेद छे. एक सामान्यसंग्रह अने बीजो अशेष संग्र ह, तिहां द्रव्य एवुं नाम लेतां थकां जीव अजीवपणानो कांइ भेद पड्यो न हीं, ते सामान्यसंग्रह अने बीजो जे विशेषता अंगीकार करीयें, जेम के जीव द्रव्य एटलुं कह्युं तेवारें अजीव सर्वे टली गया, तेने विशेष संग्रह कहीयें, वली पण एनुं स्वरूप कहे छे. जेम के मात्र घट एवुं नाम लेतां सामान्य संग्रह कहीयें. अने विशेषता गुण अंगीकार करीने बोलीयें, जेम के मा टीनो घट एवुं नाम लीधाथकी त्रांबा, पीतल, लोढा, रूपा, सोना प्रमुखना घट सर्व टली गया, ते विशेषसंग्रह कहीयें. ए संग्रहनयना बे भेद कह्या.

७६३ हवे व्यवहारनयनुं स्वरूप कहे छेः—जे बाह्यस्वरूप देखीने भेद वेहेंचे, एटले बाह्य दीसता गुण देखे, तेवा माने, पण अंतरंग परिणाम तथा सत्ताने न माने, केम के ए नयमां आचारक्रियाप्रमुख छे, पण अंतरंग परिणामनो उपयोग नथी, एटले जेम नैगम अने संग्रह ए बे नय ज्ञानरूप ध्यानना परिणाम विना अंश तथा सत्ताग्राहि छे, तेम ए नयमां करणी मुख्य छे. ए व्यवहारनयना बे भेद छे. एक शुद्धव्यवहार. बीजो अशुद्धव्यवहार, ते अ शुद्धव्यवहार, पहेले गुणठाणे छे. तेना पांच भेद छे, ते शिष्यने समजाववा सारु जूदा जूदा देखाडे छे. एक अशुद्धव्यवहार, बीजो शुभव्यवहार, त्री जो अशुभव्यवहार, चोथो उपचरितव्यवहार, पांचमो अनुपचरितव्यवहार, ए पांच भेद अशुद्धव्यवहारना जाणवा, अने बीजो शुद्धव्यवहारनय जे छे' ते चोथा गुणठाणाथी मांडीने यावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा पर्यंत जाणवो.

७६५ हवे रुजुसूत्रनयनुं स्वरूप कहे छे. (रुजु के०) सरल एटले अतीत काल अने अनागत कालनी अपेक्षा न करे, पण वर्त्तमान कालें जे वस्तु जेवे गुण परिणामें वर्त्ते, ते वस्तुने तेवे गुण परिणामें माने, तेथी ए नय परिणामग्राही छे एटले कोइ जीव गृहस्थ छे, पण तेना अंतरंग परिणाम

साधु समान वर्त्ते ठे, ते जीवने साधु कहे अने कोइ जीव साधुने वेशें बे तथापि तेना मनना परिणाम विषयाजिलाष सहित ठे, तो ते जीव अव्रतीज ठे, एम माने, ए रुजुसूत्रनयना बे जेद ठे. एक सूक्ष्मरुजुसूत्र अने बीजो स्थूल एटले वादररुजुसूत्र, तिहां जे सदाकाल सर्वे वस्तुमां एक वर्त्तमान समय वर्त्ते ठे, एटले के जे जीव अतीतकालें अज्ञानी हतो अने अनागतकालें ज्ञनीजावें ज्ञानी थाशे, ते बेहुकानी अपेक्षा न करे, परंतु एक वर्त्तमान समयें जे जेहवो होय तेने तेहवो कहे, ए सूक्ष्मरुजुसूत्र कहीयें. अने वाह्य महोटा परिणामने ग्रहण करे, ते स्थूलरुजुसूत्र कहीयें.

७६६ हवे शब्दनयनुं स्वरूप कहे ठेः–एटले जे वस्तु गुण अथवा निर्गुण होय ते वस्तुने नाम कही बोलावीयें एटले जाषावर्गणाथी शब्दपणे वचन गोचर थाय, ते शब्दनय, जे कारणें अरूपीड्व्यनें वचनथी कहेवां,ते शब्द नय कहीयें. इहां जे शब्दनो अर्थ कहे ठे, ते वस्तुमां वस्तुपणुं पामे, तेवारें ते वस्तु शब्दनयें कहीयें.एटले चेष्टा करतो ते घट जाणवो.ए शब्दनयमां व्याकरण नीपन्यां अने बीजा पण सर्वशब्द लीधा, ते शब्दनयना नाम, स्थापना, ड्व्य अने जाव, ए चार निक्षेपाने नामें चार जेद ठे. श्रीअनुयोग द्वारमां "जठ य जं जाणिज्जा" ए पूर्वोक्त गाथायें चार निक्षेपा जाणवा. इहां पहेलो जावनिक्षेपो ते धुरला चार नयमध्यें ते ड्व्य ठे अने जाव निक्षेपानां ते शब्दादिक रूप ठे, पण ते निक्षेपानी परिणतिरूप वस्तु ते त्रण निक्षेपे वस्तु आदि चार नयमां ठे अने जावनिक्षेपे वस्तु ते शब्दादि नय ठे, एम सद्दहजो. ए रीतें ए शब्दनयनो एक जेद कहीयें. ए शब्दनय कह्यो.

७६७ हवे ठठा समजिरूढनयनुं स्वरूप कहे ठेः–जे वस्तुना केटलाएक गुण प्रगट्या ठे अने केटलाएक गुण नथी प्रगट्या परंतु जे नथी प्रगट्या ते पण अवश्य प्रगटशे एटले एक अंशें ठेठी वस्तुने पण पूर्ण कहे, जेम तेरमे गुणठाणे केवलीजगवानने सिद्ध कहे, ते समजिरूढनय एक जेदें जाणवो.

७६८ हवे सातमा एवंजूत नयनुं स्वरूप कहे ठेः–जे वस्तु पोताने गुण संपूर्ण ठे अने पोतानी क्रिया करे ठे, तेने वस्तु कहीयें, ते वस्तुना नय गुणपर्याय तथा वस्तुधर्म सर्वे प्रगट प्रवर्त्तता होय, तेने वस्तु कहीयें, जेम मोक्षस्थानकें जे पहोतो होय ते जीवने सिद्ध कहे, तथा जेम पाणीयें जर्यो स्त्रीना माथा उपर आवतो जलधारणक्रिया करतो होय तेने घडो कहे, ते एवंजूत

नय जाणवो. तेनो एकभेद छे. ए सर्व मली नैगमना त्रण, संग्रहना बे, व्य वहारना बे, ऋजुसूत्रना बे, तथा शब्दादिक त्रणेना त्रण, मली बार भेद थया, ते पूर्वोक्त शोल भेद साथें मेलवीयें, तेवारें अठावीश उपनय थाय.

३३७ हवे ए सात नयना श्रीविशेषावश्यकने अनुसारें भेद कहे छे. नैगम ना दश, संग्रहना बार, व्यवहारना चौद, ऋजुसूत्रना छ, शब्दना सात, सम भिरूढना बे अने एवंभूतनो एक, एम सर्व मली बावन भेद जाणवा. वली नयचक्रसारमध्यें ए सात नयना सात सो भेद कह्या छे, ते पण जाणवा. हवे स्याद्वादरत्नाकरथी नयनुं स्वरूप लखीयें छैयें. (नय के०) पमाडीयें एटले जेणें श्रुतज्ञानें विषयप्रमाण कीधो जे पदार्थनो अंश, तेहथी इतर जे बीजो अंश, ते अंशथी उदासीपणुं तेने जे पडिवजवावालानो अभि प्रायविशेषनय ते नय कहीयें. एटले वस्तुना अंशने उदासीपणे ग्रहे, ते नय कहीयें अने एक अंशने मुख्य करी बीजा अंशने उछापे, ते नयाभास कहीयें. ते नयना बे भेद छे. एक द्रव्यार्थिक, बीजो पर्यायार्थिक, ए रीतें नयनुं स्वरूप कह्युं, अने (पमाणेहिं के०) प्रत्यक्ष अने परोक्ष, ए बे प्रमाण नुं स्वरूप, आगल श्रीसिद्धचक्रजीना यंत्रमध्ये कह्युं छे, ते प्रमाणें जाणवुं.

अने जो "अप्पा सायवायभावेणं" एटले (अप्पा के०) आत्मा तेने (सायवाय के०) स्याद्वादरूप नित्यानित्यादि आठ पक्षें करी (भावेणं के०) उलखीने जेणें पोताना आत्मानी प्रतीति करी छे. इहां शिष्य पूछे छे के स्याद्वादररूप नित्यानित्यादि आठ पक्षें करी पोताना आत्मानी प्रतीति केवी रीतें थाय? तेवारें गुरु कहे छे जे स्याद्वादमंजरीमां कह्युं छे के "नि त्यानित्याद्यनेकधर्मशबलैकवस्त्वभ्युपगमत्वं स्याद्वादत्वं ॥ १ ॥

शिष्यः—ए नित्य अनित्यादि आठ पक्षें करी जीवनुं स्वरूप केम जाणीयें?

गुरुः—व्यवहारनयने मतें उदयभावने योगें करी जे गतिमां जीव वर्त्ते छे, ते गतिमां नित्य छे अने समय समय आउखुं घटे छे, माटे अनित्य कहीयें. पण ते अनित्यपणामां पोतें नित्यपणे वर्त्ते छे, ए रीतें नित्यमां अनित्य अने अनित्यमां नित्यपक्षनो विचार व्यवहारनयने मतें जाणवो.

हवे निश्चयनयने मतें नित्य अनित्य पक्षें करी जीवनुं स्वरूप देखाडे छे. निश्चयनयने मतें जीवना ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य, ए चार गुण तथा अव्याबाध अमूर्त्ति अने अनवगाह, ए त्रण पर्याय नित्य छे अने एक अगुरु

लघु पर्याय, जीवने सर्वगुणमां हानिवृद्धिरूप उपजवुं, विणसवुं करे छे. ते अनित्य छे तेमां ए ज्ञानादि चार गुण ते नित्यपणे वर्त्ते छे, एटले ए नित्य मां अनित्य अनित्यमां नित्यपक्षनो विचार निश्चयनयने मतें जाणवो.

हवे व्यवहारनयने मतें एक अनेक पक्षें करी जीवनुं स्वरूप देखाडे छे. व्यवहारनयने मतें उदयजावने योगें करी जे गतिमां जीव वर्त्ते छे, ते गतिमां एक छे,पण कोइनो बेटो, कोइनो बाप, कोइनो काको, कोइनो मामो, कोइनो जाइ, कोइनो जत्रीजो,एम अनेक प्रकारें जीवमां बेटा बापादिकपणुं रह्युं छे, तेथी अनेक पण कहीयें. परंतु ए बेटा, बाप, जाइ, जत्रीजापणामां पोतापणुं ते एक वर्त्ते छे,एटले ए एकमां अनेक अने अनेकमां एक पक्षनो आचार व्यवहारनयने मतें जाणवो.

हवे निश्चयनयने मतें जीवमां एक अनेक पक्ष देखाडे छे. एटले निश्चयें करी सर्व जीवनो धर्म सत्तायें एकरूपसरखो छे माटे सर्वजीव एक कहीयें अने गुण, पर्याय, तथा प्रदेश अनेक छे, एटले गुण अनंता छे, पर्याय अनंता छे अने प्रदेश असंख्याता छे,माटे अनेक पण कहीयें. तेमाटे ए एकमां अनेक छे अने ए गुणपर्याय तथा प्रदेश अनेक छे, पण तेमां जीवपणुं एकसरखुं छे, माटे अनेकमां एक पण कहीयें. ए रीतें निश्चयनयने मतें करी एकमां अनेक अने अनेकमां एक पक्षनो विचार जाणवो.

हवे व्यवहारनयने मतें जीवमां सत् असत् पक्ष देखाडे छे. व्यवहारनयने मतें जीव पोतें पोतानां द्रव्य, क्षेत्र, काल, जावपणे करीने सत् छे, अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल अने परजावपणे करीने असत् छे, एटले व्यवहारनयने मतें द्रव्यथकी जीवद्रव्य,जे गतिमां पोतें बिराजमान थको वर्त्ते छे अने क्षेत्रथकी जेटलुं क्षेत्र पोतें अवगाही एटले मर्यादारूप पोतानुं करीने रोक्युं छे,ते जाणवुं. तथा काल थकी समयरूप पोताना आउखा प्रमाणें काल वर्त्यो जाय छे, तथा जावथकी सर्व जीव, पोतपोताना शुजाशुजरूप जावमां रह्या वर्त्ते छे, एवी रीतें व्यवहारनयने मतें सर्व जीव पोतपोताना स्वद्रव्य,स्वक्षेत्र,स्वकाल अने स्वजावें करीने सत् छे, अने परद्रव्य, परक्षेत्र,परकाल अने परजावपणे करी असत् छे, पण ए असत्पणामां पोतानुं सत्पणुं वर्त्ते छे,एटले ए सत्मां असत् अने असत्मां सत् पक्षनो विचार व्यवहारनयने मतें करी जाणवो.

हवे निश्चयनयें करी जीवमां सत्असत् पक्ष देखाडे छे. निश्चयनयने मतें जीव पोतानां स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वभावपणे करीने सत् छे, अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल अने परभावपणे करीने असत् छे. एटले ए निश्चयनयने मतें जीवमां स्वद्रव्य ते ज्ञानादिक गुण जाणवा अने स्वक्षेत्र ते जीव, पोतें पोतानां असंख्यात प्रदेशरूप क्षेत्र अवगाही रह्यो छे अने स्वकाल ते पोतानो अगुरुलघु पर्याय सदाकाल हानिवृद्धिरूप उपजवुं विणसवुं करे छे. तथा स्वभाव ते पोताना गुणपर्याय तेणें करीने जीव सत् छे अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल अने परभावपणे करी जीव, असत् छे, पण ए असत्पणामां पोतानुं सत्पणुं वर्त्ते छे. एटले सत्मां असत् अने असत्मां सत् पक्षनो विचार निश्चयनयने मतें करी जाणवो.

हवे निश्चय अने व्यवहारनयने मतें करी वक्तव्य अवक्तव्यरूप पक्षें करी जीवनुं स्वरूप देखाडे छे. एटले उदयभावने योगें करी व्यवहारनयने मतें जे जीव पहेला गुणठाणाथी मांडी यावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा पर्यंत वर्त्ते छे, ते जीवना जेटला गुण केवली भगवानना प्ररूप्यामां आवे, ते वक्तव्य जाणवा अने जे केवली भगवानना प्ररूप्यामां न आवे, ते अवक्तव्य जाणवा. तथा निश्चयनयने मतें सिद्धपरमात्मा गुणठाणा वर्जित लोकने अंतें विराजमान वर्त्ते छे, तेना जेटला गुण, केवली भगवानना प्ररूप्यामां आवे, ते वक्तव्य अने जे केवलीभगवानना प्ररूप्यामां न आवे, ते अवक्तव्य जाणवा. ए रीतें निश्चयनयने मतें वक्तव्य अवक्तव्यरूप पक्षे करी जीवनुं स्वरूप जाणवुं. तथा (जाणेइमोसरूवं के०) एवी रीतें स्वरूप जाणपणारूप जेणे उलखाण करी छे. (सम्मद्दिठिउएसोनय के०) ते जीव सम्यग्दृष्टि जाणवा.

शिष्यः—समकेतना केटला प्रकार छे ?

गुरुः—समकेतना नवप्रकार जाणवा. तिहां प्रथम द्रव्यसमकेत, बीजुं भावसमकेत, त्रीजुं व्यवहारसमकेत, चोथुं निश्चयसमकेत, पांचमुं निसर्गसमकेत, छठुं उपदेशसमकेत, सातमुं रोचकसमकेत, आठमुं कारकसमकेत अने नवमुं दीपकसमकेत, ए नव प्रकारें करी समकेतनुं स्वरूप जाणवुं.

७७१ शिष्यः—द्रव्यसमकेत अने भावसमकेत कोने कहीयें ?

गुरुः—तीर्थंकरना वचन उपर आस्ता प्रतीति होय, जे श्रीतीर्थंकरें व वचन कह्यां, ते तहत्ति करी माने. पण परमार्थ न जाणे अने जीवादिक नव

पदार्थना ज्ञेदाज्ञेद न जाणे,तथा कुलाचारें देवयात्रा, संघ, साहम्मीवत्सल, पूजा, प्रज्ञावनादि करणी करे अने केवलीयें कह्युं, ते वचन तहत्ति करी माने, तथा देव ते अरिहंत, गुरु ते सुसाधु, धर्म ते केवलीनो प्ररूप्यो, एवी सद्दहणा जेने होय, ते जीव, ऊव्यसमकेती जाणवा ॥ १ ॥

अने ज्ञावसमकेती ते आगल ऊव्य समकेतमां जे गुण कह्या, ते गुणें करी सहित तथा जीवादिक नव तत्त्वना परमार्थरूप ज्ञेदाज्ञेद जाणे,एटले नव तत्त्वनुं स्वरूप हेय, ज्ञेय अने उपादेय पणे जाणे, तथा वली नव तत्त्वनुं स्वरूप, साधक, बाधक अने सिद्धरूप,ए त्रण दशायें करी जाणे,तथा वली ए नव तत्त्वनुं स्वरूप, कर्त्ता,कारण अने कार्यरूप त्रिज्ञंगीयें करी जाणे,अने वली ए नवतत्त्वनुं स्वरूप, स्वाज्ञाविक विज्ञाविकपणे जाणे,तथा वली ए नव तत्त्वनुं स्वरूप, गुणीगुणपणे करी जाणे, वली ए नव तत्त्वनुं स्वरूप, रूपी अरूपीपणे जाणे. जीवसत्ता, ऊव्यगुण पर्यायरूप जाणे. अजीवसत्ता, ज्ञावकर्म,ऊव्यकर्म अने नोकर्मरूप परमार्थ जाणे.ए रीतें अनेक प्रकारें जीव अजीवरूप नव तत्त्वना ज्ञेदाज्ञेदरूप विचार बे, ते प्रत्यें जाणे, तथा षड्ऊव्यना अनंता गुण अने अनंता पर्याय तेनुं समय समय उत्पाद व्ययरूप पलटणपणुं थइ रह्युं बे, तेनी अंतरंग जाणपणा ज्ञासनरूप प्रतीति करे. अने कार्यधर्म कारण धर्मरूप अंतरंग प्रतीति करी साध्य एक,साधन अनेक, ए रीतें साधन करे, ते जीव, ज्ञावसमकेती जाणवा ॥ २ ॥

७७२ शिष्यः—व्यवहारसमकेत अने निश्चयसमकेत कोने कहीयें ?

गुरुः—व्यवहार समकेत ते शुज्ञलक्षणरूप आचरणायें करी सहित अने उपादानपणुं जाणे, उपादान बाह्य कारणपणे जाणे, उपादान अंतर कारणपणे जाणे, उपादान कार्यपणे जाणे तथा कर्मसत्ताने बता अबतापणे जाणे,जीवसत्ताने बता अबतापणे जाणे,अने संवेगादिक समकेतना सडशठ बोलमांहेला एकशठ बोलने गुणें करी क्षयोपशमसमकित तथा उपशमसमकितवंत जे जीव होय, तेने व्यवहार समकेत जाणवुं. एटले उपरथी शुज्ञ आचरणारूप लक्षण देखीयें,ते जीवने व्यवहारसमकेत कहीयें. ए समकेत आव्युं थकुं जाय, ते माटे ए व्यवहारसमकेत जाणवुं. जो आव्युं थकुं न जाय, तो ते निश्चयनयसंबंधि निश्चयसम्यक्त्व कहेवाय ॥ ३ ॥

अने निश्चयसमकित ते समकितना एकशठ तथा षट् बोलना जाणपणा

ज्ञासनरूप गुणें करी सहित सात प्रकृतिने क्षयें क्षायिक समकेतवंत जीवने अंतरंग ज्ञासनरूप ज्ञान, दर्शन, चारित्रनेविषे शुद्धपरिणाम वर्त्ते, ते जीवने निश्चयसमकित जाणवुं. एटले ए समकेत आव्युं थकुं जाय नहीं. माटे एने निश्चयसमकित कहीयें अने क्षायोपशम तथा उपशम ए बे समकेत आवीने पाछां जतां रहे छे, तेथी ते व्यवहार समकेतमां गण्यां अने क्षायिक समकेत जो जीवने आव्युं ते फरी पाछुं जायज नही, तेथी ए समकेत निश्चयमां गणाय छे ॥ ४ ॥

७७३ शिष्यः—निसर्गसमकेत अने उपदेशसमकेत कोने कहीयें ?

गुरुः—निसर्ग समकेत ते जे पोताने क्षयोपशमें गुरुना उपदेश विना निश्चय व्यवहारनयें करी नैगमादि सात नयें करी तथा नामादिचार निक्षेपे करी जीव अजीवरूप नव तत्त्व षड्द्रव्यनुं स्वरूप जाणे अने निश्चय व्यवहारनयें करी स्याद्वादरूप नित्य अनित्यादि आठपक्षें करी जीव स्वरूपनी प्रतीति करे,एवी रीतें जाणपणारूप निश्चयें करी नव तत्त्वमां आश्रवरूप पांच तत्त्व छे,ते उपर त्यागबुद्धि अने संवरनिर्जरारूप शुद्धगुण, तेनुं आदरवुं करे,तथा श्रीवीतरागना कह्या जे ज्ञाव नवतत्त्व षट्द्रव्यरूप तेना स्वरूपने द्रव्य,क्षेत्र, काल, ज्ञावथी जाणे. तथा नामादि चार निक्षेपे करी पोतानी बुद्धिथी सर्वे वस्तुनुं प्रमाण करे, साचुं करी सद्दहे, ते निसर्ग समकित जाणवुं. एटले जेम असोचा केवलीने गुरुना उपदेश विना समकेतनी प्राप्ति थाय छे ते निसर्गसमकेत जाणवुं ॥ ५ ॥

हवे उपदेशसमकेत कहे छे. तिहां आगल निसर्ग समकेतमां जे ज्ञाव कह्या,ते सर्वज्ञाव गुरुना उपदेशथी जाणीने तेने साचा करी सद्दहे, अंतरंग प्रतीति सहित माने, ते जीवने उपदेशसमकेती जाणवो ॥ ६ ॥

७७४ शिष्यः—रोचकसमकेत तथा कारक समकेत कोने कहीयें ?

गुरुः—रोचक समकेत ते श्रीवीतराग देवनी आज्ञाने रुचि सहित तहत्ति करी साची सद्दहे,एटले जे ज्ञगवंतें षड्द्रव्यनुं स्वरूप नयनिक्षेपा प्रत्यक्षादि प्रमाणें कह्युं छे,तेने तहत्ति करी माने तथा सात नयमां चार निक्षेपा उत्सर्ग अपवादें करी जाणे तथा त्रण निक्षेपामां सात तय ते पण उत्सर्ग अपवादें करी जाणे,लौकिक धर्म जाणे,लोकोत्तर बाह्य कारणरूप धर्म जाणे,लोकोत्तर अंतर कारणरूप धर्म जाणे, लोकोत्तर अंतरकार्यरूप धर्म जाणे,

तथा सिद्धनुं स्वरूप, निगोदनुं स्वरूप जेम कह्युं छे, तेम सद्दहे, एटले वीत रागनी आज्ञा प्रमाणें यथार्थ उपयोगें ज्ञासन थाय, तेने हर्षें करी ते उप योगमध्ये निराधार ज्ञासन रमण अनुज्ञवनी एकता यथार्थ उपयोगथी जाणी आत्मधर्म प्रगट करवानी रुचि घणी उपजे, पण उदयज्ञावने योगें करी संसार अवस्थामां खूतो थको नीकली शके नही, माटे अनेक प्रकारें जूरणा करे, विषय कषायना फल विष समान जाणी, धर्म साधवाने रुचि घणी करे, पण ए उपायथकी बुटी शके नही, ते जीवने चोथे गुणठाणे रोचकसमकेत जाणवुं ॥ ७ ॥

अने कारक समकेत तो जे आगल रोचक समकेतमां ज्ञाव कह्या, तेणें करी सहित तथा संसारथकी निवृत्ति करी छे, अने प्रवृत्तिरूप जे साधुनी शुद्धक्रिया छे ते साचवे छे,आचरे छे, तेनेविषे प्रेम सहित उपयोग वर्त्ते छे, सिद्धांतने मतें श्री वीतराग देवनी आज्ञा प्रमाणें चाले छे, ते जीव, बठे सातमे गुणठाणें वर्त्तता कारकसमकेतना धणी जाणवा. एटले जेवुं जाणे, तेवुंज अंगीकार करे, तेने कारकसमकेत कहीयें ॥ ८ ॥

७७५ शिष्यः–दीपकसमकेत कोने कहीयें ?

गुरुः–(दीपक के०) दीवो एटले जेम दीवो आगल उद्योत करे अने पा छल जोतां दीवाने पोताने अंधारुं रहे,ए दृष्टांतें अहिंयां पण अज्ञव्य जीव, लोकने उपदेशरूप प्रतिबोध आपीने समकेतरूप उद्योत करे, बीजाने धर्म पमाडी संसारथकी तारे,पण पोताने मिथ्यात्वरूप अंधारुं टले नही. जेम त्रांबुं, लोढुं होय ते रसकूपिकादिक औषधिने योगें करी सोनापणुं पामे, पण पीतलने अनेक औषधियोना योग मले, तोपण पीतलपणुं पालटीने सोनापणुं नीपजे नही. एटले पीतलने जेम जेम अग्निमां नाखे, तेम तेम कालुं थाय, तेम अज्ञव्यजीव ते पीतल सरखा जाणवा. अने ज्ञव्यजीव त्रांबा अने लोढा सरखा जाणवा. केम के ज्ञव्यजीव तो कारण सामग्री म ले कोइक दिवसें सिद्धपणुं पामे,पण अज्ञव्य न पामे.माटे ए दीपक समकेत जाणवुं.एरीतें नव प्रकारें समकेतनुं स्वरूप विचारवुं॥इति समकेताधिकारः ॥

७७६ हवे नैगमादि सात नयमध्ये जीव, कर्मनो कर्त्ता कया नयें करी क हीयें? तथा जीव, कर्मनो ज्ञोक्ता कया नयें करी कहीयें? तथा जीव,स्वरूप नो कर्त्ता कया नयें करी कहीयें ? तथा जीव, स्वरूपनो ज्ञोक्ता कया नयें

करी कहीयें? ए चार प्रश्नार्थ साते नयें करी कहेवा. वली जीव, कर्मनो अकर्त्ता कया नयें करी? तथा जीव, कर्मनो अन्नोक्ता कया नये करी? तथा जीव, स्वरूपनो अकर्त्ता कया नयें करी? तथा जीव, स्वरूपनो अन्नोक्ता कया नयें करी जाणवो? ए चार प्रश्नार्थ पण साते नयें करी जाणवा. एटले ए बे चउन्नंगीमां आठ प्रश्न कह्या, तेनो परमार्थ नैगमादि सात नयें करी जाणवो, तथा नवमा उत्सर्ग अपवादरूप मार्गें करी नय संयुक्त निक्षेपा लगाडवा, तेनो प्रश्न. एटले नैगमादि सात नयमध्यें नामादि चार निक्षेपा ते उत्सर्गे अने अपवादें करी केम जाणीयें? तथा दशमा नैगमादि सात नय मध्ये चोथा न्नावनिक्षेपा विना शेष नामादि त्रण निक्षेपा ते पण उत्सर्गे अने अपवादें करी केम जाणीयें? ए दश प्रश्ननो अर्थ सातनयें विचारीने पाठो उत्तर वाले, ते जैनमती पंकितशिरोमणि, सर्वशास्त्रनो वेत्ता, स्याद्वाद रूप अनेकतानयें करी सर्वपदार्थनो जाण, सर्वज्ञपुत्र जाणवो. अने ए प्रश्ननो अर्थ विचारतां जे कोइ जीव मुंजाशे, ते ज्ञानहीन अल्पबुद्धिनो धणी ज्ञानरूप लक्ष्मीयें करी रहित पामर जन तेने सर्वज्ञपुत्र न कहेवो.

शिष्यः—जीवने कर्मना कर्त्तापणामां अने न्नोक्तापणामां नैगमादि सात नय मांहेला केटला नय पामीयें?

गुरुः—जिणन्नद्रगणिक्षमाश्रमणजी कहे छे जे चार द्रव्यनय छे, अने त्रण न्नावनय छे, माटे जीवने द्रव्यकर्मरूप कार्यना कर्त्तापणामां चार नय जाणवा अने ते द्रव्यकर्म जेवारें स्थितिपाकें उदयरूपन्नावें जीव न्नोगवे, तेमां उपरला त्रण नयनी गवेषणा जाणवी. ए रीतें जीवने कर्मना कर्त्ता न्नोक्ता पणामां साते नय पामीयें. तेनुं स्वरूप कहे छे. कोइ जीव, ऋजुसूत्रनयनें मतें शुन्नपरिणामें करी व्यवहारनयने मतें पुण्यरूप दलीयांने ग्रहण करे, ए रीतें पुण्यरूप दलीयांने ग्रहण करी ते जीवें संग्रहनयने मतें देवन्नवना आउखारूप प्रकृतिपणे दलीयां सत्तायें बांध्यां अने ते नैगमनयने मतें अतीतकालें पण हतां तथा अनागतकालें स्थितिपाकें उदयरूपन्नावें न्नोगवशे अने वर्त्तमानकालें सत्तायें रह्यां वर्त्ते छे, ते नैगमनयने मतें त्रणे काल एकरूपपणे कहीयें. ए रीतें जीवें ए चार नयें करी द्रव्यकर्म रूप देवतानुं आउखुं बांध्युं, ते प्राणी द्रव्यदेव जाणवा, अने न्नावदेव तो जेवारें ते जीव, शब्दनयने म

तें देवतापणे उपन्यो, तेवारें भावदेव कहीयें. एवुं सांभली शिष्य बोल्यो के शब्दनयना मतवालो तो चार निक्षेपे करी वस्तुने प्रमाण करे छे. माटे देवतामां चार निक्षेपा केम जाणीयें? तेवारें गुरु कहे छेः—प्रथम देव एवुं नाम ते नामथकी देव, बीजो देव एवा अक्षर लखवा, ते असद्भावस्थापना अने देवरूपें मूर्त्ति स्थापवी, ते सद्भावस्थापना अने चार नयें करी देवतानुं आउखुं बांधे, तेने भव्यशरीरआश्रयी द्रव्यदेव कहीयें. तथा जे शब्दनयने मतें देवतापणे उपन्या, तेने उदयभावरूप भावदेव जाणवा. ए देवतामां चार निक्षेपा कह्या. हवे समभिरूढनयने मतें देवभवना सर्व पर्यायप्रवर्त्तनारूप वस्तुप्रत्यें पामे, तेने देव कहीयें. तथा एवंभूतनयने मतें ते देवभवना पर्यायरूप वस्तु सर्वे तखतें बेठा भोगवे, ते देव कहीयें. ए रीतें सात नयें करी जीवने कर्मनुं कर्त्ता भोक्तापणुं जाणवुं.

शिष्यः—जीवने स्वरूपना कर्त्तापणामां केटला नय पामीयें?

गुरुः—जे कार्य करवुं, ते साते नयें मली नीपजे छे, तेवारें ते वस्तु बरोबर पाकी प्रमाण जाणवी. ए जिनमत अनुसारें वचन छे, पण एमां एके नये अधूरी वस्तुमां वस्तुपणुं माने, ते जिनमत विरोध वादीनुं वचन जाणवुं. माटे इहां जीवने स्वरूपनो कर्त्ता ते सिद्धिरूप कार्यनो कर्त्ता जाणवो, ते सिद्धिरूप कार्य तो साते नयें मलीने नीपजे छे, माटे साते नयें करी सिद्धिरूप कार्य देखाडे छे. तिहां कोइ सम्यग्दृष्टि जीव जाग्यो थको विवेकरूप नेत्रें करीने अंतरदृष्टियें जोतो पोतानुं स्वरूप नीपजावे, एटले संग्रहनयने मतें सिद्धसमान पोताना आत्मानी सत्ता असंख्यात प्रदेशरूप छे, ते ओलखीने जेणें प्रतीति करी छे अने नैगमनयने मतें आठ रुचकप्रदेश जीवने सदाकाल सिद्धसमान निर्मला वर्त्ते छे, तेणें करी अंशथकी पोताना आत्माने सिद्धसमान करी जाणे छे, तेनी आचारांगनी टीकामां साख छे, अने व्यवहारनयने मतें उपरथकी गुणठाणां माफक साध्य चोखुं राखीने पोतानी करणी करतो जाय छे, तथा ऋजुसूत्रनयने मतें संसार उदासी त्याग वैराग्यरूप उदासभावें परिणाम वर्त्ते छे. तथा शब्दनयने मतें जीव अजीव रूप स्वसत्ता परसत्तानी वेहेंचण करी जेवी हती, तेवीज शुद्ध निर्मलपणे जेणें पोताना आत्मानी अंतरंग भासनरूप प्रतीति करी छे, ते जीव, समभिरूढनयने मतें शुद्ध शुक्लध्यान रूपातीत परिणामरूप क्षपक श्रे

णीयें चढे, तेवारें घातीकर्मने क्षयें ज्ञानादि अनंतचतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करे अने एवंभूतनयने मतें ते जीव, ज्ञानावरणादि अष्ट कर्मने क्षयें अष्टगुण संपन्न उत्कृष्ट आनंदमय एवुं पोताना आत्मानुं सिद्धिरूप कार्य करवुं, तेनो कर्त्ता जाणवो. ए रीतें सात नयें करी जीवने स्वरूपनुं कर्त्तापणुं कह्युं, पण एमां, एके नयें अधूरे जे जीवमां स्वरूपनुं कर्त्तापणुं माने, तेनुं वचन अन्यथा अप्रमाण छे.

शिष्यः—जीवने स्वरूपना भोक्तापणामां केटला नय पामीयें?

गुरुः—कर्त्ता तेहीज भोक्ता ए न्यायमार्ग छे, एटले जे करे, तेहीज भोगवे, माटे पोताना स्वरूपनो कर्त्ता छे, तो भोक्तापणुं पण एनेज जोइयें. तेमाटे आगल जीवने स्वरूपना कर्त्तापणामां साते नय देखाड्या तो स्वरूपना भोक्तापणामां पण साते नय जोइयें. एटले इहां चोज छे जे कर्त्तापणामां सात नय लगाव्या, तेतो कारण रूप जाणवा अने कह्युं छे के “कार्यें सिद्धे कारणताव्ययः” ए भावार्थ जोतां तो कार्यनी सिद्धि नीपजे, तेवारें कारणपणानो (व्यय के०) नाश जाणवो. अने सिद्ध परमात्मायें तो कारणरूप साते नयें करी पोतानुं संपूर्ण कार्य कर्युं छे, माटे कारणरूप सात नयनो पण सिद्धजीवमां नाश जाणवो. ए परमार्थ छे. हवे कार्यरूप साते नयें करी सिद्धना जीव अव्याबाधरूप पोताना स्वरूपने भोगवे छे, ते भोक्तापणामां सात नय देखाडे छे. तिहां प्रथम नैगमनयने मतें सिद्धपरमात्माने आठ रुचक प्रदेश अतीतकालें निरावरण हता, अने अनागतकालें पण निरावरण वर्त्तशे तथा वर्त्तमानकालें पण निरावरण वर्त्ते छे, ए रीतें त्रणे काल एकरूप जाणवा. तथा संग्रहनयने मतें पोताना आत्मानी सत्ता अंतरंग शुद्ध निर्मलपणे जेवी हती, तेवीज निरावरणपणे प्रगट करी छे, तथा व्यवहारनयने मतें पलटणस्वभावें नवनवा ज्ञेयनी वर्त्तनारूप पर्यायनो उत्पाद, व्यय, अनंत अनंतो थइ रह्यो छे, तथा ऋजुसूत्रनयने मतें सिद्धपरमात्मा पोताना पारिणामिकभावें सामान्य विशेषरूप उपयोगमां सदाकाल वर्त्ते छे, तथा शब्दनयने मतें आगल जीव, अजीवरूप नव तत्त्व षड्द्रव्यना जाणपणाभासनरूप अंतरंग प्रतीति करी, क्षायिक समकेतरूप गुण प्रगट्यो छे, ते पण सिद्धना जीवने पोतानी पासें छे, तथा समभिरूढनयने मतें शुद्धशुक्लध्यान रूपातीत परिणामरूप क्षपकश्रेणीयें घातीकर्मने

क्षयें अनंतचतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, ते पण पोतानी पासें छे, तथा एवंभूतनयने मतें सिद्धपरमात्मायें अष्ट कर्मने क्षयें अष्टगुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी, ते लइने लोकने अंतें जइ बिराजमान थका वर्त्ते छे. ए रीतें जीवने स्वरूपना भोक्तापणामां अंतरदृष्टियें जोतां कार्यरूप साते नय जाणवा.

शिष्यः—नैगमादि सात नयमां जीव,कर्मनो अकर्त्ता कया नयें करी जाणवो. तथा कर्मनो अभोक्ता कया नयें करी जाणवो? तथा स्वरूपनो अकर्त्ता कया नयें करी जाणवो ? तथा स्वरूपनो अभोक्ता कया नयें करी जाणवो?

गुरुः—श्रीअध्यात्मगीतामध्ये मुनिदेवचंद्रजीयें आवी रीतें कह्युं छे॥गाथा॥ आतम सर्वे समान, निधान महासुखकंद ॥ सिद्ध तणा साधर्मी, सत्तायें गुण वृंद॥अर्थः—नैगम तथा संग्रहनयने मतें सर्व जीव एकरूप सरखा सत्तायें सिद्धसमान, ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप निधानें करी सहित छे,अने (महा सुखकंद के०) मूलस्वभावें करी जोतां तो सर्व जीव, पोतपोताना पारिणामिकभावें करी स्वभावरूप सुखमां रह्या स्फाटिक रत्ननी पेरें सदाकाल एकरूपपणे वर्त्ते छे, माटे तेमां कर्मनुं कर्त्तापणुं नथी, अने कर्मनुं भोक्तापणुं पण नथी, तथा स्वरूपनुं कर्त्तापणुं पण नथी, अने स्वरूपनुं भोक्तापणुं पण नथी एटले नैगम अने संग्रह, ए बे नयने मतें सर्वे जीव,सरखा पोतें पोताना पारिणामिक भावमां रह्या त्रणे काल एक रूपपणे वर्त्ते छे.

शिष्यः—आगल नवमा प्रश्नमध्ये कह्युं छे, ते प्रमाणें नैगमादि सात नय मध्ये नामादि चार निक्षेपा उत्सर्ग अने अपवादमार्गें करी केम जाणीयें ?

गुरुः—मंजूषा उपर सात नयमां चार निक्षेपा उत्सर्ग अने अपवादें करी देखाडुं छुंः—कोइ जीव,मंजूषाने अर्थें वनमां काष्ठ लेवा चाल्यो, तेने रस्तामां कोइ बीजो पुरुष सन्मुख मल्यो, तेणें पूछ्युं तुं शुं लेवा जाय छे? ते वारें ते अशुद्धनैगमनयने मतें बोल्यो के हुं मंजूषा लेवा जाउं छुं. हवे वनमां जइने लाकडुं कापवा मांड्युं,तेवारें वली कोइयें पूछ्युं के तुं शुं लीये छे ? तेवारें ते शुद्ध नैगमनयने मतें बोल्यो के हुं मंजूषा लउं छुं. हवे मंजूषाने सारु लाकडुं लइने पाछो वल्यो, तेवारें वली कोइयें पूछ्युं तुं शुं लाव्यो ? तेवारें शुद्धतरनैगमनयनें मतें बोल्यो के हुं मंजूषा लाव्यो, हवे सूतारने तेडी मंजूषा कराववा मांडी,तेवारें वली कोइयें पूछ्युं तुं शुं करावे छे? एटले अतिशुद्धनैगमनयने मतें बोल्यो के हुं मंजूषा करावुं छुं ॥ इति नै

गमनयः ॥ हवे व्यवहारनयना मतवालो बोल्यो के एम मंजूषा नही मानुं हुं तो तैय्यार नजरें देखुं, तो मंजूषापणुं मानुं माटे जेवारें मंजूषा तैयार संपूर्ण नीपनी, तेवारें व्यवहारनयना मतवालो कहे के एने मंजूषा कहीयें. हवे रुजुसूत्रनयना मतवालो बोल्यो एम मंजूषा न होय,जे मंजूषानी सत्ता पूर्ण ग्रहण करे,ते मंजूषा कहेवाय,पण ठाली मंजूषा कांइ कामनी नही,परंतु मंजूषानी सत्तारूप माणक,मोती,हीरा, जवाहीर, रत्न, परवालां प्रमुख वस्तु मांहे भरे,तेवारें संग्रहनयना मतवालो कहे के हवे एने मंजूषा कहीयें. हवे रुजुसूत्रनयना मतवालो बोल्यो के एम मंजूषा कहेवाय नही, हुंतो भावने ग्रहण करुं एटले मांहे जे वस्तु भरी छे, तेनी साथें काम,परंतु मंजूषारूप खोखानुं कांइ प्रयोजन नथी. एटले ए नयने मतवाले मंजूषारूप खोखा मांहेथी पोतानो उपयोग काढीने माणक, मोती, हीरा, जवाहीर प्रमुख जे एमां वस्तु भरी छे,तेमांहे उपयोग लगाव्यो, ए रीतें चार नयें करी मजूषापणुं कह्युं, ते अपवादमार्गें करी जाणवुं. पण तेमां निक्षेपा त्रण होय,ते लगावी देखाडे छे. प्रथम मंजूषा एवुं नाम, ते नाममंजूषा, बीजुं स्थापना मंजूषाना बे भेद छे, एक मंजूषा एवा अक्षर लखवा, ते असद्भाव स्थापना अने मंजूषारूपें चित्रामण करी स्थापवुं, ते बीजी सद्भावस्थापना, तथा द्रव्यथकी मंजूषाना त्रण भेद छे. ते आवी रीतेंः—कोइयें मंजूषा करावी घरमां राखी ते भव्यशरीरनुं द्रव्य जाणवुं तथा कोइना घरमां मंजूषा छे,पण मांहेथीमाल लूटाणो,अने भांगो तुट्यो पड्यो छे,ते ज्ञशरीरनुं द्रव्य जाणवुं अने कोइना घरमां मंजूषा छे, ते माणक, मोती, जवाहीर अने रत्नप्रमुखें करी भरेली छे, तेने तद्व्यतिरिक्त शरीरनुं द्रव्य कहीयें. ए त्रण प्रकारें द्रव्य निक्षेपो कह्यो.ए रीतें ए चार नयमां त्रण निक्षेपा ते अपवादमार्गें करी जाणवा.

हवे चोथा भावनिक्षेपामां शब्दादिक त्रण नय ते उत्सर्गमार्गें करी देखाडे छेः—पूर्वें रुजुसूत्रनयने मतवाले मंजूषारूप खोखामध्येथी उपयोग काढी अने मांहे माणक, मोती प्रमुख जे वस्तु भरी हती, तेमां उपयोग लगाव्यो हतो, एटले वली कोइ बोल्यो के मांहे माणक, मोती, हीरा,जवाहीरप्रमुख जे वस्तु भरी छे, तेना जाणपणारूप जे ज्ञान ते किहां रह्युं छे? तेवारें शब्दनयना मतवालो अंतरंग उपयोगरूप वहेंचण करी बोल्यो के आ शरीररूप मंजूषा अने तेमां ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अव्याबाध, अमूर्त्ति आ

दिक अनंतगुणरूप नावलक्ष्मी नरी बे, तेमां ए ज्ञान रह्युं बे, तेवारें समनि रूढनयना मतवालो बोल्यो के एम मंजूषा कहेवाय नही पण ए शरीररूप मंजूषा उपरथी उपयोग उतारी अने मांहे जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अव्याबाध, अमूर्त्ति प्रमुख अनंतगुणरूप लक्ष्मी नरी बे, तेमां उपयोग लगावी श्रेणीनावें चढे, तेवारें एने मंजूषा कहीयें. हवे एवंनूतनयना मतवालो बोल्यो के एम मंजूषा कहेवाय नही परंतु ए शरीररूप मंजूषानुं खोखुं इहां मूकी अने मांहे ज्ञानादि अनंतगुणरूप जे लक्ष्मी नरी बे, तेने लइ लोकने अंते सिद्धपुरीमां बिराजमान थया, तिहां एने मंजूषा कहीयें. एटले पूर्वें त्रण निक्षेपामां चार नय अपवादमार्गें देखाड्या, अने इहां एक नावनिक्षेपामां शब्दादिक त्रण नय उत्सर्गमार्गें देखाड्या. ए रीतें सात नयमां चार निक्षेपा उत्सर्ग अपवादमार्गें करी जाणवा. ए मंजूषानी रीतें सर्वे वस्तुमां पोतानी बुद्धिथी उत्सर्ग अपवादमार्गें नय सहित निक्षेपा जाणी लेवा.

शिष्यः—दशमा प्रश्नने विषे सात नयमां त्रण निक्षेपा उत्सर्ग अने अपवाद मार्गें कह्या, ते केवी रीतें जाणीयें?

गुरुः—कोइ मिथ्यादृष्टि जीव, ऋजुसूत्रनयने मतें शुनपरिणामें करी, व्यवहारनयने मतें पुण्यरूप दलीयांने ग्रहण करे, ते पुण्यरूप दालीयांने ग्रहण करी, तेने संग्रहनयने मतें मनुष्यनवना आउखारूप प्रकृतिपणे सत्तायें बांध्यां, ते दलीयां नैगमनयने मतें अतीतकालें ग्रहण कर्यां हतां, अने अनागतकालें स्थितिपाकें उदयरूप नावें नोगवशे, तथा वर्त्तमानकालें सत्तायें रह्यां बे. एवी रीतें नैगमनयने मतें त्रणे काल एकरूपपणे जाणवा. ए प्रकारें जे जीवें चार नयें करी अपवादमार्गें मनुष्यपणुं उपार्ज्युं ते प्राणी इव्यमनुष्य जाणवा अने जेवारें ते जीव, शब्दनयने मतें मनुष्यपणे उपन्या, तेवारें तेने नावमनुष्य कहीयें. तथा समनिरूढनयना मतें तो मनुष्यनवना सर्वपर्याय प्रवर्त्तनारूप वस्तु प्रत्यें पायें पामे, तेने मनुष्य कहीयें. तथा एवंनूतनयने मतें ते मनुष्यनवना सर्वपर्यायरूप वस्तुने नोगववा मांमी, ते मनुष्य जाणवा. इहां प्रथम चार नयें अपवाद मार्गें करी मनुष्यपणुं देखाड्युं ते इव्य मनुष्य जाणवा अने पाबला त्रण नयें उत्सर्ग मार्गें करी मनुष्यपणुं नोगववुं ते नावमनुष्य जाणवा. ए रीतें उत्सर्ग तथा अपवादें करी सात नयनुं स्वरूप कह्युं, पण ए जीव मिथ्यादृष्टि

छे, केम के "अणुवउगो दवं" ए श्रीअनुयोग द्वारनुं वचन छे, माटे जे अनुप योगें मिथ्यात्वजावें वर्त्ते, तेने ड्रव्यजीव कहीयें. एटले मिथ्यात्वी मनुष्यमां सात नय लगाडवा, ते मिथ्यात्वीने तो सूत्रमां ड्रव्यजीव कही बोलाव्या छे, माटे तेमां एकजावविना शेष आद्यना त्रणनिक्षेपा जाणवा ॥ इति प्रश्नार्थः ॥

ए प्रश्नार्थनी रचना श्रीजिनवचनने अनुसारें नयनी अपेक्षायें करी में मा हारी बुद्धि माफक करी छे,वली एथी विशेषार्थ श्रीजिनवचनने अनुसारें पंक्तितजन मलीने जे करे, ते प्रमाण छे. एरीतें जवरूप अटवीमां फरता जे जीवने ए प्रकारें समकेतरूप रत्ननो लाज थयो, ते जीव सर्व पाम्यो ॥ गाथा ॥ सम्मत्तमिय लद्धे, विमाण वद्यं न बद्धए आउ ॥ जइवि नमतजडे अह,वा न बद्धाउउ पुआवि ॥ १ ॥ अर्थः—कोइ जव्यजीव संसारमां फरतां समकेतरूप रत्ननो लाज पाम्यो, ते जीव, वैमानिकदेव विना बीजी गतिनुं आयु न बांधे, एटले समकेतथी पडे, तो बीजी गतियें जाय, पण समकेत सहित होय तेतो वैमानिकनुंज आयु बांधे, ए परमार्थ ॥ गाथा ॥ लप्नइ सुरसमिद्धं, लप्नइ पहुत्तणं न संदेहो ॥ एगं नवरं न लप्नइ, डुल्लहरय णं च सम्मत्तं ॥ २ ॥ अर्थः—आपणो जीव अनादिकालनो शाश्वतो छे माटे संसारमां फरतां (सुर के०) देवतानी पदवी घणी वार पाम्यो, अथवा (पहुत्तणं के०) प्रजुतारूप राजझुद्धि लक्ष्मी घणी वार पाम्यो, एमां संदेह न जाणवो, पण (एगंनवरंनलप्नइ के०) एक समकेतरूप रत्ननो लाज नथी पाम्यो, तेणें करी डुःखरूप दारिद्रें जीव पीडाय छे.

शिष्यः—समकेतरूपरत्न जे मोक्षसुखनुं दातार छे, तेनो लाज केम पामीयें ?

गुरुः—समकेतनां लक्षण श्री पन्नवणासूत्रथी कहीयें छैयें ॥ गाथा ॥ परमठ संथुवो वा, सुदिठ्ठि परमठ सेवणा वावि ॥ वावन कुदंसण वद्य णा य तं सम्मत्त सद्दहणा ॥ १ ॥ अर्थः—परमार्थ जे छ ड्रव्य नवतत्त्व, गुण पर्याय सहित मोक्षनिःकर्मा अवस्थानुं स्वरूप जाणे,एटले परमार्थ जे सूक्ष्म अर्थ छे, तेने जाणवानो घणो परिचय करे, अथवा जाणवानी घणी चाह राखे, तथा (सुदिठ्ठि के०) जली रीतें दीठा छे जाण्या छे छ ड्रव्यना परमार्थ तथा मोक्षनिःकर्मा अवस्थाने जेणें एवा गुरु तेनी सेवा करे, एटले ज्ञानीगुरुने धारण करे अने (वावन के०) जैनमति य तिनाम धरावी क्षेत्रपाल प्रमुखने माने, एवा जे समकेत विनाना होय ते

नो संग वर्जे, तथा कुदर्शनी अन्यमतीनो संग न करे, एवा जे परिणाम ते समकेतनी सद्दहणा जाणवी. वली ॥ गाथा ॥ विरया सावज्जाउ, कसाय ही णा महव्वय धरावि ॥ सम्मद्दिठ्ठि विहूणा, कयावि मोख्कं न पावंति ॥ १ ॥ अर्थः–जे सावद्य आरंभथी विरम्या छे,जेणें क्रोधादिक चार कषाय जींत्या छे अने जे शुद्ध पंच महाव्रत पाले छे, इत्यादिक क्रिया पाले, पण समकेत विना ते जीव,केवारें मोक्ष पामे नही, माटे समकेतनुं स्वरूप जाणवाने वली गाथा कहेछे ॥ नय भंग पमाणेहिं,जो अप्पा सायवाय भावेणं ॥ जाणइ मोख्क सरूवं, सम्मद्दिठ्ठिउ सो नेउ ॥१॥ अर्थः–(नय के०) द्रव्यास्तिक दश नयें करी अने पर्यायास्तिक छ नयें करी तथा नैगमादि सात नयें करी तथा (भंग के०) चोभंगी, त्रिभंगी, सप्तभंगीयें करी तथा (पमाणेहिं के०) प्रत्यक्ष अने परोक्ष ए बे प्रमाणें करी जे (अप्पा के०) पोताना आत्माने जाणे, उलखे अने वली (सायवाय के०) स्याद्वादरूप आठपक्ष जाणे, एमज स्याद्वादपणे मोक्षनिःकर्मा अवस्थाने पण जाणे, परवस्तुने हेय जाणे, जीवगुण उपादेय जाणे, ते समकेतदृष्टि जीव जाणवा. अने एवा समकेत सहित जे करणी करवी, ते सर्व मोक्षमार्गनुं हेतु जाणवुं एवुं सांभलीने

शिष्यः–भव्यजीव मोक्षाभिलाषीने स्वरूपनी प्रतीति करवा वास्ते नव तत्त्वनुं स्वरूप कह्युं, ते प्रमाण छे, परंतु आगल पन्नवणासूत्रना पाठमध्ये कह्युं जे परमार्थ छ द्रव्यना गुणपर्यायरूप सूक्ष्म अर्थ छे, ते जाणवानो घणो परिचय करवो, अभ्यास करवो, एवी रीतें तमें कह्युं माटे बाल जीव उपर कृपा करी षड्द्रव्यनुं स्वरूप प्रकाश करो ?

गुरुः–छ द्रव्य जाणे, छ द्रव्यना गुण जाणे, छ द्रव्यना पर्याय जाणे, ते छ द्रव्यमांहेलां पांच अजीवद्रव्य हेय जाणी अने एक जीव द्रव्य निश्चयनयें करी सिद्ध समान मोक्षमय मोक्षनो जाणनार, मोक्षनो कारण, मोक्षमां जावावालो, मोक्षमां रहेनारो, एवो आपणो जीव अनंतगुणी अरूपी छे, तेने ध्यावे,ते निश्चयज्ञान कहीयें. हवे ए छ द्रव्यनां नाम कहे छेः– एक धर्मास्तिकाय, बीजुं अधर्मास्तिकाय, अने त्रीजुं आकाशास्तिकाय,चोथुं पुद्गलास्तिकाय, पांचमुं जीवास्तिकाय अने छठुं कालद्रव्य. ए छ द्रव्य शाश्वतां छे, तेमां पांच द्रव्य अजीव छे, ते छांमवा योग्य छे अने एक जीवद्रव्य

छे, केम के "अणुवउंगो दव्वं" ए श्रीअनुयोग द्वारनुं वचन छे, माटे जे अनुप योगें मिथ्यात्वजावें वर्त्ते, तेने द्रव्यजीव कहीयें. एटले मिथ्यात्वी मनुष्यमां सात नय लगाडवा, ते मिथ्यात्वीने तो सूत्रमां द्रव्यजीव कही बोलाव्या छे, माटे तेमां एकजावविना शेषआद्यना त्रणनिक्षेपा जाणवा ॥ इति प्रश्नार्थः ॥

ए प्रश्नार्थनी रचना श्रीजिनवचनने अनुसारें नयनी अपेक्षायें करी में मा हारी बुद्धि माफक करी छे,वली एथी विशेषार्थ श्रीजिनवचनने अनुसारें पं मितजन मलीने जे करे, ते प्रमाण छे. एरीतें जवरूप अटवीमां फरता जे जीवने ए प्रकारें समकेतरूप रत्ननो लाज थयो, ते जीव सर्व पाम्यो ॥ गाथा ॥ सम्मत्तमिय लद्धे, विमाण वद्यं न बद्धए आउ ॥ जइवि नमतजडे अह,वा न बद्धाउउं पुआवि ॥ १ ॥ अर्थः–कोइ जव्यजीव संसारमां फरतां समकेतरूप रत्ननो लाज पाम्यो, ते जीव, वैमानिकदेव विना बीजी गतिनुं आयु न बांधे, एटले समकेतथी पडे, तो बीजी गतियें जाय, पण समकेत सहित होय तेतो वैमानिकनुंज आयु बांधे, ए परमार्थ ॥ गाथा ॥ लप्नइ सुरसमिद्धं, लप्नइ पहुत्तणं न संदेहो ॥ एगं नवरं न लप्नइ, डुल्लहरयणं च सम्मत्तं ॥ २ ॥ अर्थः–आपणो जीव अनादिकालनो शाश्वतो छे माटे संसारमां फरतां (सुर के०) देवतानी पदवी घणी वार पाम्यो, अथवा (पहुत्तणं के०) प्रजुतारूप राजऋद्धि लक्ष्मी घणी वार पाम्यो, एमां संदेह न जाणवो, पण (एगंनवरंनलप्नइ के०) एक समकेतरूप रत्ननो लाज नथी पाम्यो, तेणें करी डुःखरूप दारिद्रें जीव पीडाय छे.

शिष्यः–समकेतरूपरत्न जे मोक्षसुखनुं दातार छे, तेनो लाज केम पामीयें ?

गुरुः–समकेतनां लक्षण श्री पन्नवणासूत्रथी कहीयें छैयें ॥ गाथा ॥ परमछ संथुवो वा, सुदिछि परमछ सेवणा वावि ॥ वावन कुदंसण वद्यणा य तं सम्मत्त सद्दहणा ॥ १ ॥ अर्थः–परमार्थ जे छ द्रव्य नवतत्त्व, गुण पर्याय सहित मोक्षनिःकर्मा अवस्थानुं स्वरूप जाणे,एटले परमार्थ जे सूक्ष्म अर्थ छे, तेने जाणवानो घणो परिचय करे, अथवा जाणवानी घणी चाह राखे, तथा (सुदिछि के०) जली रीतें दीठा छे जाण्या छे छ द्रव्यना परमार्थ तथा मोक्षनिःकर्मा अवस्थाने जेणें एवा गुरु तेनी सेवा करे, एटले ज्ञानीगुरुने धारण करे अने (वावन के०) जैनमति यतिनाम धरावी क्षेत्रपाल प्रमुखने माने, एवा जे समकेत विनाना होय ते

नो संग वर्जे, तथा कुदर्शनी अन्यमतीनो संग न करे, एवा जे परिणाम ते समकेतनी सद्दहणा जाणवी. वली ॥ गाथा ॥ विरया सावद्याउ, कसाय हीणा महव्वय धरावि ॥ सम्मद्दिट्ठि विहूणा, कयावि मोक्खं न पावंति ॥ १ ॥ अर्थः–जे सावद्य आरंजथी विरम्या छे,जेणें क्रोधादिक चार कषाय जींत्या छे अने जे शुद्ध पंच महाव्रत पाले छे, इत्यादिक क्रिया पाले, पण समकेत विना ते जीव,केवारें मोक्ष पामे नही, माटे समकेतनुं स्वरूप जाणवाने वली गाथा कहेछे ॥ नय जंग पमाणेहिं,जो अप्पा सायवाय जावेणं ॥ जाणइ मोक्ख सरूवं, सम्मद्दिट्ठिउ सो नेउ ॥१॥ अर्थः–(नय के०) द्रव्यास्तिक दश नयें करी अने पर्यायास्तिक छ नयें करी तथा नैगमादि सात नयें करी तथा (जंग के०) चोजंगी, त्रिजंगी, सप्तजंगीयें करी तथा (पमाणेहिं के०) प्रत्यक्ष अने परोक्ष ए बे प्रमाणें करी जे (अप्पा के०) पोताना आत्माने जाणे, उलखे अने वली (सायवाय के०) स्याद्वादरूप आठपक्ष जाणे, एमज स्याद्वादपणे मोक्षनिःकर्मा अवस्थाने पण जाणे, परवस्तुने हेय जाणे, जीवगुण उपादेय जाणे, ते समकेतदृष्टि जीव जाणवा. अने एवा समकेत सहित जे करणी करवी, ते सर्व मोक्षमार्गनुं हेतु जाणवुं एवुं सांजलीने

शिष्यः–जव्यजीव मोक्षाजिलाषीने स्वरूपनी प्रतीति करवा वास्ते नव तत्त्वनुं स्वरूप कह्युं, ते प्रमाण छे, परंतु आगल पन्नवणासूत्रना पाठमध्ये कह्युं जे परमार्थ छ द्रव्यना गुणपर्यायरूप सूक्ष्म अर्थ छे, ते जाणवानो घणो परिचय करवो, अज्यास करवो, एवी रीतें तमें कह्युं माटे बाल जीव उपर कृपा करी षड्द्रव्यनुं स्वरूप प्रकाश करो ?

गुरुः–छ द्रव्य जाणे, छ द्रव्यना गुण जाणे, छ द्रव्यना पर्याय जाणे, ते छ द्रव्यमांहेलां पांच अजीवद्रव्य हेय जाणी अने एक जीव द्रव्य निश्चयनयें करी सिद्ध समान मोक्षमय मोक्षनो जाणनार, मोक्षनो कारण, मोक्षमां जावावालो, मोक्षमां रहेनारो, एवो आपणो जीव अनंतगुणी अरूपी छे, तेने ध्यावे,ते निश्चयज्ञान कहीयें. हवे ए छ द्रव्यनां नाम कहे छेः– एक धर्मास्तिकाय, वीजुं अधर्मास्तिकाय, अने त्रीजुं आकाशास्तिकाय,चोथुं पुद्गलास्तिकाय, पांचमुं जीवास्तिकाय अने छहुं कालद्रव्य. ए छ द्रव्य शाश्वतां छे, तेमां पांच द्रव्य अजीव छे, ते छांमवा योग्य छे अने एक जीवद्रव्य

ज्ञानादि चेतनागुणें करी सहित छे,ते (उपादेय के०) आदरवा योग्य छे.

ए छ द्रव्यना गुण कहे छे. धर्मास्तिकायना एक अरूपी, बीजो अचेतन, त्रीजो अक्रिय अने चोथो चलणसहाय, ए चार गुण जाणवा. तथा अधर्मास्तिकायना एक अरूपी, बीजो अचेतन, त्रीजो अक्रिय अने चोथो स्थिरसहाय, ए चार गुण जाणवा. तथा आकाशास्तिकायना एक अरूपी, बीजो अचेतन, त्रीजो अक्रिय अने चोथो अवगाहना, ए चार गुण जाणवा. तथा काल द्रव्यना एक अरूपी; बीजो अचेतन, त्रीजो अक्रिय, अने चोथो नवा पुराणा वर्त्तनालक्षण. ए चार गुण जाणवा. तथा पुद्गल द्रव्यना एकरूपी, बीजो अचेतन, त्रीजो सक्रिय अने चोथो मिलणविखरण रूप पूर्णगलन गुण, ए चार गुण जाणवा. तथा जीव द्रव्यनुं एक अनंत ज्ञान, बीजुं अनंतदर्शन,त्रीजुं अनंतचारित्र,चोथुं अनंतवीर्य, ए चार गुण जाणवा. ए छ द्रव्यना गुण कह्या, ते सर्व गुण नित्य ध्रुवपणे छे.

हवे छ द्रव्यना पर्याय कहे छेः–धर्मास्तिकायना खंध, देश, प्रदेश अने अगुरुलघु, ए चार पर्याय, तथा अधर्मास्तिकायना खंध, देश प्रदेश अने अगुरुलघु,ए चार पर्याय, तथा आकाशास्तिकायना खंध, देश, प्रदेश अने अगुरुलघु, ए चार पर्याय तथा कालद्रव्यना अतीत, अनागत, वर्त्तमान अने अगुरुलघु, ए चार पर्याय, तथापुद्गलास्तिकायना वर्ण, गंध, रस, फरस,अगुरुलघुसहित ए चार पर्याय, तथा जीवास्तिकायना अव्याबाध,अनवगाह, अमौर्त्तिक अने अगुरुलघु, ए चार पर्याय जाणवा. ए छद्रव्यना पर्यायकह्या.

हवे ए छ द्रव्यना गुणपर्यायें साधर्मिकपणुं कहे छे तिहां प्रथम अगुरुलघु पर्याय सर्वद्रव्यमां सरखो छे. अने अरूपीगुण पांच द्रव्यमां छे, एक पुद्गलद्रव्यमां नथी, तथा अचेतनपणुं पांच द्रव्यमां छे, एक जीव द्रव्यमां नथी, तथा सक्रियगुण जीव अने पुद्गल,ए बे द्रव्यमां छे, शेष चार द्रव्यमां नथी, तथा चलणसहायगुण एक धर्मास्तिकायमां छे, शेष पांच द्रव्यमां नथी, तथा स्थिरसहाय गुण एक अधर्मास्तिकायमां छे,शेष पांच द्रव्यमां नथी, तथा अवगाहनागुण एक आकाशद्रव्यमां छे, शेष पांचद्रव्यमां नथी, तथा वर्त्तनगुण एक कालद्रव्यमां छे, बीजा द्रव्यमां नथी,तथा मिलण विखरण गुण एक पुद्गलमांज छे,बीजा द्रव्यमां नथी,तथा ज्ञानादिक चेतनागुण एक जीवद्रव्यमांज छे,शेषद्रव्यमां नथी,ए मूलगुण,कोइद्रव्यना

कोइद्रव्यमां भळे नही, तथा धर्म, अधर्म अने आकाश ए त्रण द्रव्यना त्रण गुण अने चार पर्याय सरखा छे. तथा त्रणगुणेंकरी कालद्रव्यपणएसमानछे.

हवे ए छ द्रव्यना गुणपर्यायरूप स्वरूप जाणवाने सूत्रपाठ गाथा कहे छे" परिणामि जीवमुत्ता, सपएसा एगखित्त किरिआ य ॥ निच्चं कारण कत्ता, सव्वगय इयर अपवेसा ॥ १ ॥ ए गाथानो अर्थ शिष्य अने गुरुना प्रश्नोत्तररूपें लखीयें छैयें.

३३८ शिष्यः–ए छ द्रव्यमां परिणामि केटलां अने अपरिणामी केटलां?

गुरुः–निश्चयनयें करी तो छए द्रव्यपरिणामी छे, केम के धर्मास्तिकाय द्रव्य निश्चयनयें करी पोताना स्वरूपमां परिणमी रह्युं छे, पण बीजा पांच द्रव्यमां परिणमतुं नथी तथा अधर्मास्तिकायद्रव्य पण निश्चयनयें करी पोताना स्वरूपमांज परिणमे छे, पण बीजां पांच द्रव्यमां नथी परिणमतुं. तथा आकाशास्तिकाय पण निश्चयनयें करी पोताना स्वरूपमांज परिणमे छे. पण बीजा पांच द्रव्यमां परिणमतुं नथी, तथा कालद्रव्य पण निश्चयनयें करी पोताना स्वरूपमांज परिणमे छे, पण बीजा पांच द्रव्यमां परिणमतुं नथी, तथा जीवद्रव्य पण संग्रहनयने मतें निश्चयनयें करी पारिणामिकभावें पोताना स्वरूपमां परिणमी रह्युं छे, पण बीजा पांचद्रव्यमां नथी परिणमतुं केम के जो निश्चयनयें करी जीव परपुद्गल द्रव्यमां परिणमे तो कोइकालें पण कर्मथकी रहित न्यारो थइ सिद्धिप्रत्यें न पामे, माटे निश्चयनयें करी जीव पोताना स्वरूपमांज परिणमे छे अने व्यवहारनयें करी जीव, नाटकीया बजाणीया भवाइयानी पेरें अनेक प्रकारें एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चौरिंद्री, पंचेंद्री पर्यंत देवता, नारकी, मनुष्य अने तिर्यचरूप नवानवा वेश पेहेरी नवानवा रूप करी नवानवां नाम धरावी चार गतिरूप संसारमां चोराशी लाख चउटामां भमतो फरे छे. एकवेश उतारे छे एकवेश पेहेरे छे,एरीतें जीव अनेक प्रकारें संसारमां नाटक करे छे. ते सर्वव्यवहारनयें करी जाणवुं. परंतु निश्चयनयें करी तो जीव शाश्वतो सत्तायें सिद्धसमान छे तथा पुद्गलास्तिकाय द्रव्यपण निश्चयनयें करी परमाणुआ सर्वे पोतें पोताने स्वभावें रह्या छे अने व्यवहारनयें करी पुद्गलपरमाणुआ मली खंध थाय छे परंतु जो निश्चयनयें करी खंध थातो होत तो कोइ कालें ए खंध विखराइ जात नही, सदाकाल खंधना खंध भावेंज रेहेत, तेम तो

रहेता नथी माटे व्यवहारनयें पुद्गलना परमाणुआ मली खंध थाय छे अने पाछा खंध विखरे पण छे अने निश्चयनयें करी तो परमाणुआ पोतपोताने स्वभावें सदा काल शाश्वता छे, पण कोइ कालें घटशे वधशे नही, ए रीतें ए छए द्रव्य निश्चयनयें करी पोतपोताने स्वभावें पारिणामिक जाणवा.

तथा व्यवहारनयें करी तो धर्म, अधर्म, आकाश अने काल, ए चार द्रव्य अपरिणामी छे, अने जीव तथा पुद्गल ए बे द्रव्य परिणामी छे केम के? व्यवहारनयने मतें जीव, समय समय अनंतां कर्मरूप वर्गणानां दलीयां लीये छे, अने समय समय अनंतां कर्मरूप वर्गणानां दलीयां खेरवे छे, पण जो निश्चयनयें करी कर्मनुं ग्रहण करतो होय, तो कोइकालें कर्मथकी छूटेज नही, माटे जीवने अज्ञान अने राग द्वेष रूप विकाशें करी अशुद्धपणुं छे, तेणें करी परद्रव्यमां परिणमे छे अने पुद्गलद्रव्यने परिणमन पणानो स्वभाव छे, माटे जीव, राग, द्वेष अने अज्ञानरूप अशुद्धतायें करी पुद्गल परमाणुआने ग्रहण करे छे अने मनुष्य, देवता, नारकी तथा तिर्यंचना शरीररूप खंध प्रत्यें निपजावे छे, ते खंधस्थिति प्रमाणें रहे छे, वली पाछा खेरवे छे, वली बीजा परमाणुआ लइ नवा शरीररूप खंध नीपजावे छे, एम केटलाएक पुद्गल परमाणुआ आहारपणे ग्रहे छे. अने केटलाएक पुद्गलपरमाणुआने वर्ण, गंध, रस अने फरसपणे ग्रहण करे छे. तथा केटलाएक पुद्गलपरमाणुआने कर्मपणे ग्रहण करे छे, वली पाछा खेरवे छे, एम अनादिकालनी जीव पुद्गलने परिणमनपणानी [illegible]टमाल चाली जाय छे, अने अज्ञानदशायें करी जो शुभ पुद्गल जी[illegible] मले, तो राजी थाय छे, तथा अशुभ पुद्गल मले, तो नाराजी थाय [illegible] रीतें व्यवहारनयने मतें जीव अने पुद्गल, ए बे द्रव्य परिणामी छे [illegible]रूप कह्युं.

द्र० शिष्यः—छ द्रव्यमां (जीव के०) ज[illegible] अने अजीव केटला?

द्रव्य॥—षड्द्रव्यमां एक जीवद्रव्य ते जीव[illegible] पांच द्रव्य अजीव द्रव्यमां [illegible] संग्रहनयने मतें पारिणा[illegible] नयें करी एक जीव द्रव्यमां नथी चेतनारूप गुणें करी स[illegible]न अनंतऋद्धिनो [illegible]व्यमां नथी, व्यवहारनयें करी शुभ [illegible]नो भोक्ता जाण मिलण विखरण धर्मादिक पांच द्र[illegible]भाववाला शु[illegible] चेतनागुण एक [illegible] करी रहित सुख[illegible]टे अजीव छे.

परमाणुआ
लपरमाणुआ
तो कोइ कालें
रहेत, तेम तो

७७४ शिष्यः—ब द्रव्यमां (मूत्ता के०) मूर्त्ति केटला अने अमूर्त्ति केटलां ?
गुरुः—एक पुद्गलद्रव्य मूर्त्ति बे, अने शेष पांच द्रव्य अमूर्त्ति बे, ते आवी रीतें जे धर्म, अधर्म, आकाश अने काल, ए चार द्रव्य तो अमूर्त्ति बे, अने एक जीवद्रव्य ते मूर्त्ति अमूर्त्ति जाणवो. तेमां निश्चयनयें करी तो जीव अरूपी माटे अमूर्त्ति कहीयें, अने व्यवहारनयें करी देव, नारकी, तिर्यंच अने मनुष्यरूप जीवना (५६३) भेद बे, ते सर्वे मूर्त्तिरूपें जाणवा. तथा बहुं पुद्गलद्रव्य बे तेनो व्यवहारनयने मतें अनंता परमाणुआ मली खंध बने बे, तेवारें नजरें दीठामां आवे बे, माटे एने मूर्त्ति कहीयें. एरीतें ब द्रव्यना स्वरूपमां मूर्त्ति अमूर्त्तिनो विचार कह्यो.
७७५ शिष्यः—ब द्रव्यमां (सपएसा के०) सप्रदेशी केटलां अने अप्रदेशी केटलां?
गुरुः—ब द्रव्यमां पांच द्रव्य सप्रदेशी अने एक कालद्रव्य अप्रदेशी जाणवुं केम के धर्मास्तिकायद्रव्य असंख्यात प्रदेशी अने अधर्मास्तिकाय पण असंख्यातप्रदेशी, तथा एक आकाशास्तिकाय द्रव्य अनंतप्रदेशी तथा एक जीव द्रव्य ते सत्तागतें असंख्यातप्रदेशी बे, एवा अनंता जीव जाणवा. तथा पुद्गल परमाणुआ अनंत प्रदेशी अने एक एक परमाणुआमां अनंता गुणपर्याय रह्या बे, ते आगल बतावशुं. ए रीतें ए पांच द्रव्य सप्रदेशी कहीयें, अने एक कालद्रव्य, अप्रदेशी बे, एनुं लोकालोकमां एकसमय सदा काल वर्त्ते बे, अने गणितकाल तो उत्पादव्ययरूप पलटण स्वभावें अढी द्वीप प्रमाणें जाणवो. ए रीतें षड्द्रव्यमां सप्रदेशी अप्रदेशीनो विचार जाणवो
७७६ शिष्यः—ए ब द्रव्यमां (एग के०) एक केटलां अने अनेक केटलां?
गुरुः—त्रण द्रव्य एक अने त्रण द्रव्य अनेक जाणवां केम के धर्मास्तिकाय द्रव्य असंख्यात प्रदेशी लोकव्यापी एक जाणवुं. तथा अधर्मास्तिकाय पण असंख्यात प्रदेशी लोकव्यापि एक जाणवुं तथा आकाशास्तिकाय पण अनंत प्रदेशी लोकालोकव्यापी एक जाणवुं एटले ए त्रण द्रव्य ते एक कहियें. अने जीव द्रव्य जे बे ते लोकव्यापी अनंतां जाणवां. ते एकेक जीवना असंख्याता असंख्याता प्रदेश बे, ते एकेक प्रदेशें अनंती कर्मनी वर्गणाना थोकडा लागा बे, तथा जीवथकी रहित घट प्रमुख बीजा पुद्गल परमाणुआ बूटा पण अनंता बे, माटे जीवथकी पुद्गलद्रव्य अनंतगुणा जाणवां. अने एकेकी कर्मवर्गणामां अनंत पुद्गल परमाणुआ रह्या बे, ते परमाणुआ

द्रव्यथकी सदाकाल शाश्वता छे, माटे एकेक परमाणुआमां अनंता उत्पाद व्ययरूप कालना समय अनागतकालें व्यतीत थइ गया, तथा हजी पण अनंता समय आवते कालें व्यतीत थाशे, अने परमाणुआ तो तेना तेज सदाकाल शाश्वता छे,माटे पुद्गलद्रव्यथकी पण कालद्रव्यना समय अनंता जाणवा. ए रीतें जीव,पुद्गल अने काल,ए त्रण द्रव्य अनेक कहीयें. ए रीतें षट्द्रव्यना स्वरूपमां एक अनेकनो विचार जाणवो.

७८८शिष्यः—छ द्रव्यमां (खित्त के०) क्षेत्र केटलां अने क्षेत्री केटलां ?

गुरुः—छ द्रव्यमां एक आकाश ते क्षेत्र कहीयें अने बीजा पांच द्रव्य क्षेत्री कहीयें. केम के एक आकाशना घरमां पांचे द्रव्य मलीने रह्यां छे ते आवी रीतेंः—जे आंखनी पांपणनो एक वाल लहीने तेनो अग्रनाग एवो सूक्ष्म करीयें के जेना एक खंडना बे खंड न थाय, एवा सूक्ष्म खंड प्रमाणें आकाश क्षेत्र लहीयें. तेटलामां आकाशरूप क्षेत्रना पोताना असंख्याता प्रदेश रह्या छे, अने तेटलामां धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेश छे तथा अधर्मास्तिकायना पण असंख्याता प्रदेश छे,अने निगोदीया गोला पण असंख्याता रह्या छे,ते सर्वे पड्या मूकीने तेमांहेलो मात्र एकज गोलो लहीयें.ते एक गोलामां पण असंख्याती निगोद रही छे, ते असंख्याती निगोद पडती मूकीने मांहेथी एक निगोद लहीयें. ते एक निगोदमां पण अनंता जीव रह्या छे, ते जीवनी गणती कहे छे. एक अतीतकाल केतां आगल जे छेडा रहित अनंतो काल गयो तथा अनागतकाल ते पण छेडा रहित छे,ते सर्वेना जेटला समय थाय,तेनी साथें त्रीजो वर्त्तमान कालनो एक समय पण लेवो, एटले अतीतादिक त्रणेकालना अंत रहित जेटला समय थाय,ते सर्वने अनंत गुणा करीयें,एटला जीव एक निगोदमां छें,ते सर्व जीव पड्या मूकी ने तेमांहेथी मात्र एक जीव लहीयें, ते जीवना असंख्याता प्रदेश छे,ते एकेका प्रदेशें अनंती कर्मनी वर्गणाउ लागी छे, ते सर्वे वर्गणाउ पडती मूकीने तेमांथी एक वर्गणा लहीयें, ते एकवर्गणामां अनंता पुद्गल परमाणुआ रह्या छे. ते आवी रीतेंः—प्रथम परमाणुआना बे नेद छे, एक छूटा परमाणुआ अने बीजा खंध, खंधना वली बे नेद, एक जीवसहित खंध ते जीवने लागेला जाणवा अने बीजा जीव रहित खंध ते घट प्रमुख अजीवखंध जाणवा.

तिहां प्रथम जीव सहित खंधनो विचार कहे छेः— बे परमाणुआ भेला थाय, तेवारें द्व्यणुक खंध कहेवाय, त्रण परमाणुआ भेला थाय, तेवारें त्र्यणुक खंध कहेवाय, एम संख्याता परमाणुआ भेला थाय तेवारें संख्याताणुक खंध कहेवाय, असंख्याता परमाणुआ भेला थाय, तेवारें असंख्याताणुक खंध कहेवाय, अने अनंता परमाणुआ भेला थाय, तेवारें अनंताणुक खंध कहेवाय, एटला परमाणुउनो खंध थाय, तिहां सुधीना खंध ते सर्वे खंधजीवने अग्रहण योग्य छे. एटला परमाणुआना खंधने कोइ जीव ग्रहण करी शके नही, परंतु अनव्यराशिना जीव चम्मोतेरमे बोले छे ते थकी अनंतगुणाधिक परमाणुआ जेवारें भेला थाय, तेवारें एक औदारिकशरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय, अने ते औदारिकनी वर्गणाथी वली अनंतगुणाधिकमय दलीयां भेलां थाय, तेवारें एक वैक्रियशरीरने लेवायोग्य वर्गणा थाय, अने वैक्रियनी वर्गणाथी अनंतगुणाधिक दलीयां भेलां थाय, तेवारें एक आहारकशरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय अने आहारकनी वर्गणाथी अनंतगुणाधिक दलीयां भेलां थाय, तेवारें एक तैजसने लेवा योग्य वर्गणा थाय, अने तैजसनी वर्गणाथी अनंतगुणाधिक दलीयां भेलां थाय, तेवारें एक भाषाने लेवायोग्य वर्गणा थाय तथा भाषानी वर्गणाथी अनंतगुणाधिक मय दलीयां भेलां थाय, तेवारें एक उस्वासने लेवा योग्य वर्गणा थाय, ते उस्वासनी वर्गणाथी अनंतगुणा अधिकमय दलीयां भेलां थाय तेवारें एक मनने लेवा योग्य वर्गणा थाय. ए सातमी मनोवर्गणा थकी वली आठमी कर्मवर्गणामां अनंतगुणाधिक परमाणुआ जाणवा. एवी जीवने एकेकप्रदेशें अनंती कर्मनी वर्गणाउ रागद्वेषनी चिकाशें करी लागी छे, तेणें करी जीवना ज्ञानादिक गुण दबाइ गया छे, माटे जीवथकी पुद्गल द्रव्य अनंतगुणा जाणवा. ते पुद्गलरूपी छे, अचेतन छे, सक्रिय छे, पूर्ण गलन छे, ए चार गुण, एमां स्वाभाविक जाणवा. ए परमार्थ छे.

हवे वर्गणानो विचार कहे छेः—पूर्वोक्त आठवर्गणा जीवने अनादिकालनी लागी छे, तेमां एक औदारिक बीजी वैक्रिय, त्रीजी आहारक अने चोथी तैजस, ए चार वर्गणा बादर छे, तेमां पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस अने आठ स्पर्श. ए वीश गुण जाणवा. अने बाकीनी चार वर्गणा सूक्ष्म छे, तेमां पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, अने चार स्पर्श मली शोल गुण छे,

तथा एक परमाणुआमां एक वर्ण, एक गंध, एक रस, अने बे स्पर्श, मली पांच गुण छे, ते परमाणुआ शाश्वता छे, बाल्या बेले नही, गाल्या गले नही, छेद्या छेदाय नही, भेद्या भेदाय नही, सदाकाल शाश्वता छे, तेट लाने तेटला छे, पण कोइ काले एक परमाणु पण वधशे घटशे नही, ते एकेक परमाणुउं आगल अनागतकाले अनंती अनंती वार एकेक व स्तुमां परिणमी चूको, तिहां जे वस्तुने परिणमीने फरी जे वखतें ते व स्तुथी छूटो पड्यो ते वखतें ते वस्तुना पर्यायनो व्यय थयो, अने बीजी वस्तुमां जइ परिणम्यो तेथी ते वस्तुना पर्यायनो उत्पाद थयो, वली त्री जी वस्तुमां परिणम्यो, तेवारें वली ते वस्तुना पर्यायनो उत्पाद थयो, अने आगली वस्तुना पर्यायनो व्यय थयो; वली चोथी वस्तुमां परिणम्यो तेवारें ते वस्तुना पर्यायनो उत्पाद थयो, अने आगली वस्तुना पर्यायनो व्यय थयो, तथा वली ते आगली वस्तुमां पाछो परिणम्यो, एम एकेक परमाणुआमां अनंती वस्तु उत्पादव्ययरूप पर्यायपणे पलटाणी तेमां अनं तो काल वही गयो अने हजी अनंतो काल जाशे, पण परमाणुआ ते ना तेज छे. ए रीतें एकेक पुद्गल परमाणुउं एकेकी वस्तुमां अनंतीवार जूदा जूदा नावें परिणम्यो छे, तेथी अनंतीवार ते ते वस्तुनो पर्याय थयो ते पुद्गल परमाणुआथकी वली कालना समय अनंतगुणा जाणवा. ए पर मार्थ छे. एम षट्द्रव्यमां एक आकाश ते क्षेत्र अने पांच द्रव्य, आका शना घरमां रह्यां छे, माटे ते क्षेत्री जाणवां. ए एक वालाग्रमात्र क्षेत्रनो लेशमात्र विचार जाणवो. ए प्रकारें जीव अजीवरूप वहेंचण करतां अं तरमां धारतां विचारतां थकां जीवने समकेतनी प्राप्ति थाय.

७०० शिष्यः-ए छद्रव्यमां(किरिआय के०)सक्रियकेटलां अने अक्रियकेटलां?

गुरुः—निश्चयनयें करी तो छए द्रव्यने सक्रिय कहीयें अने व्यवहारनयें करी तो चार द्रव्य अक्रिय कहीयें. तथा बे द्रव्य सक्रिय कहीयें. ते आवी रीतें:—निश्चयनयें करी धर्मास्तिकायद्रव्य, ते जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्यने पोतानी चलणसहायरूप क्रिया करतो जाय छे, तथा निश्चयनयें करी अध र्मास्तिकाय पण जीव पुद्गलने पोतानी स्थिरसहायरूप क्रिया करतो जाय छे, तथा निश्चयनयें करी आकाशास्तिकायद्रव्य पण जीव पुद्गलने पोतानी अवगाहनारूप क्रिया करतो जाय छे;तथा निश्चयनयें करी कालद्रव्य ते पण

जीव अजीवरूप सर्ववस्तुमां पोतानी वर्त्तनारूप क्रिया करतो जाय छे, तथा निश्चयनयें करी तो जीवद्रव्य, पण पोताना स्वरूपमां रमवारूप क्रिया करतो जाय छे. केम के जो निश्चयनयें करी जीव शुभाशुभरूप विभाव दशामां रमण करवारूप क्रिया करतो होय, तो कोइ कालें जीव सिद्धि वरेज नही, माटे निश्चयनयें करी तो जीव पोताना स्वरूपमां रमवारूपज क्रिया करे छे. तथा निश्चयनयें करी पुद्गलपरमाणुआ जे छे ते पण अनादि कालना पोतानी मलवा विखरवारूप क्रिया करता जाय छे. ए रीतें छए द्रव्य निश्चयनयें करी पोतपोतानी क्रिया करे छे, माटे सक्रिय छे.

अने व्यवहारनयें करी धर्म, अधर्म, आकाश अने काल, ए चार द्रव्य अक्रिय जाणवां. तथा जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्य सक्रिय जाणवां. कारण के व्यवहार नयने मतें जीव अज्ञान अने रागद्वेषनी चिकाशरूप अशुद्धतायें करी समय समय अनंता पुद्गल परमाणुआनुं ग्रहण करवारूप क्रिया करे छे, अने पुद्गल परमाणुआने वलगवानो स्वभाव छे, माटे पुद्गल परमाणुआ वलगवारूप क्रिया करे छे. ए रीतें व्यवहारनयने मतें जीव अने पुद्गल, ए बे द्रव्य मलवा विखरवारूप क्रिया करे छे, माटे सक्रिय जाणवां. जे कारणमाटे जीव, समय समय अनंता कर्मरूप पुद्गल परमाणुआनुं ग्रहण करे छे अने आगल सत्तायें अनंतां कर्मरूप दलीयां बांध्यां छे, ते स्थितिप्रमाणें जीवने उदय आवे छे, तेने भोगवीने खेरवे छे,तथा केटला एक परमाणुआ तो उदीरीने उदय आणी भोगवीने खेरवे छे,तथा केटला एक ज्ञानरूप दृष्टियें करी बालीने खेरवे छे, एम अनेक प्रकारें समय समय अनंता कर्मरूप परमाणुआ ग्रहण करे छे अने समय समय अनंता कर्मरूप परमाणुआ खेरवे छे, माटे अनादिकालना जीव अने पुद्गल, ए बे द्रव्य मलवा विखरवा रूप क्रिया करे छे, तेथी सक्रिय जाणवां.

७०२ शिष्यः—ए छद्रव्यमां (निच्चं के०) नित्य केटलां अने अनित्य केटलां?

गुरुः—निश्चय नयें करी छए द्रव्य नित्य छे, अने निश्चयनयें करी छए द्रव्य अनित्य पण छे, तथा व्यवहार नयें करी तो चार द्रव्य नित्य जाणवां अने बे द्रव्य अनित्य जाणवां. ते आवी रीतें:—धर्मास्तिकायना अरूपीअचेतन अक्रिय अने चलणसहाय ए चार गुण अने पर्यायमां धर्मास्तिमायनो एक खंध ए पांच नित्य जाणवा, तथा देश, प्रदेश अने अगुरुलघु, ए त्रण

पर्याय धर्मास्तिकायना अनित्य जाणवा. तथा अधर्मास्तिकायना पण अरूपी, अचेतन, अक्रिय अने स्थिरसहाय, ए चार गुण तथा पर्यायमां अधर्मास्तिकायनो एक खंध, ए पांच नित्य जाणवा. अने देश, प्रदेश, तथा अगुरुलघु, ए त्रण पर्याय अधर्मास्तिकायना अनित्य जाणवा. हवे आकाशास्तिकायना अरूपी, अचेतन, अक्रिय अने अवगाहक, ए चार गुण अने पर्यायमां आकाशास्तिकायनो खंध, ए पांच नित्य जाणवा. तथा देश, प्रदेश, अने अगुरुलघु, ए त्रण पर्याय आकाशास्तिकायना अनित्य जाणवा. हवे कालद्रव्यना अरूपी अचेतन अक्रिय अने नवा पूराणा वर्त्तना लक्षण ए चार गुण नित्य जाणवा. तथा अतीत, अनागत, वर्त्तमान अने अगुरुलघु, ए चार पर्याय काल द्रव्यना अनित्य जाणवा. हवे पुद्गल द्रव्यना रूपी अचेतन सक्रिय अने पूर्णगलण मिलण विखरण, ए चार गुण नित्य जाणवा. तथा वर्ण, गंध, रस, फरस, अगुरुलघु सहित ए चार पर्याय पुद्गलास्तिकायना अनित्य जाणवा. हवे जीव द्रव्यना ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य, ए चार गुण अने अव्याबाध, अमौर्त्तिक तथा अनवगाह, ए त्रण पर्याय जीवना नित्य जाणवा. अने एक अगुरुलघुपर्याय, जीवनो अनित्य जाणवो. ए रीतें निश्चयनयें करी छद्रव्य नित्यपण कहियें, अने अनित्यपण कहीयें.

हवे व्यवहारनयें करी धर्म, अधर्म, आकाश अने काल, ए चार द्रव्य नित्य कहीयें. तथा जीव अने पुद्गल, ए बे द्रव्य अनित्य जाणवां. कारण के व्यवहार नयने मतें जीव, चारगतिरूप संसारमां जन्म मरण रूप नवा नवा भव करे छे, माटे अनित्य कहीयें तथा व्यवहारनयें करी पुद्गल द्रव्यना खंध पण सर्वे अनित्य जाणवा. कारण के पुद्गलना खंध बने छे, ते स्थितिप्रमाणें रहे छे, वली पाछा विखरे छे, माटे अनित्य जाणवा. तथा जे कारणें वली द्रव्यास्तिकनयने मतें जीव असंख्यात प्रदेशी नित्य, सदाकाल शाश्वतो छे, अने अशुद्ध अनित्य पर्याय करी जीव अनित्य अशाश्वतो जाणवो, केम के अशुद्ध अनित्य पर्यायें करी जीव

पों गतिरूप संसारमां उत्पाद, व्ययरूप पलटण स्वभावे वर्त्ते छे. ते

र्मा रीतें:—मनुष्य भवना पर्यायनो व्यय थयो, अने देवताना भवना प

छे, तथा उत्पाद थयो, वली देव भवना पर्यायनो व्यय थयो, अने तिर्य

अवगाहनार्यनो उत्पाद भना पर्यायनो व्यय थ

यो अने मनुष्यनवना पर्यायनो उत्पाद थयो. एम अशुद्ध अनित्य पर्यायें करी जीव,अनेक प्रकारें उत्पाद व्ययरूप पलटण स्वनावें चार गतिरूप संसारमां सदा काल वर्त्ते छे, अने जीव, एनो ए ध्रुवपणे शाश्वतो छे, तथा जन्म, मरण, थाय छे, ते सर्व पर्यायनो उत्पाद व्यय थाय छे, माटें द्रव्यास्तिक नयें करी जीवने नित्य कहीयें,अने पर्यायास्तिक नयें करी जीवने अनित्य कहीयें,ए परमार्थ छे. तथा पुद्गल परमाणुआ पण द्रव्यथकी नित्य शाश्वता छे,अने पर्यायथकी घणा परमाणुआ मली खंध बने छे, ते स्थिति प्रमाणे रहे छे,वली पाछा विखरे छे,ते खंधने अनित्य पण कहीयें. ए रीतें षट् द्रव्यमां निश्चयव्यवहार नयें करी नित्य अनित्यनुं स्वरूप जाणवुं.

७९५ शिष्यः—ए छ द्रव्यमां कारण केटलां अने अकारण केटलां ?

गुरुः—छ द्रव्यमां पांच द्रव्यने एक जीव द्रव्य ते अकारण छे, अने जीव द्रव्यने पांचे द्रव्य, कारणरूप जाणवां. जेम के जीव कर्त्ता, अने तेने धर्मास्तिकाय कारण मल्युं, तेवारें जीवने चालवा हालवारूप कार्य थयुं, तेमज जीव कर्त्ता तेने अधर्मास्तिकाय कारण मल्युं, तेवारें जीवने स्थिर रहेवारूप कार्य नीपन्युं, तेमज जीव कर्त्ता, अने तेने आकाशास्तिकाय कारण मल्युं, तेवारें जीवने अवगाहनारूप कार्य नीपन्युं. तेमज जीव कर्त्ता, तेने पुद्गलास्तिकाय कारण मल्युं, तेवारें जीवने समय समय अनंता कर्मरूप परमाणुआ लेवा, अने समय समय अनंता कर्मरूप परमाणुआ खेरवारूप कार्य नीपन्युं. तेमज जीव कर्त्ता अने तेने काल द्रव्य कारण मल्युं, तेवारें जीवने नवा पुराणा वर्त्तनारूप कार्य नीपन्युं, ए रीतें षट् द्रव्यमां जीवने पांचे द्रव्य, कारणरूपें जाणवां अने जीव पोतें अकारण छे.

७९६ शिष्यः—ए छ द्रव्यमां (कत्ता के०) कर्त्ता केटला अने अकर्त्ता केटला ?

गुरुः—निश्चय नयें करी छए द्रव्य पोतें पोताना स्वरूपना कर्त्ता छे, अने व्यवहारनयें करी अनेक नयनी अपेक्षायें जोतां तो एक जीव द्रव्य कर्त्ता अने पांच द्रव्य अकर्त्ता जाणवां, ते आवी रीतेंः— जे व्यवहार नयना छ नेद छे,तिहां प्रथम शुद्धव्यवहारनयें करी जीव, शुद्ध निर्मल, कर्मथकी रहित एवुं पोतानुं स्वरूप नीपजाववुं तेनो कर्त्ता जाणवो, एटले जे जे आगलां गुणठाणानुं छोडवुं अने उपरलां गुणठाणानुं लेवुं तेने शुद्धव्यवहारनयें कर्त्ता कहीयें. एटले पहेले गुणठाणे अनंतानुबंधियानी

चोकडी हती,ते खपावी अने चोथे गुणठाणे आव्यो, तेवारे जीवने एकस म्यक्त गुण निरावरण थयो अने अप्रत्याख्यानीनी चोकडी खपावी, तेवारें पांचमे गुणठाणे देशविरति गुण पाम्यो, तथा प्रत्याख्यानीनी चोकडी खपावी, तेवारें छठे सातमे गुणठाणे सर्वविरति गुण पाम्यो, तथा सर्व कषाय क्षय थया, तेवारें अगीयारमे, बारमे, गुणठाणे पहोंची राग द्वेष रूप मोहनीय कर्म खपावी, बारमे गुणठाणे घाती कर्मनो क्षय करी तेरमे गुणठाणे केवलज्ञान पाम्यो. ए रीतें जेम जेम पूर्वलां गुणठाणानुं छोडवुं अने उपरला गुणठाणानुं लेवुं तेने शुद्ध व्यवहार नय कहीयें. एट ले जीव जेम जेम कर्मरूप अशुद्धताने टाले,अने गुणरूप शुद्धताने नीपजा वे, ते शुद्धव्यवहार नय जाणवो. हवे बीजा अशुद्धव्यवहारनयें करीजीव मां अज्ञान, राग, द्वेष, अनादिकालना शत्रु थइ लागा छे, तेणें करी जीव मां अशुद्धपणुं जाणवुं. ए अशुद्धतानी चिकाशें करी जीवने समय समय अनंतां कर्मरूप दलीयां सत्तायें लागे छे, ए अशुद्धता अनादिनी जाणवी. ए अशुद्ध व्यवहारनयें जीव कर्त्ता, तेनुं स्वरूप कह्युं. हवे त्रीजा शुभ व्य वहारनयें करी जीव, दान, शील, तप, भावना, पूजा, प्रभावना, सेवा, भक्ति, साहम्मीवात्सल, विनय, वैयावच्च, उपकार, करुणा, दया, यत्ना, मी ठुं मनोहर वचन बोलवुं, सर्व जीवनुं रूडुं चिंतववुं, ए आदि अनेक प्रका रनी जीवने शुभ करणी जाणवी. ए शुभ व्यवहारनयें जीव कर्त्ता कही यें. हवे चोथा अशुभव्यवहार नयें करी जीव, क्रोध, मान, माया, लोभ, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, हास्य, विनोद, निंदा, ईर्ष्या, चाडी, मूर्छा, ममता, हिंसा, मृषा, अदत्त, मैथुन, परिग्रह, ए आदि अनेक प्रकारनी

शरीरादिक परवस्तु जे पोताना स्वरूपथकी प्रत्यक्षपणे जुदी छे, पण पारिणामिक भावें लोलीभूतपणे एकठी मली रही छे, तेने जीव, पोतानी करी जाणे छे. पण एवां शरीर तो अनंती वार कस्यां अने अनंती वार मूक्यां, तथापि अज्ञानपणे तेने पोतानां करी जाणे छे, तेने वास्ते अनेक प्रकारें हिंसादि पाप करी पुष्ट करे छे, ए रीतें अनुपचरित व्यवहारनयेंकरी जीव कर्त्ता जाणवो. ए छ प्रकारें व्यवहार नयने मतें जीवनुं कर्त्तापणुं देखाड्युं, एम छ द्रव्यमां कर्त्ता अकर्त्ता पणानुं स्वरूप जाणवुं.

ए७ए शिष्यः—ए छ द्रव्यमां (सव्वगयइयर के०) सर्वगत एटले सर्वव्यापी द्रव्य केटलां अने ते थकी इतर एटले देश व्यापी द्रव्य केटलां पामीयें?

गुरुः—छ द्रव्यमां एक आकाशद्रव्य सर्वलोकालोकव्यापी छे अने पांच द्रव्य, देश व्यापी जाणवां. कारण के धर्मास्तिकाय असंख्यातप्रदेशी लोकव्यापी जाणवुं अने अधर्मास्तिकायद्रव्य पण असंख्यातप्रदेशी लोकव्यापी जाणवुं. तथा कालद्रव्य गणितकाल ते अढीद्वीप व्यापी जाणवुं. तथा जीवद्रव्य पण लोकव्यापी जाणवुं. एटले जेटला लोकाकाशना प्रदेश छे, तेटला निगोदना गोला छे,अने एकेक गोलामां असंख्याती निगोद रही छे, ते एकेकी निगोदमां अनंता जीव रह्या छे, माटे जीवद्रव्य लोकव्यापी जाणवुं. तथा पुद्गलद्रव्य पण एकेक जीवने सत्तायें अनंता कर्मरूप पुद्गल परमाणुआ लागा छे, तथा ते थकी बीजा छूटा लोकव्यापी पुद्गलपरणुआ पण अनंता छे,ते सर्वलोक व्यापी छे.ए रीतें ए पांच द्रव्य देशव्यापी जाणवां, अने एकआकाशास्तिकायद्रव्य लोकालोकव्यापिअनंतप्रदेशी ते सर्वव्यापी जाणवुं. ए छ द्रव्यमां सर्व व्यापी तथा देश व्यापीनुं स्वरूप कह्युं.

ए००ए शिष्यः—ए छ द्रव्य (अपवेसा के०) अप्रवेशी एटले एक क्षेत्रें छ द्रव्य भेलां मली रह्यां छे,पण कोइएक बीजामां प्रवेश करी भली जातांनथी अने एक बीजानुं कोइ कोइनुं काम पण करतां नथी तेनो श्यो परमार्थ?

गुरुः—जेम कोइएक दुकानमां पांच वाणोतर रहेता होय, ते सर्वे पोत पोताना हवाला प्रमाणें काम करता जाय,अने सहु सहुनी मर्यादामां चाले, तेम इहां एकक्षेत्रें छ द्रव्य भेलां रह्यां छे, पण सहु पोतपोतानुं काम करे छे, अने पोत पोतानी मर्यादामां वर्त्ते छे, पण निश्चयनयें करी कोइ एक

बीजामां मांहोमांहे जलतां नथी, माटे अप्रवेशी जाणवा. ए परमार्थ छे. ए रीतें षट्द्रव्यनुं स्वरूप बार ज्ञांगे करी सामान्यप्रकारें जव्यजीवने जाणवुं.

८०० शिष्यः—आगल पन्नावणासूत्रना पाठमध्ये तमें कह्युं जे जीव अजीवरूप षट्द्रव्यनुं स्परूप स्याद्वादादि आठ पक्षें करी जाणवुं. माटे ते आठ पक्ष कया, तेनां नाम कहो ?

गुरुः—आठ पक्ष ते एक, अनेक, नित्य, अनित्य, सत्य, असत्य, वक्तव्य, अवक्तव्य, ए प्रत्येक द्रव्यमां आठ पक्ष करतां छद्रव्यमां अडतालीश पक्ष थया

८१२ शिष्यः—ए छ द्रव्यमां एक अनेक पक्ष केम जाणीयें ?

गुरुः—ए षड्द्रव्यने एक पण कहीयें अने अनेक पण कहीयें केम के धर्म, अधर्म, ए बे द्रव्य खंधरूप लोकाकाश प्रमाणें एक छे अने एना गुण पर्याय प्रदेश अनेक छे, एटले गुण अनंता पर्याय अनंता अने प्रदेश असंख्याता जाणवा. हवे आकाशास्तिकायद्रव्य पण खंधरूप लोकालोकप्रमाणें एक छे अने गुणपर्याय प्रदेश अनेक छे, एटले गुण अनंता, पर्याय अनंता अने प्रदेश पण अनंता जाणवा. ए रीतें त्रण द्रव्यमां एक अनेक पक्ष कह्यो. हवे शेष त्रण द्रव्यमां एक अनेकपणुं देखाडे छे. तिहां प्रथम कालद्रव्यनो वर्त्तमानरूप गुण एक जाणवो अने गुणपर्याय तथा समय अनेक छे, एटले गुण अनंता छे, पर्याय अनंता छे, अने समय पण अनंता जाणवा, केम के अतीतकालें अनंता समय वही गया अने अनागतकालें अनंता समय आगल आवशे, तथा वर्त्तमान काल एक समय मात्र जाणवो. हवे पुफ्लास्तिकाय द्रव्यमां एकअनेक पक्ष कहे छे. पुफ्लद्रव्यना परमाणुआ अनंता छे ते एकेक परमाणुआमां अनंता गुणपर्याय रह्या छे, ए बोल अनेक छे, पण सर्व परमाणुआमां पुफ्लपणुं एक सरखुं छे, तेथी एक छे. हवे जीवद्रव्यमां एक, अनेकपणुं कहे छे. लोकमां जीव अनंता छे, एकेकजीवना असंख्याता, असंख्याताप्रदेश छे, अने एकेक प्रदेशे अनंता गुण रह्या छे, तथा एकेक गुणमां अनंता अनंता पर्याय छे अने पर्याय पर्यायमां धर्म अनंतो छे, ए सर्व बोल अनेकपक्षना दर्शावनारा छे, अने संग्रहनयें करी जीवपणुं सर्वमां एक सरखुं छे, माटे एकपक्ष छे.

इहां शिष्य पूछे छे के जो एम सर्वजीव एक सरखा छे तो एकजीव सिद्धस्वरूपी परमानंद सुखमय देखाय छे, अने बीजा संसारी जीव कर्म

वशें पञ्चाथका दुःखी देखाय छे, तेणें करी सर्वजीव, जूदा जूदा लागे छे, तेनो श्यो परमार्थ ? तेवारें गुरु कहे छे, के निश्चय नयें करी सर्वे जीव, सत्तायें सिद्धसमान छे, तेथीज सर्व जीव कर्म खपावी सिद्धि वरे छे, तेणें करी सर्व जीवनी सत्ता एक सरखी जाणवी माटे सरखा छे.

शिष्यः—सर्वे जीव, सिद्ध समान कहो छो तेवारें अन्नव्य जीव पण सिद्धसमान थया, तो अन्नव्य जीव केम मोक्षे जता नथी ?

गुरुः—अन्नव्यनो स्वन्नाव एवोज छे, जे संसारमां फरतां कदाचित् कारण सामग्री मले, तो पण अन्नव्यने परावर्त्तन धर्म नथी, तेणे करी सिद्ध थता नथी, पण नव्य जीवने परावर्त्तन धर्म छे माटे तेने कारण सामग्री मलवा थी पूर्वन्नावने पलटावी गुणश्रेणी चढी सर्व कर्मने चूर्ण करी सिद्धि पद वरे छे. अने सर्व जीवना आठ रुचक प्रदेश मुख्य छे, ते निश्चयनयें करी नव्य अन्नव्य बेहुना सिद्ध समान छे, तेणे करी सर्व जीवनी सत्ता एक सरखी छे, केम के ए आठ रुचक प्रदेशने कर्म लागतां नथी, तेनी आचारांगसूत्र नी टीकामां साख छे. ए रीतें षट् द्रव्यमां एक अनेक पक्षनुं स्वरूप कह्युं.

७२४ शिष्यः—षट् द्रव्यमां नित्य अनित्य पक्ष केम जाणीयें ?

गुरुः—छ द्रव्य नित्य पण कहेवाय अने अनित्य पण कहेवाय, ते आवी रीतें के धर्मास्तिकायना अरूपी, अचेतन, अक्रिय अने चलणसहाय ए चार गुण तथा पर्यायमां धर्मास्तिकायनो खंध, ए पांच नित्य जाणवा, अने देश, प्रदेश तथा अगुरुलघु ए त्रण पर्याय धर्मास्तिकायना अनित्य जाणवा तथा अधर्मास्तिकायना अरूपी अचेतन, अक्रिय अने थिर सहाय ए चार गुण तथा पर्यायमां अधर्मास्तिकायनो खंध, ए पांच नित्य जाणवा, अने देश, प्रदेश तथा अगुरुलघु, ए त्रण पर्याय अनित्य जाणवा. तथा आकाशास्तिकायना अरूपी, अचेतन, अक्रिय अने अवगाहक, ए चार गुण तथा पर्यायमां आकाशास्तिकायनो खंध, ए पांच नित्य जाणवा, अने देश, प्रदेश, तथा अगुरुलघु, ए त्रण पर्याय अनित्य जाणवा, तेमज काल द्रव्यना अरूपी, अचेतन, अक्रिय, अने नवापुराणा वर्त्तना लक्षण ए चार गुण नित्य जाणवा, तथा अतीत अनागत, वर्त्तमान अने अगुरु लघु ए चार पर्याय अनित्य जाणवा. तथा पुद्गल द्रव्यना रूपी, अचेतन सक्रिय अने गलण पूरण मिलण विखरण ए चार गुण नित्य जाणवा.

तथा वर्ण, गंध, रस, फरस, अगुरु लघुसहित ए चार पर्याय पुज्ञलद्रव्यना अनित्य जाणवा, तथा जीवद्रव्यना ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य ए चार गुण अने अव्याबाध, अमूर्त्तिक तथा अनवगाह ए त्रण पर्याय नित्य जाणवा तथा एक अगुरुलघु पर्याय, जीवनो अनित्य जाणवो. ए रीतें षट् द्रव्यमां नित्य अनित्य पक्षनुं स्वरूप कह्युं.

७३६ शिष्यः—षट् द्रव्यमां सत् असत् पक्षनुं स्वरूप केम जाणीयें?

गुरुः—बए द्रव्य, स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वज्ञावपणे (सत् के०) बता बे, अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल तथा परज्ञाव पणे (असत् के०) अबता बे. हवे ए ब द्रव्यमां स्वद्रव्यादिक चारपणुं देखाडेबे, प्रथम धर्मास्तिकायनुं स्वद्रव्य ते चलणसहाय गुण तथा अधर्मास्तिकायनुं स्वद्रव्य ते स्थिरसहाय गुण, तथा आकाशास्तिकायनुं स्वद्रव्य ते अवगाहक गुण, तथा कालनुं स्वद्रव्य ते नवा पुराणा वर्त्तना लक्षणगुण, तथा पुज्ञलास्तिकायनुं स्वद्रव्य ते पूर्णगलन गुण, अने जीवनुं स्वद्रव्य ते ज्ञानादि चेतना लक्षण गुण, ए ब द्रव्यमां स्वद्रव्यपणुं कह्युं. हवे स्वक्षेत्रपणुं देखाडे बे. एटले स्वक्षेत्रें प्रदेश घणा बे, माटे बए द्रव्यमां स्वक्षेत्रपणुं कहे बे. तिहां प्रथम धर्म अने अधर्म, ए बे द्रव्यना स्वक्षेत्रें असंख्याता प्रदेश जाणवा. तथा आकाश द्रव्यना स्वक्षेत्रें अनंता प्रदेश जाणवा, तथा काल द्रव्यनो स्वक्षेत्रें एक समय जाणवो, तथा पुज्ञलद्रव्यनो स्वक्षेत्रें एक परमाणुउ, एवा अनंता परमाणुआ जाणवा. तथा जीवद्रव्यना स्वक्षेत्रें एक जीवना असंख्याता प्रदेश जाणवा. ए रीतें ब द्रव्यमां स्वक्षेत्रपणानो विचार जाणवो, हवे ब द्रव्यमां स्वकालपणुं देखाडे बे. बए द्रव्यमां पोत पोतानो स्वकाल ते अगुरुलघु पर्यायनोज वर्त्ते बे. हवे बए द्रव्यमां स्वज्ञावपणुं देखाडे बे (स्वज्ञाव के०) गुण पर्याय, ते बए द्रव्यमां पोत पोताने स्वज्ञावें गुण पर्याय रह्या बे. ते स्वज्ञावपणुं जाणवुं. एम धर्मास्तिकाय द्रव्यमां पोतानुं स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वज्ञावपणानो संबंध बे, पण बीजा पांच द्रव्यना स्वद्रव्यादिक चारनो तेमां संबंध नथी. तेमज अधर्मास्तिकाय द्रव्यमां पोतानो स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, अने स्वज्ञावपणानो संबंध बे, पण बीजा पांच द्रव्यना स्वद्रव्यादिक चारनो संबंध तेमां नथी, तेमज आकाशास्तिकायमां, कालमां, पुज्ञलमां अने जीवमां ए सर्वमां पोत पोतानुं स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने

स्वन्नाव पणानो संबंध ठे, पण बीजा पांच द्रव्यनां स्वद्रव्यादिक चारनो तेमां संबंध नथी. एम ठ द्रव्य स्वगुणें करी सत् ठे, अने परगुणें करी असत् जाणवां. जे द्रव्य ते गुण पर्यायवंत होय, एटले अनेक पर्याय ते द्रव्य कहीयें, अने स्वद्रव्यनुं आवर्त्तपणुं ते क्षेत्र कहीयें. तथा उत्पाद व्य यनी वर्त्तना ते काल कहीयें, तथा विशेष गुण परिणति ते स्वन्नाव परिण ति जाणवी, एटले पर्याय प्रमुख ते स्वन्नाव कहीयें. ए रीतें ठए द्रव्यना स्वरूपमां सत् असत् पणानो विचार जाणवो.

७४७ शिष्यः–ठ द्रव्यमां वक्तव्य अवक्तव्य पणानुं स्वरूप केम जाणीयें?

गुरुः–ठ द्रव्यमां (वक्तव्य के०) वचनथी कहेवाय एवा प्रत्येक द्रव्यमां अनंता गुण पर्याय वक्तव्य ठे, अने ठए द्रव्यमां (अवक्तव्य के०) वच नथी कह्या न जाय, एवा अनंता गुण पर्याय अवक्तव्य ठे, तेनुं स्वरूप कहे ठे. श्री तीर्थंकर न्नगवानें सर्व न्नाव प्रत्यक्ष पणे दीठा, तेने अनंतमे न्नागे वक्तव्या एटले प्ररूप्या अने जे श्री तीर्थंकर न्नगवानें प्ररूप्या, तेनो अनंतमो न्नाग श्री गणधर देवें जाल्यो ते सूत्रमां गुंथ्यो ठे, अने जे सूत्रमां गुंथ्यो, तेने असंख्यातमे न्नागें हमणां आगम वर्त्ते ठे, ए ठ ए द्रव्यमां व क्तव्य अवक्तव्य पक्षनुं स्वरूप जाणवुं. ए रीतें ठए द्रव्यनुं स्वरूप आठ पक्षें जाणे, तेने समकेती कहीयें.

अत्र सूत्रपाठः ॥ गाथा ॥ जीवाईसद्दहणं, सम्मत्तं एस अइगमो नाणं ॥ तहेव सया रमथ,चरथी एसो ठुमुक्खपहो ॥१॥ अर्थः–जीवादिक ठए द्रव्य जे जेहवा ठे, ते तेवा गुण पर्याय सहित जाणे अने नित्य अनित्य पणे समय समय पलटाय ठे, ते सद्दहे, तेने समकेती जाणवा. ए रीतें ठए द्रव्यनुं स्वरूप जाणी तेमांथी पांच अजीव द्रव्यने ठांमी ने एकज जीवना स्वगुणमां स्थिर थइ रमण करवुं, तेने चारित्र कहीयें.

हवे प्रथम समकेत शुद्ध करवुं जोइयें, माटे समकेतनुं स्वरूप देखाडे ठे. नव तत्त्वमां मोक्षनुं कर्त्ता जीवतत्त्व ठे, अने संवर तथा निर्जरा ए बे गुण ठे, ते मोक्षना उपादान कारण ठे,तथा देव अने गुरु ए बे उपकारी ठे, ते मोक्षना निमित्तकारण जाणवां. ए रीतें जीव, संवर, निर्जरा अने मोक्ष, ए चार उपादेय ठे, एटले आदरवा योग्य ठे, अने शेष पांच तत्त्व हेय ठे, एटले ठांमवा योग्य ठे, एवा जे परिणाम ते समकेत ज्ञान कहीयें, ए

वा समकेत ज्ञानें करी जलुं थाय, श्री अनुयोग द्वारमां कह्युं बे ॥ गाथा ॥ नाणम्मि गिह्हियव्वे, अगिह्हियव्वे य इछ अछम्मि ॥ जइय वमे वईय जो,सो उवएसो नउ नाम ॥१॥ अर्थः—ज्ञान ते शुं? जे ब द्रव्यनुं स्वरूप नित्यानित्यादि आठ पक्षें करी जेवुं बे, तेवुं जाणीने तेमां जे लेवा योग्य होय ते लीये अने बांरूवा योग्य होय, ते बांरू, एवो जे उपदेश, ते नय उपदेश कहीयें,

वली श्री उत्तराध्ययनसूत्रमां समकेतनी दश रुचि कही बे. तेनां नाम कहे बे. एक निःसर्गरुचि, बीजी उपदेशरुचि, त्रीजी आज्ञारुचि, चोथी सूत्ररुचि, पांचमी श्रद्धारुचि, बठी संक्षेपरुचि, सातमी अजिगमरुचि, आठमी विस्ताररुचि, नवमी क्रियारुचि, अने दशमी धर्मरुचि. ए दश रुचिनुं जे जीवने ज्ञान थयुं होय, तेहने क्षायिक समकेती जाणवो. माटे हवे ए दश रुचिनुं स्वरूप शिष्यने जाणवा सारु संक्षेपथी कहे बे.

७४९ प्रथम निःसर्गरुचि ते जे निश्चय व्यवहार नयें करी नैगमादि सात नयें करी, नामादि चार निक्षेपे करी, जीव अजीवरूप नवतत्त्व षट् द्रव्यनुं स्वरूप जाणे, तेमां आश्रवरूप पांच तत्त्व ते उपर त्यागबुद्धि तथा संवर निर्जरारूप शुद्ध गुण तेनुं आदरवुं करे, तथा श्री वीतराग जाषित जे नवतत्त्व षट् द्रव्यरूप तेनुं स्वरूप, द्रव्य, क्षेत्र, काल अने जावथी जाणे, तथा नामादिचारनिक्षेपे करी सर्व वस्तुनुं प्रमाण करे, ते निःसर्गरुचि कहीयें

७५० बीजी उपदेशरुचि ते एहीज नव तत्त्व, षट्द्रव्यने गुरुना उपदेशथी जाणीने सद्दहे, प्रतीति करे, तेनुं स्वरूप जाणवाने घणी रुचि राखे, ते उपदेशरुचि.

७५१ त्रीजी आज्ञारुचि, ते जेना राग, द्वेष अने मोह, क्षय थइ गया बे अने जेनुं अज्ञान मटी गयुं बे, एवा श्रीअरिहंतदेव तेणे जे आज्ञा करी,ते प्रमाण करे, तेमां कांइ पण शंका संदेह न आणे, ते आज्ञारुचि जाणवी.

७५२ चोथी सूत्ररुचि,ते आगमसूत्र,निर्यूक्ति,जाष्य,चूर्णि अने टीका,ए पंचांगीनां वचन माने,आगमसूत्र जणवानी चाहना राखे,ते सूत्ररुचि जाणवी.

७५३ पांचमी श्रद्धारुचि, ते श्रीजगवती तथा नंदीसूत्रमां आ प्रमाणें गाथा बे ॥ सुत्तछो खलु पढमो, बीउ निज्जुत्ति मिस्सउ जणिउ ॥ तइउ य निरविसेसो, एस विहि होई अणुउगो ॥१॥ तथा अनुयोग द्वारमां निर्यूक्ति अनुगम कह्यो बे. तथा समवायांगमां "सन्निजुत्ताए" इत्यादिक घणी

साखो डे ते माटे जे पुरुष पंचांगी माने ते आराधक डे तेथी पंचांगीनी श्रद्धा राखवी ते श्रद्धारुचि जाणवी.

७५४ बही अन्निगमरुचि ते सूत्र सिद्धांत अर्थ सहित जाणे, तथा अर्थविचार सुणवानी जणवानी जेने घणी चाहना होये, तेने अन्निगमरुचि जाणवी.

७५५ सातमी विस्ताररुचि, ते ब ड्रव्यने जाणे, ब ड्रव्यना प्रदेश जाणे, गुण जाणे, पर्याय जाणे, नाम, क्षेत्र, काल, न्नाव, ड्रव्य, गुण, पर्याय, उत्पाद, व्यय, ध्रुव, सात नय, चार निक्षेपा, ब कारक, प्रमाण, पांच समवाय, ड्रव्यास्तिक दश नय, पर्यायास्तिक ब नय, कर्त्ता, कारण, कार्य, निश्चय, व्यवहार, उत्सर्ग, अपवाद, हेय, ज्ञेय, उपादेय, चउन्नंगी, त्रिन्नंगी, सप्तन्नंगी, अनेकन्नंगी, ए रीतें नयप्रमाण सहित नवतत्त्व तथा बड्रव्यने सईहे, ते विस्ताररुचि जाणवी.

७५६ आठमी क्रियारुचि कहे डे. रत्नत्रयी जे ज्ञान, दर्शन, अने चारित्ररूप आत्मसत्ता डे, ते निवारण करवा सारु तप, जप, विनय, वैय्यावच्च, न्नक्ति, व्रत, पच्चरकाण, समिति गुप्तिरूप चरणसित्तरी, करणसित्तरीने गुणें करी सहित ॥ गाथा ॥ वय समण धम्म संजम, वेयावच्चं च बंन्न गुत्तीउं॥ नाणाइ तियं तव को, ह निग्गहाइं इचरण मेयं ॥ १ ॥ अर्थः—पांच व्रत तथा दश प्रकारें श्रमणधर्म, पाले, सत्तर न्नेदें संयम आराधे, दश प्रकारनुं वैय्यावच्च करे, नव वाडे ब्रह्मचर्य पाले, त्रण गुप्तिने आदरे, रत्नत्रयीने आराधे, बार प्रकारना तपने आदरे, क्रोधादिक चार कषायनो निग्रह करे, ए चरणसित्तरीना सीत्तेर न्नेद जाणवा. हवे करणसीत्तरी कहे डे ॥ गाथा ॥ पिंमविसोही समिई, न्नवणा पडिमाय इंदिय निरोहो ॥ पडिलेहण गुत्तीउं, अन्निग्गहो चेव करणं तु ॥ १ ॥ अर्थः—चार प्रकारनो पिंम सूजतो लीये, इर्यासमिति प्रमुख पांच समिति पाले, अनित्यादि वार न्नावना न्नावे, साधुनी वार प्रतिमा वहे, पांच इंद्रियनो निरोध करे, पच्चीश पडिलेहण उपयोग सहित करे, त्रण गुप्ति पाले, तथा ड्रव्य, क्षेत्र, काल अने न्नाव, ए चार प्रकारें अन्निग्रह करे, निश्चयथकी ए करणसित्तरीना सीत्तेर बोल पाले, ए रीतें चरणसीत्तरी अने करणसीत्तरीना गुणें करी जे सहित होय अने आत्मधर्मथी रुचि घणी होय, ते जीव क्रियारुचिवंत जाणवो.

७५७ नवमी संक्षेपरुचि ते अर्थमां तथा ज्ञानमां थोडुं कह्याथी पण घणुं जाणे, कुमतिमां न पडे, जैनमतमां अंतरंग प्रतीति माने, तेने संक्षेपरुचि होय.

G५G दशमी धर्मरुचि ते पंचास्तिकायनुं स्वरूप जाणवें करी श्रुतज्ञानने सद्भावें अंतरंग निश्चयनयने सत्ताने सर्द्दहे,एटले वस्तुगतें अनंतो धर्म रह्यो छे,तेने निरावरण प्रगट करवानी रुचि जेने होय तेने धर्मरुचि जीव कहीयें. ए रीतें दश रुचिनुं स्वरूप जाणे, तेने क्षायिकसमकेती कहीयें.

हवे वली छ द्रव्यनुं स्वरूप जाणवाने अर्थे एकेक द्रव्यमां छ छ सामान्यगुण छे,तेनां नाम कहे छे. एकअस्तित्व ते अस्तिपणुं, बीजुं वस्तुत्व ते वस्तुपणुं,त्रीजुं द्रव्यत्व ते द्रव्यपणुं, चोथुं प्रमेयत्व ते प्रमेयपणुं, पांचमुं सत्त्व ते सत्त्वपणुं, छठुं अगुरुलघुत्व, ते अगुरुलघु पणुं. ए छ गुण जाणवा.

G६४ तिहां प्रथम अस्तिपणुं कहे छे. ए छ द्रव्य पोताना गुण पर्याय अने प्रदेशे करीने अस्ति छे,तेमां पांच द्रव्य अस्तिकाय जाणवा. अने एक कालद्रव्यमां अस्तिकायपणुं नथी, जे कारणे धर्म, अधर्म, आकाश अने जीव, ए चार द्रव्यना असंख्याता प्रदेश मली खंध थाय छे अने पुद्गलमां पण खंध थवानी शक्ति छे, तेथी पांचे द्रव्य अस्तिकाय जाणवां. अने कालनो समय जे छे ते कोइ वीजा समयथी मलतो नथी,एटले एक समय विणसे छे, अने ते पछी बीजो समय आवे छे, तेणें करी कालद्रव्य अस्तिकाय न कहेवाय, अने पांच द्रव्य अस्तिकाय कहेवाय.

G७० हवे छ द्रव्यमां वस्तु पणुं देखाडे छे. वस्तुत्व ते छए द्रव्य एकठां एक क्षेत्रमां मेलां रह्यां छे,जे कारणें आकाशरूप क्षेत्रना एक प्रदेशमां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश रह्यो छे,तथा अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश रह्यो छे,अने जीव अनंताना अनंता प्रदेश रह्या छे, तथा पुद्गल परमाणुआ पण तेमज अनंता रह्या छे,एम एक आकाश प्रदेशमां पांच द्रव्य रह्यां छे, ते सर्वे द्रव्य पोत पोतानी सत्ता लीधां रह्यां छे, पण कोइ द्रव्य कोइ द्रव्यमां नथी, ए द्रव्यनेविषे वस्तुपणुं जाणवुं.

G७६ हवे ए छ द्रव्यमां द्रव्यपणुं देखाडे छे. छए द्रव्य पोत पोतानी क्रिया करे छे, एटले धर्मास्तिकायमां पोतानो चलण सहाय गुण छे, ते धर्मास्तिकायना सर्व प्रदेशमां जाणवो. ते सदा काल जीव पुद्गलने चालवारूप क्रिया करे छे. इहां शिष्य आशंका करे छे के लोकने अंतें सिद्धक्षेत्रमां धर्मास्तिकाय छे, ते सिद्धना जीवने चलणरूप क्रिया केम करतो नथी? तेनो उत्तर गुरु कहे छे. सिद्धना जीव अक्रिय छे, तेथी

ते चालता नथी, पण तेहीज क्षेत्रमां सूक्ष्मनिगोदीआ जीव तथा पुद्गल परमाणुआ अनंता रह्या छे, तेने चालवारूप क्रिया करे छे, तथा अधर्मास्तिकाय द्रव्य जीव पुद्गलने स्थिरराखवा रूप क्रिया करे छे, तथा आकाशास्तिकाय द्रव्य सर्व द्रव्यने अवगाहकरूप क्रिया करे छे. अहीं शिष्य आशंका करे छे, के अलोकमां पण आकाश द्रव्यने अवगाह शक्ति तेवीज छे, पण तिहां अवगाहना केम करतो नथी? तेनो उत्तर गुरु कहे छे, अलोकमां अवगाहक कोइ द्रव्य नथी एटले केने अवगाह क्रिया करे? तथा पुद्गल द्रव्य मलवाविखरवारूप पोतानी क्रिया करे छे, तथा काल द्रव्य पण पोतानी वर्त्तनारूप क्रिया करे छे, तथा जीव द्रव्य पण ज्ञानलक्षण उपयोग रूप क्रिया करे छे, ए रीतें छए द्रव्य, पोताने पारिणामिक पणे पोत पोतानी सत्तानी क्रिया करे छे, ते द्रव्यत्व जाणवुं.

७७२ हवे ए छ द्रव्यमां प्रमेयपणुं कहे छे. जे वस्तुनुं प्रमाण करवुं तेने प्रमेयत्व कहीयें. एटले केवली भगवान् पोताना ज्ञानथी जाणे छे जे छ द्रव्य मल्यां छे, ते छ द्रव्यमां प्रमेयपणुं छे, ते छ द्रव्यनुं प्रमाणपणुं देखाडे छे. धर्मास्तिकायद्रव्य एक, अधर्मास्तिकाय द्रव्य एक, आकाशास्तिकाय द्रव्य एक, अने जीवद्रव्य अनंतां छे, तेनी गणती कहे छे तेमां संज्ञी मनुष्य संख्याता छे, असंज्ञी मनुष्य असंख्याता छे, नारकी असंख्याता छे, देवता असंख्याता, तिर्यंचपंचेंद्रिय असंख्याता, बेंद्रि असंख्याता, तेंद्रि असंख्याता चौरिंद्रिय असंख्याता, पृथ्वीकाय असंख्याता, अप्काय असंख्याता, तेउकाय असंख्याता, वाउकाय असंख्याता, प्रत्येक वनस्पति जीव असंख्याता, ए सर्व तेर बोलना जीव भेला करीयें, तेथकी सिद्धना जीव अनंता छे, अने सिद्धना जीव करतां बादर निगोदना जीव अनंतगुणा जाणवा. बादरनिगोद ते मूला, आदु, नीली हलदर, रतालु, पिंमालु, शकरकंद, गाजर, लसण, सूरण, गरमर प्रमुख कंदमूल छे, ते सूइना अग्रभाग जेटलुं कंदमूल होय, तेमां पण सर्वसिद्धना जीव करता अनंतगुणा जीव रह्या छे. ए रीतें बादर निगोदनो विचार जाणवो. अने सूक्ष्मनिगोदमां तो वली ए सर्वथी अनंतगुणा जीव जाणवा, तेनो विचार कहे छे. जेटला लोकाकाशना प्रदेश छे, तेटला निगोदीया गोला छे, ए रीतें देवचंदजीकृत आगमसारने मतें जाणवुं अने बीजा आचार्य वली एम कहे छे के जेटला लोकाकाशना प्रदेश छे, तेने

असंख्यातमे जागे निगोदीया गोला ढे, ए वातनो नयनी अपेक्षाये जोतां पण कोइ निकाल सूजतो नथी माटे ए विचार बहुश्रुतगम्य ढे.

हवे ते लोकाकाशना प्रदेशनुं मान कहे ढे. एक तंडुलरूप श्रेणीप्रमाणें क्षेत्रमांथी समय समय एक एक आकाश प्रदेश काढतां असंख्याती अवसर्प्पिणी अने उत्सर्प्पिणी काल वही जाय, एवा चौद राजलोकमां आकाश प्रदेश जर्यां ढे, तेटला निगोदीया गोला लोकमां जाणवा, अने एकेक गोलामां असंख्याती निगोद जाणवी, ते एकेक निगोदमां वली अनंता जीव रह्या ढे, तेनुं मान कहे ढे. अतीत काल, अनंतो ढेडारहित गयो, तेना समय तथा अनागतकाल आगल अनंतो आवशे, तेना समय अने वर्त्तमान कालनो एक समय, ए रीतें त्रणे कालना समय लइ जेला करीयें, तेने अनंतगुणा करीयें, तेटला जीव, एक निगोदमां ढे. एवी एक गोलामां असंख्याती निगोद रही ढे. ए रीतें जीवनी सूक्ष्मता जाणवी. हवे ते एकेक जीवना असंख्याता असंख्याता प्रदेश ढे, अने एकेक प्रदेशे अनंती कर्मनी वर्गणाउं लागी ढे, ते एकेक वर्गणामां अनंता पुद्गल परमाणुआ रह्या ढे, एम अनंता परमाणुआ जीवने लागा ढे, अने जीवथकी रहित बीजा बूटा परमाणुआ ते वली जीवोने लागेला परमाणुआथी पण अनंतगुणा ढे, अने एकेका परमाणुआमां अनंतो उत्पादव्ययरूप काल वही गयो अने परमाणुआ तेना तेहीज ढे, ए ढ द्रव्यनुं मान सामान्यपणे कह्युं, ते पंमित जीवनें श्रद्धामां लाववुं. ए निगोदनुं स्वरूप श्रद्धामां आवे, तेवारें समकेतनी प्राप्ति थाय. एवी रीतें ढ द्रव्यनुं जे प्रमाण करवुं तेने प्रमेयत्व कहीयें. जे प्रमाण करवा योग्य होय तेने प्रमेय कहीयें ते प्रमेय ढ द्रव्य ढे तेनुं जे प्रमाण करवुं तेने प्रमेयत्व कहीयें.

वली निगोदनुं स्वरूप विशेषरीतें सूत्रपाठें करी देखाडे ढे ॥ गाथा ॥ गोलाय असंखिज्जा, असंखनिगोहउं हवइ गोलो ॥ इक्किक्कंमि निगोदे, अणंत जीवा मुणेयवा ॥ १ ॥ अर्थः—लोकमां असंख्याता गोला ढे, एकेक गोलामां असंख्याती निगोद ढे, एकेक निगोदमां अनंता जीव ढे ॥ गाथा॥ सत्तरस समहियाकिरि, एगुणुयाणा मुहुत्त खुकुजवा ॥ सगतीससयतिहूत्तर, पाणा पुण इग मुहुत्तंमि ॥ २ ॥ अर्थः—निगोदीयाजीव संज्ञीपंचेंद्रिय

मनुष्यना एक श्वासोच्छ्वासमां सत्तर ञव जाजेरा करे ले, तेवा उच्छ्वास एक मुहूर्त्तमां ३७७३ थाय ले ॥ गाथा ॥ पणसठि सहस्स पणसय, छत्तीसा इग्ग मुहूर्त्त खुड्डुञवा ॥ आवलियाणं दोसय, छप्पन्ना एगखुड्डुञवो ॥ ३ ॥ अर्थः-निगोदीया जीव एकमुहूर्त्तमां ६५५३६ ञव करे ले,ते निगोदनो एकञव २५६ आवलिकानो ले ए खुल्लकञवनुं प्रमाण ले ॥ गाथा ॥ अत्थि अणंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो ॥ उववज्जंति चयंवि य, पुणो वि तत्थेव तत्थेव ॥ १ ॥ अर्थः- निगोदमां अनंता जीव एवा ले, के जे जीव त्रसपणुं केवारें पण पाम्यो नथी अनंतो काल पूर्वें वही गयो ले, वली अनंतो काल आगल जाशे तो पण ते जीव वारंवार तिहांज उपजे ले अने तिहांज चवे ले, ते एकेकी निगोदमां अनंता जीव ले.

हवे ते निगोदना बे ञेद ले. एक व्यवहारराशि निगोद अने बीजा अव्यवहारराशि निगोद, तिहां जे जीव, बादर एकेंद्रियपणुं अथवा त्रसपणुं पामीने पाछा निगोदमां जइ पडे ले, ते निगोदीया जीव व्यवहार राशिया कहीयें. तथा जे जीव, कोइ कालें पण निगोदथी निकलीनें बादर एकेंद्रियादिकपणुं पाम्या नथी, ते जीव, अव्यवहारराशिया कहीयें. ए अव्यवहार राशि निगोदमां ञव्य अने अञव्य, एवा बे जातिना जीव ले, ए स्वरूप सर्व श्रीञुवनञानुकेवलीना चरित्रनी साखें लख्युं ले. तथा इहां मनुष्य पणा मांथी जेटला जीव कर्म खपावी एक समयमां मोक्षे जाय ले, तेटला जीव ते समयमां अव्यवहारराशि सूक्ष्मनिगोदमांथी नीकलीने ऊंचा आवे ले. एटले जो दश जीव मोक्ष जाय तो दश जीव अव्यवहारराशिमांथी निकले, तिहां कोइ समयें ते जीवमां ञव्यजीव ऊंछा निकले तो एक वे अञव्य जीव नीकले, पण व्यवहारराशि जीवमां वधघट थाय नही, तेटलाना तेटलाज रहे, एवा ए निगोदना गोला लोकमां असंख्याता ले, ते ल दिशिना आव्या पुद्गल आहारादि पणे लीए ले, ए जे लदिशिनो आहार लीये ले, ते सकल गोला कहेवाय ले, अने जे लोकना अंतप्रदेशें निगोदीया गोला रह्या ले, ते त्रणदिशिनो आहार फरसनायें लीये ले, ते विकलगोला कहेवाय ले, ए सूक्ष्मनिगोदमां एक साधारण वनस्पतिना स्थावर सूक्ष्मजीव ले, अने पृथिव्यादिक चार प्रमुखना सूक्ष्मजीव जे लोकव्यापी ले, ते सर्व प्रत्येक

छे, परंतु साधारणपणुं एक वनस्पतिकायमांज छे, पृथिव्यादिक चार स्थावरमां नथी, ए सूक्ष्मनिगोदमां अनंतु दुःख छे, ते दृष्टांतें करी देखाडे छे, सातमी नरकमां उत्कृष्टायु तेत्रीश सागरोपमनुं छे, ते तेत्रीश सागरोपमना जेटला समय थाय, तेटली वार कोइ जीव सातमी नरकमां पूर्ण तेत्रीश तेत्रीश सगरोपमने आउखे उपजे, तेवारें तेने असंख्याता भव नरकना थाय, ते असंख्याता भवमां सातमी नरकने विषे ते जीवने जेटलुं छेदन, भेदननुं दुःख थाय, ते सर्वे दुःख एकठुं करीयें, तेथी पण अनंतगुणुं दुःख निगोदीया जीव एक समयमां भोगवे छे. वली बीजो दृष्टांत कहे छे मनुष्यनी साडा त्रणकोडी रोमराजी छे, तेने कोइ देवता साडात्रण क्रोड लोखंमनी सूइ अग्निमां तपावीने समकालें रोमें रोमें चांपे, तेवारें ते जीवने जे वेदना थाय, तेथी पण अनंतगुणी वेदना निगोदमां छे, माटे हे भव्यजीवो! ए निगोदपणुं पामवानुं कारण ते अज्ञान छे ॥गाथा॥ नवि तं करेइ अगणि, न इव विसं न इव किण्ह सप्पाई ॥ जं कुणइ महादोसं, तीव्वं जीवस्स मिछत्तं ॥ १ ॥ अर्थः—जेटलो अवगुण अग्नि न करे, जेटलो अवगुण विष न करे, जेटलो अवगुण कालो सर्प न करे, तेटलो अवगुण महादोष रूप अज्ञान जे छे ते करे छे. माटे अज्ञानरूप (तीव्वं के०) आकरो दोष, ते मिथ्यात्व जाणवुं ॥गाथा॥ कठं करेसि अपदं,मेसी अछं चयसि धम्मछं ॥ इक्कं न चयसि मिछत्तं विसलवं जेण बुड्डहिसि ॥ १ ॥ अर्थः—कोइ जीव अनेक प्रकारे कष्टक्रिया करे तथा पंचाग्निसाधना तपश्चर्यादिक करे, पांचे इंद्रियोने वश करवा सारु आत्माने दमे, धर्मने अर्थें धनप्रमुखनो त्याग करे, एटलां सर्व कार्य करे, परंतु जो एक मिथ्यात्वने नथी छोडतो तो तेनी क्रिया सर्वे विषना उलवा सरखी अशंक्य कदाग्रह हठरूप जाणवी. ते जीव संसार समुद्रमां बूडे, कारण के एक मिथ्यात्व छता सर्वे क्रिया संसारहेतु जाणवी माटे उत्तम प्राणीयें मिथ्यात्वनो त्याग करवो. ए निगोदनो विचार जाणवो.

७७७ शिष्यः—ए छ द्रव्यमां सत्त्व अने सत्त्वपणुं ते शुं कहीयें?

गुरुः—छए द्रव्य एक समयें उपजे छे, विणसे छे, अने स्थिर छे. ए उत्पाद, व्यय अने ध्रुवपणुं तेहीज सत्त्वपणुं जाणवुं, एटले छए द्रव्य उत्पाद, व्यय, अने ध्रुवें करी युक्त छे, ते सत्त्वपणुं छे. ए तत्त्वार्थग्रंथनुं वचन छे.

एनुं विस्तारें स्वरूप देखाडे छे. धर्मास्तिकायद्रव्यना असंख्याता प्रदेश

छे, तिहां एकप्रदेशमां अनंतो अगुरुलघु छे, अने बीजा प्रदेशमां असंख्यातो अगुरुलघु छे एम त्रीजा प्रदेशमां संख्यातो अगुरुलघु छे, ए रीतें असंख्याता प्रदेशमां अगुरुलघुपर्याय घटतो वधतो रह्यो छे, ए अगुरुलघु पर्याय समय समय चले छे, तेथी जे प्रदेशमां असंख्यातो छे ते प्रदेशमां अनंतो थाय छे अने जे प्रदेशमां अनंतो छे ते प्रदेशमां असंख्यातो थाय छे, एम चौदराज लोकमां धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेश छे, तेमां सरखो समकालें अगुरु लघु पर्याय फरे छे. एटले जे प्रदेशमां असंख्यातो छे, ते स्थानकें असंख्यातो फीटीने अनंतो थाय छे, तेवारें ते प्रदेशमां असंख्याता पणानो विनाश छे, अने अनंत पणानो उत्पाद छे, ए रीतें अगुरुलघुनो उत्पाद व्यय छे, अने ए धर्मा स्तिकायमां बीजा जे गुण छे ते ध्रुवपणे छे अथवा अगुरुलघु पोतें पण अ गुरुलघुपणे ध्रुव छे माटें उपजवुं विणसवुं अने ध्रुवपणुं ए त्रणे नाव ध र्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेशमां सदाकाल समयसमय थइ रह्या छे, ते मज ए त्रणे नाव अधर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेशमां तथा आकाशा स्तिकायना पण अनंता प्रदेशमां सदाकाल समयें समयें थइ रह्या छे. तथा एक जीवना प्रदेश असंख्याता छे, तेमां पण उपजवुं विणसवुं अने ध्रुव पणुं अगुरुलघु पर्यायनो समये समये थया करे छे, एम सर्व जीवने विषे जाणवो, तेमज पुद्गलपरमाणुआ मांहे पण उपजवुं विणसवुं अने ध्रुव पणुं समयें समयें थइ रह्युं छे, तथा काल द्रव्यनो वर्त्तमान समय फिटि ने अतीत थाय छे, एटले ते समये वर्त्तमानपणानो विनाश छे, अने अती तपणानुं उपजवुं छे, पण कालपणुं ते ध्रुव छे, एम ए छ द्रव्यमां स्थूलपणे उत्पादव्ययनुं स्वरूप जाणवुं.

हवे सिद्धनगवान पण छ द्रव्यमांहेला जीवद्रव्य छे, तेने पण समय समय उत्पादव्यय अने ध्रुवपणुं थाय छे, ते देखाडे छे. तिहां वस्तुगतें मूलपणे जे ज्ञेयने पलटावे, ते ज्ञानपणुं एटले ते नासपणे परिणमवुं था य, तेवारें पूर्वपर्यायना नासनो व्यय थयो, अने अभिनवपर्यायना नास नुं उत्पादपणुं थयुं अने ज्ञानपणुं ते ध्रुव जाणवुं. ए रीतें सर्वेंसिद्धपरमात्मा ने सर्वगुणनी प्रवृत्तिरूप पर्यायनो उत्पाद, व्यय, समय समय थइ रह्यो छे, अने गुण तो ध्रुवपणे जाणवा. एमज धर्मास्तिकायना प्रदेशमां ते क्षेत्रमां रहेला पुद्गल अने जीवने प्रथम समयें असंख्याता चलणसहायी पणे

परिणमतो हतो, ते बीजे समयें अनंत परमाणु तथा अनंत जीवप्रदेश ने चलण सहायी थयो, तेवारें असंख्यात चलण सहायीनो व्यय थयो, अने अनंता चलण सहायीनो उत्पाद थयो, तथा चलण सहायीगुणपणुं ते ध्रुव जाणवुं. ए रीतें धर्मास्तिकाय द्रव्यमां पण उत्पाद, व्यय थइ रह्यो छे, तेमज अधर्मास्तिकायादिक द्रव्यने विषे पण नाववो. तथा वली कार्य कारण पणे ते उत्पादव्यय जाणवो, ते अगुरुलघुना चलणनो उत्पाद व्यय कहेवो. ए रीतें पंचास्तिकायने विषे जाणवो. अने कालद्रव्य तो उपचारें छे, माटे तेनुं स्वरूप पण सर्वे उपचारें कहेवुं. एम सर्वे द्रव्यमां सत्त्वपणुं छे, जो अगुरुलघुनो नेद न थतो होय, तो पछी प्रदेशें प्रदेशें मांहोमांहे नेदनुं कहेवा पणुं थाय, तेथी अगुरुलघुनो नेद सर्वमां छे, अने जेटलुं उत्पाद व्ययनुं सत्त्वपणुं एक ते एक द्रव्यपणुं जाणवुं अने जेनुं उत्पादव्ययनुं सत्त्वपणुं जूदुं ते द्रव्यपणुं पण जूदुं जाणवुं. ए रीतें सत्त्वपणुं कह्युं.

७७४ शिष्यः— ए षट्द्रव्यमां अगुरुलघुत्वने अगुरुलपणुं ते शुं कहीयें?

गुरुः—जे द्रव्यमां अगुरुलघु पर्याय छे, ते द्रव्यमां अगुरुलघु हानि वृद्धि करे छे, एटले छ प्रकारनी वृद्धि अने छ प्रकारनी हानि करे छे, तेमां प्रथम छ प्रकारनी वृद्धि कहे छे. एक अनंतनागवृद्धि, बीजी असंख्यात नाग वृद्धि, त्रीजी संख्यातनागवृद्धि, चोथी संख्यातगुणवृद्धि, पांचमी असंख्यातगुणवृद्धि, छठी अनंतगुणवृद्धि, हवे छ प्रकारनी हानि कहे छे. एक अनंतनागहानि, बीजी असंख्यातनागहानि, त्रीजी संख्यातनागहानि, चोथी संख्यातगुणहानि, पांचमी असंख्यातगुणहानि, छठी अनंतगुणहानि. ए रीतें ए छ प्रकारनी वृद्धि अने छ प्रकारनी हानि, सर्व द्रव्यमां सदाकाल सर्व समयें थइ रही छे तेमां वृद्धि ते उपजवाने कहीयें. अने हानि, ते विणसवाने कहीयें. ए अगुरुलघुपणुं जाणवुं एटले नही गुरु अने नही लघु तेने अगुरुलघु स्वनाव कहीयें ते सर्व द्रव्यमां छे, उक्तंच नगवती सूत्रे "सव्वदवा सव्व गुणा सव्वपएसा सव्वपद्यवा सव्वद्धा अगुरुलहुआए" ए अगुरुलघु स्वनावने आवरण नथी अने जे आत्मद्रव्यमां अगुरुलघु गुण छे, ते जेवारें आत्माना सर्वप्रदेशें क्षायिकनाव थाय, तेवारें सर्वगुणमां समानपणे परिणमे, पण अधिको उंछो परिणमे नही, ते अगुरुलघु गुणनुं प्रवर्त्तन जाणवुं. एरीतें ए अगुरुलघु स्वनाव ते सर्वद्रव्यमां छे.

हवे गुणनी भावना कहे छे. तिहां जेटला छए द्रव्यमां सरखा गुण छे, तेने सामान्य गुण कहीयें. तथा जे गुण एक द्रव्यमां छे, अने बीजा द्रव्य मां नथी, तेने विशेष गुणकहीयें. जे गुण कोइ द्रव्यमां छे अने कोइद्रव्यमां नथी, ते साधारण आसाधारण गुण कहीयें. छए द्रव्यमां अनंतागुण, अनंतापर्याय अने अनंता स्वभाव ते सदा शाश्वता छे, श्रीकेवलीभगवाने प्ररूप्या ते सर्वे जेम छे, तेम सद्दहणापूर्वक यथार्थ उपयोग सहित श्रुतज्ञानादिक गुणथी यथार्थ पणे जाणवा ए निश्चयज्ञान छे, ते मोक्षनुं कारण छे, जे जीव ज्ञान पाम्यो ते जीव विरति करे छे, तेने चारित्र कहीयें. एटले श्रुतज्ञाननुं फल ते विरति छे, अने विरति जे छे, ते मोक्षनुं तत्काल कारण छे. ए रीतें छ द्रव्यनुं स्वरूप सामान्यप्रकारें करी बालकबुद्धि जीवोने अर्थे प्रकाश्युं, तेनुं जाणपणुं करतां थकां समकेतरूप रत्ननी प्राप्ति थाय.

ए६७हवे जे जीव समकेतरूप रत्न पाम्यो, ते जीवने स्वरूपनुं ध्यान करवारूप विचार लखीयें छैयें. १ हुं एक छुं, महारो कोइ नथी, २ महारो आत्मा शाश्वतो छे, ३ हुं ज्ञान, दर्शनें करी सहित छुं, ४ धन कटुंबादिक महारा स्वरूपथकी बाह्य वस्तु अलगी वस्तु छे ते सर्व संयोगें मली छे, अने वियोगें जाशे तेमां महारे शो बगाड थवानो छे, ५ तन धन कुटुंबादिकनो संयोग एटले मिलाप तेने विषे जीव मुंजायो थको दुःखनी परंपरा प्रत्यें पामे छे. ६ ए शरीरादि पुत्र, कलत्र, परिवार प्रमुख ते संयोगी वस्तु महारा स्वरूप थकी जूदी छे, ७ ते सर्वेने हुं मन, वचन, कायायें करी वोसिरावुं छुं. ८ हुं चेतन छुं, अने ए पुद्गलनो स्वभाव ते अचेतन छे, ए हुं अरूपी छुं, ए पुद्गलरूपी छे, माहारो ज्ञानादि चेतना लक्षण स्वभाव छे, ए पुद्गलनो जड स्वभाव छे, १० हुं अमूर्त्ति हुं आ पुद्गल मूर्त्ति छे, ११ हुं स्वाभाविक छुं, आ पुद्गलविभाविक छे, १२ हुं (सुचि के०) पवित्र छुं ए पुद्गल अपवित्र छे, १३ महारो शाश्वतो स्वभाव छे, अने आ पौद्गलिक वस्तु जे मने मली छे, ते सर्व अशाश्वती छे, १४ महारुं ज्ञानादिरूप छे, आ पुद्गलनुं पूर्ण गलनरूप छे, १५ महारुं केवारें स्वरूपथकी न चलवुं एवो अचलित स्वभाव छे, अने पुद्गलनो चलित स्वभाव छे, १६ महारुं ज्ञान, दर्शन, चारित्र मय स्वरूप छे, अने पुद्गल वर्ण गंधादि रूप छे, हुं वर्णगंधादिकथी रहित छुं, १७ हुं शुद्ध निर्मल छुं, १८ हुं बुद्ध छुं, हुं ज्ञानानंदी छुं, १९ हुं

निर्विकल्प एटले सर्व विकल्पथी रहित बुं, महारुं स्वरूप पुद्गलथी न्यारुं बे, २० हुं देहातीत एटले आ देहरूप जे शरीर तेथकी रहित बुं, २१ अज्ञान, राग, द्वेषरूप जे आश्रव, ते माहारुं स्वरूप नथी. हुं एथकी न्यारो बुं, २२ अनंतज्ञानमय, अनंतदर्शनमय, अनंतचारित्रमय, अनंतवीर्यमय, एवुं महारुं स्वरूप बे, २३ हुं शुद्ध बुं, कर्ममलथी रहित बुं, २४ हुं बुद्ध एटले ज्ञानस्वरूपी बुं, २५ हुं अविनाशी बुं, एटले माहारो कोइ कालें नाश नथी, २६ हुं जराथकी रहित अजर बुं, २७ हुं अनादि एटले महारी आदि नथी, २८ हुं अनंत एटले महारो अंत बेडो कोइ कालें नथी, २९ हुं अक्षय बुं, एटले माहारो कोइकालें क्षय नथी, ३० हुं कोइकालें खरुं नहिं एवो अक्षर बुं; ३१ हुं कोइकालें स्वरूपथी चलुं नही, एवो अचल बुं, ३२ महारुं स्वरूप कोइथी कल्युं जाय नही, माटे अकल बुं, ३३ हुं कर्मरूपमलथी रहित अमल बुं, कर्ममलथी न्यारो बुं, ३४ महारी कोइने गम नथी, माटे अगम्य बुं, ३५ हुं नाम रहित अनामी बुं, ३६ हुं विभावदशाना रूपथी रहित स्वभावी बुं, ३७ हुं कर्मरूप उपाधिथी रहित अकर्मा बुं, ३८ हुं कर्मरूप बंधनथकी रहित अबंधक बुं, महारो खेल न्यारो बे, ३९ हुं उदयभावथी रहित अणुदय बुं, ४० हुं मन, वचन, कायाना योगथी रहित अयोगी बुं, ४१ हुं शुभाशुभविभावदशाना भोगथी रहित अभोगी बुं, ४२ हुं कर्मरूप रोगथी रहित अरोगी बुं, ४३ हुं कोइनो भेद्यो भेदाउं नही, माटे अभेदी बुं, ४४ हुं पुरुष, स्त्री, नपुंसक लक्षण त्रण वेदथी रहित अवेदी बुं, ४५ हुं कोइनो बेद्यो बेदाउं नही माटें अबेदी बुं, ४६ हुं आत्मस्वरूप रमणमां खेद पामुं नही, माटे अखेदी बुं, ४७ माहरो कोइ सखाइभूत नथी माटे असखाइ बुं, ४८ हुं महारे पोताने पराक्रमें करी सहित बुं, पण महारा विपरीत परिणमन थकी बंधाणो बुं, ते जेवारें सघलो परिणामीश तेवारें बुटीश परंतु मने बीजो कोइ बांधवा बोडवा समर्थ नथी. ४९ हुं ब लेश्याथी रहित अलेशी बुं, लेश्याथी न्यारो बुं, लेश्यानुं रूप ते पुद्गल बे, माहारुं रूप ते ज्ञानानंद बे, ५० हुं (अशरीरी के०) शरीररूप जडथी रहित शुद्धचिदानंद पूर्णब्रह्म बुं. ५१ हुं भाषारूप पुद्गलथी रहित अभासी पूर्णदेव बुं, अने ए भाषारूप ते पुद्गल बे, ५२ हुं चार आहाररूप पुद्गलना भोगथी रहित अणाहारी पोताना पर्यायरूप भोग

नो विलासी बुं, ५३ हुं बाधापीडारूप डुःखथी रहित अनंत अव्याबाधसुख नो विलासी बुं, ५४ माहारुं स्वरूप कोइ द्रव्य अवगाही शके नहिं माटे अनवगाही महारुं स्वरूप बे, ५५ हुं अगुरुलघु एटले महोटो नही, अने बोटो पण नही, वली जारी नही, अने हलवो पण नही एवो बुं, ५६ हुं मनरूपपरिणामथी रहित न्यारो अपरिणामी बुं, ५७ हुं इंद्रियरूप विकारथी रहित न्यारो इन्नायोगी, अनिंद्रिय बुं, ५८ हुं दशप्राणरूप पुजलथी रहित महारो खेल न्यारो बे, तेथी अप्राणी बुं, ५ए हुं (अयोनि के०) चोराशीलाख जीवायोनिरूप परिज्रमण पणाथी रहित निश्चयदेव बुं; ६० हुं असंसारी एटले चारगतिरूप संसारथी रहित पूर्ण आत्मारामी बुं, ६१ हुं जन्म जरा मरण रूप डुःखथी रहित अमर बुं, ६२ हुं (अपर के०) सर्वपरंपराथी रहित न्यारा खेलवालो बुं, ६३ हुं (अव्यापी के०) विजावरूप जडपणाथी रहित महास्वरूपमां सदाकाल व्यापी रह्यो बुं, ६४ हुं अनास्ति एटले महारुं कोइ कालें नास्तिपणुं नथी, हुं महारा स्वद्रव्यादिकें करीने सदाकाल अस्तिपणे वर्त्तुं बुं, ६५ हुं अकंप एटले कोइनो कंपाव्यो कंपुं नही, एवो अनंतवीर्यरूप शक्तिनो धणी बुं, ६६ हुं अविरोध एटले कर्मरूप शत्रुनो रुंध्यो रुंधाउं नही, सदाकाल निर्लेप कर्मरूप मलथी रहित न्यारो थको माहारा पारिणामिक जावें रह्यो वर्त्तुं बुं, ६७ हुं अनाश्रव एटले शुजाशुजविजाव दशारूप आश्रवथी रहित सदाकाल न्यारो वर्त्तुं बुं, जेम फंकने संयोगें स्फटिकने कलंक लागे, पण मूलस्वजावें जोतां तो स्फटिक शुद्ध निर्मल बे, तेम हुं पण महारे स्वजावें निर्लेप रह्यो वर्त्तुं बुं. ६८ महारुं स्वरूप बद्मस्थना लख्यामां न आवे माटे अलख बुं, ६ए हुं अशोक एटले जन्म, जरा, मरण अने जयरूप शोक संतापथी रहित सदाकाल नीरोगी अमररूप वर्त्तुं बुं. ७० हुं अलौकिक एटले लौकिक मार्गथी रहित महारो खेल न्यारो वर्त्ते बे, ७१ हुं ज्ञाने करी लोकालोकनुं स्वरूप एक समयमां जाणवाने सामर्थ्य वान् बुं, माटे लोकालोक ज्ञायक बुं, ७२ हुं शुद्ध एटले निर्मल कर्मरूप मलथी रहित बुं, ७३ हुं (चिद् के०) ज्ञान अने (आनंद के०) चारित्र तेणें करी सहित चिदानंद बुं, एवुं महारुं स्वरूप सदाकाल शाश्वतुं वर्त्ते बे,

हवे ए ब द्रव्यमां अगीयार सामान्य स्वजाव बे, ते उलखावे बे. १ अ

स्ति स्वन्नाव, २ नास्तिस्वन्नाव, ३ नित्यस्वन्नाव, ४ अनित्यस्वन्नाव, ५ एक स्वन्नाव, ६ अनेकस्वन्नाव, ७ न्नेदस्वन्नाव, ८ अन्नेदस्वन्नाव, ए न्नव्यस्वन्नाव, १० अन्नव्यस्वन्नाव, ११ परमस्वन्नाव. ए अगीआर स्वन्नावनां नाम कह्यां.

ए६८तिहां प्रथम अस्तिस्वन्नाव ते पोतानी अपेक्षायें बतापणे बए द्रव्य पोताना परिणामिक न्नावें करी परिणमे बे, ते अस्तिस्वन्नाव जाणवो.

ए६एबीजो नास्तिस्वन्नाव ते परनी अपेक्षायें पोतें मूलस्वन्नावें सर्वे द्रव्य परमां परिणमतां नथी, एटले परमां पोताना परिणामिकपणानुं नास्तिपणुं बे.

ए७०त्रीजो नित्यस्वन्नाव ते सर्वेद्रव्य पोतपोताना अनेक प्रकारना पर्याय नेविषे स्वद्रव्यपणे सदाकाल शाश्वतां वर्त्ते बे, माटे स्वद्रव्यपणे करी सर्व द्रव्यनो नित्यस्वन्नाव जाणवो.

ए७१चोथो अनित्य स्वन्नाव ते सर्वद्रव्यमां अनंता पर्याय समयसमय पलटाय बे, ए सर्वद्रव्योमां अनित्यस्वन्नाव जाणवो.

ए७२पांचमो एक स्वन्नाव ते सर्वेद्रव्य पोतपोताना स्वद्रव्यपणे करी एक बे, जेम धर्मास्तिकायनो स्वद्रव्य चलणसहायरूप गुण तेणें करी एक बे, अने अधर्मास्तिकायनो स्थिरसहायरूपगुण तेणे करी एक बे,तथा आकाशास्तिकायनो अवगाहनारूपगुण तेणें करी एक बे, पुद्गलद्रव्यनो मिलणविखरणरूपगुण तेणेंकरी एक बे, कालद्रव्यनो नवापुराणा वर्त्तनारूप गुण, तेणें करी एक बे, तथा जीवद्रव्य पोताना ज्ञानादिक गुण तेणें करी एक बे, ए रीतें सर्व द्रव्य,पोत पोताना स्वद्रव्यपणे करी एटले ज्ञानादि चलण सहायादिगुण तेणें करी एक बे, माटे ए सर्व द्रव्यमां एकस्वन्नाव जाणवो.

ए७३बठो अनेक स्वन्नाव ते अनेक प्रकारें द्रव्यता पणे करीने जूदा जूदा न्नेद बे, एटले द्रव्यथी गुण अनंता अने गुणथी पर्याय अनंता एम कल्पनायें करी अलगा करवा एटले जेम जीवमां ज्ञानगुण, दर्शन गुण, चारित्र गुण अने वीर्य गुण ए आदि अनंता गुण बे, तेम बीजा सर्व द्रव्योमां पण अनेक गुण बे, माटे ए द्रव्यमां अनेक स्वन्नाव जाणवो.

ए७४सातमो न्नेदस्वन्नाव, ते जीवमां संसारी जीव आश्रयी जाणवो. तिहां सकलकर्म क्षय करी जे मोक्ष पहोता ते सिद्धना जीव अने बीजा संसारी जीव ते संसारीना बे न्नेद एक अयोगी,बीजा सयोगी. सयोगीना बे न्नेद, एककेवली, बीजा बद्मस्थ, बद्मस्थना बे न्नेद, एक क्षीणमोही उपशां

तमोही, इत्यादिक पूर्वें कह्या छे ते प्रमाणे जीवमां अनेकप्रकारें भेदस्वभाव जाणवो. अने अजीवमां तो धर्मास्तिकायमां चलणसहायपणुं अधर्मास्तिकायमां स्थिरसहाय पणुं आकाशास्तिकायमां अवगाहना पणुं कालमां नवा पुराणा वर्त्तनापणुं पुज्ञलमां पूर्णगलनपणुं एम अनेक प्रकारें जीव अजीवरूप छ द्रव्य जूदे जूदे भेदें परिणमे छे, ते सर्व भेदस्वभाव जाणवो तथा वली धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायादिकमां भेदस्वभाव ते जेम बेसताने बेठापणे सहाय करे, उठताने उठतापणे सहाय करे, सूताने सूतापणे सहाय करे, चालताने चालवापणे सहाय करे, हालताने हालवापणे सहाय करे, एम एकद्रव्य अनेकप्रकारें जूदे जूदे भेदें परिणमे माटे ते भेदस्वभाव कहीयें.

एउ५ तथा आठमो अभेदस्वभाव ते जीवद्रव्यना जे द्रव्यगुणपर्यायय ते जीवनी साथें एकरूप अभेदपणे छे. तेमज धर्मास्तिकाय,अधर्मास्तिकायादिकना पण जाणवा माटे तेने अभेदस्वभाव कहीयें. जेम शरीरमां भेदस्वभाव जोतां तो हाथनो भाव जूदो, पगनो भाव जूदो, नाकनो भाव जूदो, आंखनो भाव जूदो, ए रीतें सर्व जूदे जूदे भेदे परिणमे छे. ते भेदस्वभाव जाणवो. अने अभेदस्वभाव जोतां तो ए हाथपगादिक सर्वे कायामां अभेदरूप एक पणे वर्त्ते छे, ते अभेद स्वभाव जाणवो.

एउ६ हवे नवमो भव्यस्वभाव अने दशमो अभव्यस्वभाव ए वे साथें कहे छे. तिहां जे जीवमां पलटणपणुं छे. ते जीवने कोइदिवसें कारण सामग्री मलवाथी पलटाइ श्रेणीभावें चढी सिद्धिरूप कार्य प्रत्यें निपजावशे, ते भव्यस्वभाव जाणवो. तथा अनेक प्रकारें कारण रूप सामग्री मलशे, पण मनःपरिणाम पलटावी प्रतिबोध नही पामे,ते अभव्य स्वभावजाणवो.

वली भव्यजीवमां निश्चय व्यवहारनयें करी भव्य अभव्यस्वभाव, उलखावे छे. तिहां व्यवहारनयें करी जीव, चार गतिमां नवा नवा भव करी चववुं उपजवुं करे छे, ते व्यवहारनयें करी जीवमां भव्यस्वभाव जाणवो. अने निश्चयनयें करी जीव, पारिणामिकभावें सदाकाल शाश्वतो वर्त्ते छे, कोइनो छेद्यो छेदाय नही, भेद्यो भेदाय नही, ए रीतें निश्चयनयें करी जीव अखंडरूप छे, ते जीवमां निश्चयनयें करी अभव्यस्वभाव जाणवो.

वली निश्चय व्यवहारनयें करी जीवमां भव्य अभव्यस्वभाव उलखावे छे.

तिहां सकल कर्म क्षय करी लोकने अंतें बिराजमान एवा सिद्धपरमात्माने ज्ञानादि अनंतचतुष्टयरूप छता पर्याय प्रगट्या छे, ते पर्याय कोइ कालें पलटशे नही, माटे ए निश्चय नयें करी सिद्धनो अन्नव्यस्वन्नाव जाणवो. तथा जे श्रीसिद्धपरमात्माने सामर्थ्य पर्याय प्रवर्त्तनारूप समय समय अनंतो उत्पाद व्यय थइ रह्यो छे, ते व्यवहारनयें पलटणस्वन्नावें करी श्रीसिद्धपरमात्मामां नव्य स्वन्नाव जाणवो.

हवे पुद्गलद्रव्यमां नव्य अन्नव्य स्वन्नाव उलखावे छे. तिहां पुद्गलद्रव्यना अनंता परमाणुआ छे, ते निश्चयनयने मतें नित्य सदाकाल शाश्वता वर्त्ते छे एटले ए मूलस्वन्नावें करी कोइकालें पलटशे नही, ते अन्नव्य स्वन्नाव जाणवो, तथा व्यवहारनयने मतें करी पुद्गलना खंध बने छे, ते स्थिति प्रमाणे रहे छे. वली पाछा विखरे छे, ते सर्वे नव्यस्वन्नावें जाणवा.

हवे धर्मास्तिकाय,अधर्मास्तिकायादिक द्रव्यमां नव्य अन्नव्य स्वन्नाव उलखावे छे. तिहां परद्रव्य आश्रयी षट् न्नाग हानि वृद्धिरूप समय समय जे पलटण पणुं थाय छे, ते नव्यस्वन्नाव जाणवो अने मूलस्वन्नावें जोतां सर्वद्रव्य पारिणामिक न्नावे करी पोतपोताने स्वन्नावें रह्या वर्त्ते छे, तेमां पलटण पणुं नथी, स्वन्नाव पलटता नथी माटे ते अन्नव्यस्वन्नाव जाणवो.

९७० अगीआरमो परम स्वन्नाव कहे छे. जे उत्कृष्ट स्वन्नाव तेने परमस्वन्नाव कहीयें. तिहां जीवद्रव्यमां ज्ञान दर्शनरूप परमस्वन्नाव जाणवो. एटले ज्ञानें करी अनंतागुण, विशेषतापणे परिणमे छे, अने दर्शनें करी अनंता गुण, सामान्यपणे परिणमे छे. माटे ए परमस्वन्नाव जाणवो. तथा पुद्गलमां परमस्वन्नाव तो जे चेतना रहित अजीवरूप जडस्वन्नाव, जे सुख अने दुःखने नथी जाणतो ए पुद्गलमां पोतानो परमस्वन्नाव जाणवो, तथा धर्मास्तिकाय द्रव्य समय समय अनंता जीव पुद्गलने चलण सहायिपणे परिणमे छे, तथा अधर्मास्तिकाय, स्थिरसहायि पणे परिणमे छे, तथा आकाशास्तिकाय, अवगाहना पणे परिणमे छे, तथा काल द्रव्य नवा पुराणा पणे परिणमे छे, ए सर्व द्रव्यमां पोतपोतानो उत्कृष्टो स्वन्नाव वर्त्ते छे, ते परमस्वन्नाव जाणवो. ए रीतें छ द्रव्यमां अगीयार सामान्यस्वन्नावनो विचार कह्यो,

हवे छ द्रव्यमां दश विशेषस्वन्नाव छे ते उलखावे छे. १ चेतनस्वन्नाव. २ अचेतनस्वन्नाव, ३ मूर्त्तिस्वन्नाव, ४ अमूर्त्तिस्वन्नाव, ५ एकप्रदेशस्वन्नाव,

६ अनेकप्रदेश स्वन्नाव, ७ शुद्धस्वन्नाव, ८ अशुद्धस्वन्नाव, ए विन्नावस्वन्नाव, १० उपचरितस्वन्नाव. ए दश विशेषस्वन्नावनां नाम जाणवां,

ए७ए तिहां प्रथम चेतनस्वन्नाव ते एक जीवद्रव्यमांहेज डे, केम के सर्व जीव सत्तायें शुद्धज्ञानादि चेतना रूप गुणे करी सहित निश्चयनयें ज्योतिः स्वरूपी एक सरखा सामान्यपणे करी जाणवा. अने व्यवहारनयें करी संसारी जीव, चारगतिरूपसंसारमां शरीरादि कर्मने योगें करी वर्त्ते डे, पण निश्चयनयें करी सत्तायें सिद्धसमान डे, ते जीवमां चेतनस्वन्नाव जाणवो.

ए८० बीजो अचेतन स्वन्नाव ते एक जीवद्रव्य विना शेष पांच द्रव्यमां चेतना रहित अजीवरूप जडस्वन्नाव डे, ते अचेतन स्वन्नाव जाणवो.

एए१ त्रीजो मूर्त्तिस्वन्नाव ते एक पुद्गलद्रव्यमां डे, अने व्यवहारनयेंकरी तो संसारी जीव, चार गतिरूप संसारमां वर्त्ते डे, तेमां पण मूर्त्तिस्वन्नाव जाणवो.

ए८२ चोथो अमूर्त्तिस्वन्नाव, ते एक पुद्गलद्रव्यवर्जित शेष चार द्रव्यमां डे, अने निश्चयनयें करी पांचमा जीवद्रव्यमां पण अमूर्त्ति स्वन्नाव जाणवो.

ए८३ पांचमो एकप्रदेश स्वन्नाव, ते जीव द्रव्यआश्रयी तो जीव, लघु शरीरमां उपन्यो होय, तेवारें लघु थइ संकोचाय, एटले जेम एकप्रदेश संकोच स्वन्नाव डे, तेम असंख्याते प्रदेशे पण संकोच स्वन्नाव जाणवो अने पुद्गलद्रव्यमां जेम बशेर पाणीनी लोटीमां बशेर खांड पडे, ते सर्व पाणीमां समाइ जाय, पण पाणी बाहेर नीकले नही, तेम पुद्गलद्रव्यनो संकोचस्वन्नाव पारो, हींगलो, लींबु प्रमुख वस्तुने संयोगें बने ते एकप्रदेश स्वन्नाव जाणवो.

ए८४ डहो अनेकप्रदेश स्वन्नाव कहे डे. जेम जीव महोटा शरीरमां उपन्यो तो महोटो थाय, एटले लोकाकाशना जेटला प्रदेश डे, तेटला एक जीवना प्रदेश डे, पण आवरणने अन्नावें शक्तिनो प्रकाश प्रगटे, ते जीवमां अनेकप्रदेशस्वन्नाव जाणवो. तथा पुद्गलमां अनेकप्रदेशस्वन्नाव ते पुद्गलना जे अर्कतुल्यप्रमुख पोचा खंध थाय, ते अनेकप्रदेशस्वन्नाव जाणवो.

ए८५ सातमो विन्नावस्वन्नाव कहे डे. जीव, पोतानो मूलस्वन्नाव त्यागीने परस्वन्नावें परिणम्यो, जेम पोतानो परमशांतरसमय स्वन्नाव त्यागीने क्रोधादिक चार कषायने विषे परिणम्यो, ए जीवद्रव्यनो विन्नावस्वन्नाव जाणवो. तथा पुद्गलद्रव्यमां बूटो परमाणुउ पोतानो मूलस्वन्नाव त्यागीने खंध मांहे नल्यो, तेने जीवें ग्रहण कस्यो, ते विन्नावस्वन्नावें परिणम्यो कहेवाय.

ए७६ आठमो शुद्धस्वनाव. ते सकल कर्मने क्षयें जीवने सिद्धिरूपकार्य नीप जे अने केवलज्ञानानादिक लक्ष्मी प्रगटे,तेजीवमां शुद्धस्वनाव जाणवो. तथा पुजलद्रव्यमां खंधथकी रहित बूटो परमाणुउं रहे ते शुद्धस्वनावें जाणवो.

ए७७नवमो अशुद्धस्वनाव तेजीवने मतिज्ञान,श्रुतज्ञान अवधिज्ञान,मनः पर्यवज्ञान रूप जे क्षायोपशमनावें इंद्रियने अनुयायीरूप जीवने गुण परि णमे,ते जीवनो अशुद्धस्वनाव जाणवो अने पुजलद्रव्यमां जे परमाणुआ मांहोमांहे मली खंध नाव पामे,ते अशुद्धस्वनाव जडपरिणतिरूप जाणवो.

ए७७ दशमो उपचरितस्वनाव ते जे पोताना स्वनावथकी निन्न पुजलने संयोगें थाय ते परस्वनाव बे, तेने उपचारें करी बोलावीयें जेम जीवमां रूपीपणुं अने जडपणुं स्थापीयें, जेम शरीररूपी बे,ते जडरूप बे तेनो सं सर्ग जीवने लाग्यो बे ते जीवने उपचरितस्वनाव जाणवो अने पुजलने चेतनपणुं कहीयें, ते पुजलमां उपचरितस्वनाव जाणवो एटले पुजलचेत नने लागो अने रूपी बे पण अतिसूक्ष्म बे माटे चर्मचक्षुयें न देखाय, ते अमूर्त्ति स्वनाव बे तेने स्थापीयें, ते उपचरितस्वनाव पुजलमां जाणवो. ए रीतें जीव, अजीवरूप षट्द्रव्यमां ए दश विशेष स्वनाव जाणवा.

हवे जीव,अजीवनी उलखाण करवा वास्ते द्रव्य तथा नावनुं जाण पणुं करवा सारु नव तत्त्व षट्द्रव्यनुं स्वरूप अनेक नयनी अपेक्षायें द्रव्य नावनी चोनंगीयें करी देखाडे बे,तिहां प्रथम जीवद्रव्यथी मांमीने शिष्य गुरुना प्रश्नोत्तररूपें नवतत्त्व षट्द्रव्यनुं स्वरूप अनेकनयनी अपेक्षायें कहे बे.

ए७ए शिष्यः–अशुद्ध प्रकारें जीव द्रव्यनुं स्वरूप द्रव्यथकीने नावथकी नावथकीने द्रव्यथकी तथा द्रव्यथकीने नावथकी केम जाणीयें?

गुरुः–ए अशुद्धव्यवहारनयने मतें जाणवुं. केम के शुनाशुनरूपपरि णाम तो कस्या थाय बे,पण अज्ञानरूप राग द्वेषनी चिकाश तेने अशुद्ध ता कहीयें ते अशुद्धता तो जीवने अनादिकालनी बे, माटे निगोदीया जीव, राग, द्वेष अने अज्ञाननी चिकाशरूप अशुद्धताये करी अनंतां ज न्म मरण करे बे,ए अशुद्धप्रकारें जीवनुं स्वरूप तेमां द्रव्यथकी तो जीव द्रव्य असंख्यात प्रदेशी जाणवो अने नावथकी अज्ञानरूप राग द्वेषनी चिकाश जाणवी. ते नावथकी अज्ञानरूप राग द्वेषनी चिकाश तेणेंकरी अ नंतां द्रव्यरूप कर्मनां दलीयां जीवने लागे ते अनंतां द्रव्यरूप कर्मनां दली

थां जीवने लागां तेने नावपणे डुःखरूपविपाकें जीव नोगवे. ए रीतें अशुद्ध प्रकारें चोनंगीयें करी जीवनुं स्वरूप जाणवुं.

एए० शिष्यः—अशुनप्रकारें जीवनुं स्वरूप ड्रव्यथकीने नावथकी, नावथकीने ड्रव्यथकी, ड्रव्यथकीने नावथकी, केम जाणीयें ?

गुरुः—ए अशुनव्यहारनयने मतें जाणवुं जेकारणे अशुनप्रकारें जीवनुं स्वरूप ड्रव्यथकी तो जीवड्रव्य असंख्यात प्रदेशी जाणवो अने नावथकी क्रोध, मान, माया, लोन, विषय, कषाय, निड्रा, विकथा, हास्य, विनोद, ए आदि अशुन नावना अनेक प्रकार जाणवी. अने ए अशुननावनी चिकाशें करी अनंता ड्रव्यरूप कर्मनां दलीयां जीवने लागे, ते अनंतां अशुन ड्रव्यरूप कर्मनां दलीयां जीवने लागां, तेने नावपणे जीव नरक तिर्यंचनी गति पामीने नोगवे, ए अशुनप्रकारें चोनंगीयें करी जीवनुं स्वरूप जाणवुं.

एए१ शिष्यः—शुनप्रकारें जीवनुं स्वरूप ड्रव्यथकी ने नावथकी, नावथकीने ड्रव्यथकी, ड्रव्यथकीने नावथकी केम जाणीयें ?

गुरुः—ए शुनव्यवहारनयने मतें जाणवुं जे कारण शुन प्रकारें जीवनुं स्वरूप ड्रव्यथकी तो जीवड्रव्य असंख्यात प्रदेशी जाणवो अने शुननाव ते दान, शीयल, तप, नाव, उपकार, करुणा, दया, यत्ना आदिक शुननावना अनेक प्रकार जाणवा अने ए शुननावनी चिकाशें करी अनंता शुनकर्मरूप ड्रव्यनां दलीयां जीवने लागे ते अनंतां शुनकर्मरूप ड्रव्यनां दलीयां जीवने लागा तेने नावपणे जीव मनुष्य देवताना नव पामीने नोगवे. ए शुन प्रकारें जीवनुं स्वरूप चोनंगीयें करी जाणवुं.

एए२ शिष्यः—शुद्ध प्रकारें जीवनुं स्वरूप ड्रव्यथकी ने नावथकी, नावथकी ने ड्रव्यथकी केम जाणीयें?

गुरुः—ए शुद्धव्यवहारनयने मतें जाणवो. तिहां चोथा गुणठाणाथी मांमीने यावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा लगें शुद्धनाव जाणवो. ते शुद्ध प्रकारें जीवनुं स्वरूप ड्रव्यथकी तो जीवड्रव्य असंख्यात प्रदेशी छे, अने शुद्धनाव ते शुनाशुनविकाररूप परपुजल तेथकी विरक्तनाव एटले उदासी परिणाम अने पोताना स्वरूपमां रहेवुं, ते शुद्धनाव जाणवो. अने ए शुद्धनावरूप स्वरूपमां रहेतां जीवने ड्रव्यरूप कर्मनां दलीयां आवतां रोकाय, ए शुद्धप्रकारें जीवनुं स्वरूप, चोनंगीयें करी जाणवुं.

एएइ शिष्यः—निश्चयथकी जीवनुं स्वरूपद्रव्यथकीने नावथकी केमजाणीयें?

गुरुः—निश्चयनयें जीवनुं स्वरूप द्रव्यथकी तो जीवद्रव्य असंख्यात प्रदेशी बे, अने नावथकी तो सकलकर्म थकी रहित, शुद्ध, निर्मल, चिदानंद, परमज्योति, सहजानंदी, पूर्णानंदी, अजर, अमर, अखंड, अलिप्त, सिद्धिरूप कार्य निष्पन्न, अनंत सुखन्नोगी, विन्नावसुखत्यागी आपस्वरूपमां रमता एवा अनंता सिद्धपरमात्मा सादि अनंतमे नांगे वर्त्ते बे, ए नावथकी स्वरूप जाणवुं, ए निश्चयनयें जीवनुं स्वरूप, बे नंगीयें करी कह्युं. ए रीतें जीवनुं स्वरूप कह्युं. हवे अजीवना स्वरूपमां द्रव्यनावनुं लक्षण कहेबेः—

एए४ शिष्यः—धर्मास्तिकायद्रव्यनुं स्वरूप द्रव्यथकीने नावथकी अने नावथकीने द्रव्यथकी ए त्रिन्नंगीयें करी केम जाणीयें ?

गुरुः—द्रव्यथकी तो धर्मास्तिकायद्रव्य असंख्यात प्रदेशी कहीयें.अने नावथकी तो धर्मास्तिकायनुं चलणसहायीपणुं जाणवुं, तथा ए नावथकी जे चलणसहायीपणुं ते द्रव्यथकी अनंता जीव पुद्गलने विषे जाणवुं. ए रीतें धर्मास्तिकायनुं स्वरूप, द्रव्यनावनी त्रिन्नंगीयें करी जाणवुं.

एएए शिष्यः—अधर्मास्तिकायनुं स्वरूप द्रव्यथकीने नावथकी तथा नावथकीने द्रव्यथकी केम जाणीयें ?

गुरुः—द्रव्यथकी तो अधर्मास्तिकायद्रव्य असंख्यात प्रदेशी कहीयें. अने नावथकी तो अधर्मास्तिकायनुं स्थिरसहायीपणुं जाणवुं तथा ए नावथकी जे स्थिरसहायी पणुं ते द्रव्यथकी अनंता जीवपुद्गलने विषे जाणवुं. ए रीतें अधर्मास्तिकायनुं स्वरूप द्रव्य नावनी त्रिन्नंगीयें करी जाणवुं.

एए६ शिष्यः—आकाशास्तिकायनुं स्वरूप द्रव्यथकीने नावथकी तथा नावथकीने द्रव्यथकी केम जणीयें?

गुरुः—द्रव्यथकी तो आकाशास्तिकायद्रव्य अनंत प्रदेशी कहीयें,अने नावथकी तो अकाशास्तिकाय द्रव्यनुं अवगाहनारूपपणुं जाणवुं. तथा ए नावथकी जे अवगाहनारूपपणुं ते द्रव्यथकी अनंता जीव पुद्गलद्रव्यनेविषे जाणवुं.एरीतेंआकाशास्तिकायने स्वरूपद्रव्यनावनीत्रिन्नंगीयें करी जाणवुं

एए७शिष्यः—पुद्गलास्तिकायनुं स्वरूप द्रव्यथकी ने नावथकी तथा नावथकीने द्रव्यथकी केम जाणीयें ?

गुरुः—द्रव्यथकी तो पुद्गलास्तिकायना अनंता परमाणुआ लोकमां शा

श्वता छे,ते जाणवा अने ज्ञावथकी तो पुजलद्रव्यनुं गलण पूर्णपणुं जाणवुं तथा ए ज्ञावथकी जे गलणपूर्णपणुं ते द्रव्यथकी अनंता बंधने विषे जाणवुं. ए रीतें पुजलास्तिकायनुं स्वरूप द्रव्य ज्ञावनी त्रिज्ञंगीयें करी जाणवुं.

एएए शिष्यः–कालद्रव्यनुं स्वरूप द्रव्यथकी ने ज्ञावथकी तथा ज्ञावथ कीने द्रव्यथकी केम जाणीयें?

गुरुः–द्रव्यकी तो कालद्रव्यनो एक समय लोकालोकमां वर्त्ते छे ते जाणवो, अने ज्ञावथकी कालद्रव्य नवा पुराणा वर्त्तना रूप जाणवुं, तथा ए ज्ञावथकी जे नवा पुराणा वर्त्तना रूप ते द्रव्यथकी जीव अजीव द्रव्य रूप वस्तुने विषे जाणवो. ए रीतें कालद्रव्यनुं स्वरूप द्रव्यज्ञावनी त्रिज्ञं गीयें करी जाणवुं.

ए रीतें षट्द्रव्यनुं स्वरूप द्रव्यज्ञावनी चोज्ञंगीयें करी, त्रिज्ञंगीयें क री तथा बे ज्ञंगीयें करी विचारतां थकां समकेतनी शुद्धि थाय.

हवे नव तत्त्वनुं स्वरूप द्रव्यज्ञावनी चोज्ञंगीयें करी देखाडे छे, तेमां जीव अने अजीव ए बे तत्त्वनुं स्वरूप आगल छ द्रव्यना स्वरूपमां कह्युं,हवे शेष पुण्यादिक सात तत्त्वनुं स्वरूप, द्रव्यज्ञावनी चोज्ञंगीयें करी कहे छे.

एएए शिष्यः–नव तत्त्वमांथी पुण्यतत्त्वनुं स्वरूप ज्ञावथकीने द्रव्यथकी तथा द्रव्य थकीने ज्ञावथकी केम जाणीयें?

गुरुः–ज्ञावथकी तो पुण्यबांधवाना नव प्रकार छे. तेमां प्रथम साधु, साधवी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध श्रीसंघने अंतरंग रागसहि त अन्न देवनी रुचि ते अन्नपुण्य जाणवुं. बीजुं पाणपुण्य ते साधु साधवी प्रमु खने प्राशुक जलदेवानी रुचि जाणवी,त्रीजुं लेणपुण्य ते साधु साधवी प्रमु खने रहेवा सारु निरवद्यजगा देवानी रुचि. चोथुं सयणपुण्य ते साधु, सा धवी प्रमुखने सूवाने अर्थे पाट तथा वेसवाने बाजोठ प्रमुख देवानी रुचि, पांचमुं वस्त्रपुण्य ते साधुसाधवी प्रमुखने कपडां, कांबली आदिक धर्मोप करण प्रमुख देवानी रुचि. छहुं मनःपुण्य ते जगतना जीवनुं मने करी रूडुं चिंतववुं अर्थात् सर्वजीवने धर्म पमाडीकर्मरूप दुःखथकी मूकावी सुखिया करी मोक्षनगरें पहोचाडुं? एवी ज्ञावना मने करी ज्ञावे, ते जीव जिननाम कर्म उपार्जन करे, सातमुं वचनपुण्य ते मीठुं, मनोहर प्रीतिकारी,हितका री सूत्रमर्यादायें आज्ञा प्रमाणे घणा जीवने उपकाररूप वचन बोलवानी

रुचि. आठमुं कायपुण्य ते पूंजवुं, प्रमार्जवुं, तथा साधु साधवी प्रमुख चतुर्विध श्रीसंघनो विनय वैयावच्च तेने विषे काया प्रवर्त्तावववानी रुचि. नवमुं नमस्कारपुण्य ते श्रीतीर्थंकर, केवली, गणधर, आचार्य, साधु, साधवी प्रमुख गुणी जीवने कृतिकर्म एटले वंदना नमस्कार करवानी रुचि, ए रीतें नव प्रकारनो जे जीवना चित्तमां नाव उपजे, ते नावपुण्य कहीयें अने ए नावपुण्यनी चिकाशें करी जीवने सत्तायें जे शुन्न कर्मनां दलीयां लागे, ते इव्यपुण्य कहीयें, अने ए इव्यपुण्यना दलीयां सत्तायें बंधाणां, ते आगल नावपणे मनुष्य देवताना नवपामी बहेंतालीश प्रकारें मीठा विपाकें जीव नोगवे, ए रीतें ए इव्य नावनी चोन्नंगीयें करी पुण्यनुं स्वरूप जाणवुं.

१००० शिष्यः—नव तत्त्वमांथी पापनुं स्वरूप नावथकीनें इव्यथकी तथा इव्यथकीने नावथकी केम जाणीयें ?

गुरुः—नावथकी तो पापबांधवाना अढार प्रकार छे. तेनां नाम कहे छे. पहेलो प्राणातिपात ते परजीवना प्राणनो नाश चिंतववो, बीजो मृषावाद ते जूठुं बोलवुं, त्रीजुं अदत्तादान ते पारकी अणदीधी वस्तु चोरी लेवानी रुचि, चोथुं मैथुन ते विषयसुखनी वांछारूप परिणाम, पांचमो परिग्रह ते नव प्रकारें बाह्य अने चौद प्रकारें अन्यंतररूप परिग्रहनी वांछा, छठो क्रोध ते कोइ जीवनी उपर आकरा तीव्रपरिणामें क्रोध करवो, सातमुं मान ते आठ प्रकारें मद करवो आठमी माया ते कपटें करी लोक देखाडवारूप धर्मकरणी करवी, नवमो लोन्न ते धन, शरीर, कुटुंब परिवाररूप संपदा एकठी करवानी रखवालवानी घणी वांछा, दशमो राग ते पौजलिक परवस्तु वर्णादि उपर राग धरवो, अगीयारमो द्वेष ते पोताने अणगमती वस्तु उपर अरुचिन्नाव, बारमो क्लेश ते हरएक कोइ कारणें क्लेश करवानी रुचि, तेरमो अन्याख्यान ते अणदीठुं अणसांन्नल्युं परजीवने आल देवुं. चौदमो पैशून्य ते पारकी चाडी करवी, पंदरमो रति अरति ते सुखडुःख आवे हर्ष शोक धरवो, शोलमो परपरिवाद ते गुणी निर्गुणी जीवनी निंदा करवी, सत्तरमो मायामोसो ते अंतरमां जूदी वात होय अने मुखें मीठुं बोलवुं, इत्यादि अनेक प्रकारें छल करी लोकने ठगवा रूप परिणाम, अढारमो मिथ्यात्वशल्य ते पांच प्रकारें मिथ्यात्व सेववारूप परिणाम, ए रीतें अढार प्रकारें जे जीवना चित्तमां पापरूपन्नाव उपजे, तेने नावपाप कहीयें. अने

ए ज्ञावनी चिकाशें करी जीवने सत्तायें पापरूपकर्मनां दलीयां लागे, तेद्रव्य पाप कहीयें. अने ए द्रव्यपापनां दलीयां जे सत्तायें बंधाणां, ते आगल ज्ञा वपणे तिर्यंच अने नारकीना ज्ञव पामीने ब्याशी प्रकारें कडवा विपाक जी व ज्ञोगवे, ए रीतें द्रव्यज्ञावनी चोज्ञंगीये करी पापनुं स्वरूप जाणवुं.

१००१ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी आश्रवनुं स्वरूप ज्ञावथकीने द्रव्यथकी तथा द्रव्यथकी अने ज्ञावथकी केम जाणीयें ?

गुरुः– ज्ञाव आश्रव ते मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग, ए ज्ञाव आश्रवनी चिकाशें जीवने शुज्ञाशुज्ञविकाररूप कर्मना दलीयां लागे, तेने द्र व्यआश्रव कहीयें. अने ए द्रव्यआश्रवनां दलीयां जे जीवनी सत्तायें लागां, तेने चारगतिरूप संसारमां ज्ञावपणे जीव ज्ञोगवे ते ज्ञावथी जाणवुं, ए रीतें द्रव्यज्ञावनी चोज्ञंगीयें करी आश्रवनुं स्वरूप जाणवुं.

१००२ शिष्यः–नव तत्त्वमांथी संवरनुं स्वरूप, द्रव्यथकीने ज्ञावथकी त था ज्ञावथकीने द्रव्यथकी केम जाणीयें ?

गुरुः–सामायिक, प्रतिक्रमण, पोसह, व्रत, पच्चरकाणरूप संवर करी एक जगायें रहेवुं, तेने द्रव्यसंवर कहीयें अने जे जीव अजीवरूप वेचण करी अं तरंग सत्तागतना उपयोगमां वर्त्तवुं, तेने ज्ञावसंवर कहीयें. पढी ते अंतरंग सत्तागतना उपयोगरूप ज्ञावसंवरमां जीवने रहेतां थकां द्रव्यरूप आठ व र्गनां दलीयां आवतां रोकाय, ते द्रव्यथी जाणवुं. ए रीतें द्रव्यज्ञावनी चो ज्ञंगीयें करी संवरनुं स्वरूप जाणवुं.

१००३ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी निर्ज्जरानुं स्वरूप द्रव्यथकीने ज्ञावक की ज्ञाव थकीने द्रव्यथकी केम जाणीयें ?

गुरुः–बार ज्ञेदें तपस्या करवी, तेने द्रव्यनिर्ज्जरा कहीयें. अने ज्ञावनि र्ज्जरा तो शब्द समज्ञिरूढनयने मतें ज्ञानरूप दृष्टियें करी अंतरंग स्वसत्ता परसत्तारूप वेंचण करवी, तेने ज्ञाव निर्ज्जरा कहीयें. अने ए रीतें एक अं तरमुहूर्त्त स्वसत्ता परसत्तारूप जीवने वेंचण करतां द्रव्यरूप आठ कर्मनां दलीयां जे जीवने सत्तायें रह्यां ढे, ते दलीयाने खपावे, ते द्रव्यदलीयाने ख पाव्या कहीयें. ए रीतें द्रव्यज्ञावनी चोज्ञंगीयें करी निर्ज्जरानुं स्वरूप जाणवुं,

१००४ शिष्यः–ए नव तत्त्वमांथी बंधतत्त्वनुं स्वरूप ज्ञावथकीने द्रव्य थकी तथा द्रव्यथकीने ज्ञावथकी केम जाणीयें ?

गुरुः—पुद्गलजीवने संसर्गें जे कर्म बंधाय तेने ज्ञावथकी बंध कहीयें एटले पुद्गलनी पिपासारूप विषयसुखनी तृष्णा अंतरंग लालचरूप परिणाम, तेने ज्ञावबंध कहीयें. अने ए ज्ञावबंध एटले अंतरंग इंद्रियसुखनी लालचरूप परिणामनी चिकाशें करी जे आठ कर्मरूप दलीयां जीवने लागे ते द्रव्यबंध जाणवो. जेम तेलने संसर्गें वस्तुने धूडलागे तेनी परे जीवने पोताना माठा परिणामना वगाड रूप चिकाशें करी ज्ञानावरणादि आठकर्मरूप धूल जीवने लागे, ते द्रव्यबंध जाणी लेवो अने ए द्रव्यबंधरूपकर्मना दलीयाने जीव चारगतिरूप संसारमां ज्ञावपणे ज्ञोगवे, ते ज्ञाव जाणवो. ए रीतें द्रव्य ज्ञावनी चोज्ञंगीयें करी बंधनुं स्वरूप जाणवुं.

१००५ शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथी मोक्षनुं स्वरूप द्रव्यथकीने ज्ञावथकी केम?

गुरुः—बारमे गुणठाणे राग, द्वेष, अज्ञान, तथा मोहनीयकर्मनो क्षय कर्यो, अने तेरमे गुणठाणे केवलज्ञान पाम्यो, तेने द्रव्यमोक्षपद कहीयें. तथा अष्ट कर्म क्षय करी, अष्टगुणसंपन्न लोकने अंतेबिराजमान, सादि अनंतमे ज्ञांगे वर्त्ते ठे एवा सिद्धपरमात्मा तेने ज्ञावमोक्षपद कहीयें. ए रीतें बे ज्ञंगीयें करी मोक्षतत्त्वनुं स्वरूप जाणवुं. ए रीतें षट्र द्रव्य नव तत्त्वनुं स्वरूप, द्रव्यज्ञावनी चोज्ञंगीयें, त्रिज्ञंगीयें, बे ज्ञंगीयें करी देखाडयुं.

हवे ए नव तत्त्व षट्र द्रव्यनुं स्वरूप कर्त्ता, कारण अने कार्यरूप त्रिज्ञंगीयें करी देखाडे ठे.

१००६ शिष्यः—ए नवतत्त्वमां अशुद्धप्रकारें जीवमां कर्त्ता कारण ने कार्य ते शुं?

गुरुः—अज्ञान अने राग, द्वेषरूप अशुद्धता ते जीवने अनादिखाण संपन्न जाणवी. ए अशुद्धतायें करी जीव निगोदमां अनंतां जन्म मरण करे ठे. एटले शुज्ञाशुज्ञ तो कर्यां थाय ठे, पण अशुद्धता तो जीवने अनादिनी जाणवी, ए परमार्थ ठे. एटले कर्त्ता जीव, अने अज्ञानरूप राग, द्वेष, ते कारण तथा ए अशुद्ध कारणथी निगोदमां जीवने अनंता जन्म मरण थाय, ते रूप कार्य जाणवुं. ए रीतें अशुद्धप्रकारें जीवनुं स्वरूप त्रिज्ञंगीयें करी कह्युं

१००७ शिष्यः—एनवतत्त्वमां अशुज्ञप्रकारें जीवमां कर्त्ताकारणने कार्य ते शुं?

गुरुः—कर्त्ता जीव, अने अशुज्ञ कारण ते क्रोध, मान, माया, लोज्ञ, विषय, तृष्णा, ममता, मूर्डा, निंदा, विकथा, हास्य, ए आदि अनेक प्रका

रना अशुन्नकारणथकी जीवने नरक तिर्यंचनी गतिरूप कार्य नीपजे, ए रीतें अशुन्नप्रकारें जीवनुं स्वरूप त्रिन्नंगीयें करी जाणवुं.

१००८ शिष्यः–नवतत्त्वमांशुन्नप्रकारेंजीवनास्वरूपमांकर्त्ता, कारणनेकार्यतेशुं

गुरुः–कर्त्ता, जीव, अने दान, शीयल, तप, न्नाव, ए आदि अनेक प्रकारें शुन्नकारण थकी जीवने देव मनुष्यन्नवरूप कार्य नीपजे ढे.

१००ए शिष्यःएनवतत्त्वमांशुद्धप्रकारेंजीवनास्वरूपमांकर्त्ताकारणनेकार्यतेशुं

गुरुः–कर्त्ता जीव अने शुद्ध कारण ते आ न्नव परन्नव इंद्रियसुखनी वांढा रहित, यशःकीर्त्तिनी वांढा रहित, एक पोतानो आत्मा कर्मवशे दुःखी ढे, तेने कर्मरूप बंधीखानाथकी ढोडाववारूप जे साधन करवुं, ते शुद्धकारण जाणवुं अने एवा शुद्धकारण सेवन कस्याथी जीवने कर्मरूप दुःखनो राशि त्रूटे,अने अनंतसुखनो राशि प्रगटे,ते रूप कार्य जाणवुं. ए रीतें शुद्ध प्रकारें जीवनुं स्वरूप त्रिन्नंगीयें करी कह्युं.

१०१० शिष्यः–ए नव तत्त्वमां निश्चयनयें करी जीवमां कर्त्ता, कारण ने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः–निश्चय नयें करी जीव, मोक्षरूप कार्यनो कर्त्ता जाणवो. एटले कर्त्ता तो जीव अने कारण तो शुद्धशुक्लध्यान रूपातीत परिणाम क्षपक श्रेणी, ए कर्मक्षयनां कारण जाणवां. तथा ए कारणथकी सकल कर्मरहित शुद्ध चिदानंद परमज्योति एवुं सिद्धिरूपकार्य जीवने नीपजे, ए निश्चयनयें करी जीवनुं स्वरूप त्रिन्नंगीयें करी जाणवुं. ए नव तत्त्वमां जीवनां स्वरूपमां त्रिन्नंगीयो कही.हवे अजीवनुं स्वरूप त्रिन्नंगीयें करी कहे ढे.

१०११ शिष्यः–धर्मास्तिकायमां कर्त्ता कारण अने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः–कर्त्ता जीव अने कारणरूप धर्मास्तिकाय मल्यो, तेवारें जीवने हालवा चालवा रूप कार्य नीपन्युं ए धर्मास्तिकायमां त्रिन्नंगी जाणवी.

१०१२ शिष्यः–अधर्मास्तिकायमां कर्त्ता, कारण अने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः–कर्त्ताजीव अने कारणरूप अधर्मास्तिकाय मल्यो, तेवारें जीवने स्थिर रहेवारूप कार्य नीपन्युं ए अधर्मास्तिकायमां त्रिन्नंगी जाणवी.

१०१३ शिष्यः–आकाशास्तिकायमां कर्त्ता कारण अने कार्य ते शुं कहीयें?

गुरुः–कर्त्ता जीव अने कारणरूप आकाशास्तिकाय मल्यो,तेवारें जीवने अवगाहनारूप कार्य नीपन्युं. ए आकाशास्तिकायनुं स्वरूप त्रिन्नंगीयेंकरी कह्युं.

१०१४ शिष्यः—कालद्रव्यमां कर्त्ता कारण अने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः—कर्त्ता जीव अने कारणरूप कालद्रव्य मल्युं तेवारें जीवने नवा पुराणारूप कार्य नीपन्युं एम कालद्रव्यनुं स्वरूप त्रिन्नंगीयें करी जाणवुं.

१०१५ शिष्यः—पुद्गलास्तिकायमां कर्त्ता,कारण अने कार्य ते शुं कहीयें?

गुरुः—कर्त्ता जीव, अने कारणरूप पुद्गलद्रव्य मल्यो, तेवारें जीवने समय समय अनंतां कर्मरूप दलीयां लेवां, अने अनंता कर्मरूप दलीयां खेरववां, तेरूप कार्य नीपन्युं एम पुद्गलास्तिकायना स्वरूपमां त्रिन्नंगी जाणवी. ए रीतें जीव, अजीवरूप षट्द्रव्यनुं स्वरूप त्रिन्नंगीयें करी कह्युं.

हवे नव तत्त्वमां जीव अने अजीव ए बे तत्त्वनुं स्वरूप षट्द्रव्यना स्वरूपमां कहेवाणुं शेष पुण्यादि सात तत्त्वनुं स्वरूप त्रिन्नंगीयें करी कहेछे.

१०१६ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी पुण्यमां कर्त्ता कारण अने कार्य ते शुं कहीयें?

गुरुः—कर्त्ता जीव अने कारण ते छ कायनी दयारूप परिणाम,परोपकार करतो, मनोहर ललित वचन बोलतो, करुणान्नावना न्नावतो, कुकर्मी जीव देखी तेनी उपर दया चिंतवतो, गुणवंत जीव देखी अत्यंत प्रमोद धरतो, सर्व जीवने पोता समान जाणी, तेने दुःखथकी मूकाववानी चिंता करतो, एवा परिणामरूपकारणथकी जीव महापुण्यरूप कार्य उपार्जन करे.

१०१७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां पापमां कर्त्ता,कारण अने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः—कर्त्ता जीव अने कारण तो हिंसा, मृषा, चोरी, मैथुन, निंदा, ईर्ष्या, मिथ्यात्व, अव्रत, हास्य, विनोद, कुतूहल, पारकां छिद्र जोतो, कडवां वचन बोलतो, अनेक जीवने संताप उपजावतो, एवा परिणामरूप कारणथकी जीव महापापरूप कार्य उपार्जन करे. ए पापमां त्रिन्नंगी कही.

१०१८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां आश्रवमां कर्त्ता,कारण,अने कार्य तेशुंकहीयें ?

गुरुः—आश्रवनो कर्त्ता जीव अने कारण तो एके आ न्नव परन्नवने अर्थें तथा इंद्रियसुखनी वांछारूप परिणामें जे शुन्न कारण मेलवी साधन करवुं, ते शुन्नकारणरूप आश्रव जाणवुं अने मिथ्यात्व, अव्रत, क्लेश, कजीया, निंदा, विकथारूप परिणामें करी जे दलीयां मेलववां, ते अशुन्नकारणरूप आश्रव जाणवुं. अने एवा शुन्नाशुन्न कारण मेलव्याथी जे आ न्नवें परन्नवें शुन्नाशुन्नविकाररूप फलनी प्राप्ति थाय;ते कार्यरूप आश्रव जाणवुं. ए रीतें आश्रव तत्त्वनुं स्वरूप त्रिन्नंगीयें करी जाणवुं.

१०१९शिष्यः—एनवतत्त्वमां संवरमां कर्त्ता, कारण अने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः—कर्त्ता जीव अने कारण तो नव तत्त्व षट्द्रव्यरूप जीव अजीवनी वेंचण करी अंतरंग निश्चयनयें ज्ञानस्वरूपी सत्तायें सिद्धसमान एवी जीव सत्ताने ध्यावे, अने अजीवसत्ताने जडरूप जाणी त्याग करे, एवुं संवररूप कारण जीवने मले, तेवारें शुभाशुभ विभाविक सुख उपरथी मूर्छा टले, अने अनंत स्वाभाविक सुखरूप कार्य नीपजे, ए संवरमां त्रिभंगी कही.

१०२०शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी निर्जरातत्त्वमां कर्त्ता, कारण अने कार्य तेशुं ?

गुरुः—कर्त्ता जीव अने अंतरंग इच्छानो रोध करी पौद्गलिक सुखनी वांछा रहित थको एक पोतानो आत्मा कर्मरूप जालमां वींटाणो छे, तेने शुद्ध निरावरण ज्ञान स्वरूपी ज्योतिरूप प्रगट करवानी वांछायें बार भेदें तपस्या रूप कारणने मेलवतो थोडा कालमां आवरण रहित थइ परमानंद सुखरूप कार्य निपजावे. ए रीतें निर्जरातत्त्वनुं स्वरूप, त्रिभंगीयें करी जाणवुं.

१०२१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां बंधमां कर्त्ता, कारण अने कार्य ते शुं कहीयें?

गुरुः—कर्त्ता तो जीव अने कारण तो पुद्गलद्रव्यने संसर्गें करी जीव, कर्मने बांधे छे. एटले वर्ण गंधादिक, रस, फरस प्रमुख पुद्गलनी रचना तेने देखीने मोहदृष्टियें करी जीव व्यामोह पामे छे. पछी तीव्ररागें करी विषयसुखनां कारण मेलवे, ए तीव्ररागनी चिकाशें जीव, कर्मरूप दलीयां नो बंध पाडे, तेवारें बंधरूप कार्य नीपजे, एम बंधतत्त्वमां त्रिभंगी कही.

हवे आगल पन्नवणासूत्रना पाठमध्ये कह्युं छे जे मोक्षनिःकर्मावस्था रूप सिद्धपरमात्मानुं स्वरूप जाणे, तेने ज्ञानी कहीयें. अने अंतरंग सद्दहे तेने निश्चय समकेत हरे तेनो खुलासो करे छेः—समकेतविनानी सर्व करणी ते एकडा विनानां मीडां सरखी जाणवी, एटले कांइ पण लेखे लागे नहीं तेमाटें समकेत छे, ते दीवा समान छे, जेम दीवा विना घरनेविषे अंधारामां कांइ पण वस्तु सूजे नही, तेम चित्तरूपीया घरनेविषे पण समकेतरूप दीपक विना कांइ मालम पडे नही, तथा वली समकेत छे, ते बीजना चंद्रमा समान छे, जेम बीजनो चंद्रमा उगे, तेवारें लोकना जीवने पूर्णमासीनी प्रतीति थाय जे हवे पूर्णमासी अवश्य थाशे, तेम चित्तने विषे समकेतरूप बीज उगे. तेवारें मोक्षरूप पूर्णमासीनी प्रतीति थाय, तथा जेम कोइएक स्त्रीयें पांचशेर चोखा चूले मूक्या होय, तेमांहेलो एक दाणो चांपी जोतां

पाका काचा चोखानुं ज्ञान थाय. तेम समकेतरूप एक गुण आवेथी सिद्धना अनंता गुणनुं ज्ञान थाय. तथा जेम कोइ एक व्यापारी गोधमनी वोरगत करवा आव्यो, तिहां गोधमनो कोठार सो कलशीनो भरेलो हतो, तेमांथी एक मूठी भरीने वानकी जोइ, तेवारें तेने सोए कलशी गोधम अमुक जातना छे, तेनुं ज्ञान थयुं, तेम समकेतरूप एक गुण ते वानकी समान छे. ते जो जीवने आवे, तो तेने सिद्धभगवानना सर्व गुणनुं ज्ञान थाय. तेवारें तेने सिद्धनां सुख प्रगट करवानो भाव उपजे एवुं ए समकेत सर्वोत्तम छे.

१०३६ शिष्यः—सिद्धपरमात्माना केटला भेद छे ?

गुरुः—गाथा ॥ जिण अजिण तित्थतित्था, गिहि अन्न सलिंग थी नर नपुंसा ॥ पत्तेय सयंबुद्धा, बुद्ध बोहिक्कणिक्काय ॥१॥ अर्थः—प्रथम जिनसिद्ध ते तीर्थंकरने कहीयें. वीजा अजिणसिद्ध ते सामान्यकेवलीने कहीयें, त्रीजा तीर्थसिद्ध ते जे श्रीतीर्थंकर थाय ते चतुर्विधसंघनी स्थापना करे, ते संघने तीर्थ कहीयें. ते तीर्थ प्रवर्त्त्या पछी जे मोक्षें गया, तेने तीर्थसिद्ध कहीयें चोथा तीर्थ प्रवर्त्त्यानी प्रथमज मरुदेवादिकनी पेरें जे मोक्षें गया, ते अतीर्थसिद्ध कहीयें. पांचमा घरमां बेठां जे मोक्ष गया, ते गृहस्थलिंगसिद्ध, छठा मुनिना वेशविना वीजा वेशे जे मोक्षें गया, ते वल्कलचिरी प्रमुखने अन्यलिंगसिद्ध कहीयें. सातमा साधुने वेशे जे मोक्षें गया, ते स्वलिंग सिद्ध कहीयें. आठमा चंदनवाला प्रमुख स्त्रीलिंगें जे मोक्षें गया, ते स्त्रीलिंगसिद्ध कहीयें. नवमा श्रीगौतम प्रमुख नरलिंगें जे सिद्ध थया, तेने पुरुषलिंगसिद्ध कहीयें. दसमा गांगेय प्रमुख जे नपुंसक मोक्षें गया, ते नपुंसकलिंग सिद्ध कहीयें. अगीयारमा करकंडुप्रमुखने प्रत्येकबुद्ध सिद्ध कहीयें. वारमा कपिल प्रमुखने स्वयंबुद्ध सिद्ध कहीयें. तेरमा गुरुना वोधथकी जे सिद्ध थया, ते बुद्धवोधितसिद्ध जाणवा. चौदमा वीरभगवाननी पेरें जे एक समय एकाकी सिद्ध थया, ते एकसिद्ध कहीयें. पंदरमा श्रीऋषभप्रभुनी पेरें एक समयमां घणा सिद्ध थया, ते अनेकसिद्ध कहीयें. ए सिद्धना पंदर भेद जाणवा.

१०४५ शिष्यः—नामथकी, क्षेत्रथकी, कालथकी भावथकी, द्रव्यथकी, गुणथकी अने पर्यायथकी तो उत्पाद तथा व्यय ए वे भंग लेवा अने नवमो ध्रुव, ए रीतें नव भांगे करी सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप केम जाणीयें?

गुरुः—प्रथम श्रीऋषनादि चोवीश तीर्थंकर प्रमुख ते नामेकरी सिद्ध जाणवा. बीजा क्षेत्रथकी सिद्ध ते सर्वसिद्धआश्रयी पीस्तालीश लाख योजन सिद्धशिला प्रमाणें जाणवा, अने एकसिद्ध आश्रयी तो पोताना शरीरना प्रमाणमध्येथी त्रीजो नाग घटाडी बाकी बे नागना शरीरप्रमाणें आत्मप्रदेशनो घन करी ते प्रमाणें क्षेत्र फरसीने सिद्ध रह्या छे. त्रीजा कालथकी सर्व सिद्ध नगवान् तो अनादि अनंत नांगे रह्या छे. अने एकसिद्ध आश्रयी तो सादि अनंत नांगो जाणवो,केम के सिद्धि वस्था तेनी आदि छे, अने फरी पाछुं संसारमां कोइकालें आववुं नथी,त्यां सिद्धत्वमांहेज रहेवुंछे, माटे अंत नथी तथा चोथा नावथकी सिद्धनगवान् तो शुनाशुनविकार रूप जे नाव तेथकी निवृत्तिने पोताना स्वनावमां वर्त्ते छे,तथा पांचमा द्रव्य थकी सिद्धना जीव असंख्यातप्रदेशरूप जाणवा. छठा गुणथकी सिद्धपरमात्माने एकेक प्रदेशें ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप अनंतागुण प्रगट्या छे, तथा पर्यायथकी तो सातमो उत्पाद अने आठमो व्यय तथा नवमो ध्रुव,एटले पर्यायथकी सिद्धना जीवने समय समय अनंता अनंत नवा नवा ज्ञेयनी वर्त्तना रूप पर्यायनो उत्पाद व्यय थइ रह्यो छे अने गुण तो ध्रुवाध्रुव पणेज वर्त्ते छे, तेणे करी समय समय अनंता सुखनुं आस्वादनरूप सिद्ध परमात्मा सुख विलसे छे. हवे उत्पाद व्ययनुं स्वरूप कहे छे. वस्तु गतें मूलपणे जे ज्ञेयने पलटावे, ते ज्ञानपणुं एटले ते नासनपणे परिणमवुं थाय, तेवारें पूर्वपर्यायना नासननो व्यय थयो अने अनिनव पर्यायना नासननो उत्पाद थयो, तथा ज्ञानपणुं ते ध्रुव जाणवुं. ए सामान्यप्रकारें उत्पाद व्ययनुं स्वरूप कह्युं जो विशेष रीतें कहीयें,तो बाल जीवनी समजणमां नावे. ए रीतें नवनंगीयें करी सिद्धपरमात्मानुं स्वरूप जाणवुं.

१०४७ हवे नित्य, अनित्य,एक,अनेक सत्, असत्, वक्तव्य अने अवक्तव्य ए आठ पक्षें करी सिद्धनुं स्वरूप उलखावे छे. तिहां प्रथम नित्य अनित्यपक्ष कहे छेः—ज्ञानादिक अनंतगुण सिद्धनगवानने प्रगट्या छे,ते सदा काल नित्यपणे शाश्वता वर्त्ते छे. तेमाटे सिद्धने नित्य कहियें, तथा ए ज्ञानादिक अनंतगुण जे सिद्धने प्रगट्या छे,तेने विषे अगुरुलघु पर्याय समयसमय हानिवृद्धिरूप उपजवो विणसवो करे छे, तेमाटें सिद्धने अनित्य पण कहीयें. तथा ए अगुरुलघु पर्याय समय समय हानिवृद्धिरूप उपजवो विणसवो करे

बे,ते अनित्यपणुं बे तेने विषे पण सिद्ध जगवानना ज्ञानादिक अनंतगुण नित्यपणे वर्त्ते बे, ते अनित्यमां नित्यपणुं बे अने पूर्वोक्त ज्ञानादिक गुण नित्यपणे बे तेमां अगुरुलघुनुं अनित्यपणुं बे, ते नित्यमां अनित्यपणुं बे. ए रीतें नित्यमां अनित्य अने अनित्यमां नित्य पक्षनो विचार जाणवो.

१०४ए हवे सिद्धमां एक अनेक पक्ष कहे बेः–प्रथम श्रीऋषजादि एवुं नाम लेतां तो सिद्ध एक बे तेथी सिद्धने एक कहीयें, अने गुणपर्याय तथा प्रदेश ए सिद्धने अनेक बे एटले गुण अनंता, पर्याय अनंता, प्रदेश असंख्याता, माटे सिद्धने अनेक पण कहीयें. तथा ए गुण, पर्याय अने प्रदेश अनेक बे, तेमां पण पोतापणे ते सिद्ध एक वर्त्ते बे, एटले एकमां अनेक अने अनेकमां एक पक्षनो विचार कह्यो.

१०५१ हवे सिद्धमां सत् असत् पक्ष देखाडे बेः–तिहां स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल,अने स्वजावपणे करी सिद्ध सत् बे अने परद्रव्य,परक्षेत्र, परकाल, तथा परजावें करी सिद्ध असत् बे. तिहां स्वद्रव्य ते सिद्धमां ज्ञानादि गुण जाणवा अने स्वक्षेत्र ते पोताना असंख्यातप्रदेशरूप क्षेत्रने अवगाहीने रह्या बे, तथा स्वकाल ते पोतानो अगुरुलघुपर्याय सर्वगुणमां सिद्धने हानिवृद्धिरूप उपजवो विणसवो करे बे तथा स्वजाव ते पोताना गुणपर्याय जाणवा, ए सर्व द्रव्यादिक चार तेणे करी सिद्धपरमात्मा सत् बे अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल अने परजावपणामां सिद्धनुं पोतानुं असत्पणुं वर्त्ते बे. माटे ए सत्मां असत् अने असत्मां सत् पक्षनो विचार जाणवो.

१०५३ हवे सिद्धमां वक्तव्य अवक्तव्य पक्ष देखाडे बेः–सिद्ध परमात्माना अनंता गुण बे. तेमां जेटला गुण केवली जगवानना प्ररूप्यामां आवे, ते सर्ववक्तव्य जाणवा अने केवलीजगवानना प्ररूप्यामां न आवे, ते अवक्तव्य जाणवा. ए रीतें आठ पक्षें करी सिद्धपरमात्मानुं स्वरूप जाणवुं.

१०६० हवे सप्तजंगीयें करी सिद्धपरमात्मानुं स्वरूप उलखावे बे.प्रथमस्यात् अस्ति,स्यात्नास्ति,स्यात्अस्तिनास्ति,स्यात्अवक्तव्य स्यात्अस्तिअवक्तव्य स्यात्नास्तिअवक्तव्य,स्यात् अस्तिनास्तियुगपत्अवक्तव्य.ए सातजंगा कह्या

प्रथम स्यादस्ति जांगो उलखावे बे, तिहा (स्यात् के०) अनेकांतपणे सर्व अपेक्षायें करी (अस्ति के०) बता पणुं तेने स्यादस्ति कहीयें.एटलेसिद्धनुं स्वद्रव्य ते पोताना गुणपर्यायनो समुदाय जाणवो तथा स्वक्षेत्र ते

पोताना असंख्यात प्रदेशरूप क्षेत्र तेने अवगाही रह्या छे, तथा स्वकाल ते समय समय उत्पाद व्ययनी वर्त्तनारूप जाणवो अने स्वभाव ते अनंता ज्ञानपर्याय, अनंता दर्शनपर्याय, अनंता चारित्रपर्याय, अनंता अगुरुलघु पर्याय तेणें करी सिद्धने अस्तिपणुं छे, माटे ए स्यात्अस्ति भांगो कहीयें.

बीजो स्यान्नास्तिभांगो कहे छे. सिद्धमां परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल अने परभाव ए चारेनुं नास्तिपणुं छे. तेणे करी स्यान्नास्ति भांगो कहीयें.

हवे स्यादस्तिनास्ति त्रीजो भांगो सिद्धमां कहे छे. तिहां प्रथम भंगमां कह्युं जे स्वगुणें अस्ति छे, अने बीजा भांगामां कह्युं जे परगुणें नास्ति छे, ए बे भांगा सिद्धने एक समयें छे, किंवा समयांतरे छे? तेनो उत्तर गुरु कहे छे, के जे समयें सिद्धने स्वगुणनी अस्ति छे, तेहीज समयें सिद्धने परगुणनी नास्ति पण छे, तेथी सिद्धने अस्ति नास्ति ए बे भांगा भेला एक समयमांज छे.

हवे स्यात् अवक्तव्य नामें चोथो भांगो कहे छे. तिहां स्यात्अस्तिनास्ति ए बे भांगा एक समयें छे, परंतु स्यात् अस्ति एटलुं वचन कहेतां थकां असंख्याता समय लागा, तेवार पछी स्यात् नास्ति नामें बीजो भांगो कह्यो. एटले जे समयें अस्तिभांगो कह्यो, ते समयें नास्तिपणुं कहेवामां न आव्युं अने नास्ति कहेतां ते समयें अस्तिपणुं नाव्युं तेवारें अस्ति केतां नास्तिपणानो मृषावाद लागो किंवा नास्ति केतां अस्तिपणानो मृषावाद लागो, एम एक समयमां बे वचन बोल्यां जाय नही जेम एक अक्षर बोलतां असंख्याता समय लागी जाय, त्यार पछी बीजो अक्षर बोलवामां आवे, तेमाटे सिद्धने चोथो भांगो अवक्तव्य कह्यो एटले (अवक्तव्य के०)वचनथी अगोचर, वचनथी कह्युं जाय नही माटे अवक्तव्यभांगो जाणवो.

शिष्य पूछे छे के तमें अवक्तव्यपणुं कह्युं ते अवक्तव्यपणुं सिद्धने अस्ति धर्मनुं छे, किं वा नास्तिधर्मनुं छे? तेवारें गुरु कहे छे, जे ते वचनपणे स्यादस्ति स्यान्नास्ति ए बे भांगा अवक्तव्य छे, एटले पांचमो स्यादस्ति अवक्तव्य अने छठो स्यात्नास्ति अवक्तव्य ए बे भांगा कह्या.

हवे सातमो स्यात् अस्ति नास्ति युगपत् अवक्तव्य भांगो कहे छे. एटले स्यात्अस्तिपणुं नास्तिपणुं युगपत् एक समय छे, पण वचनथी अवक्तव्य छे माटे ए सातमो भांगो पण सिद्धमां जाणवो.

१०६७ हवे सिद्धनुं स्वरूप नित्यानित्यादिनी सप्तभंगीयें करी उलखावे छे.

स्यान्नित्यं, स्यादनित्यं, स्यान्नित्यानित्यं, स्यादवक्तव्य, स्यान्नित्य अवक्तव्य,स्यादनित्य अवक्तव्य,स्यान्नित्यानित्य युगपत् अवक्तव्य,ए सात छे.

तिहां स्यान्नित्यनामे प्रथम भांगो ओलखावे छे. एटले (स्यात् के०) अनेकतापणे सर्व अपेक्षायें करी अने (नित्यं के०) शाश्वतपणे वर्त्ते छे, तेने स्यात्नित्य भांगो कहीयें. ते सिद्धभगवान्ने ज्ञानगुणना छता पर्याय अनंता, दर्शनगुणना छता पर्याय अनंता, चारित्रगुणना छता पर्याय अनंता, अने वीर्यगुणना छता पर्याय अनंता, एम अनंता छता पर्याय ते सिद्धनेविषे सदाकाल शाश्वता नित्यपणे वर्त्ते छे,माटे स्यात् नित्यं भांगो छे,

हवे सिद्धमां स्यादनित्यं ए बीजो भांगो कहे छे. श्रीसिद्धपरमात्माने अनंता छता पर्याय जे प्रगट्या छे, ते एकेक पर्यायने विषे अनंता सामर्थ्य पर्याय रूप ज्ञेयनी वर्त्तना समय समय थई रही छे, एटले अभिनवपर्यायनुं उपजवुं अने पूर्वपर्यायनुं विणसवुं थाय छे. माटे ए सिद्धमां अनित्यपणुं जाणवुं तेथी स्यादनित्यरूप बीजो भांगो कह्यो.

हवे सिद्धमां स्यान्नित्यअनित्यरूप त्रीजो भांगो कहे छे. तिहां सिद्धमां पूर्वोक्त छता पर्याय नित्य छे, अने सामर्थ्य पर्याय अनित्य छे. ए बे भांगा एक समय छे,किंवा समयांतरे छे? त्यां गुरु कहे छे,के जे समय छता पर्यायनुं नित्यपणुं छे, ते समयें ज सामर्थ्य पर्यायनुं अनित्यपणुं पण छे, तेथी सिद्धने नित्य अने अनित्य ए बे भांगा भेला एक समयें छे, ए स्यान्नित्य अनित्य नामें त्रीजो भांगो कह्यो.

हवे सिद्धमां स्यादवक्तव्य नामें चोथो भांगो कहे छे. शिष्य कहे छे. के ए नित्य, अनित्य बे भांगा एक समयें छे, तो आपणे स्यान्नित्य कहेतां थकां पण असंख्याता समय लागे, तेवार पछी स्यादनित्य भांगो कहेवाय. माटे नित्य कहे ते समयें अनित्यपणुं नाव्युं अने अनित्य कहे, ते समय नित्यपणुं नाव्युं एटले नित्य कहेतां अनित्यपणानो मृषावाद लाग्यो किंवा अनित्य कहेतां नित्यपणानो मृषावाद लाग्यो तेवारें गुरु कहे छे, जे एम एकसमयें बे वचन बोल्यां न जाय, केम के एक अक्षर बोलतां असंख्याता समय लागे, तेवार पछी बीजो अक्षर बोलवामां आवे, माटे ए अवक्तव्यनामें चोथो भांगो सिद्धमां कह्यो छे, एटले (अवक्तव्य के०) वचनथी अगोचर अर्थात् वचनथी कह्यो जाय नही.

एवुं सांजली शिष्य कहे बे के हे गुरुजी! तमे अवक्तव्य पणुं कह्युं, ते अवक्तव्य पणुं सिद्धपरमात्माने नित्यधर्मनुं बे, किंवा अनित्यधर्मनुं बे? तेवारें गुरु कहे बे, के वचनपणे नित्य अनित्य ए बे जांगा अवक्तव्य बे, एटले पांचमो स्यान्नित्य अवक्तव्य अने बठो स्यादनित्य अवक्तव्य जांगो कह्यो. हवे सातमो स्यान्नित्य अनित्य युगपत् अवक्तव्य जांगो कहे बे. एटले ए स्यात् नित्यानित्य पणुं युगपत् एकसमय बे पण वचनथी अवक्तव्य बे माटे स्यात् नित्यानित्य युगपत् अवक्तव्य सातमो जांगो सिद्धमां जाणवो.

१०७४ वली सिद्ध परमात्मामां एक अनेकनी सप्तजंगीयो करवी. जेम के स्यादेकं, स्यादनेकं, स्यादेकानेकं, स्यादवक्तव्यं, स्यादेकअवक्तव्यं, स्यादअनेकावक्तव्यं, स्यादेकानेकयुगपदवक्तव्यं. ए रीतें एक अनेकनी सप्तजंगीयें करी सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप गुरुमुखें जाणवुं.

१०७१ वली सिद्धपरमात्मामां स्यात्सत्यं, स्यादसत्यं, स्यात्सत्यासत्यं, स्यादवक्तव्यं, स्यात्सदवक्तव्यं, स्यादसदवक्तव्यं, स्यात्सत्यासत्यं युगपदवक्तव्यं, ए सत्या सत्यनी सप्तजंगीयें करी सिद्धनुं स्वरूप विचारवुं.

१०७७ वली सिद्धमां जव्य अजव्य स्वजावनी सप्तजंगी करवी ते आवी रीतें स्याद्भव्यस्वजाव, स्यादजव्यस्वजाव, स्याद्भव्याजव्यस्वजावं, स्यादवक्तव्यं, स्याद्भव्यस्वजाव अवक्तव्यं, स्यात् अजव्यस्वजाव अवक्तव्यं, स्यात्जव्यस्वजाव अजव्य स्वजाव युगपदवक्तव्यं, ए सप्तजंगीयें करी सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप विचारवुं.

१०एए वली सिद्धमां गुणपर्यायनी सप्तजंगी करवी, ते आवी रीतें स्यात् गुणं, स्यात्पर्यायं, स्यात्गुणपर्यायं, स्यात्अवक्तव्यं, स्यात्गुणअवक्तव्यं. स्यात्पर्याय अवक्तव्यं, स्यात्गुणपर्याययुगपदवक्तव्यं. ए रीतें गुणपर्यायनी सप्तजंगीयें करी सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप विचारवुं. एम अनंती सप्तजंगीयो सिद्ध परमात्माने विषे वस्तुधर्में रही बे पण तेनो विस्तारें अर्थ करतां ग्रंथ वधे, माटे ए सामान्य प्रकारें वीजरूप सप्तजंगीनो विचार कह्यो.

११०१ हवे मोक्षनिष्पन्न स्वरूपसिद्ध अवस्थामां षट्कारक लगावे बे. तिहां प्रथम ज्ञानगुणमां ब कारक लगावे बे. प्रथम कर्त्ता ते सिद्धनो जीव, वीजुं कारण रूप ज्ञानगुण बे, त्रीजुं ते ज्ञानगुणें करीने अनंता ज्ञेयपदार्थ जाणवा रूप कार्य करवुं बे, तेणे करी समय समय अजिनव पर्यायनुं जा

णपणुं संपजतुं जाय, ते चोथुं संप्रदान, अने समय समय पूर्वपर्यायना जाणपणानो व्यय थतो जाय, ते पांचमुं अपादान, अने ज्ञानगुण ध्रुवनुं ध्रुवपणे जाणवुं ते छठुं आधार, ए सिद्धना ज्ञानगुणमां छ कारक कह्यां.

११०७ हवे सिद्धने दर्शनगुणमां छ कारक कहे छे. प्रथम कर्त्ता सिद्धनो जीव, बीजुं तेने दर्शनगुण कारण मल्युं तेणे करी त्रीजुं अनंता दृश्यपदार्थने देखवारूप कार्य करवुं छे, चोथुं अभिनवपर्यायनुं समयसमय देखवा पणुं संपजतुं जाय ते संप्रदान, पांचमुं पूर्वपर्यायना देखवा पणानो समयसमय व्यय थातो जाय,ते अपादान,आधार ते दर्शनगुण ध्रुवन ध्रुवपणे जाणवो.

१११३ हवे सिद्धने चारित्रगुणमां षट्कारक कहे छे प्रथम कर्त्ता सिद्धनो जीव,बीजुं चारित्रगुण कारण मल्युं,त्रीजुं अनंता गुणने विषे रमण करवा रूप कार्य करवुं छे, चोथुं संप्रदान ते अभिनवपर्यायनुं रमण पणुं समय समय संपजतुं जाय, पांचमुं अपादान ते पूर्वपर्यायना रमणपणानो समय समय व्यय थातो जाय, छठो आधार ते चारित्रगुण ध्रुवनुं ध्रुवपणे जाणवुं.

१११९ हवे सिद्धना वीर्य गुणमां षट्कारक लगावे छे, प्रथम कर्त्ता सिद्धनो जीव, बीजुं कारणरूप वीर्यगुण, त्रीजुं अनंतागुणने विषे सहायरूप कार्यकरवुं छे, चोथुं संप्रदान, ते अभिनव पर्यायनुं सहायपणुं समय समय संप जतुं जाय, पांचमुं अपादान ते पूर्वपर्यायना सहायपणानो समय समय व्यय थातो जाय, छठो आधार ते वीर्यगुण ध्रुवनुं ध्रुवपणे जाणवुं. ए रीतें सिद्धना वीर्यगुणमां षट्कारक जाणवा. ए रीतें सिद्धपरमात्माने अनंता गुणने विषे षट्कारक रूप अनंतां चक्र लागी रह्यां छे, तेनुं जाणपणुं करी सिद्धपरत्मानुं स्वरूप ध्यावे ते प्राणी, गण्या दिवसमां परमानंद पद पामे.

११२४ शिष्यः—सिद्धपरमात्माना स्वरूपमां एकरूप, असंख्यरूप, असंख्य अनंतरूप, अनंतअनंतरूप, अनंतअनंतधर्मरूप ए पंचभंगीयो केम जाणीयें.

गुरुः—प्रथम नामथकी सिद्धने (एक के०) एक कहीयें, वीजो क्षेत्रथकी सिद्धने (असंख के०) असंखप्रदेशी कहीयें त्रीजुं सिद्धने एकेक प्रदेशें अनंतगुण प्रगट्या छे, तेवा प्रदेश असंख्याता छे अने गुण अनंता छे, माटे असंख्य अनंत कहीयें, चोथो सिद्धपरमात्माना एकेक गुणमां अनंता अनंत पर्यायनी वर्त्तना रूप जाणवी, ते अनंत अनंतभंगी कहीयें. पांचमो सिद्धने एकेकपर्यायें अनंतां धर्म प्रगट्यो छे,ते अनंत अनंत धर्मरूप भंगी जाणवी.

११३० हवे चार निक्षेपे करी सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप उलखावे छे. प्रथम (नामसिद्ध के०) सिद्ध एवुं नाम ते त्रणे काल एकरूप पणे शाश्वतुं वर्त्ते छे, बीजो स्थापनासिद्ध ते श्रीजिनप्रतिमा स्थापवी अथवा देहमान मध्येथी त्रीजो जाग घटाडी बे जाग शरीर प्रमाणे आत्मप्रदेशनो घन करी स्थापना रूप क्षेत्र अवगाही रह्या छे. त्रीजो द्रव्यसिद्ध ते तेरमे चौदमे गुणठाणे केवलीजगवान् वर्त्ते छे. ते जव्यशरीर आश्रयी द्रव्य सिद्ध जाणवो अने जे सिद्धि वस्या तेना शरीरनी जक्ति करियें, ते ज्ञशरीरनुं द्रव्य जाणवुं तथा शुद्ध निर्मल असंख्यात प्रदेशने विषे ज्ञानादि अनंतगुण रूप छता पर्याय वस्तुरूप प्रगट्या छे, ते तद्व्यतिरिक्त शरीर आश्रयी द्रव्यनिक्षेपो जाणवो ए त्रण प्रकारें सिद्धनो द्रव्यनिक्षेपो जाणवो. तथा सिद्धनो स्वरूप सामर्थ्यपर्याय प्रवर्त्तना रूप अनंतो धर्म प्रगट्यो छे, तेणे करी सदा काल नवा नवा ज्ञेयनी वर्त्तना रूप पर्यायनो उत्पाद, व्यय, समय समय अनंत अनंतो थइ रह्यो छे. तेथी सिद्ध परमात्मा अनंतुं सुख जोगवे छे. ते जावनिक्षेपो जाणवो. ए रीतें चारनिक्षेपे. सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप जाणवुं,

११३१ शिष्यः—सिद्धपरमात्माना स्वरूपमां अजोगी, उपजोगी अने जोगी, एवी त्रिजंगी उपजे छे माटे तेणे करीने सिद्धनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

गुरुः—सिद्ध परमात्मा शुजाशुजना हेतु इंद्रियसुखना विकाररूप जोगथकी रहित छे, तेमाटे सिद्धने अजोगी कहीयें. तथा अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत वीर्य, ए आदि अनंता गुण प्रगट्या छे. ते वारंवार एना ए गुण जोगव्यामां आवे छे, तेथी सिद्धने उपयोगी कहीयें. जे एकवार जोगववामां आवे, तेने जोग कहीयें. अने जे वारंवार जोगववामां आवे, तेने उपजोग कहीयें. तथा सिद्धना एकगुणने विषे अनंतानंत पर्यायनी समय समय उत्पादव्ययरूप नवा नवा ज्ञेयनी वर्त्तना थइ रही छे, तेणें करी सिद्धपरमात्मा, समय समय अनंतसुखना आस्वादनरूप जोग करे छे, तेमाटे पर्यायथकी सिद्धने जोगी कहीयें. ए रीतें शुजाशुजरूप विजावना जोगथकी सिद्ध रहित छे, तेमाटें अजोगी कही बोलाव्या अने ज्ञानादि अनंतपर्यायरूप गुणथकी सिद्धने उपजोगी कही बोलाव्या, एटले छता पर्यायरूप गुण वारंवार फरी फरीने एना ए जोगव्यामां आवे माटे, उपजोग छे तथा सिद्धना सामर्थ्य पर्याय समय समय नवा नवा ज्ञेयनी वर्त्त

नारूप पलटाय ले. तेमाटे समय समय नवनवुं अनंतुं सुख नोगवे ले एट ले पर्यायथकी सिद्धने नोगी कही बोलाव्या, ए परमार्थ ले. ए रीतें त्रि नंगीयें करी सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप जाणवुं.

११३३ शिष्यः–सिद्धपरमात्मानो नित्यस्वनाव कहीयें, अने अनित्य स्वनाव पण कहीयें, तेनो श्यो पामार्थ ?

गुरुः–सिद्धने ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य, ए चार गुण तथा अव्या बाध, अमूर्त्ति, अने अनवगाहक, ए त्रण पर्याय नित्य ले तेमाटे ए नित्य स्वनाव कहीयें अने एक अगुरुलघु पर्याय सिद्धने सर्वगुणमां उपजवा वि णसवा रूप हानि वृद्धि करे ले, ते माटे सिद्धनो अनित्यस्वनाव कहीयें, एटले द्रव्यास्तिनयें करी सिद्धनो नित्यस्वनाव कहीयें अने पर्यायास्ति कनयें करी सिद्धनो अनित्य स्वनाव कहीयें ए परमार्थ जाणवो.

११३५ शिष्यः–सिद्धनुं परमात्मामां अस्ति तथा नास्तिपणुं केम जाणीयें ?

गुरुः–सिद्ध परमात्माने ज्ञानादि अनंतचतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट थइ ले, तेनुं सिद्धने अस्तिपणुं जाणवुं, अने परस्वनाव शुनाशुनरूप जे इंद्रिय सुख तेनुं सिद्धने नास्तिपणुं जाणवुं.

११३७ शिष्यः–सिद्धने योगी कहीयें अने अयोगीपण कहीयें तेनो शो परमार्थ

गुरुः–सिद्धने ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूप त्रण गुण प्रगट थया ले माटे ए त्रण गुणें करी योगी कहीयें. तथा मन, वचन अने काया, ए त्रण योगथी सिद्ध रहित ले, माटें अयोगी कहीयें.

११३९ शिष्यः–सिद्धने कर्त्ता कहीयें अने अकर्त्तापण कहीयें तेनो श्योपरमार्थ?

गुरुः–ज्ञानना पर्याय अनंता ले तेणे करी सिद्ध परमात्मा अनेक ज्ञेय रूप पदार्थने जाणवारूप कार्य करे ले, अने अनंता दर्शनना पर्याय तेणे करी सिद्ध अनेक दृश्यपदार्थने देखवारूप कार्य करे ले माटे सिद्धने तेना कर्त्ता कहीयें. अने शुनाशुनविकाररूप इंद्रियसुखना हेतु एवा जे पौद्गलादिक विनाविक वस्तु तेना सिद्धने अकर्त्ता कहीयें.

११४१ शिष्यः–सिद्ध परमात्मानो नव्यस्वनाव पण कहीयें, अने अनव्य स्वनाव पण कहीयें. तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः–जेने पलटण स्वनाव ले, तेने नव्यस्वनाव कहीयें. अने जेने प लटण स्वनाव नथी, तेने अनव्यस्वनाव कहीयें. इहां सिद्धपरमात्माने ज्ञा

न, दर्शन अने चारित्र ए आदि अनंता गुण प्रगट्या छे,तेनो कोइ कालें विनाश थवानो नथी, एटले ते कोइ कालें पलटाशे नहीं,तेमाटे ए अन्नव्य स्वन्नाव सिद्धमां कहीयें. अने सिद्धने एक अगुरुलघु पर्याय करी अनंता गुणमां हानिवृद्धिरूप समय समय उत्पाद व्यय थाय छे, ते पलटण स्वन्नाव छे. तेणे करी सिद्ध परमात्माने न्नव्यस्वन्नाव कहीयें.

११४३ शिष्यः—सिद्ध परमात्माने लान्न कहीयें अने अलान्न पण कहीयें तेनो शो परमार्थ ?

गुरुः—सत्तागतें अनंतुं सुख प्रगट्युं, तेनो सिद्धने लान्न कहीयें अने शुन्नाशुन्नविकाररूप इंद्रिसुखना जे न्नोग तेनो सिद्धने अलान्न कहीयें.

११४५ शिष्यः—सिद्ध परमात्माने ग्राहकस्वन्नाव कहीयें, अने अग्राहक स्वन्नाव पण कहीयें, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—सिद्ध परमात्मायें शुक्लध्यानरूप अग्नियें करी सर्व कर्म बाली पोताना स्वरूपनुंग्रहण करी लोकनेअग्रन्नागें जइ अनंतसुखरूप आस्वादननुं ग्रहण कर्युं छे तेमाटे ग्राहकस्वन्नाव कहीयें, अने चारगतिरूप संसारमां मोहनीकर्मने वशे हता,तेवारें समय समय अनंता कर्मरूप दलीयानुं ग्रहण करता हता,तेथकी हमणां निवर्त्त्या, माटे अग्राहकस्वन्नाव कहीयें.

११४७ शिष्यः—सिद्ध परमात्मानो स्थिरस्वन्नाव कहीयें, अने अस्थिर स्वन्नाव पण कहीयें, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—सिद्धपरमात्मा सकल कर्म खपावी पोतानुं रूप निपजावी लोकने अंतें सादि अनंतमे न्नांगे ने आकाशप्रदेशरूप क्षेत्र अवगाही रह्या छे, तिहां थकी कोइ कालें ए प्रदेश मूकी बीजे प्रदेशे जवुं नथी तेमाटें स्थिरस्वन्नाव कहीयें. अने जे अनंतगुण सिद्धने प्रगट्या छे, तेनुं पण कोइकालें विनाशपणुं नथी, ते पण सिद्धनो स्थिरस्वन्नाव कहीयें तथा पर्यायनुं समय समय पलटणपणुं छे एटले पर्यायें करी हानिवृद्धि थाय छे ते सिद्ध परमात्मानो अस्थिरस्वन्नाव जाणवो.

११४ए शिष्यः—सिद्धने रक्षक कहीयें अने अरक्षक कहीयें,तेनोश्योपरमार्थ?

गुरुः—सिद्ध परमात्माने सत्तायें ज्ञानादि अनंतगुणरूप जे लक्ष्मी प्रगट थइ छे. तेना रक्षक छे माटे सिद्धने रक्षक कहीयें, अने पुद्गलादि विन्नावरूप जे लक्ष्मी ते थकी सिद्ध रहित छे, तेमाटे तेना अरक्षक कहीयें.

११५१ शिष्यः–सिद्ध परमात्मानो अचलितस्वभाव कहीयें, अने चलितस्वभाव पण कहीयें, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः–सिद्ध परमात्माने सत्तागतें ज्ञानादि अनंतगुण प्रगट्या छे, तेनो कोइ कालें विनाश नथी माटे सिद्धनो अचलित स्वभाव कहीयें, अने नवा नवा ज्ञेयनी वर्त्तनारूप समय समय उत्पादव्यय थाय छे, तेमाटे सिद्धपरमात्मानो चलित स्वभाव कहीयें.

११५३ शिष्यः–सिद्धपरमात्मानो रमणिक स्वभाव कहीयें, अने अरमणिक स्वभाव पण कहीयें, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः–शुक्लध्यानरूप अग्नियें करी घाती अघाती रूप कर्म आवरण वाली ज्ञानादि अनंतगुणरूप पोतानुं स्वरूप प्रगट कर्युं, तेने विषे सिद्धपरमात्माने रमणिकपणुं छे अने इंद्रियसुखनी हेतु एवी जे परस्वभाव रूप विभावदशा तिहांथकी सिद्धने अरमणिक पणुं जाणवुं.

११५५ शिष्यः–सिद्ध परमात्मानो व्यापक स्वभाव कहीयें अने अव्यापक स्वभाव पण कहीयें तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः–सिद्धपरमात्माने सत्तागतें सामान्य विशेषरूप ज्ञान, दर्शन आदि अनंता गुण प्रगट्या छे, तेमां व्यापकपणुं जाणवुं. अने परभावरूप विभावदशा थकी सिद्ध परमात्मा रहित छे, तेमाटे तेमां अव्यापकपणुं जाणवुं. ए रीतें बे भंगीयें करी सिद्धपरमात्मानुं स्वरूप कर्युं.

११६५ हवे सिद्ध परमात्माना अन्वयी गुण लखीयें छैयें. १ अनंतज्ञानमय, २ अनंतदर्शनमय, ३ अनंतचारित्रमय, ४ अनंततपोमय, ५ अनंतभोगमय, ६ अनंतदानमय, ७ अनंतलाभमय, ८ अनंतभोगमय, ए अनंतउपयोगमय, १० अनंतबलमय, ए सिद्धपरमात्माना अन्वयी गुण कह्या.

११एद हवे सिद्धपरमात्माना व्यतिरेकगुण लखीयें छैयें. १ क्रोधरहित, २ मानरहित, ३ मायारहित, ४ लोभरहित, ५ हास्य रहित, ६ अरतिरहित, ७ रतिरहित, ८ रागरहित, ए द्वेषरहित, १० मोहरहित, ११ मिथ्यात्वरहित, १२ निद्रारहित, १३ कामरहित, १४ अज्ञानरहित, १५ मनरहित १६ वचनरहित, १७ कायारहित, १८ संसाररहित, १ए इंद्रियरहित, २० कंदर्परहित, २१ शब्दरहित, २२ रूपरहित, २३ रसरहित, २४ फरसरहित,

२५ गंधरहित, २६ आहाररहित, २७ निहाररहित, २८ रोगरहित, २९ ज्ञयरहित, ३० शोकरहित, ३१ जुगुप्सा रहित,ए व्यतिरेक गुण जाणवा.
१२७५ हवे सिद्धपरमात्माना अन्वयी अने व्यतिरेक ए बे गुण ज्ञेला ल खीयें ढीयें. निराकार, २ निरालंब, ३ निराशी, ४ निरुपाधि, ५ निर्विकारी, ६ अद्वय, ७ अनादि, ८ अनंत, ए अखंम, १० अक्षर, ११ अनक्षर, १२ अचल, १३ अकल, १४ अमल, १५ अगम, १६ अनादमी, १७ अरूपी, १८ अकर्मी, १ए अबंधक, २० अनुदय, २१ अनोद्धिक, २२ अज्ञेदी, २३ अवेदी, २४ अछेदी, २५ अखेदी, २६ असखायी, २७ अलेशी, २८ अज्ञोगी, २ए अव्याबाध, ३० अनंतअनवगाही, ३१ गुरुलघु, ३२ अपरिणामी, ३३ अनिंद्रिय, ३४ अविकारी, ३५ अयोनि, ३६ अव्यापी, ३७ अनाश्रयी, ३८ अकंप, ३ए अविरोधी, ४० अखंमित, ४१ अनाश्रव, ४२ अलख, ४३ अशोक, ४४ अलोक, ४५ लोकालोकज्ञायक, ४६ स्वद्रव्यवंत, ४७ स्वक्षेत्रवंत, ४८ स्वकालवंत, ४ए स्वज्ञाववंत, ५० द्रव्यास्तिकपणे नित्य, ५१ पर्यायास्तिकपणे अनित्य, ५२ गुणपर्यायपणे नित्यानित्य, ५३ सिद्धस्वरूपी, ५४ स्वसत्तावंत, ५५ परसत्तारहित, ५६ स्वक्षेत्रअवगाहिक, ५७ परक्षेत्रस्वपणें अनवगाहिक. ५८ धर्मास्तिकायथकी ज्ञिन्न, ५ए अधर्मास्तिकाय थकी ज्ञिन्न, ६० आकाशास्तिकाय थकी ज्ञिन्न, ६१ पुद्गलास्तिकायथकी ज्ञिन्न, ६२ कालथकी ज्ञिन्न, ६३ स्वज्ञावना कर्त्ता, ६४ परज्ञावना अकर्त्ता, ६५ लोकप्रमाणें अवगाहनावंत, ६६ शुद्ध, ६७ बुद्ध, ६८ अमर, ६ए अपर, ७० अपरंपर, ७१ स्वज्ञावरमणी, ७२ सहजानंदी, ७३ पूर्णानंदी, ७४ अजर, ७५ अविनाशी, ७६ एक, ७७ असंख्य, ७८ अनंत, ७ए अनंतगुणें करी विराजमान.

शिष्यः—सिद्ध परमात्माने दान अनंतुं ढे. लाज्ञ अनंतो ढे, ज्ञोग अनंतो ढे, उपज्ञोग अनंतो ढे, तेनो श्यो परमार्थ ? तथा ते दान कोने आपे ढे ? लाज्ञ शानो थाय ढे? ज्ञोग ते शेनो ढे. अने उपज्ञोग ते शेनो ढे ?

गुरुः—सिद्ध परमात्माने वीर्यगुण ते सहकार दीये ढे तेम ज्ञानगुणना उपयोग विना वीर्य फुरी शके नही तेथी वीर्यने सहाय ज्ञान गुणनुं ढे तथा ज्ञानमां रमण ते चारित्रनुं सहाय ढे, एम एक गुणने अनंतगुणनुं सहाय ढे. हवे जे गुण सहाय दीये ढे ते तो आत्माना गुणमां दान धर्म

छे, ते सिद्धना जीव प्रति समय अनंत स्वगुण सहाय रूप अनंतुं दान पोतें पोताने आपे छे तथा जे गुणने जे गुणनी सहाय रूप शक्तिनी प्राप्ति ते सिद्धना जीवने लाभ छे तथा सिद्धना जीव पोताना पर्यायने प्रतिसमयें भोगवे छे ते भोग छे तथा सिद्धना जीव स्वाभाविक जे स्वगुण तेने वारंवार भोगवे छे माटे तेनो उपभोग छे एम सिद्धने दान स्वरूपनुं छे, लाभ पण स्वरूपनो छे,भोग स्वपर्यायनो छे अने स्वाभाविक स्वगुणनो उपभोग छे.

ए रीतें एक सिद्ध आश्रयी ए स्वरूप किंचिन्मात्र लख्युं छे. एवा अनंता सिद्ध वर्त्ते छे, तेमाटे एक सिद्धनुं स्वरूप जाण्युं एटले सर्वसिद्धनुं स्वरूप जाण्युं तेथी एक सिद्धनुं स्वरूप जेना जाण्यामां आवे, तेने ज्ञानी कहीयें, अने जेनी श्रद्धामां बेसे,अंतरंग सर्द्दहे, तेने समकेती कहीयें. एवा पुरुषने सिद्धनां सुख नजीक छे, एवा पुरुष संसारमां जे रह्या छे, ते मात्र भवस्थितिना वांकथकी रह्या छे, अने एवी उंलखाणना धणी जे सिद्धपरमात्माने नमस्कार करे छे. एटले नमोसिद्धाणं कहे छे. ते घणी निर्ज्जरा करे छे. ते माटे तेने निश्चय समकेतना धणी कहीयें.

तथा जेणें एवी रीतनी उंलखाण करी नथी,अने जे " नमोसिद्धाणं" कही सिद्धने नमस्कार करे छे, ते सूडो जेम रामनो उच्चार करे छे, तेनी पेरें आचरण जाणवुं, तिहां सुधी मिथ्यात्व छे, पण निर्ज्जरा थाय नही, केम के निर्ज्जरा तो उंलखाणने हाथ छे, माटे सिद्धनुं स्वरूप जाणवानो घणो खप करवो, जेणे उक्तप्रकारें सिद्धनुं स्वरूप न जाण्युं तेनो द्रव्यनिक्षेपो छे. अणुवउंगोदव्वं ए श्रीअनुयोगद्वारनुं वचन छे,

वली कह्युं छे, जे पद, अक्षर, मात्रा, शुद्धसिद्धांत वांचतां, पूछतां, अर्थ करे छे, गुरु मुखें सर्द्दहे छे, ते पण शुद्ध निश्चय सत्ता उंलख्या विना सर्वे द्रव्यनिक्षेपे छे, अने जे भाव विना द्रव्यनय छे, ते पुण्यबंधनुं कारण छे, पण मोक्षनुं कारण नथी, एटले जे जीव, करणीरूप कष्टतपस्या करे छे, पण जीव अजीवनी सत्ता उंलखी नथी, तेने भगवतीसूत्रमां अव्रती अपच्चरकाणी कह्या छे, तथा जे बाह्यथी एकली तपस्यारूप करणी करे छे, अने पोताने साधु कहेवरावे छे, ते मृषावादी छे. श्रीउत्तराध्ययनमां "न मुणिअन्नाणवासेणं" ए वचनें तथा "नाणेणंमुणीहोइ" ए वचनें जे ज्ञानी ते मुनि छे, अने अज्ञानी ते मिथ्यात्वी छे.

तथा कोइ गणितानुयोग जे नारकी देवताना बोल अथवा यतिश्राव कनो आचार जाणीने कहे जे अमें ज्ञानी छैयें ? परंतु ते ज्ञानी नथी, जे द्रव्यगुणपर्यायनुं स्वरूप जाणे, तेने ज्ञानी कहीयें. उत्तराध्ययनना मोक्ष मार्गाध्ययनमां कह्युं छे. तथा च तत्सूत्रं ॥ एवं पंचविहं नाणं, दव्वाणयगुणाण य ॥ पज्जवाणय सव्वेसिं, जं नाणिहिं दंसीआ ॥ १ ॥ अर्थः–पांच प्रकारें ज्ञाननुं स्वरूप तथा छ द्रव्यनुं स्वरूप, गुणपर्याय सहित जाणे, तेने सम्यग्ज्ञानी जाणवा. तिहां प्रथम पांच प्रकारें ज्ञाननुं तथा षट्द्रव्यनुं स्वरूप रूपी अरूपी पणे निश्चयव्यवहारथी जाणे, तथा उत्सर्ग अपवादथी जाणे, तथा देशव्यापी सर्वव्यापी पणे जाणे, तथा प्रत्यक्ष परोक्ष ए बे प्रमाणे करी जाणे, तथा कर्त्ता कारणने कार्यपणे जाणे, तथा हेय ज्ञेय उपादेयपणे जाणे. तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल अने जावथकी जाणे, तथा नामादिक चार निक्षेपे ऋजुसूत्रनयने मतें जाणे, तथा शब्दनयने मतें चार निक्षेपे जाणे, तथा समभिरूढ नयने मतें चार निक्षेपे जाणे, तथा पंच समवायें करी जाणे, तथा षट् कारकें करी जाणे, तथा नैगमादिक सप्त नयें करी जाणे, तथा नित्य अनित्यादिक आठ पक्षें करी जाणे तथा निश्चयव्यवहारथी जाणे, तथा नाम, द्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव, गुण, पर्यायथकी जाणे, तथा उत्पाद, व्यय, ध्रुवपणे जाणे. ए रीतें पांच ज्ञाननुं तथा षट्द्रव्यनुं स्वरूप जाणे, तेने निश्चय सम्यक्ज्ञानी जाणवा.

हवे ए उपर प्रश्न कह्या तेनो अर्थ करवाथकी आ ग्रंथ घणो वधे, माटे एमांथी केटलाएक प्रश्ननो अर्थ रहस्य जाणवा सारु करुं छुं, ते प्रमाणें विस्तार बुद्धिना धणी हशे ते सर्वनो अर्थ विचारी लेशे.

प्रथम पांच प्रकारें ज्ञाननुं स्वरूप तथा षट्द्रव्यनुं स्वरूप रूपी अरूपीपणे निश्चय व्यवहारथी जाणवा आश्रयी कहीयें छैयें. तिहां प्रथमनां चार ज्ञान ते इंद्रियने अनुयायी छे अने रूपी पदार्थने देखे छे, अने ए चार ज्ञाननो उपयोग पाछो टली जाशे,केम के अवधिज्ञान अने मनःपर्यव ज्ञान नो उपयोग छठा सातमा गुणठाणा लगें छे अने श्रुतज्ञाननो उपयोग बारमा गुणठाणा सुधी छे, पछी नथी. एटले चार ज्ञान ते इंद्रियने अनुयायी व्यवहारनयने मतें रूपीपणे प्रगट्यां अने देखे पण रूपी पदार्थने छे माटे रूपी जाणवा अने एक केवलज्ञान ते शुद्धनिश्चयनयें अरूपी पणे

सादि अनंतमे नांगे प्रगटे तेनो उपयोग आव्यो थको जाय नही, अने इंद्रियना अनुयायीपणा विना रूपी अरूपी सर्व पदार्थने जाणे, माटे ए केवल ज्ञान ते निश्चयनयें अरूपी जाणवुं.

वली ए पांच ज्ञाननुं स्वरूप निश्चयव्यवहारनयें करी रूपी अरूपी पणे देखाडे छे. ए पांच ज्ञान कर्मरूप आवरणने अन्नावें अरूपी पणे प्रगट्या तेने पाछां कर्मरूप आवरण लागे नही, माटे निश्चयनयें करी पांचे ज्ञान अरूपी जाणवां, अने ए पांचे ज्ञान कर्मरूप आवरणने अन्नावें प्रगट्यां तो अरूपी पणे छे पण तेना पर्याय रूपी पदार्थमां नल्या, केम के चारज्ञान तो रूपी पदार्थनेज देखे छे, माटे रूपी पदार्थमां चार ज्ञानना पर्याय प्रगट्या, तेथी व्यवहार नयने मतें ए पांचे ज्ञान रूपी पण जाणवां.

हवे षट्द्रव्यनुं स्वरूप निश्चय व्यवहार नयें करी रूपी अरूपी पणे देखाडे छे. तिहां धर्म, अधर्म, आकाश, जीव, अने काल ए पांच द्रव्य निश्चयनयें करी अरूपी जाणवां अने एक पुद्गलद्रव्यना परमाणुआ ते यद्यपि रूपीज छे, तथापि घणा सूक्ष्म छे, केमके छद्मस्थमुनिराज चार ज्ञानना धणी तेनी नजरें पण नावे अने शाश्वता छे, माटे उपचारें करी अरूपीमां गण्या, ए रीतें छए द्रव्य निश्चयनयेंकरी अरूपी जाणवां अने व्यवहारनयें करी तो चारद्रव्य अरूपी जाणवां तथा जीव अने पुद्गल, ए बे द्रव्य रूपी जाणवां. केम के जीव, चारगतिमां नव नवा नवें करी नवनवां नाम धरावी चववुं उपजवुं करे छे,ते नजरें जोवामां आवे छे, माटे रूपी जाणवो. अने पुद्गलपरमाणुआ पण घणा नेला मली खंध बने छे, ते नजरें जोवामां आवे छे, माटे ए बे द्रव्य व्यवहारनयें करी रूपी जाणवां. अने धर्मास्तिकायादिक चार द्रव्य अरूपी जाणवां. इति प्रथम प्रश्न.

हवे बीजा प्रश्नमां पांच प्रकारनुं ज्ञान तथा छ द्रव्यनुं स्वरूप उत्सर्ग अपवादें करी कहे छे. तिहां पांच ज्ञान मध्यें मतिश्रुतादि चार ज्ञान ते इंद्रियने अनुयायी व्यवहारनयने मतें रूपीपणें प्रगट्यां अने देखे पण रूपी पदार्थने छे, माटे अपवादें कारणरूप जाणवां अने एक केवलज्ञान ते शुद्धनिश्चयनयें करी अरूपी लोकालोक नास्कर इंद्रियनी सहाय विना सर्व ज्ञेय पदार्थने जाणे, माटे उत्सर्गें कार्यरूप जाणवो.

हवे षट् द्रव्यनुं स्वरूप उत्सर्ग अपवादें कहेतो थको धर्म, अधर्म आ

काश, पुद्गल अने काल ए पांच द्रव्यना अनंता गुण, अनंता पर्याय ते ना जाणपणारूप प्रतीति गुरुमुखें करवी, ते सर्वे अपवादें कारणरूप छे, अने एक जीवद्रव्यनुं स्वरूप,शुद्ध निर्मल चिदानंदरूप परमज्योति, अविनाशी, अविचल, सर्वविज्ञावथकी रहित शुद्ध निश्चयनयें करी सत्तायें सिद्ध समान ज्ञानादि अनंतगुणरूप छता पर्याय तथा सामर्थ्यपर्याय रूप अनंतीशक्तिनो धणी, तेनुं स्वरूप ते उत्सर्ग कार्यरूप जाणवुं, ए बीजो प्रश्न.

हवे त्रीजा प्रश्नमध्ये पांच प्रकारनुं ज्ञान तथा षट् द्रव्यनुं स्वरूप देशव्यापी तथा सर्वव्यापी पणे जाणवुं ते कहे छे, मतिश्रुतादि चार ज्ञान, ते पोतपोतानी मर्यादा प्रमाणें उपयोग दीधे लोकमां एना पर्याय प्रवर्त्ते, ते प्रमाणें ज्ञेयपदार्थ जाणे, माटे देशव्यापी जाणवां अने एक केवलज्ञाननो उपयोग ते प्रयास विना सर्वपर्याय लोकालोकमां व्यापी रह्या छे. तेणे करी सर्व ज्ञेयपदार्थ एक समयमां जाणे छे, माटे सर्वव्यापी जाणवो.

हवे छ द्रव्यमां देशव्यापी अने सर्वव्यापी पणुं कहे छे. तिहां धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय, ए बे द्रव्य लोकव्यापी असंख्यात प्रदेशी जाणवा, तेमज एक जीवद्रव्य, असंख्यातप्रदेशी छे एवा अनंता जीवद्रव्य छे ते पण लोकव्यापी जाणवां, तथा पुद्गलद्रव्यना परमाणुआ अनंतप्रदेशी, ते पण लोकव्यापी जाणवा. तथा कालद्रव्यनो समय एक पण प्रवर्त्तन काल ते अढीद्वीप व्यापी जाणवो, अने एक आकाशद्रव्यना अनंता प्रदेश ते लोकालोकव्यापी जाणवा. एरीतें एक आकाश विना पांच द्रव्य लोकव्यापी छे, माटे देशव्यापी जाणवां अने एक आकाशद्रव्य ते लोकालोकमां व्यापी रह्यो छे माटे सर्वव्यापी छे. ए त्रीजो प्रश्न थयो.

हवे चोथा प्रश्नने विषे पांच प्रकारें ज्ञान तथा षट्द्रव्यनुं स्वरूप प्रत्यक्ष अने परोक्ष ए बे प्रमाणें करी देखाडे छे. तिहां प्रथम प्रत्यक्ष प्रमाणना बे नेद छे. एक सर्व प्रत्यक्ष अने बीजुं देशप्रत्यक्ष तेमां केवलज्ञानें करी षट् द्रव्यना अनंता गुण अने अनंतापर्यायरूप लोकालोकना सर्वज्ञाव प्रत्यक्ष पणे जाणे, ते सर्वप्रत्यक्ष जाणवुं अने मनःपर्यवज्ञान ते मनोवर्गणाने प्रत्यक्षपणे जाणे, बीजुं अवधिज्ञान ते पुद्गल वर्गणाने प्रत्यक्षपणें जाणे, ए सर्व देशप्रत्यक्ष जाणवा. हवे बीजुं परोक्षज्ञान छे ते परोक्षप्रमाणना त्रण नेद छे, एक आगमप्रमाण ते आगमें करी नरक, तिर्यंच, मनुष्य, दे

वता यावत् सिद्ध अवस्थानुं स्वरूप जाणे, बीजुं अनुमानें करी अनेक वस्तुनुं प्रमाण करे, जेम कोइना घरमां धूआडो वेखी अग्निनुं प्रमाण थाय, अथवा कोइनुं मुख देखी रोग, शोक, चिंतानुं प्रमाण थाय, अने त्रीजुं उपमाप्रमाण, ते कोइ जीव अजीवरूप वस्तुने अनेकप्रकारें उपमा आपी बोलावीयें, जेम तीर्थंकरने गंधहस्ती तथा चिंतामणिरत्ननी उपमा देवी, ते सर्वे उपमा प्रमाण कहीयें, ए रीतें पांच ज्ञान तथा षट्द्रव्यनुं स्वरूप ए बे प्रमाणे करी जाणवुं, ए चोथो प्रश्न थयो.

हवे पांचमा प्रश्नमां पांच प्रकारनुं ज्ञान तथा षट्द्रव्यनुं स्वरूप, कर्त्ता, कारण अने कार्यरूप त्रिभंगीयें करी देखाडे छे. तिहां कर्त्ता जीव तेने देव, गुरु, कारणरूप मल्यां तेवारें जीवने सम्यक्ज्ञानरूप कार्य नीपन्युं, तथा कर्त्ता जीव, तेने सम्यक्ज्ञान कारणरूप मल्युं तेवारें जीवने श्रुतादि चार ज्ञानरूप कार्य नीपन्युं, वली कर्त्ता जीव, तेने कारणरूप चार ज्ञान मल्यां, तेवारें जीवने केवलज्ञानरूप कार्य नीपन्युं, वली कर्त्ता जीव, तेने केवलज्ञानरूप कारण मल्युं तेवारें अनेक ज्ञेयपदार्थ जाणवारूप कार्य नीपन्युं.

हवे छ द्रव्यमां कर्त्ता, कारण अने कार्यपणुं देखाडे छे. तिहां कर्त्ता जीव अने कारण धर्मास्तिकाय मल्यो, तेवारें जीवने चालवारूप कार्य नीपन्युं, वली कर्त्ता जीव अने तेने अधर्मास्तिकाय कारण मल्युं तेवारें जीवने स्थिर रहेवा रूप कार्य नीपन्युं वली कर्त्ता जीव तेने अकाशास्तिकाय कारण मल्युं, तेवारें जीवने अवगाहना रूप कार्य नीपन्युं, वली कर्त्ता जीव, तेने कालद्रव्यकारणरूप मल्युं, तेवारें जीवने नवा पूराणारूप कार्य नीपन्युं, वली कर्त्ता जीव, तेने पुद्गलद्रव्य कारणरूप मल्युं तेवारें जीवने समय समय अनंता पुद्गल परमाणुआ लेवा तथा खेरवारूप कार्य नीपन्युं. ए रीतें पांच प्रकारें ज्ञान तथा षट्द्रव्यनुं स्वरूप, कर्त्ता कारण अने कार्यपणे जाणवुं ए पांचमो प्रश्न. एरीतें श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमां एकवीश प्रश्न कह्या छे. तेमां पांच प्रश्ननो अर्थ कह्यो, शेष प्रश्नना अर्थनो जे विस्तारबुद्धिना धणी होय ते परमार्थ जाणी लेजो. ए प्रमाणे जे जाणी आदरी ने पाले, तेने जाण कहीयें. तेनुं स्वरूप उलखाववाने चोभंगी लखीयें छैयें. पहेला जीव जाणे, आदरे अने पाले, बीजा जीव जाणे, आदरे अने न पाले, त्रीजा

जीव जाणे, न आदरे, अने न पाले, चोथा जीव जाणे, न आदरे, अने पाले, हवे एनो अर्थ जूदो जूदो लखीयें ठैयें.

तिहां पहेला जीव जे जाणे, आदरे, अने पाले, ते उलखावे छे. जीव अजीव, नव तत्त्व अने षट् द्रव्यनुं स्वरूप साते नयें करी जाणे, अठा वीश उपनयें करी जाणे, द्रव्य, क्षेत्र, काल भावरूप चोभंगीयें करी जाणे, नित्य अनित्यादि आठ पक्षें करी जाणे, द्रव्यभावें करी जाणे,निश्चय व्यवहारें करी जाणे, नयसंयुक्त चार चारनिक्षेपे करी जाणे, ए रीतें भिन्न भिन्न प्रकारें जाणी अंतरंग भासन सहित प्रतीति करी चार गतिरूप संसारथकी उदासी भावें त्यागरूपवैरागें पंच महाव्रत शुद्ध रीतें आदरे, अने जेवी रीतें आदरे,तेवीरीतें मोक्षनिःकर्मारूप साध्य चोखो राखीने पाले जीव साधुमुनिराज छठेसातमे गुणठाणे वर्त्तता कंचन पात्र समान जाणवा.

हवे बीजा जीव जे जाणे आदरे अने न पाले, ते जीव उलखावे छे. एटले आगल जे जीव अजीवरूप षट्द्रव्यनुं नवतत्त्व स्वरूप कह्युं ते प्रमाणे अंतरंग जाणपणा रूप भासन सहित प्रतीति करे, तथा चार गतिरूप संसारथकी उदासीभावें त्यागरूप वैरागें शुद्ध रीतें पांच महाव्रत गुरुमुखें उच्चरे, अने साध्य एक आत्माने कर्मथकी मूकाववा रूप निःकर्मा अवस्थानो राखीने पंच महाव्रत शुद्ध रीतें पाले, पण पूर्वकर्मरूप उदयभावने योगें करीने व्रतथकी चूक्यो मनःपरिणामविषे अशक्त थयो ॥ गाथा ॥ जे जाको जैसो उदे,तब सोए ते थान ॥ शक्ति मरोडे जीवकी, उदय महा बलवान ॥ १ ॥ एवी रीतें उदयभावने योगें करी व्रतथकी परिणाम खस्या पण वेष मूके नही, पडिक्कमणुं पडिलेहणादि क्रिया यथाशक्तियें साचवे, विषयसुख ते विषपान समान दारुण दुःखना दातार करी जाणे मनने विषे झूरणा घणी करे, पण छूटी शके नही, अने जे साधु, मुनिराज शुद्धमार्गी जिनआज्ञाना पालक होय, तेने देखी घणो प्रेम धरे, तेनी सेवा करे, एवा व्रतपालवानी अभिलाषा राखे अने शुद्ध मार्गनो उपदेश आपी, लोकने प्रतिबोधे, धर्म पमाडे, ते जीव, व्रतथकी चूक्या पण समकेतनी सद्दहणायें करी सहित छे, माटे संवेगपक्षी जाणवा. ए बीजो भंग.

हवे त्रीजा जे जीव जाणे, न आदरे, अने न पाले, ते उलखावे छे. ते जीव सम्यग्दृष्टि चोथागुणठाणावाला जाणवा. एटले आगल जी

व अजीवरूप नव तत्त्व, षट्द्रव्यनुं स्वरूप कह्युं ते प्रमाणें सर्व जाणे, अंतरंग पणे सर्दहे, कार्य कारण, धर्म प्रत्यें उलखे, स्वदया परदया जाणे, स्वभाव विभावनो यथार्थपणे विचार करी सर्दहे, आत्माने उपादान कारणपणे जाणे, उपादानकार्य जाणे, तथा आत्मिकसुख इंद्रियजनितसुखनी प्रतीति करी साध्य चोखो राखी वीतरागनी आज्ञायें अनेक प्रकारें साधन करे, तेजीव, संसारथकी उदासी भावें वर्त्ते, संसारने बंधीखानारूप करी जाणे, अने व्रत लेवानी रुचि घणी करे, पण अव्रतने उदयें करी संसाररूप जालमांथी बूटो शके नही, एवा जीव जाणे खरा पण आदरे नही अने पाले पण नही. ए त्रीजो भंग कह्यो.

हवे चोथा जे जीव जाणे न आदरे अने पाले तेने उलखावे छे. ते जीव अनुत्तरवासी देव जाणवा. एटले आगल भाव कह्या, ते प्रमाणें सर्व जाणे छे पण गति आश्रयी अव्रतिपणाने उदयें करी तिहां व्रतनुं आदरवुं नथी तथापि व्रत पालवाने भावेंज वर्त्ते छे, माटे जाणे न आदरे अने पाले ए चोथो भंग. ए चार भांगाना अर्थ विचारी तोलना करे ते ज्ञानीपुरुष जाणवा.

हवे अजाणनुं स्वरूप जाणवाने चोभंगी लखीयें छैयें. तिहां पहेला जीव न जाणे, न आदरे अने न पाले. वीजा जीव न जाणे, न आदरे अने पाले, त्रीजा जीव न जाणे, आदरे अने पाले, चोथा जीव न जाणे, आदरे अने न पाले. ए चार प्रकारना जीव उलखाववाने अर्थ लखीयें छैयें.

तिहां पहेला जीव न जाणे, न आदरे अने न पाले तेजीव मिथ्यादृष्टि पहेले गुणठाणे अन्यदर्शनी जाणवा. तेने जीव अजीवरूप स्वरूप जाण्युं नथी, अने जिनवचननी आस्था विना अनेक प्रकारें अन्यलिंगें मिथ्यात्व रूप चेष्टा करता फरे, ए पहेला भांगानो विचार कह्यो.

हवे बीजा जीव न जाणे, न आदरे अने पाले, ते जीव उलखावे छे. ते जीव, बाल तपस्वी जाणवा. तेने जीव अजीवना स्वरूपनी उलखाण नथी, अने पंच महाव्रतनुं स्वरूप पण जाणता नथी तेम पांच आश्रव पण सेवता नथी, माटें ए बाल तपस्वी जीव जाणवा. ए बीजो भंग.

हवे त्रीजा जे जीव न जाणे, आदरे अने पाले, ते उलखावे छे, ते जीव जैनमती स्वलिंगी, बाह्यक्रिया प्रतिपालक जाणवा. तेणें जीव अजीव रूप नव तत्त्व षट्द्रव्यनुं स्वरूप नयें करी, निक्षेपे करी, स्याद्वादरूप नित्य

अनित्यादि आठ पक्षें करी ज्ञासनरूप प्रतीति करी नथी, अने उपादान पणुं न जाणे, उपादान कारणपणुं न जाणे, उपादानकार्यपणुं न जाणे, साधक बाधक अने सिद्धादि स्वरूप चौद गुणठाणानो विचार न जाणे, लौकिक धर्म न जाणे, लोकोत्तर बाह्यकारणरूप धर्म न जाणे, लोको त्तर अंतरकारणरूप धर्म न जाणे, तथा लोकोत्तर अंतरकार्यरूप धर्म पण न जाणे अने जीवसत्तारूप द्रव्यगुणपर्यायनुं स्वरूप न जाणे तथा अजीव सत्तारूप ज्ञावकर्म द्रव्यकर्म नोकर्मरूप विचार न जाणे, तथा साध्य साध नरूप लेवानी प्रतीति कस्या विना नरकनिगोदनां दुःखथकी बीहीतो थको सुखनी लालचें पुण्यरूप फलनी वांबायें निवृत्तिरूप चारित्र अंगीकार करी, पांच वहाव्रत शुद्ध रीतें पाले बे, बहेंतालीश दोष टाली आहार लीये बे, मांकलाना पांच दोष टाले बे, अने पडिक्कमणुं पडिलेहणादि क्रिया शुद्ध रीतें साचवे बे, ते द्रव्यलिंगी जीव जाणवा. ए त्रीजो ज्ञंग कह्यो.

हवे चोथा जे जीव न जाणे, आदरे अने न पाले, ते उलखावे बे, ते जीव जिनमतलिंगी वेषधारी जाणवा. एटले पोतानो पाट मेलववारू प नाम राखवा सारु बालपणे शिष्यने वेचाता लइ अनेक प्रकारें दुःखें क री जिनमतना शास्त्र जे अंगोपांगादिक तथा परमतनां शास्त्र जे ज्योतिष्य वैद्यकादिक ते ज्ञणावे, ज्ञणावी पालीने महोटा करे, पण अंतरंग सत्ताग तना जाणपणारूप ज्ञासन रहित तेणें करी जीवादिक नव पदार्थना पर मार्थने न जाणे, अने अज्ञावें करी रुचि विना पांच महाव्रतरूप उच्चारे करी जैनलिंग धर्युं बे, पण बकायना आरंज्ञने विषे प्रवर्त्ते बे, सावद्यरू प पापकर्मना आदेश उपदेश दीये बे ॥ अत्र गाथा ॥ निर्दय हृदय बका यमां, जे मुनिवेषे प्रवर्त्ते रे ॥ गृही यतिधर्मथी बाहिरा, ते निर्धन गति व र्त्ते रे ॥ १ ॥ ए परमार्थ जाणवो. एटले ते जीव न जाणे, अने व्रत आद रे पण पाले नही, माटे जिनमतलिंगी वेषमात्रें जाणवा. ए चोथो ज्ञांगो कह्यो. ए रीतें जाण अजाण पणानुं स्वरूप जाणवा सारु चोज्ञंगी कही बे.

॥ दोहा ॥

॥ आत्मदृष्टिदेखीयें, पुद्गल चेतनरूप ॥ परपरिणति होय वेगली, न पडे ते ज्ञवकूप ॥ १ ॥ आतमज्ञावें सिद्ध बे, परज्ञावें बे बंध ॥ निजस्वरूप अ विलोकतां, मिटे अनादि धंध ॥ २ ॥ जेने पुद्गल योग बे, तेहनी न धरे

आश ॥ शुद्धातम अनुभव भयो, शाश्वत सुख विलास ॥ ३ ॥ चेतन लक्षण आतमा, सो अनादि गुणलीन ॥ पण ते प्रगटे अनुभवें, समकेत दृष्टि पीन ॥ ४ ॥ मग्न भयो जडभावमें, तेणे सावरण स्वभाव ॥ निरावरण तो संपजे, आपें आप स्वभाव ॥ ५ ॥ शुद्धद्रव्य शुद्धातमा, व्यापक सकल स्वभाव ॥ शुद्ध द्रव्यगुण पज्जवे, मटे मोहमद ताव ॥ ६ ॥ इम भावत शिव तत्त्व रस, ते अध्यातम सार ॥ ताके गुणकी वर्णना, सुणतां होय सुखकार॥७॥

॥ देशी चोपाइनी ॥

खिमाविजय छे क्षमा भंडार, जिन उत्तमपदना दातार ॥ एवा गुरु नित्य सेवो सहु, निजरूप प्रगटे सुख लहो बहु ॥ ८ ॥ अमिय कुंअर तसु प्रणमी पाय, ग्रंथ कियो भविजन सुखदाय ॥ अल्पबुद्धि में रचना करी, शुद्ध करो पंडित जन मली ॥ ९ ॥ मरुधर पाली नगर मझार, चोमासुं धरी हर्ष अपार ॥ वर्ष ब्यासी संवत अढार, महाशुदि पांचम ने रविवार ॥ १० ॥ प्रश्नोत्तर ग्रंथ कीधो सार, आतम अर्थीने हितकार ॥ भणतां गुणतां जय जयकार, लखमी लीला पामे अपार ॥ ११ ॥ इति पंडित श्रीकुंवर विजयजी विरचित प्रश्नोत्तर ग्रंथः संपूर्णः ॥ श्लोक संख्या ॥ ६६६१ ॥

भूलः—आ ग्रंथ छापतांज एना बीजा पृष्ठनी छेल्ली लीटीमां (वाजित्रमां मलतो शब्द होय.) ते ठेकाणे कंपाजीटरनी भूलथी "वा जित्रमां मेल उचित प्रमुख गुणसहित होय" एम थइ गयुं छे. तेमज बीजा पण जे जे स्थानके अशुद्धतारूप दोष महाराथी थयेला होय ते सर्वे स्थले वांचनार साहेबोयें सुधारी वांचवुं. आ पुस्तक मुद्रित करतां जे कांइ श्रीजिनवचन विरुद्ध महाराथी लखायुं होय ते अपराध रूप दुष्कृतने हुं समस्त आ ग्रंथ पठन करनारा सज्जनोनी समक्ष मिथ्या करुं छुं.

इति श्री कुंवरविजयजीकृत अध्यात्मसार

प्रश्नोत्तर ग्रंथः समाप्तः ॥

अथ बूटक बोलो लखीयें बैयें.

सुगम, सुगाम, सुजात, सुभ्रात, सुतात, सुमात, सुवात, सुकुल, सुबल, सुस्त्री, सुपुत्र, सुपात्र, सुक्षेत्र, सुदान, सुमान, सुरूप, सुविद्या, सुदेव, सुगुरु, सुधर्म, सुवेश, सुदेश. एटलां वानां पुण्यविना न पामीयें.

सुमति, शीलवंत, संतोषी, सत्संगी, स्वजन, साचा बोला, सत्पुरुष, समेला, सुलक्षण, सुलज्ज, सुकुलीन, गंभीर, गुणवंत, गुणज्ञ, एवा पुरुषनो संग करवाथी धर्म पामीयें. चुगल, चोर, बलग्राही, अधर्मी, अधम, अविनीत, अधिक बोला, आनाचारी, अन्यायी, अधीरा, अधूरा, निःस्नेही, कुलक्षण, कुबोला, कुपात्र, कूडाबोला, कुशीलिया, कुशासनी, कुलखंपण, भूंडा, भूंब. एवा पुरुषोनो संग न करवो.

केटलाएक दोष मुख्यतायें जेने होय तेनां नाम कहे बेः—रजपुतने क्रोध घणो होय, क्षत्रीने मान घणुं होय, गणिका अने वणिकने माया घणी होय, ब्राह्मणने लोभ घणो होय, मित्रने राग तथा हेत घणुं होय, शोक्यने द्वेष घणो होय, जुगारीने शोक घणो होय, चोरनी माताने चिंता घणी होय, कायरने भय घणो होय. इत्यादिक श्रीविशेषावश्यकमां घणा बोल बे.

हवे धर्म कर्म केवी रीतें होय ते कहे बे. धर्म तो आत्मभावें शुद्धोपयोगें होय अने कर्म तो अशुद्धोपयोगें तथा शुभाशुभ भावें होय जेवी करणी एटले जेवी क्रिया तेवां कर्म होय अने धर्म तो अक्रिया रूपें होय जेवो शुद्धोपयोग वृद्धिवंतो होय तेवो धर्म पण वृद्धिवंतो होय.

महोटी चौदविद्यानां नामः—एक नभोगामिनी, बीजी परशरीर प्रवेशिनी, त्रीजी रूपपरावर्त्तनी, चोथी स्तंभनी, पांचमी मोहनी, बठी सुवर्णसिद्धि, सातमी रजतसिद्धि, आठमी रससिद्धि, नवमी बंधथोभिनी, दशमी शत्रुपराजयनी, अगीयारमी वशीकरणी, बारमी भूतादिदमनी, तेरमी सर्व संपत्करी, चौदमी शिवपदप्रापणी.

वक्ताना चौद गुण लखियें बैयें. पहेलो प्रश्नव्याकरणोक्त शोल बोलनो जाण पंडित होय, बीजो शास्त्रार्थ विचारी जाणे, त्रीजो वाणी मांहे मीठाश होय, चोथो प्रस्ताव अवसर उलखे, पांचमो सत्य बोले, बठो सांभलनारना संदेहनो बेद करे, सातमो बहुशास्त्रवेत्ता गीतार्थ उपयोगी होय, आठमो अर्थने विस्तारी तथा संवरी जाणे, नवमो व्याकरण रहित बतां कठनी भा

षामां पण अपशब्द न बोले, दशमो वाणीये करी सन्नाजनोने रीज पमाडे, अगीयारमो प्रश्नार्थ ग्राहक, बारमो अहंकार रहित, तेरमो धर्मवंत, चौद मो संतोषवंत. ए चौद बोलनो जाण होय ते वक्ता जाणवो.

हवे श्रोताना चौद गुण कहे छेः–एक न्नक्तिवंत, बीजो मीठाबोलो,त्रीजो गर्वरहित, चोथो सांन्नलवा उपर रुचि, पांचमो चंचलता रहित एकाग्र चित्तें सांन्नले अने धारे, छठो जेवुं सांन्नल्युं तेवुं प्रगट अक्षरे कहे, सातमो प्रश्न नो जाण, आठमो घणा शास्त्र सांन्नल्यानां रहस्य जाणे, नवमो धर्मकार्यें आलसु न होय, दशमो जेने धर्म सांन्नलतां निद्रा नावे, अगीयारमो बुद्धि वंत होय, बारमो दातारूप गुण होय, तेरमो जेनी पासेथी धर्मकथा सां न्नले तेना पाछलथी घणा गुण बोले, चौदमो कोइनी निंदा न करे तथा कोइनी साथे ताण खेंच वादविवाद न करे,ए चौद गुण सांन्नलनारमां जोइयें, योग,कषाय,अने लेश्या ए चार जेवारें एकठा मले, तेवारे परन्नवायु बंधाय.

नारकी जीवने महावेदना अने अल्प निर्ज्जरा जाणवी. तथा साधुने म हावेदना अने महानिर्ज्जरा गजसुकुमारनी पेरें जाणवी, तथा देवताने अल्प वेदना अने अल्प निर्ज्जरा जाणवी तथा शैलशीकरणे चोदमे गुणठाणे म हानिर्ज्जरा अने अल्पवेदना जाणवी. ए निर्जराने वेदनानी चोन्नंगी कही.

सामायिक,चोवीसत्थो ने प्रतिक्रमण ए त्रण आवश्यक संवर तत्त्वमां छे. तथा वंदनक, काउस्सग्ग अने पच्चरकाण ए त्रण आवश्यक निर्ज्जरामां छे.

संसारमां जीव त्रण प्रकारना छे. एक न्नव्य,बीजा अन्नव्य अने त्रीजा न्न व्यान्नव्य. तेमां वली न्नव्यजीवनां त्रण प्रकार छे. एक निकटन्नव्य,बीजा मध्य न्नव्य अने त्रीजा दुर्न्नव्य. तेमां सधवा सौन्नाग्यवती स्त्री जेम परणीने त त्काल ठ महीने गर्न्नधारण करी पुत्रनी प्राप्ति रूप फल पामे तेनी पेरे जे न्नव्यजीव पण तरत सिद्धि वरे ते निकट न्नव्य जीव जाणवा. तथा जेने को एक स्त्री परण्या पछी बे वर्षे पुत्ररूप फल पामे तेनी पेरे जे जीव थोडा न्नव मांहे मेघकुमारनी पेरें सिद्धि वरे, ते मध्यन्नव्य जीव जाणवा. तथा जे दु र्न्नव्यजीव छे ते जेम कोइ परणेली स्त्रीने घणा वरस पछी पुत्ररूप फलनी प्राप्ति थाय तेम ते जीव पण गोशालानी पेरे अथवा अनंता पडिवाइजीवो नी पेरे घणा काले सिद्धि वरशे ते दुर्न्नव्य जाणवा.ए न्नव्यना त्रण न्नेद कह्या.

हवे बीजा अन्नव्य जीवनां लक्षण कहे छे, जेम वंध्या स्त्रीने घणाकाल

पर्यंत भरतारनो योग मले तथा अनेक उपाय करे तो पण पुत्ररूप फलनी प्राप्ति न थाय, तेनी पेरे अभव्यनो जीव पण व्यवहारथी चारित्रनी क्रिया आदरे नवमा ग्रैवेयक पर्यंत जाय परंतु सिद्धिरूप मोक्षफल पामे नही.

हवे त्रीजा भव्याभव्यनां लक्षण कहे छे. जेम कोइक बालविधवा स्त्री होय तेने पुत्र थवानी शक्ति छे परंतु भरतारना योगने अभावें पुत्ररूप फल पामे नही तेम केटला एक जातें भव्य जीव तो छे, परंतु कर्मनी विशेष निविडताने योगें करी अव्यवहार राशिमांथी निकलीने व्यवहार राशिमां उंचाज नही आवी शके, तेथी सामग्रीने अभावें मोक्षरूप फलनी प्राप्ति पण न पामे.

तथा वली त्रण प्रकारना जीव कहे छे एक भवाभिनंदी ते मिथ्यादृष्टि जीव जाणवा. बीजा पुद्गलाभिनंदी ते चोथा पांचमा गुणठाणा वाला सम्य ग्दृष्टि जीव जाणवा. त्रीजा आत्मानंदी ते साधु मुनिराज जाणवा.

तथा वली संसारी जीव चार प्रकारना कह्या छे. एक सघन रात्रि समान ते भवाभिनंदी मिथ्यात्वगुणठाणवर्त्ती जीव जाणवा. जेमां कोइ अजुवालुं नही बीजा अघनरात्रि समान ते मार्गाभिमुखी मार्गानुसारी जीव जाणवा. त्रीजा सघन दिन समान ते चोथा गुणठाणाथी मांमीने बारमा गुणठाणा सुधीना जीव जाणवा. चोथा अघन दिन समान ते केवली भगवान जाणवा.

तीर्थंकरना जन्मादिकल्याणक थाय तेवारे साते नरकें केटलुं अजवालुं थाय? ते कहे छेः—प्रथम नरकें सूर्य सरखो उद्योत थाय, बीजी नरकें साभ्रसूर्य समान तेज थाय, त्रीजी नरकें पूर्णिमाना चंद्र समान उद्योत थाय, चोथी नरकें साभ्र चंद्र समान तेज थाय, पांचमी नरकें शुक्र तथा बृहस्पति इत्या दि ग्रहना सरखुं तेज थाय, छठी नरकें नक्षत्रना सरखुं तेज थाय अने सा तमी नरकें तारा सरखुं तेज थाय.

त्रण प्रकारें करेला उपकारनुं उसिंगण थवाय, तेनो विचार.

१ माता पिताने पुत्र प्रभातें उठी शतपाक सहस्रपाक तेलें मर्द्दन करे, पछी सुगंधें करी उवटणुं करें. तेवार पछी सौगंधिकपाणी, टाढुंपाणी, ऊष्ण पाणी, एवा त्रण पाणीयें करी न्हवरावे पछी उत्तम वस्त्राभूषणादिकें करी वि भूषा करे, पछी मन गमतुं सरस मधुर भोजन करावे, जावजीव सुधी पोतानी पछवाडे खांध उपर लइने फरे, ए रीतें भक्ति साचवे तो पण ते पुत्र, माता पि तानो उसिंगण न थाय. परंतु माता पिताने केवलिप्रणीत धर्म कही

धर्म बूझवीने धर्ममां थापे तो ते पुत्र, माता पितानो उसिंगण थाय.

२ कोइ एक महोटो पुरुष कोइ एक दरिद्री पुरुषने महोटो धनवंत करे पछी कालांतरे कोइ रीतें अशुभ कर्मोदयथी ते महोटा पुरुषने दरिद्र प्राप्त थाय ते प्रस्तावें ते पूर्वें उपकार पामेलो पुरुष पोताना स्वामीने दरिद्र आव्युं जाणी पोतानुं सर्वस्व पोताना स्वामीने आपतो छतो पण तेनो उसिंगण न थाय, परंतु ते पुरुष जो पोताना स्वामीने केवलि प्रणीत धर्म कही धर्म बूझवीने धर्मने विषे स्थापन करे, तो उसिंगण थाय,

३ कोइ एक पुरुष श्रीसाधुनी पासेंथी रुडां धर्ममय वचन सांभली तेने मनमां धारी पछी शुभध्यान विषे काल करी देवलोकें देवतापणे उपजे, ते देवता पोताना धर्माचार्य प्रत्यें दुःकालमां पड्यो जाणी वस्तिना स्थानकें मूके अथवा ते धर्माचार्यने कोइ रोग उत्पन्न थयाथी तेने रोग रहित निराबाध करे, तो पण ते देवता तेनो उसिंगण न थाय, परंतु ते देवता जो पोताना धर्माचार्यने अशुभ कर्मोदयथी केवलिप्रणीत धर्मथकी भ्रष्ट थयो जाणी फरी तेने केवलिप्रणीत धर्म बूझावीने धर्मने विषे स्थापन करे, तो उसिंगण थाय.

॥ चार प्रकारनी वर्त्तणूक करतो जीव, नरकायु बांधे, तेनां नाम.

१ महारंभमां वर्त्ततो थको. २ महापरिग्रहमां वर्त्ततो थको,
३ पंचेंद्रिय जीवोनो वध करतो. ४ आमिषनो आहार करतो थको.

॥ चार प्रकारें वर्त्ततो जीव तीर्यंचायु बांधे, तेनां नाम ॥

१ मायाने करवे करी. २ विशेषमायाने करवे करी.
३ अलिक बोलतो थको. ४ कूडां तोल कूडां माप करतो थको.

॥ चार प्रकारें वर्त्ततो जीव मनुष्यायु बांधे, तेनां नाम ॥

१ प्रकृतियें भद्रकपणे वर्त्ततो थको. २ प्रकृतियें विनीत पणे वर्त्ततो.
३ दयासहितपणे वर्त्ततो थको. ४ मत्सर रहित पणे वर्त्ततो थको.

॥ चार प्रकारें वर्त्ततो जीव देवायु बांधे तेनां नाम ॥

१ सराग संयमें करी. २ देशसंयमे वर्त्तवे करी.
३ बाल तपें करी. ४ अकाम निर्ज्जरायें करी.

॥ चार प्रकारनां शूर पुरुष कह्या छे ॥

१ क्षमा शूर श्रीअरिहंत. २ तपःशूर श्रीअणगार.
३ दानशूर वैश्रमण. ४ युद्धशूर वासुदेव.

॥ चार प्रकारना पुष्प कह्यां छे ॥

१ रूपसहित पण गंध रहित. २ गंधसहित पण रूपरहित.
३ गंध सहित अने रूप सहित. ४ गंध रहित अने रूप रहित.

॥ एम चार प्रकारना पुरुष कह्या छे ॥

१ रूपवंत पण शील रहित. २ शील सहित अने रूप रहित.
३ रूप सहित अने शील सहित. ४ रूप रहित अने शील रहित.

॥ चार प्रकारें उपरा उपर अनंता कह्या छे ॥

१ अभव्य जीव अनंता छे. २ ते थकी सिद्धना जीव अनंता छे.
३ ते थकी भव्य जीव अनंता छे. ४ ते थकी जातिभव्य जीव अनंता छे.

॥ अंतिम चतुर्विध संघनां नाम ॥

१ श्रीडुप्पसह नामा आचार्य. २ फल्गुसिरी महा सति साधवी.
३ नाइल नामा श्रावक. ४ सवसिरीनामा श्राविका.

॥ पात्र चार प्रकारनां कह्यां छे ॥

१ श्री जिनेंद्र. २ श्री साधु. ३ देशविरति श्रावक. ४ अविरति सम्यग्दृष्टि.

॥ अणाहारकना चार प्रकार ॥

१ विग्रहगतिवंत, २ केवलसमुद्घातकारक, ३ चउदमे गुणठाणे. ४ श्री सिद्ध.

॥ मनुष्यनी चार अवस्थानां नाम ॥

१ गर्भावस्था. २ बाल्यावस्था. ३ यौवनावस्था. ४ वृद्धावस्था.

॥ चार प्रकारें कुंभ छे, तेनां नाम ॥

१ मधुनो घडो ने मधुनुं ढाकणुं २ मधुनो कुंभने विषनुं ढाकणुं.
३ विषनो कुंभने मधुनुं ढाकणुं. ४ विषनो कुंभने विषनुं ढाकणुं.

॥ एज प्रकारें चार जातिना पुरुष होय ते कहे छे ॥

१ एक पुरुष निर्मल निष्पाप अने जिह्वाथी पण मीठुं मधुरुं बोले.
२ एक पुरुष निर्मल निष्पाप छतां जिह्वायें कडवुं बोले.
३ एक पुरुष एक लक्ष पापवालो होय अने जिह्वायें मीठुं मधुरुं बोले.
४ एक पुरुष एक लक्ष पापवालो होय अने जिह्वायें पण कडवुं बोले.

॥ पच्चरकाण करवानी चतुर्भंगी ॥

१ पच्चरकाणनो करावनार गुरु जाण होय, अने करनार शिष्य ते पण जाण होय, ए प्रथम भंग अत्यंतशुद्ध उत्तम जाणवो.

२ पच्चरकाणनो करावनार गुरु जाण अने करनार शिष्य अजाण होय, त्यां जाण गुरु पच्चरकाणना करनारने पूछे, जाण करे, केहे के हे अमुका! तने अमुक पच्चरकाण कराव्युं छे, तेवी रीतें पालजे एम शिष्य पण पाले तो शुद्ध भांगो जाणवो. अने न पूछे न पाले, तो अशुद्ध भांगो जाणवो.

३ पच्चरकाणनो करनार शिष्य जाण होय, ते शिष्य जाणतो छतो गीतार्थ गुरुने अभावें पर्यायें करी महोटा एवा महात्माने समीपें अथवा पित्रादिकने गुरु स्थानकें मानीने तेमनी साखें पच्चरकाण करे, तो ते शुद्ध जाणवुं. परंतु जो छते गीतार्थें पण अजाण गुरु पासेंथी पोताने छंदे पच्चरकाण करे, तो अशुद्धभांगो थाय, एम समजवुं.

४ पच्चरकाण करावनार गुरु अने पच्चरकाण करनार शिष्य, ए बेहु अजाण होय तो ते भांगो अत्यंत अशुद्ध श्री वीतरागदेवें कह्यो छे.

॥ साधु छ कारणें आहार लीये, तेनां नाम कहेछे.

१ क्षुधानी वेदनायें आहार लीये.
२ आचार्यादिकनां वैयावच्च करवाने अर्थें आहार लीये.
३ ईर्यापथिकी मार्ग शोधवाने कारणे आहार लीये.
४ संयम पालवाने कारणे आहार लीये.
५ जीवितव्य रक्षाने कारणे आहार लीये.
६ शुभध्यान करवाने कारणे आहार लीये.

॥ साधु छ कारणे आहार न लीये, तेनां नाम कहे छे ॥

१ ज्वरादिकरोग आवे थके न जमे.
२ मावापने उपसर्ग रूप कारणे न जमे.
३ पुरुष वेदनो उदय थयाथी ब्रह्मचर्य राखवाने अर्थें न जमे.
४ कर्म खपाववा निमित्तें तप करवाने अर्थें न जमे.
५ जीवदयाने अर्थें वर्षाद वरसते अथवा धूहरी पडते न जमे.
६ अंतसंलेषणायें शरीर छांमवा भणी न जमे.

